समर्पण ।

बन्धुशिरोमणि !

संसार में एक तुम्हारा ही भरोसा है, तुम्हारा ही बल है तथा तुम्हारी ही प्रीति पर विश्वास है। साथही तुम्हारी दया, कृपा तथा प्रीति अनिर्वचनीय भी है और तुम श्री-धर भी हो। अतएव रक्षावन्धन के प्रेमोपहार में यह ग्रन्थ तुम्हें सादर समर्पित है। आशा है तुम इस तुच्छ भेट को स्वीकार कर मेरी ढिठाई क्षमा करोगे ॥

तुम्हारा—
चन्द्रशेखर पाठक ।

॥ श्रीः ॥

अर्थ में अनर्थ

—या—

प्रवाल द्वीप ।
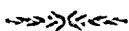
आरम्भ ।

मेरा यह उपन्यास उस समय से आरम्भ होता है, जिस समय पैसिफिक महासागर के टापुओं की किसी को भी खबर न थी, न क्रिस्टोफर कलम्बस का जन्म ही हुआ था जिसने ऐमेरिका के खोज निकाला था। अर्थात सन् १३२५ ई० से मेरा यह उपन्यास प्रारम्भ होता है॥

सीमाशून्य अनन्त महासागर में फैले हुए टापुओं में से यह "प्रवाल द्वीप" भी एक ऐसा टापू है जिसकी शोभा अकथनीय, सुन्दरता वर्णन रहित तथा दृश्य आश्चर्यजनक और देखने ही योग्य हैं॥

टापू के किनारे किनारे बहुत दूर तक पर्वतश्रेणी चली गई है। स्थान स्थान पर ताल वृक्ष का सुन्दर सघनकुंज बन गया है। पर्वत पर सुन्दर सुन्दर लतायें चढ़ी हुई हैं जिनके फूल अपनी निराली ही छटा दिखा रहे हैं। कहीं नारियल का वृक्ष अपना सर उठाये खड़ा है तो कहीं सुन्दर छोटे छोटे वृक्ष हैं जिनमें रङ्गबिरङ्गी फूल खिले हुए हैं। कहीं कहीं जङ्गली

एक बूढ़ा जो देखने से किसी उच्चकुल का मालूम होता था अपनी झोपड़ी से बाहर निकला॥

बूढ़ा देखने में सुन्दर तथा किसी ऊँचे वंश का मालूम होता था। उसके सब कपड़े मर्कट की छाल से ऐसी उत्तमता से बीने हुए थे कि उनमें एक भी छेद दिखाई न देता था। उसका कोट, पतलून सभी इसी वृक्ष के बने थे तथा खिसक जाने के डर से जगह जगह बांध भी दिये गए थे। यह बड़े आश्चर्य की बात थी कि ऐसे निर्जन स्थान में भी उसने अपने वस्त्र इस भांति ठीक कर लिये थे॥

यद्यपि उसके मुंह, हाथ और पैरों पर किसी तरह का कपड़ा न था तथापि उनके रङ्ग में किसी तरह का फर्क अभी तक न आया था बल्कि उनकी सुन्दरता दिनों दिन बढ़ती ही जाती थी॥

उसके मस्तक का अगला भाग यद्यपि केश रहित था तथापि पिछले भाग के केश बड़ी सुन्दरता से गुच्छे गुच्छे होकर उसके कंधे तक लटक रहे थे। शरीर न बहुत लम्बा न मोटा ही था। यद्यपि बुढ़ापे के कारण वह आगे की ओर कुछ झुक गया था तथापि दृढ़, बलिष्ट और सुन्दर था। उसकी चाल गम्भीर पर दृष्टि विषाद पूर्ण थी। मुख की आकृति से चिन्ता के साथ ही साथ शान्तता, दयालुता तथा निराशता भी झलक रही थी॥

बूढ़े ने जैसे सुन्दर अपने वस्त्र बना लिये थे उसी तरह अपनी झोपड़ी भी बना ली थी। झोपड़ी की दीवारें काठ की बनी थीं जिनपर मिट्टी ऐसी अच्छी तरह लगाई गई थी कि

वह विलायती मिट्टी को भी मजबूती में मात करती थी। ताड़ के पत्तों की छत भी ऐसी बनी थी कि मूसलाधार पानी भी उसका कुछ बिगाड़ न सकता था। उसकी गोंद गला कर खिड़की में शीशों की जगह लगा दी गई थी। नारियल की चटाई और जीवजन्तु के कोमल पर उसकी शय्या के बिछावन थे॥

एक तख़्ते पर नारियल के आधे भाग का प्याला, कछुए के पीठ की थाली, घड़ियाल के दांत की छुरी तथा कद्दू का लोटा भी रक्खा था। मछली फँसाने के लिये उन्हीं मछली के दांतों की बंसी भी बूढ़े ने बना रक्खी थी। टापू के सुगन्धित फूलों के इत्र भी बना लिये थे॥

समुद्र और पहाड़ी झरनों की मछलियां, बालू पर पड़े हुए कछुए, अंडे और नाना भांति के कीड़े तथा पक्षी और नारियल, तर्बूज, केले इत्यादि फल उसकी रसना के भोजन होते थे। साथ ही बहुत से फलों का रस कछुए की पीठ की कड़ाही में उबाल कर सुन्दर और स्वादिष्ट मदिरा भी बूढ़े के स्वाद को बढ़ाती थी॥

इस जनशून्य टापू का वही राजा था, इस रमणीक प्रदेश का वही अकेला स्वामी था। यहां की भूमि केवल उसीके पैरों के चिन्ह से चिन्हित होती थी तथा सुन्दर, सुकोमल और सुगन्धित फूल उसीके हाथों से तोड़े और सूंघे जाते थे॥

प्रिय पाठकगण समझते होंगे कि इस सुन्दर भूमि में बूढ़ा सदा सुखी रहता होगा। पर नहीं, विधाता ने वह सुख उस से कोसों दूर भगा दिया था। उसके हृदय में जैसी चिन्ता थी,

दिन शीघ्र ही दिखाओ कि यह दुःख और चिन्ता मेरे सामने से दूर भाग जाये, यही मेरी अन्तिम प्रार्थना है। हे दीनबन्धु..."

बूढ़ा फिर बोल न सका, पर चुपचाप ज्यों का त्यों बहुत देर तक बैठा रहा। कुछ ही देर बाद फिर उत्साह से उठ खड़ा हुआ मानो किसी ने उसे कह दिया कि तेरी प्रार्थना स्वीकार हो गई। वह धीरे धीरे अपनी झोपड़ी में चला गया॥

सन्ध्या की सुन्दर छटा प्रवाल द्वीप पर छा रही थी, सूर्य देव अस्ताचल पर्वत पर पहुंचा ही चाहते थे, हवा के झपेटों के साथ सुगन्धित फूलों की सुगन्ध और चिड़ियों का चहचहाना बहुत ही भला मालूम होता था, इसी समय वह बूढ़ा फिर अपनी झोपड़ी से बाहर निकला और डूबते हुए सूर्य की अनोखी किरणों को वृक्ष पर, पौधों पर, फूलों पर, तथा समुद्र में पड़ कर अपूर्व छटा दिखा रही थीं देखने लगा। सूर्य-देव धीरे धीरे अस्त हो गये। बादल ने रङ्ग बदल बदल कर फिर काली चादर ओढ़ ली। रात्रि ने धीरे धीरे अपना अधिकार जमा लिया। तुरत ही चन्द्रदेव ने उदय होकर चांदनी से चहुंदिशा को आलोकित कर दिया। अहा! कैसी शोभामयी रजनी थी। आकाश में असंख्य तारे हीरों की भांति चमक रहे थे उनकी परछाहीं समुद्र में पड़ रही थी और दीपकीरस के चमकाने कीड़े (जुगनू) समुद्र में अनगिनती किरण ज्योति दिखा रहे थे॥

इसी समय दूर पर बादल का एक टुकड़ा दिखाई दिया। बूढ़ा उसे देखते ही समझ गया कि यह भयंकर आंधी पानी का सूचना दे रहा है। धीरे धीरे यह काले बादल का टुकड़ा

चारों ओर आकाश में फैल गया। चन्द्रदेव उसमें छिप गये और प्रवालद्वीप पर अंधेरा छा गया। हवा बढ़ी और बड़ी २ तरंगे उठ कर टापू से टक्कर मारने लगीं। बिजली की कड़क और बादल की गरज से चारों दिशा कम्पित हुई॥

बूढ़ा अब भी अपनी जगह से न हिला। वह एकटक आकाश की ओर दृष्टि लगाये बैठा रहा। बिजली की चमक ईश्वर की आंखों की चमक सी उसे दिखाई देने लगी तथा बादलों की घड़घड़ाहट ईश्वर का गम्भीर शब्द मालूम होने लगी। अब पानी भी मूसलाधार बरसने लगा पर बूढ़ा अपनी जगह से न हिला। इसी समय एक अपूर्व दृश्य उसे दिखाई दिया। उसने देखा कि एक बड़ी भारी काली मूर्ति समुद्र से आकाश तक ऊंची, समुद्र से निकली और उसी की ओर आ रही है। वह घबड़ाया और डरा पर अपनी जगह से खिसका नहीं। वह डरता हुआ एकटक उसे देखता ही रहा। वह मूर्ति धीरे धीरे निकट आने लगी, अब बूढ़ा थरथराया, न जाने उसे अभी जीवित रहने की आशा क्यों थी, शायद इसका भी कोई कारण होगा। ज्यों ज्यों वह मूर्ति निकट आती जाती थी, बूढ़े की दशा खराब होती जाती थी। सहसा वह मूर्ति फट गई, अब बूढ़े ने देखा कि वह जलस्तम्भ है। यदि इतना बड़ा जलस्तम्भ उस टापू पर से चला जाता तो एक भी जीव के जीने की आशा न थी। धीरे धीरे वह स्तम्भ गलने लगा और गल गल कर गायब हो गया॥

ईश्वर की महिमा अपरम्पार है। धीरे धीरे पानी का बरसना बन्द होगया। आकाश में तारागणों के साथ चन्द्रमा

भी निकल आये तथा समुद्र की बड़ी बड़ी तरंगें घड़घड़ाहट के साथ ही साथ शान्त हो गईं॥

बूढ़ा इस समय हाथ जोड़े हुए था, उसके दोनों होंठ हिल रहे थे और दृष्टि आकाश की ओर थी। कुछ ही देर बाद वह उठा और अपनी झोपड़ी में चला गया॥

यह प्रवाल द्वीप का अकेला राजा बूढ़ा कौन है? इस निर्जन टापू में वह कैसे आ फँसा? तथा उसे कौन सा भयंकर रोग घेरे हुए है यह पाठकों को आगे चलकर मालूम होगा॥

पहिला परिच्छेद।

सन् १३२५ ई० के जनवरी महीने से मेरा यह उपन्यास आरम्भ होता है॥

रात के दो बजने का समय है। समस्त संसार निद्रादेवी की सुखमयी गोद में पड़ा हुआ है पर इटली देश के नेपल्स नगरी के रहने वाले अहनमूरा (महल) वालों अभी तक न सोये हैं। उनके मकान की खिड़कियों से रोशनी अभी तक बाहर निकल रही है॥

पाठक समझते होंगे कि आज उनके यहां कोई उत्सव होगा। पर नहीं, न वहां आज किसी का निमन्त्रण है न गाने बजाने की आवाज ही आ रही है बल्कि उसके बदले वहां चारो ओर सन्नाटा छाया हुआ है। नौकर चाकर वहीं चार-पाई से आते जाते समय दर्वाजा बन्द करते हैं तथा किसीसे बात करने की जरूरत पड़ने पर बहुत ही धीरे २ बोलते हैं॥

आज अलतमूरा के मार्कुइस (जमीदार) की रूपवती स्त्री को लड़का होने वाला है, इसी कारण से उसके भाई बन्धु तथा दास दासी भविष्यत अधिकारी का मुंह देखने की इच्छा से वहां बैठे हैं॥

तब क्या मार्कुइस को इस बात की प्रसन्नता न होगी? क्या वह अपनी प्रियतमा के प्रेमलतिका का पहिला फल देखने के लिये न उत्सुक होगा? क्या इस समय उसके हृदय की कली आनन्द से खिल न उठी होगी?

नहीं। जिस कोठड़ी में उसकी स्त्री दर्द से व्याकुल पड़ी थी उसके बगलवाली कोठड़ी में वह चुपचाप अकेला बैठा हुआ था। उसने अपने पास से सब आदमियों को हटा दिया था, यहां तक कि उसने अपने पास एक नौकर को भी न रहने दिया था। कभी कभी वह अपनी भौंहों को दोनों हाथों से दबा लेता था उस समय उसके चेहरे से बड़ी भारी चिन्ता झलकने लगती थी। बैठा बैठा वह उठ खड़ा हुआ और आप ही आप बोलने लगा—"हा परमेश्वर! मेरे भाई बन्धु तो समझते होंगे कि मैं इस समय बड़े आनन्द में होऊंगा, वे मेरे हृदय की चिन्ता को क्या जानते हैं! वह तो मेरे सुख से सुखी और दुःख से दुःखी हैं। परन्तु मेरी क्या दशा हो रही है यह ईश्वर ही जानता है। मन में दुःख रहने पर भी बाहर हँसता हुआ चेहरा बनाकर ही जाना पड़ता है! इससे बढ़ कर दुःख की कौन सी बात हो सकती है! मैं बड़ा मूर्ख हूं। मैंने व्यर्थ ही लिउमारा से शादी की! पर क्या करता, जवानी की अवस्था रहने के कारण उस समय मेरा हृदय प्रेममय हो रहा था। उस

समय मुझे मानो कुछ सूझता ही न था। अहा! लिउनारा का भी कैसा सच्चा प्रेम है, उसी प्रकार मैं भी उसे मानता हूं॥"

जब तक मार्कुइस का ध्यान लिउनारा के प्रेम की तरफ था तब तक तो वह आनन्दित रहा पर तुरत ही उसे चिन्ता ने फिर घर दबाया और वह ज़ोरसे कहने लगा "क्या मेरे भाग्य में यही लिखा हुआ है? ईश्वर क्या इतना दण्ड देने पर भी शांत न हुए होंगे? क्या मेरी वंशावली इस दारुण शाप से मुक्त हो जायेगी? नहीं नहीं, अभी यह भविष्यतवाणी पूरी नहीं हुई है। मेरे पुरखों के पाप का अभी तक प्रायश्चित नहीं हुआ है। क्या यह अभागा चिन्ह मेरे घर में प्रगट होनाही चाहता है? यदि लड़की हुई तब तो बेशक उस शाप का कोई डर नहीं पर यदि लड़का हुआ तो? तब तो बेशक उसकी भी वही दशा होगी जो बराबर से होती आई है। पुरुषों पर ही विधाता का कोप है स्त्रियों पर नहीं। निर्दयी शाप एक मनुष्य पर आक्रमण कर दूसरे तीसरे को छोड़ देता है फिर चौथे पर टूट पड़ता है। मेरे दादा ने इसे भोगा है पर मेरे पिता और मैं बच गया। अब इस चौथे पुरुष की बारी है, वह कभी भी इससे छुटकारा नहीं पा सकता॥"

मार्कुइस की चिन्ता में बाधा पड़ी। उसी समय एक मनुष्य उस कमरे में चला आया। इस आगन्तुक के कपड़े भड़कीले न थे पर सादी चाल के साने वस्त्र वह पहिने हुए था। इसको देखते ही मर्सिक प्रसन्न होती थी क्योंकि इसके मुंह पर दया और बुद्धिमानी के चिन्ह झलक रहे थे॥

इसके कमरे में आते ही मार्कुइस उठ खड़ा हुआ और

झपट कर उसका हाथ धर कर बोला "डाक्टर! प्रिय डाक्टर टेस्पेलो! कहो क्या हाल है? जल्दी बताओ॥"

डाक्टर०। (कोमल स्वर से) कुछ भी नहीं। अभी आधे घंटे की देर है॥

मार्कुइस०। आधा घंटा! आह डाक्टर! तुमने क्या कोई भेद छिपा रक्खा है? तुम तो मेरी वंशावली के दुर्भाग्य का हाल जानते ही हो! अब बताओ......... ....

मार्कुइस का दुःख देखकर डाक्टर की आंखों में आंसू आ गया। वह बहुत करुणस्वर से बोला "प्रिय जूलियन! शान्त हो। तुम्हारी चिन्ता झूठी है। सम्भव है कि जैसा तुम विचारते हो वैसा न हो॥"

जूलियन०। (हताश स्वर से) नहीं नहीं डाक्टर! यह मेरी भूल या खयाल ही नहीं है। यह सत्य है। आज तक इसके बहुत से प्रमाण मिल चुके हैं। आह! मालूम होता है अभी तक तुम्हें मेरी बातों पर विश्वास न हुआ॥

इतना कह कर वह उठ खड़ा हुआ और डाक्टर का हाथ धर कर बोला "मेरे साथ आओ, मैं तुम्हें अब अच्छी तरह समझा दूंगा।" और उसे लिये हुए एक कमरे में चला गया॥

उस कमरे के एक तरफ तो बड़ी बड़ी दो खिड़कियां थीं और दूसरी तरफ लम्बे लम्बे आदमकद की पन्द्रह तस्वीरें लगी हुई थीं जिनके चेहरे कुछ न कुछ जरूर मिलते थे। परन्तु इन चित्रों में से पहिले और आखिरी इन्हीं दो चित्रों पर हमलोगों को ध्यान देना चाहिये॥

पहिली तस्वीर एक योद्धा की थी जो फौजी वस्त्र से अपने

के सजे हुए था। बगल में गद्दीपर उसकी तलवार रक्खी हुई थी। काली काली आखों से निर्दयता झलक रही थी तथा चेहरे पर अहंकार दिखाई देता था। आखिरी तस्वीर एक सुन्दर युवा की थी, जिसके काले काले घुंघराले बाल उसके ललाट तक लटक रहे थे। बड़ी बड़ी काली आंखों से दयालुता और सज्जनता झलक रही थी। नाक खड़ी थी और छोटी २ मूछें उसके ऊपरी होंठ के ढके हुए थीं॥

पहिली तस्वीर के देखने से हृदय में जितना भय और घृणा उत्पन्न होती थी आखिरी के देखते ही उतनाही आनन्द और श्रद्धा उत्पन्न होती थी॥

जूलियन०। डाकृर! मुझे यह कहने की कोई ज़रूरत नहीं दिखाई देती कि ये ही पन्द्रह मनुष्य ब्ललमूरा के प्रधान २ हैं क्योंकि तुम मेरे साथ कई बार इस कमरे में आ चुके हो। पर यह तो बताओ कि इन तस्वीरों में से कई तस्वीरों पर काले टेढ़े निशान जो पड़े हुए हैं, क्या कभी इनपर भी ध्यान दिया था?

डाकृ०। (गैार से तस्वीरों की तरफ देख कर) ठीक है, मैंने अभी तक इन निशानों पर ध्यान न दिया था॥

जूलियन०। आओ, हमलोग घूम घूम कर तस्वीरों को अच्छी तरह देखें। (पहिली तस्वीर दिखा कर) देखो, यही जरमिमो हमलोगों के पहिले वंशधर हैं, यही ब्ललमूरा के पहिले मार्कुइस हैं, इन्हीं के कठोर पाप से मेरे वंशपर यह आपत्ति आई है, येही इस श्राप की जड़ हैं। देखो इनपर भी यह काला निशान दिया हुआ है॥

डाक्टर०। (कांप कर) क्या अपने वंश वालों की भांति इन्होंने भी उस शाप को भोगा है?

जूलियन०। हां हां, विधाता का पहिला कोप इन्हीं पर हुआ। अच्छा यह देखो, यह दूसरी तसवीर ऐल्वर्ट तथा तीसरी लीवरियो की है। ये दोनों इस शाप से बचे हुए थे पर देखो इस चौथी पर भी वही निशान है इसका नाम रुड-लफो है। इसके बाद फ्रेडरिको और फर्नन्दो ने भी इससे छुट्टी पाई पर यह देखो मार्को फिर उसी शाप में गिरफ़्तार हुआ। यह सातवां वंशधर था। तब कौस्मो और ऐलेक्जेन्ड्रो भी बच गये पर दसवां वशंधर येगरी न बच सका। उसके बाद स्टेफानो और गनसलवो भी मेरे ही भांति बच गये पर लूडो पर फिर उसी पाप का फल फला॥

डाक्टर०। लूडोलो तुम्हारे दादा थे?

जूलियन०। हां, यह इस शाप ही के कारण सब धन सम्पत्ति मेरे पिता को सौंप न जाने कहां चले गये। आज तक उनका पता नहीं लगा है॥

डाक्टर०। तुम्हारे पिता मेरे बड़े दोस्त थे॥

जूलियन०। हां, यह मैं जानता हूं। अब देखो, यह व्याधि एक मनुष्य पर प्रगट होती है फिर दो को छोड़ कर तीसरे पर आक्रमण करती है। इसी तरह बराबर होता चला आया है। तुम देखो कि मेरे दादा के बाद मैं और मेरे पिता यह दोनों पुरुष तो बच गये पर अब मेरा लड़का कदापि बच नहीं सकता॥

जूलियन की बात तथा तस्वीरों को देख कर डाक्टर

का कलेजा कांप उठा और वह चुप हो गया॥

डाकृर को चुप देख कर जूलियन फिर बोला "देखा डाकृर! क्या अब भी तुम्हें कोई आशा है? मेरी समझ से तो यदि लड़का होगा तो..........."

डाकृर०। (बात काट कर रंज के साथ) फिर वही उपाय किया जायेगा जो बिचारा है॥

जूलियन०। पर जो धाय रक्खी है वह तो किसी से यह भेद न खोल देगी? क्या तुम्हें उसपर पूरा २ विश्वास है?

डाकृर०। हैम जूलिया पर मेरा पूरा २ विश्वास है॥

जूलियन०। और तुम्हारा भाई आड्री?

डाक्टर०। मेरी ही भांति तुम उसपर भी विश्वास रक्खो॥

जूलियन०। तुम्हारे ऊपर मेरा कितना विश्वास है यह तो तुम जानते ही हो। अब मेरी एक बात का और जवाब दो कि यदि यह लड़का ही हुआ तो...... ......

डाक्टर०। (बात काट कर) मैं समझ गया, अब अधिक कहने की जरूरत नहीं है। तुम निश्चिन्त रहो, मैं यह भेद तुम्हारी स्त्री पर प्रगट न होने दूंगा॥

जूलियन०। बस बस, मेरा यही मतलब था, मैं इसी विचार से बराबर दुखी रहता हूं। हाय! मैं उसे अपने हाथ से मार कर फिर आत्मघात करने को तैयार हूं पर उसे इस पाप का, इस भयंकर पाप का एक शब्द भी नहीं सुनाया चाहता॥

डाक्टर०। (एक छोटी सी शीशी दिखा कर जिसमें पानी की तरह कोई अर्क था) देखो, इसमें जो अर्क है उसका

एक बूंद ही दिखा देने से मनुष्य बेहोश हो जावेगा और कोमल से कोमल कलेजे वाले को भी कोई हानि न पहुंचेगी॥

"बहुत अच्छा" कह कर जूलियन डाक्टर का हाथ पकड़े हुए फिर उसी कमरे में चला आया जहां पहिले था॥

इसी समय कमरे का दरवाजा खुला और जूलिया ने आ कर कहा "समय हो गया, शीघ्र चलिये॥"

डाक्टर। जूलियन! धीरज धरो, ईश्वर पर भरोसा रक्खो, वही तुम्हें इस विपत्ति से बचावेगा॥

जूलियन। (रो कर) आह! सिवाय धीरज के और किसका सहारा है! ईश्वर ही जानता है कि मैं अपना हृदय कितना कड़ा किये हुआ हूं॥

डाक्टर ने फिर कोई जवाब न दिया। वह जल्दी से कमरे के बाहर चला गया। उसके बाहर निकलते ही जूलियन ने अपने दोनों हाथों से अपनी आंखें छिपा लीं। उसके कंठ से आर्तध्वनि निकलने लगी॥

दूसरा परिच्छेद।

कुछ ही देर बाद जूलियन उठ खड़ा हुआ और कमरे में टहल कर अपने चित्त को धीरज देने लगा। वह बोला "ओफ! मेरे हृदय की यह दुर्बलता ठीक नहीं है। इस बात को मुझे आज सात वर्ष के लगभग हो गए जब मेरे पिता ने मृत्युशय्या पर पड़े पड़े यह भेद मुझे बताया था। उस समय उन्होंने ज़ोर देकर कहा था कि कभी साहस और धीरज का पल्ला न छोड़ना तथा ऊपरी प्रसन्नता के ढंकने से सदैव इस दुःख को ढंके रहना। बहुत दिनों तक मैंने उनकी आज्ञा का पालन किया पर फिर जवानी की तरङ्ग में गोता खा गया और विवाह कर बैठा। अब उसी प्रेम का परिणाम कैसा दुःखदायी हुआ है। हा! क्या ईश्वर अब भी दया न करेंगे? क्या मैं भी अपने पुरखों के किये हुए पाप का फल भोगूंगा? हा! अब मैं क्या करूं? (चौंक कर) ईश्वर की न्यायपरायणता तथा दयालुता में सन्देह करना भी पाप है॥"

जूलियन के इस विचार में बाधा पड़ गई। दरवाज़ा खुल गया और डाक्टर टेम्पलो कमरे में आता दिखाई दिया॥

जूलियन ने डाक्टर को निराशा, दुःख तथा सन्देह की दृष्टि से देखा। उसने बोलना चाहा पर मुंह से आवाज़ न निकली, मानो उसका कंठ सूख गया था और जीभ ऐंठ गई थी॥

डाक्टर से उसकी यह दशा देखी न गई। वह बड़े प्यार से बोला "प्यारे जूलियन। ईश्वर ने तुम्हें सुख दुःख दोनों दिखाया है॥"

जाकर अपने भाई बन्धु और दोस्तों से कहना चाहिये कि मुझे लड़की हुई है॥

जूलियन०। (कुछ सोच कर) डाक्टर! जरा ठहरो। भविष्यतवाणी से कुछ आशा भी टपकती है। सम्भव है कि इसी लड़के की जिन्दगी में मेरा वंश इस आप से छुट्टी पावे। उस समय के लिये मैं एक ऐसा चिन्ह क्यों न बना दूं जिससे ये दोनों भाई बहिन एक दूसरे को पहिचान सकें?

डाक्टर०। (जोर देकर) अवश्य। इसमें देर न करो॥

जूलियन घबड़ा कर चारो ओर देखने लगा मानो वह कोई चीज खोज रहा है। यकायक उसका ध्यान अपने गले की माला पर गया सो ऐसी चतुराई से बनाई गई थी कि एक जगह जोड़ पर दो तोते बने हुए थे जिनकी चोंचें आपस में एक दूसरे से मिल जाती थीं और जब वह जोड़ खोला जाता था तब एक की चोंच एक तरफ और दूसरे की दूसरी तरफ रह जाती थी। उसने गले से माला निकाल कर दो हिस्सों में बांट दी, अब हरएक तरफ एक चोंच और एक हीरे की आंख रह गई। उसने एक टुकड़ा अपनी जेब में रख लिया और दूसरा डाक्टर को देकर कहा "इसे लड़के के गले में पहिना देना और ताकीद कर देना कि यह इसके गले से कभी निकाला न जाये॥"

डाक्टर०। ऐसा ही होगा। पर क्या तुम इस निरपराध त्यागे हुए लड़के को एक बार भी नहीं देखा चाहते?

जूलियन०। (कांप कर) हां, एक बार तो अवश्य इस त्यागे हुए लड़के को देखूंगा॥

डाक्टर ने अपने कोट के नीचे से एक डबिया निकाली जिसमें फलालैन में लपेटा हुआ एक छोटा रत्न था॥

मूर्तिकार। (प्रसन्नता से) सुन्दर! बहुत ही सुन्दर। इतना कहने के साथ ही उसका खयाल बदला और वह दुःखित स्वर से बोला "ले जाओ, इसे हटाओ मेरे सामने से। आह! ——"

डाक्टर। (गम्भीरता से) धीरज! धीरज धरो॥

इतना कह कर डाक्टर जल्दी जल्दी वहां से चला। इस समय जिस राह से वह चला था उधर वही गिरजाघर था। गिरजाघर के बाद दुरकू और दुरकू के बाद फिर बाग में हो कर बाहर निकलना पड़ता था। ज्योंही उसने गिरजाघर में पैर रक्खा त्योंही वहां एक धमाके की आवाज सुनाई दी, वह चौंका और घूमने पर उसने देखा कि अल्टमुरा के पहिले मार्कुइस अन्टानिओ की तस्वीर जमीन पर पड़ी हुई है। वह यह सोचने के लिये कि तस्वीर क्यों गिरी है वहां न ठहरा बल्कि तेजी से आगे बढ़ा क्योंकि उसे उस लड़के के पास पहुंचने का डर था। उस गिरजाघर के बाद ही उसे दुरकू मिली जिसमें गिरजाघर के लैम्प की धुंधली रोशनी पड़ रही थी। डाक्टर साहसी रहने पर भी डरा क्योंकि वह जानता था कि इन सीढ़ियों को उतर कर उसी जगह से जाना पड़ेगा जहां कि वह घोर पाप हुआ है जिसका भीषण फल अल्टमूरावाले अभी तक पा रहे हैं। वह बड़ी तेजी से सीढ़ियों पर ईश्वर से दया भिक्षा मांगता हुआ, एक हाथ से टटोल टटोल कर उतरने लगा और दौड़ता हांफता वहां से बाहर बाग में निकला और फिर बाग

को पार करके सड़क पर आ पहुंचा॥

रात अंधेरी थी और बदली के कारण से और भी अंधेरा छाया हुआ था, सर्दी खूब पड़ रही थी तथा उसे अभी बहुत दूर जाना था। कारणवश कोई गाड़ी भी नहीं किराया कर सकता था। यद्यपि जूलियन के कारण से डाक्टर को यह कष्ट भोगना पड़ा था तथापि उसे इस बात का रत्ती भर भी खयाल न था बल्कि वह जूलियन के लिये समय पर प्राणतक देने को तैयार था॥

डाक्टर घंटे भरतक बराबर चला गया और अन्त में एक मकान के बड़े फाटकपर जाकर खड़ा हो गया। उसने दरवाजे में धक्का दिया, तुरत ही हाथ में लम्प लिये हुए एक आदमी ने आकर दरवाजा खोल दिया और कहा—"जल्द भीतर आओ, मैं बड़ी देर से तुम्हारी राह देख रहा था॥"

डाक्टर के भीतर चले जाने पर ज्योंही दरवाजा बन्द हुआ त्योंही एक आदमी और उसी दरवाजे पर आकर खड़ा हो गया और जोर से पुकार कर पूछने लगा—"क्या आद्री टेस्पेनो का यही मकान है?"

डाक्टर के आने पर जिसने दरवाजा खोला था वही फिर खोल कर बोला—"हां, मैं ही वह मनुष्य हूं जिसे तुम खोजते हो। (मन्द को आगन्तुक की तरफ करके) क्या तुम फिलिपा के पति हो?"

उस आगन्तुक ने कहा—"हां" और वह तुरत भीतर बुला लिया गया॥

~~~~~
~~~~~

तीसरा परिच्छेद।

जब कि ड्राट्री टेस्पेलो उस आगन्तुक से बातें कर रहा था उस समय डाक्टर लड़के को लिये हुए एक कमरे में चला गया॥

यह कमरा अच्छी तरह सजा हुआ था। यहां की सभी चीज़ें बहुमूल्य और सुन्दर थीं। खिड़कियों पर मखमली पर्दे पड़े हुए थे और दीवारों में योद्धाओं की तथा बादशाहों की बड़ी बड़ी तसवीरें लगी हुई थीं। यहां एक चांदी का लम्प जल रहा था जिसकी नीली रोशनी बहुत अच्छी मालूम होती थी और एक मसहरी भी बिछी थी जिसपर डाक्टर ने उस लड़के को लेजा कर सुला दिया। तुरत ही उसका भाई भी वहां आ गया, जो उस आगन्तुक को एक दूसरे कमरे में बैठा आया था और उस लड़के की ओर देख कर बोला—"क्या वही बात हुई जिसका डर था?"

डाक्टर०। नहीं तो मुझे यहां आने की ज़रूरत ही क्या थी?

ड्राट्री ने टेबल पर रक्खी हुई घंटी बजाई। तुरत ही एक मज़दूरिन चुपचाप उस कमरे में आई और बिना कुछ पूछे ही उसने चारपाई के पास जाकर उस लड़के को उठा लिया॥

डाक्टर०। ज़रा ठहरो, यह माला लो और इसे इस लड़के को पहिना दो। याद रक्खो कि किसी तरह पर यह माला सदैव इसके गले में पड़ी रहे तथा इसका नाम पाइटम हिवनस रक्खा जाय॥

ड्राट्रीः। आप की आज्ञा अक्षरशः पालन की जावेगी

(दाई की ओर देख कर) अच्छा अब तुम जाओ॥

यह दाई उस कमरे से लड़के तथा माला को लिये बाहर चली गई॥

डाक्टर०। आर्ट्री! देखो मैं तुम्हें पहिले भी कह चुका हूं और फिर भी कहता हूं कि एक भद्रवंश की मान मर्यादा इस समय तुम्हारे हाथ में सौंपी जाती है। ऐसा न हो कि इस भेद का एक अक्षर भी तुम्हारे मुंह से बाहर निकल पड़े। इस बालक का जन्म वृतान्त कभी किसी से न कहना। जब ज़रूरत पड़ेगी तब यही वृतान्त और माला इसे अपने पिता के पहिचानने में सहायता देगी। सम्भव है कि ईश्वर का कोप इस लड़के के जीवन ही में दूर हो जाय॥

आर्ट्री०। पर ऐसा तो नहीं हो सकता। लड़का जन्म से......

डाक्टर०। (बात काट कर) ऐसा न कहो। ईश्वर को सब कुछ सामर्थ है॥

आर्ट्री०। पर हमलोगों का चिकित्सा शास्त्र तो यही कहता है कि प्रकृति के विरुद्ध करना परमेश्वर की सामर्थ के भी बाहर है। यह सब नियम के आधीन हैं। एक बार जन्म से ही तो होगया वह.........

डाक्टर०। अच्छा, हमें बहस करने की कोई ज़रूरत नहीं है॥

आर्ट्री०। मैं आप का हर तरह से ऋणी हूं, मैं आप से बहस नहीं किया चाहता॥

डाक्टर०। (गम्भीरता से)यदि तुम अपने कोमेरा ऋणी समझते हो तो तुम्हें मेरी आज्ञा पूरी तरह पालन करनी

चाहिये। जिस लड़के को मैंने आज तुम्हें सौंपा है, उसका गुप्त रहस्य इस समय केवल चार ही मनुष्य जानते हैं। मैं, उसका पिता, हेम जूलिया तथा चौथे तुम। मैं फिर भी तुमसे कहता हूं कि किसी प्रकार इस भेद को अपने मुंह से बाहर न निकलने देना जिसमें कोई इस बात पर सन्देह भी न कर सके कि लड़के का पिता कौन है॥

आट्री०। मैं कभी इस भेद का एक अक्षर भी अपने मुंह से न निकालूंगा। क्या तुम मुझपर विश्वास नहीं करते?

डाकूर०। यदि मैं तुमपर विश्वास न करता तो यह भेद तुम्हें कहता ही क्यों? पर भाई! बात जरा टेढ़ी है इसीसे बार बार तुम्हें समझाता हूं। अच्छा, अब मेरी बात सुनो। जूलियन की इच्छा है कि यह लड़का बड़े लाड प्यार से पाला जाये। धन व्यय करके जो चीज मिल सके इसे ला देने या दिला देने में किसी तरह की त्रुटि न की जाये। इसके लिये तुम्हें साल में ५०० गिनी मिलेंगी। यद्यपि इतने रुपये की कोई जरूरत नहीं है तथापि मैंने तुम्हारे लाभ के लिये यह राह कर दी है। आट्री! तुम्हें मैं एक बार फिर भी कहता हूं कि भाई की प्रीति के कारण मैं इस लड़के को तुम्हें सौंपता हूं। जवानी की तरङ्ग में जो कुछ धन तुमने उड़ाया है उसको पूरा करने का यह एक अच्छा रास्ता मिल गया है परन्तु ध्यान रक्खो कि इस अभागे लड़के को किसी बात का अभाव न होने पावे न वह यही खयाल कर सके कि मैं बिना मां बाप का हूं॥

इस बात को सुनतेही आट्री का चेहरा लाल होगया क्यों-

कि डाक्टर ने इस समय उसे उसके पिछले कुकर्म याद दिलाये थे। पर तुरत ही अपने हृदय के इस भाव को छिपा कर वह बोला "भाई साहब! आप निश्चिन्त रहें। मेरे ऊपर आपने जो कृपा की है उसके लिये आपको पछताना न पड़ेगा। मैं अब बिलकुल बदल गया हूं, मेरे कर्म भी साथ ही बदल गए हैं। पलोरेंस में रह कर मेरी जो दशा हो गई थी, मैं दिनो-दिन जिस खराब रास्ते पर झुका जाता था, यदि आप उस राह से मुझे खींच न लाते तो आज मेरा कोई ठिकाना न रहता। उसी समय से मेरी आंखें खुल गईं, मेरे जीवन का स्रोत अब दूसरी ही तरह बहने लगा, यहां आकर मेरी अच्छी उन्नति हुई है। यह सब आप ही की कृपा का फल है। आपको शत शत धन्यवाद है॥"

डाक्टर सरल चित्त का मनुष्य था, उसने इस बात पर कुछ भी ध्यान न दिया कि उसका भाई जिस भाव से इतनी बातें कह गया है उस भाव का चिन्ह उसके चेहरे पर बिलकुल ही दिखाई न दिया बल्कि इसके बदले उसके चेहरे पर क्रोध और घृणा दिखाई दे रही है॥

डाक्टर। बीती हुई बातों को बिसार दो। उन बुरे दिनों की बातें अब न निकालो। कारणवश तुम जिन बातों के लिये मेरे ऋणी हो उन सब ऋणों से मैं आज तुम्हें मुक्त करता हूं। मैं जिस समय तुम्हें पलोरेंस से यहां ले आया था और तुम्हें मकान इत्यादि दिलवा कर यहां बैठाया था उस समय मैं जानता था कि कई रोगों की दवा तुम अच्छी तरह कर सकते हो। मेरी वह आशा जो मैंने की थी निःसन्देह फली

और तुमने यहां अच्छा नाम पैदा किया। इतने थोड़े दिनों में ही तुम अपनी उन्नति कर लोगे यह मुझे स्वप्न में भी गुमान न हुआ था, पर उस परमात्मा की कृपा से अब तुम यहां के राजा रौबर्ट एंजूर के सहायक शरीर चिकित्सक………………

मन में चाहे जो हो पर मुंह से कृतज्ञता दिखाता हुआ आर्द्री बात काट कर बोला "यह भी आप ही की कृपा का फल है॥"

डाक्टर०। पहिले मैं ही उस पद के लिये चुना गया था पर मुझे वह पसन्द न आया और मैंने इन्कार कर दिया तब मैंने तुम्हारे लिये वहां प्रार्थना की और ईश्वर की कृपा से मेरी प्रार्थना सुन ली गई। अच्छा, यह देखो (एक कागज अपने जेब से निकाल कर) जो कुछ मैंने आज तक तुम्हें दिया था, जो कुछ ऋण था, इन सब से आज मैं तुम्हें मुक्त करता हूं। इतना कह डाक्टर ने वह कागज फाड़ कर अपने भाई के हाथ में दे दिया। आर्द्री भी जहां तक उससे बन पड़ा कृतज्ञता स्वीकार करने लगा पर डाक्टर ने उसकी बातों पर कोई ध्यान न दिया और उठ कर चला गया॥

आर्द्री डाक्टर के चले जाने पर आप ही आप कहने लगा "मूर्ख, महा मूर्ख! यह मुझे सिखाने आया था मानो मैं अभी बच्चा हूं। मैं चालीस बरस का हो गया अभी इसके मानने बुद्धि ही नहीं है, मालूम होता है यह कुछ सनक गया है इसी से मुझे शिक्षा देने आया था। यह समझता है कि मैंने ही उसे बुरी राह से बचाया है। बात तो ठीक है पर इस में उसने बड़ाई क्या की? जो भाई का कर्तव्य था किया। चाहे

जो हो, मैंने भी बात बनाने में कोई कसर नहीं की। उससे मिल कर रहने ही से मेरा कल्याण होगा तथा संसार भी मुझे अच्छी दृष्टि से देखेगा। उसका दूसरा संसार में कौन है, न लड़का न लड़की, फिर तो उसका धन मेरे ही हाथ लगेगा। पर कहीं मैं पहिले ही मर गया तब-नहीं ऐसा नहीं हो सकता॥"

वह कुछ देर तक उसी कमरे में टहलता रहा। यकायक उसे उस आगन्तुक का खयाल आ गया और वह अपने चेहरे के भाव को सँभालता हुआ उस कमरे में चला गया जहां वह उस आगन्तुक को जो एक गरीब आदमी मालूम होता था और मजुओं सा कपड़ा पहिने हुआ था, बैठा आया था। उसकी उम्र तीस वर्ष के लगभग की थी तथा देखने में सुन्दर मालूम होता था॥

उस आगन्तुक के पास ही एक मसहरी बिछी हुई थी जिस पर एक तीन चार दिन का जनमा लड़का सुलाया हुआ था। जिस समय आद्री उस कमरे में पहुंचा उस समय वह उस लड़के की ओर देख रहा था॥

आद्री वहां पहुंचते ही बोला "लूपो। मैं तो भूल ही गया था, तुम बहुत देर करके आये, मैंने तुम्हारी स्त्री से कह दिया था कि आधी रात तक मैं तुम्हारी राह देखूंगा॥"

लूपो। क्षमा कीजिये। कई कारणों से मुझे आने में देर होगई। (अपना एक कोट दिखा कर जो इस समय उतार कर उसने रख दिया था) मैं आपसे सच सच कहता हू कि इसी कोट के कारण मुझे देर हुई क्योंकि मेरा एक दोस्त जिसका यह कोट है बाहर गया हुआ था, जब वह आया तब मैं यह

कोट उसके पहिरने के लिये लेकर यहां आया हूं और आप ही आप यह भी विचार सकते हैं कि मेरे ऐसे गरीब आदमी के लिये एक लड़के को लेकर इतनी रात को घर से निकलना कितना कठिन है विशेष करके लड़के की यह अवस्था देख कर पुलिसवाले निःसन्देह मुझे पकड़ लेते। आशा है, इन सब कारणों से देर होजाने के कारण आप मुझे अवश्य क्षमा करेंगे॥

आद्री०। कोई चिन्ता नहीं। तुम्हें बेशक सावधानी से आना चाहता था। मैं इस लड़के को अपने यहां रक्खूंगा, शायद तुम्हारी स्त्री ने यह बात तुमसे कही हो॥

लूपो०। हां, साथ ही उसने यह भी कहा था कि आप कल मेरे यहां पधारे थे जब मैं मछली मारने गया हुआ था और इस अभागे लड़के पर दया करके अपने यहां रखने का आपने वचन दिया था। अब मैं अधिक क्या कहूं, मेरी दशा तो आपको मालूम ही है, मैं तो आपकी इस दया के बदले कुछ भी नहीं दे सकता पर ईश्वर आपका सब तरह से मङ्गल करें, यही मेरी प्रार्थना है॥

आद्री०। मनुष्य का कर्तव्य यही है कि एक दूसरे की सहायता करे॥

लूपो०। आह! यदि सब कोई ऐसा ही विचारें तो फिर किसी को कष्ट ही क्यों हो। मैंने सुना है कि हमलोगों के राजा रौबर्ट एंजूर एक सदाशय और सज्जन पुरुष हैं, पर उसके वंश के और२ धनवान लोग कितना उत्पात करते हैं, कह नहीं सकता। हमलोगों की स्त्रियां, लड़कियां, तथा बहिनें खूबसूरत होने के कारण छीन ली जाती हैं और पापियों की पाप-

वासना पूरी होती है। जिस समय सुबह को घर से मछली मारने बाहर जाता हूं उस समय से संध्या तक यही खयाल मनको डवांडोल किये रहता है कि देखूं घर जाकर किलिया को देखता हूं या नहीं। आपने भी देखा ही होगा कि मेरी स्त्री बदसूरत नहीं है॥

आद्री०। हां देखा है, तुम्हारी स्त्री अत्यन्त सुन्दरी है इसीलिये लोग उसे "गुलाब" कह कर पुकारते हैं॥

लूपो०। उसके भाई बहिन उसे इसी नाम से पुकारते हैं, पर इससे मुझे कोई आनन्द या दुःख नहीं होता। मैं जानता हूं कि उसके मनमें अपनी सुन्दरता का अभिमान है तथा उसे अपने कपड़े लत्ते की तरफ़ बड़ा ही खयाल है। जो कुछ हो ऐसी स्त्री पाकर मैं बड़ा आनन्दित हुआ। रविवार के दिन जब मैं अपनी स्त्री तथा लड़के को लेकर गिर्जाघर जाता हूं तो उस समय वह बहुत ही भली मालूम होती है॥

आद्री०। तुम्हारी स्त्री स्वामीभक्त भी है, तुम्हारे पड़ोसी लोग भी उसकी बड़ाई करते हैं। उसीने सहायता करने के लिये अपने एक मनुष्य द्वारा मुझे कहला भेजा था इसीसे मैं कल तुम्हारे यहां गया भी था। दुष्टों की मैं कभी सहायता नहीं करता॥

लूपो०। ऐसा ही चाहिये। पर अब बड़ी देर हो गई अब मुझे आज्ञा दीजिये। इसके बाद उस सोते हुए बच्चे की ओर देखकर रोता २ बोला "हाय! अभागे लड़के! तुम्हें अपने यहां रखना मेरी सामर्थ्य के बाहर है। इसीसे मैं तुम्हें दूसरे के हाथ में सौंपता हूं।" उसकी आंखों से आंसू की धारा

बहने लगी और आद्री उसे समझाने लगा॥

आद्री०। तुम्हारा लड़का यहां अच्छी तरह रक्खा जायेगा तुम निश्चिन्त रहो॥

लूपो०। हां, यह तो मैं जानता हूं॥

यह कह कर लूपो आंसू पोंछता हुआ एक बार फिर अपने लड़के को देखकर वहां से चला गया॥

चौथा परिच्छेद।

इन सब बातों को बीते तीन महीने हो गये। इस समय समुद्र के किनारे एक झोपड़े के बाहर तीन मनुष्य बैठे हैं। उनमें एक लूपो दूसरी उसकी स्त्री तथा तीसरा उसका एक छः वर्ष का लड़का है। लड़का बड़ा सुन्दर है। वह देखने ही से किसी बड़े कुल का मालूम होता है॥

फिलिपा की उम्र २२ या २३ वर्ष की है किन्तु देखने से वह अठारह वर्ष की युवती मालूम होती है। उसके सब अंग सुन्दर, सुडौल तथा सांचे में ढलेसे दिखाई देते हैं। उसके वस्त्रों पर ध्यान देने से वह मछुए की स्त्री नहीं मालूम होती॥

लूपो अपनी स्त्री को बहुत ही प्यार करता है। उसी प्रकार उसकी स्त्री भी उसे मानती है क्योंकि वह सुन्दर पुरुष है। पर यदि कोई लूपो से अधिक सुन्दर मनुष्य फिलिपा को अपने वश में करना चाहे तो वह उसे सहज ही अपने वश में कर सकता है क्योंकि फिलिपा रूप की भूखी है, धन ऐश्वर्य

और विलासिता की भूखी है न कि प्रेम की। मेरे इस उपन्यास में फिलिपा का वर्णन अधिक आयेगा इसलिये उसके स्वभाव-चरित्र तथा और और बातों को अच्छी तरह खोल देना ही उचित जान पड़ता है। उसके हृदय में बड़ी लालसा, ऊंची ऊँची आकांक्षा तथा प्रबल कामपिपासा और असंतोष अपना अधिकार जमाये हुए हैं। लूपो यद्यपि सुन्दर और सुशील पुरुष है तथापि वह फिलिपा की सब इच्छाओं को पूरा नहीं कर सकता। यदि लूपो को छोड़ने पर उसकी ऊंची २ आशायें पूर्ण हों तो वह तुरत उसे छोड़ देने के लिये तैयार है॥

रविवार के दिन जब लूपो गिर्जाघर में जाता उस समय बहुतसी सुन्दर स्त्रियां उसे आंखें फाड़ फाड़ कर देखती थीं। उसकी सुन्दरता, उदारता तथा दृढ़ता देख कर हजारों स्त्रियां फिलिपा के भाग्य को सराहती थीं। फिलिपा यह सुन सुन कर तथा देखकर फूली न समाती थी। पर जब लूपो मछली मारने के लिये तथा और किसी कारण से कहीं बाहर जाता तब फिलिपा बैठी बैठी बड़े बड़े मकानों की ओर देखती और ललचती थी॥

पुत्र पर माता का जैसा स्नेह रहना चाहिये वैसा उसमें न था। वह अपने पुत्र रोबर्ट को कभी अच्छी शिक्षा न देती थी पर अपनी ही तरह ऊंची ऊंची आशायें उसे दिलाती थी। उसके अपराध करने पर भी कभी उसे दंड नहीं देती न कभी अच्छी बातें ही सिखाती थी॥

फिलिपा जितनी सुन्दर थी उतनी ही स्वभाव से भयंकर भी थी। उसके हृदय में सब तरह के पापों के बीज बोये हुए

थे केवल संसार के डर से उन बीजों में अंकुर नहीं जमने पाता था। उसके पड़ोसी उसकी बड़ी तारीफ़ करते थे क्योंकि वह जितनी क्रूर थी उतनी ही बुद्धिमती भी थी॥

लूपो बोला—"देखो तो इस चांदनी रात में यह दृश्य कैसा अच्छा मालूम होता है॥"

फिलिपा०। पर तुरत ही इसकी रंगत बदल भी सकती है। यही विचारकर मैं दुःखी रहती हूं॥

लूपो०। इन धनवानों के ये मकान नष्ट हो जायेंगे क्या इसी का तुम्हें दुःख है? क्या तुम नहीं जानती हो कि जिस समय विसूवियस ज्वालामुखी से आग बरसने लगेगी उस समय बड़े बड़े मकानों से लेकर छोटे छोटे झोपड़े तक जलकर राख हो जायेंगे?

फिलिपा०। संभव है। पर स्वामी! यह देखो ये बड़े २ मकान कैसे सुन्दर हैं उनके सामने की छोटी छोटी वाटिकायें कैसी उत्तम हैं। भला बताओ तो सही कि ऐसे ऐसे मकानों का, ऐसी सुन्दर सुन्दर वाटिकाओं का धूल में मिल जाना क्या कम शोक की बात है? जिस समय मैं बाहर घूमने जाती हूं, तब कभी इन वाटिकाओं को देखती हूं तो मेरा मन वहां जाने के लिये बहुत ही ललचता है॥

गरीबों के झोपड़ों के जल जानेका दुःख उसकी बातों से न टपका इसी से लूपोने दुःखित होकर कहा—"फिलिपा! झोपड़ी में रहने से क्या तुम संतुष्ट नहीं हो?"

रोबर्ट अभी तक चुपचाप बैठा था, इस बात को सुन कर वह बोला —"बाबा! मां के मुंह से मैं बराबर सुना करता हूं

कि इन मकानों का भीतरी भाग और भी सुन्दर है, ऐसा घर मिलने से हमलोग यह छोटा मकान जरूर छोड़ देंगे, क्या यह सच है?"

यह कह कर रोबर्ट कूदता उछलता कुछ दूर दौड़ गया॥

लूसी०। फिलिपा! रोबर्ट के हृदय में भी इन बातों का उत्साह दिखा कर तुमने अच्छा नहीं किया॥

फिलिपा क्रोधित हो कुछ कहना ही चाहती थी कि रोबर्ट दौड़ा दौड़ा आया और बोला—"बाबा! कई मनुष्य अस्त्र शस्त्र से सुसज्जित इधर ही चले आते हैं॥"

लूसी०। फिर डरनेकी कौनसी बात है? घबड़ाओ नहीं।

लूसी अभी कुछ और कहना ही चाहता था कि पांच सिपाही उसी समय वहां आ पहुंचे। उन सिपाहियों में एक जमादार भी था वह आगे बढ़ कर बोला—"क्या तुम्हारा ही नाम फिलिपा है?"

लूसी घबड़ाकर झट खड़ा हुआ और बोला—"मेरी स्त्री से तुम्हें कौन सा काम है?"

जमादार। मेरी बातें तुम ध्यान से सुनो। मैं तुम्हारी स्त्री को कुछ देर के लिये यहां से ले जाऊंगा। मैं कसम खाकर कहता हूं कि मैं इसको किसी प्रकार का कष्ट न दूंगा और सुबह होने से पहले इसे यहां पहुंचा जाऊंगा। मैं जिस कामके लिये इसे लिजाता हूं उसके लिये यह अच्छी तरह इनाम पायेगी तथा पीछे सब हाल तुम्हें मालूम भी हो जायेगा॥

लूसी०। क्या विचित्र बात है! आखिर तुम इसे ले क्यों जाओगे?

जमादार०। मैं स्वयं यह भेद नहीं जानता। यदि मेरी बातों पर विश्वास हो तो उसे मेरे साथ विदा करो। यदि किसी तरह उसे कष्ट पहुंचेगा या उसकी कोई हानि होगी तो मैं उसका जिम्मेवार होऊंगा॥

"बिना मुझे जीते मेरी स्त्री को तुम नहीं ले जा सकते।" इतना कह कर लूपो उसपर झपटा और उसने जमादार के हाथ से तलवार छीन ली। पर तुरत ही और और सिपाहियों ने मिल कर उसे पकड़ लिया और उसके हाथ पैर बांध दिये॥

इतना हो गया, पर फिलिपा निश्चिन्त बैठी रही। लूपो बड़े कष्ट से बोला "फिलिपा! भागो, जल्दी भागो, इन लोगों के साथ कभी मत जाना। चिल्लाओ, महल्ले वाले मनुष्य तुम्हारी सहायता को दौड़ेंगे॥"

कर्कश स्वर से जमादार बोला "चुप रह मूर्ख! यदि फिर बोलेगा तो तेरा मुंह भी बांध दूंगा॥"

फिलिपा०। इन लोगों का सामना करना व्यर्थ है। हमलोग सब तरह से इनके बँधुआ हैं! चुपचाप रहना ही कर्तव्य है फिर जब ये आदर से बातें.................

जमादार०। (बाधा देकर) मैं अपने प्राण की कसम खा कर कहता हूं कि किसी तरह तुम्हारा अपमान न करूंगा॥

लूपो०। (हताश होकर) ईश्वर की जो इच्छा है वही होगा। परन्तु फिलिपा! आओ एक बार तुमसे गले मिल लूं, फिर कौन जानता है क्या होगा॥

फिलिपा०। (लूपो के गले में हाथ डाल कर) प्राणपति तुम किसी बात का खयाल न करो। मेरा हृदय मुझे कह रहा

है कि तेरा कोई अनिष्ट न होगा। मैं अभी आती हूं, तुम घबड़ाओ नहीं। आओ रौबर्ट! एक बार तुम्हारा मुंह तो चूम लूं॥

लूपो की आंखों में जल भर आया, वह बड़े कातर स्वर से बोला "अच्छा प्रिये! जाओ। (सिपाही की ओर देख कर) मुझे यों बंधा छोड़ जाने की ज़रूरत नहीं है मैं कसम खाकर कहता हूं कि अब तुमसे न लड़ूंगा। तुम पांच मनुष्य हो मैं अकेला तुम्हारा क्या बिगाड़ सकता हूं?

जमादार०। लूपो! हमलोग तुम्हें सत्यवादी समझते हैं, तुम्हारे विरुद्ध कभी कोई बात आज तक नहीं सुनी है। तुम प्रतिज्ञा करो कि मेरा पीछा न करोगे तो मैं तुम्हें खोल दूं॥

लूपो०। तुम्हें किसने भेजा है तथा तुम किसके आदमी हो, मैं कुछ भी नहीं जानता। तिसपर भी मैं प्रतिज्ञा करता हूं कि मैं तुम्हारा पीछा न करूंगा॥

लूपो खोल दिया गया तथा किलिपा को लेकर सिपाही चले गए॥

उनके आगे बढ़ते ही लूपो अपने पुत्र रौबर्ट से बोला, "रौबर्ट! चुपचाप इन लोगों के पीछे पीछे चले जाओ, देखो रोना मत और उनसे दूर ही रहना। रास्ता अच्छी तरह पहिचान लेना। जाते हो?"

बड़ी प्रसन्नता से रौबर्ट "ज़रूर जाऊंगा" कहकर शीघ्रता से सिपाहियों के पीछे दौड़ा॥

रौबर्ट की अवस्था यद्यपि छः वर्ष की थी तथापि वह बुद्धिमान था। यही जान कर उसके पिता ने उसे विदा किया

था। पर कुछ ही देर बाद लूबे अपनी स्त्री के लिये घबड़ा उठा, किसी बात में उसका जी न लगने लगा। अन्त में वह घबड़ा कर अपना जाल उठा लाया और चन्द्रमा की रोशनी में बैठ कर उसकी मरम्मत करने लगा। जब कभी वह किसी को उस राह पर आते देखता तो अपनी स्त्री समझ कर उस तरफ़ दौड़ जाता पर फिर उसे न पाकर हताश होकर बैठ जाता। इसी तरह बहुत देर हो गई पर न उसकी स्त्री ही आई न लड़का ही॥

पांचवां परिच्छेद।

अपने मकान से कुछ दूर आगे बढ़ जाने पर फिलिपा ने उस जमादार से पूछा "तुम मुझे इस तरह चुपचाप कहां लिये जाते हो और मैं किस काम के लिये इस गुप्त रीति से बुलाई गई हूं?"

जमादार०। हां, अब मुझे यह बता देने में कि मैं तुम्हें राजमहल में ले जाता हूं किसी तरह की आपत्ति नहीं है। परन्तु यह मैं तुम्हें नहीं बता सकता कि तुम किस काम के लिये बुलाई गई हो क्योंकि मैं स्वयं यह भेद नहीं जानता, पर इतना बता देता हूं कि एक आदमी ने अपना नाम तुम्हें चुपचाप बता देने के लिये हमें आज्ञा दी है॥

फिलिपा०। वह कौन है?

जमादार०। आद्री टेरपेलो॥

इतना सुनतेही फिलिपा के चेहरे पर आशा और प्रसन्नता

झलकने लगी। वह आनन्द से बोली "मैंने भी यही समझा था। यह तो राजा के सहायक शरीर चिकित्सक हैं?"

जमादार०। हां, यह इस समय राजमहल में ही हैं। शायद तुम्हें मालूम होगा कि राजा पुंगूर बहुत बीमार हैं और उनके जीवन की कोई आशा नहीं है॥

फिलिपा०। हां, यह तो मैंने सुना था कि वह बीमार हैं पर यह नहीं जानती थी कि उनकी दशा ऐसी खराब हो रही है। ईश्वर उन्हें चिरंजीव रक्खे नहीं तो यदि कोई अनिष्ट हुआ तो कौन हमलोगों का शासन और पालन करेगा?

जमादार०। जब तक राजकुमारी जीवाला इस योग्य न हो जायेंगी तब तक कोई प्रतिनिधि द्वारा यह काम चलाया जायेगा॥

फिलिपा०। राजकुमारी तो अभी तीन चार महीने की हैं?

जमादार०। हां, पर ईश्वर न करे कि राजा का कोई अनिष्ट हो॥

इसके बाद लगभग आधे घंटे के वे सब चुपचाप चले गए अन्त में राजमहल दिखाई दिया, फिर उसका बड़ा फाटक मिला पर इन लोगों ने यह राह छोड़ दी और घूम कर राजमहल के पीछे चले गए तथा एक गुप्त द्वार खोल कर बाग में जा पहुंचे। बाग में कुछ ही दूर जाने पर वे एक द्वार पर जाकर खड़े हो गए तथा जमादार ने तीन बार दरवाजा खटखटाया। तुरत ही एक बुड्ढा हाथ में लाल्टेन लिये हुए आया और दरवाजा खोल कर खड़ा हो गया॥

"अब मेरा काम समाप्त हो गया, अब मैं इस औरत को

तुम्हारे सपुर्द करता हूं।" यह कर जमादार सिपाहियों को लेकर यहां से चला गया॥

आगे आगे लम्प दिखाता हुआ बूढ़ा चला और उसके पीछे पीछे फिलिपा जाने लगी। कई आंगन तथा सीढ़ियों को लांघ कर वह राजमहल में पहुंची। बूढ़े ने उसे एक कमरे के दरवाजे पर लाकर खड़ा कर दिया और बोला—"आप भीतर जायें॥"

उस सजे हुये कमरे में पैर रखतेही फिलिपा को चार्ल्स दिखाई दिया जो उसे देखतेही उठ खड़ा हुआ और प्रेमसे हाथ चूम कर बोला "तुम मुझे क्षमा करोगी क्योंकि मैंने तुम्हें इस तरह चुपचाप बुलाया था जिससे तुम्हें अवश्य कष्ट हुआ होगा॥"

फिलिपा। आह! तुम्हीं उलटे क्षमा मांगते हो, तुम्हारी दया के बोझ से मैं दबी हुई हूं, तुम्हारा उपकार क्या भूल सकती हूं? क्या तुम्हें मुझसे क्षमा मांगनी चाहिये?

चार्ल्स। (हँस कर) क्यों सुन्दरी! क्या मैंने उस दया के बदले में तुमसे कुछ नहीं पाया है?

फिलिपा। (अपने होंठों पर उँगली रख कर) चुप, चुप, दीवालों को भी कान होते हैं। दूसरे कमरे में कोई और भी सुनता होगा॥

चार्ल्स। इस कमरे के बाद ही राजा रेनूर का कमरा है इस समय उसके पास कोई दूसरा नहीं है और वह भी सोया हुआ है।

फिलिपा। अच्छा, तुमने मुझे यहां बुलाया किस लिये है?

चार्ल्स। [illegible] [illegible] [illegible] हुआ। उस

तुमने बरबाद मुझसे मुलाकात की थी, जिस समय तुमने अपनी ऊंची ऊंची अभिलाषायें मुझसे कही थीं, उसी समय से मैं इस उद्योग में लगा हुआ था कि किसी तरह तुम्हें ऊंचे पद पर पहुंचाऊं, उसमें दिनों के बाद आज वह सुयोग हाथ आया है। यदि आज तुम्हारे कारण से राजा का कोई काम हो गया तो यह उपकार तुम्हारे ध्यान में रहेगा। इस रोग से बच कर वह तुम्हें बहुत धन सम्पत्ति देकर तुम्हारी मान मर्यादा बढ़ा देगा। तब तुम सामान्य और दरिद्र मनुष्य की नाईं न रह जाओगी बल्कि किसी ऊंचे पद पर पहुंच जाओगी और तुम्हारी हमजोलियां तुम्हें ऐसे ऊंचे पद पर देख कर डाह से जल मरेंगी॥

फिलिपा०। हा! वह दिन कब आवेगा?

आर्द्री०। तुम्हारी सुन्दरता जैसी अनुपम है मेरी बातें भी उतनी ही सत्य हैं, वह दिन अब बहुत ही निकट है, यदि तुम स्वीकार करो॥

फिलिपा०। मुझे तो कठिन ही दिखाई देता है क्योंकि मैं तो राजा के किसी काम के योग्य नहीं हूं। मैं उनका कौन सा काम करूंगी?

आर्द्री०। अच्छा, मेरी बातों को ध्यान देकर सुनो, कठिन रोग के कारण राजा अत्यन्त दुर्बल हो गए हैं उनके शरीर में केवल हड्डियां ही रह गई हैं, मांस का तो नाम भी नहीं है। इस समय यदि किसी तरह उनकी जीवनी शक्ति में बल पहुंचाया जाये तो निःसन्देह उनकी जान बच जायेगी॥

फिलिपा०। मैं तुम्हारी बातें बिल्कुल न समझी॥

आद्री०। अच्छा सुनो, मैं फिर कहता हूं पर डरना मत, न किसी बात का सन्देह ही करना। अधिक करके इसमें तुम्हारा ही लाभ..........

फिलिपा०। (बात काट कर) पर वह काम भी कौनसा है यह भी तो सुनूं॥

आद्री०। राजा के शरीर में रक्त कम हो गया है और धीरे धीरे सूखता ही जाता है, कोई पैाष्टिक दवा भी नहीं खिलाई जा सकती। नित्यप्रति उनका शरीर क्षीण होता जाता है, सामर्थ्य कम होती जाती है और बुद्धि लोप होती जाती है। तेल नहीं रहने के कारण जिस तरह दीया तुरत बुझ जाता है, रक्त नहीं रहने के कारण उसका जीवन प्रदीप भी उसी तरह बुझा चाहता है। यदि इस समय नया रक्त उसके शरीर में न डाला गया तो उनकी जान न बचेगी॥

फिलिपा यह सुन कर चुप हो गई वह एकटक दृष्टि से आद्री को देखने लगी। आद्री उसका यह भाव देखकर बोला— "यदि तुम्हारी इच्छा न हो, यदि तुम इस काम में हाथ न दिया चाहती हो तो फिर तुम्हारी यहां कोई ज़रूरत नहीं है। तुम अपने दीन हीन घर में फिर चली जा सकती हो। मैंने सोचा था कि तुम्हें ऊंचा पद दिलाकर तुमारी आशा को पूर्ण करूंगा पर अब इसमें सन्देह दिखाई देता है॥"

आद्री का हाथ धरकर उत्तेजित स्वर से फिलिपा बोली "क्यों क्यों, अब सन्देह क्यों होने लगा? मालूम होता है कि तुम रंज होगये, पर रंज न हो। मैं तुम्हारी बातें तथा क्या करना होगा यह सब समझ गई पर यह तो बताओ कि इससे कोई

हानि ते न होगी?"

आट्री०। नहीं नहीं, इससे तुम्हें न कोई हानि ही पहुंचेगी न कष्ट ही होगा। यह मैंने नया यंत्र बनाया है, इसके पहिले कभी किसी ने ऐसा साहस न किया था, यह अवचिकित्सा में मेरा नवीन उद्योग है और पूरी आशा है कि इससे रोगी आरोग्य हो जायेगा। हां, तुम्हारी बांह से कुछ रक्त अवश्य निकल जायेगा॥

फिलिपा०। मैं तैय्यार हूं॥

आट्री०। बहुत अच्छा। अब पूरी आशा है कि तुम्हारी इच्छा पूर्ण होगी॥

इतना कहकर आट्री ने टेबलपर रखे हुए एक यन्त्र के हाथ में उठा लिया और फिलिपा के दिखा कर बोला—"देखो, इस यन्त्र के मैंने ही बता बता कर एक कारीगर से बनवाया है, इसीसे राजाको मैं आरोग्य करूंगा॥"

यन्त्र चांदीका बना हुआ था। इसमें नीचे की तरफ एक जगह रक्त के जमा करने के लिये बनी हुई थी। उसी जगह से एक नल इस तरह से बनाया गया था कि वह रोगी के जिस स्थान में लगाया जावे उसी जगह लगा रहे। दूसरा नल अच्छे मनुष्य के शरीर से रक्त खींचने के लिये लगाने वास्ते बना हुआ था और पिचकारी की तरह एक और भी चीज उस यन्त्र में लगी थी जिसके दबाने से रोगी के शरीर में अच्छे मनुष्य के शरीर से निकलकर रक्त चला जाता था॥

फिलिपा०। लो हो, मैं तय्यार हूं॥

आट्री०। अच्छा, कुछ देरके लिये तुम यहा ठहरो, मैं अभी

आता हूं। राजा को अभी तक इन बातों की खबर नहीं है मैं जरा उससे पूछ आऊं॥

इतना कह कर आद्री बड़ी सावधानता से राजा एंजूर के कमरे में चला गया और दमही मिनिट बाद लौटकर फिलिपा से बोला—"राजा जाग चुके हैं, मैंने उन्हें सब बातें समझा दी हैं। इस उपाय के सिवा और किसी उपाय से अपनी जान न बचती देख कर उन्होंने मेरी बात मान ली है। चलो, अब देर करने की कोई जरूरत नहीं है॥

डाक्टर आद्री अपना यन्त्र और फिलिपा को लेकर राजा के कमरे में चला गया। वह कमरा देखकर फिलिपा की आंखें चौंधिया गई क्योंकि ऐसा सुन्दर कमरा कभी उसे स्वप्न में भी दिखाई न दिया था॥

एक सुन्दर चारपाई पर राजा सोये हुए थे, जिनकी अवस्था पचास वर्ष के लगभग की थी। इस समय उनका सुन्दर मुख मुर्दा सा हो रहा था तथा उनकी आंखें धस गई थीं॥

फिलिपा की सुन्दरता देख कर कुछ देर के लिये राजा की आंखें चमक उठीं पर तुरत ही आंखे बन्द हो गई क्योंकि अशक्तता के कारण उनमें खुले रहने की शक्ति न थी॥

इधर आद्री ने बड़ी सावधानी से अपना कार्य आरम्भ किया। राजा के हाथ पर से कपड़ा हटाया और फिलिपा को पास बुलाकर छुरी निकाली। फिलिपा ने पास जाकर अपना हाथ फैला दिया। एक लपके लिये भी उसकी आंखें न झपकीं न शरीरही कांपा। आद्री ने वह कोमल हाथ धर कर एक नस के ऊपर नश्तर दिया और उस सुकुमारी के हाथ से लाल लाल

रक्त निकल कर उस यन्त्र में जमा होने लगा। इसी समय आट्री ने राजा के हाथ में भी नश्तर दिया और यंत्र की एक नल उसमें लगा कर पिचकारी की तरह कल चलाने लगा॥

शरीर में नवीन रक्त जातेही राजाको नींद आगई॥

कुछ ही देरबाद आट्री ने यंत्र चलाना रोक दिया और फिलिपा तथा राजा के हाथ में पट्टी बांध दी। रक्त निकलने से कमजोरी आ जाने के कारण फिलिपा खड़ी न रह सकी और उसी जगह एक आराम कुर्सी पर बैठ गई। आट्री ने उसकी यह दशा देखकर उसे एक दवा खिलाई जिससे फिलिपा फिर सावधान होती चली और उसकी कमजोरी हटने लगी॥

राजा को सोता हुआ देख कर और एक बार पट्टी की परीक्षा करके आट्री अपने कमरे में चला आया और फिलिपा को एक कुर्सी पर बैठा कर बोला "तुम कुछ देर ठहरो,जब औषध के गुण से तुम्हारे शरीर में पूरी पूरी शक्ति आ जायेगी तब घर जाना॥"

फिलिपा०। मैं अब सावधान हो गई, अब मुझे आज्ञा दीजिये॥

आट्री०। मेरी बात मानो, अभी तुम्हें कुछ देर और ठहरना चाहिये, क्योंकि बाहर की ठंडी हवा तुम्हें हानि पहुंचायेगी। आज मैंने यहां जो काम किया है यह तुम्हारी ही सहायता से हुआ। राजा जिस समय आरोग्य हो जायेंगे, जिस समय मेरी इस चिकित्सा का उत्तम फल दिखाई देगा उसी समय तुम्हारी इच्छा पूर्ण होगी। तुम निश्चय इस कामातुर राजा पर अपना अधिपत्य जमा लोगी। जिस समय

तुम्हारा पूरा अधिकार यहां होगा। उस समय मुझे भूल न जाना॥

फिलिपाः। भूल जाऊंगी? क्या तुम्हें मैं कभी भूल सकती हूं। सर्वदा कृतज्ञ हृदय से तुम्हारी आराधना करूंगी॥

आर्द्रीः। (प्रेम से फिलिपा की ओर देख कर) क्या प्रेम पूर्ण हृदय से मुझे याद नहीं कर सकतीं?

फिलिपाः। यदि तुम इसीसे सन्तुष्ट हो तो यही सही॥

आर्द्रीः। प्यारी फिलिपा! क्या तुम्हारे पति ने मेरे बारे में कभी सन्देह किया है? आज तीन महीने के ऊपर हुआ जब तुमने मुझे बुला भेजा था और मैं तुम्हारे घर पर गया था क्या उस समय भी तुम्हारे स्वामी ने कुछ न पूछा? क्या तुम सरीखे दरिद्र मनुष्य डाक्टर को कभी घर पर बुला सकते हैं?

फिलिपाः। नहीं, इतना होने पर भी उन्हें रत्ती भर सन्देह न हुआ क्योंकि मेरे पति बड़े ही सरल प्रकृति के मनुष्य हैं। न उनके मन में कभी सन्देह होता है न कभी किसीको देख कर ईर्षा ही उत्पन्न होती है, पर आज जब मैं घर पहुंचूंगी उस समय वे अवश्य मुझसे पूछेंगे, उस समय मैं क्या कहूंगी? मेरे हाथ का यह घाव किस तरह छिपेगा?

आर्द्री ने फिलिपा के हाथ में एक गिन्नियों से भरी थैली देकर कहा "तुम इसी की सहायता से इसे अपने बश में करके अपने बचने का कोई उपाय कर लेना। इसके बल से सब कुछ हो सकता है॥"

फिलिपाः। (थैली हाथ में लेकर) मेरे पति की प्रकृति से अभी तुम परिचित नहीं हो इसीसे ऐसी बातें कहते हो! उसे जरा भी लोभ नहीं है और वह सच्चा आदमी है। जब

रक्त निकल कर उस यन्त्र में जमा होने लगा। इसी समय आड्री ने राजा के हाथ में भी नश्तर दिया और यंत्र की एक नल उसमें लगा कर पिचकारी की तरह कल चलाने लगा॥

शरीर में नवीन रक्त जातेही राजाको नींद आगई॥

कुछ ही देरबाद आड्री ने यंत्र चलाना रोक दिया और किलिया तथा राजा के हाथ में पट्टी बांध दी। रक्त निकलने से कमजोरी आ जाने के कारण किलिया खड़ी न रह सकी और उसी जगह एक आराम कुर्सी पर बैठ गई। आड्री ने उसकी यह दशा देखकर उसे एक दवा पिलाई जिससे किलिया फिर सावधान होने लगी और उसकी कमजोरी हटने लगी॥

राजा को सोता हुआ देख कर और एक बार पट्टी की परीक्षा करके आड्री अपने कमरे में चला आया और किलिया को एक कुर्सी पर बैठा कर बोला "तुम कुछ देर ठहरो, अब औषध के गुण से तुम्हारे शरीर में पूरी पूरी शक्ति आ जायेगी तब घर जाना॥"

किलियाः। मैं अब सावधान हो गई, अब मुझे आज्ञा दीजिये॥

आड्रीः। मेरी बात मानो, अभी तुम्हें कुछ देर और ठहरना चाहिये, क्योंकि बाहर की ठंढी हवा तुम्हें हानि पहुंचायेगी। आज मैंने यहां जो काम किया है वह तुम्हारी ही सहायता से हुआ। राजा जिस समय आरोग्य हो जायेंगे, जिस समय मेरी इस चिकित्सा का उत्तम फल दिखाई देगा उसी समय तुम्हारी इच्छा पूर्ण होगी। तुम निश्चय इस कामातुर राजा पर अपना अधिकार जमा लोगी। जिस समय

तुम्हारा पूरा अधिकार यहां होगा उस समय मुझे भूल न जाना॥

फिलिपा०। भूल जाऊंगी ? क्या तुम्हें मैं कभी भूल सकती हूं। सर्वदा कृतज्ञ हृदय से तुम्हारी आराधना करूंगी॥

आद्री०। (प्रेम से फिलिपा की ओर देख कर) क्या प्रेम पूर्ण हृदय से मुझे याद नहीं कर सकतीं ?

फिलिपा०। यदि तुम इसीसे सन्तुष्ट हो तो यही सही॥

आद्री०। प्यारी फिलिपा! क्या तुम्हारे पति ने मेरे बारे में कभी सन्देह किया है ? आज तीन महीने के ऊपर हुआ जब तुमने मुझे बुला भेजा था और मैं तुम्हारे घर पर गया था क्या उस समय भी तुम्हारे स्वामी ने कुछ न पूछा ? क्या तुम सरीखे दरिद्र मनुष्य डाक्टर को कभी घर पर बुला सकते हैं ?

फिलिपा०। नहीं, इतना होने पर भी उन्हें रत्ती भर सन्देह न हुआ क्योंकि मेरे पति बड़े ही सरल प्रकृति के मनुष्य हैं। न उनके मन में कभी सन्देह होता है न कभी किसीको देख कर ईर्षा ही उत्पन्न होती है, पर आज जब मैं घर पहुंचूंगी उस समय वे अवश्य मुझसे पूछेंगे, उस समय मैं क्या कहूंगी ? मेरे हाथ का यह घाव किस तरह छिपेगा ?

आद्री ने फिलिपा के हाथ में एक गिन्नियों से भरी थैली देकर कहा "तुम इसी की सहायता से उसे अपने वश में करके अपने बचने का कोई उपाय कर लेना। इसके बल से सब कुछ हो सकता है॥"

फिलिपा०। (थैली हाथ में लेकर) मेरे पति की प्रकृति से अभी तुम परिचित नहीं हो इसीसे ऐसी बातें कहते हो। उसे जरा भी लोभ नहीं है और वह बड़ा आदमी है। जब

तक मेरे बारे में उसे सन्देह नहीं हुआ है तब तक तो मैं सब तरह से बची हूं पर जिस समय उसे सन्देह हो जायेगा उस समय उसे फिर निर्दोषता का पूरा २ प्रमाण मिलना चाहिये॥

आर्द्री०। तुम्हारे चरित्र में जिससे कलंक लगे, ऐसा काम मैं नहीं किया चाहता। आज रात को सब बातें उसे कह देने पर मेरा और राजा का नाम न लेना॥

फिलिपा०। अच्छा किसी दूसरे धनवान तथा ठाकुर का नाम बता दूंगी॥

आर्द्री०। मेरे भाई टेरबेलो का नाम बता सकती हो, इस बात का ख्याल रखना कि मेरा नाम वह न सुनने पावे॥

फिलिपा०। ऐसा ही होगा। अच्छा, अब मैं तुमसे एक—

आर्द्री०। (बात काटकर) मैं समझ गया। तुम एक रोग को छोड़ कर और सब तरह से तुम्हारा लड़का अच्छा है॥

इसी तरह की बातों में दो घंटे बीत गए। इस समय रात के दो बजने का समय था जब फिलिपा जाने के लिये उठ खड़ी हुई। आर्द्री ने उसे एक बार आलिङ्गन किया और फिर दरवाज़े तक पहुंचा आया। दरवाज़े के बाहर निकलते ही उसे वह बूढ़ा मिला जो उसे कमरे तक पहिले पहुंचा गया था। उसने फिलिपा को राजमहल से बाहर पहुंचा दिया और स्वयं लौट गया॥

फिलिपा अकेली ही अपने घर को चली। कुछ ही दूर बढ़ गई होगी कि एक लड़का एक मकान के नीचे से निकला और उसका कपड़ा खींच कर बोला "मां! इतनी देर बाद तुम राजमहल से बाहर निकली हो?"

फिलिपा उस लड़के की बोली पहिचान तथा घबड़ा कर बोली,—"ऐं! यह क्या बेटा ! तुम इतनी रात को यहां कैसे आये?"

लड़का०। पिता की आज्ञा से सिपाहियों के पीछे पीछे यहां तक आया था, उसी समय से खड़ा खड़ा पहरा दे रहा हूं। अकेला कैसे जाता? विचारा था कि तुम शीघ्र ही आओगी तब तुम्हारे साथ ही घर चला चलूंगा॥

फिलिपा०। रौबर्ट! तुमने अच्छा ही किया। मैं तुमसे कई बातें कहूंगी पर पहिले यह बताओ कि तुम मुझे अधिक प्यार करते हो या अपने पिता को?

रौबर्ट०। वाह ! मैं तुम्हें अधिक मानता हूं, पिता को कैसे?

फिलिपा०। मुझे अधिक प्यार करने का कौन सा कारण है?

रौबर्ट०। कारण? यही कि तुम मुझे कभी कोई बात नहीं कहतीं, खेलमें जब कभी मैं किसीसे लड़ जाता हूं, तब भी तुम मुझे कुछ नहीं कहतीं, पर पिता तो सदा मुझे घुड़का करते हैं॥

फिलिपा०। ठीक है। अब मैं जो कहती हूं सो सुनो। मुझे तुमने राजमहल में जाते देखा है। खबरदार! पिता से ऐसा कभी मत कहना। तुम कह देना कि मैंने अलतमूरा के सामने वाले मकान में जाते देखा है॥

रौबर्ट०। हां, यही कहूंगा॥

फिलिपा०। और यह भी कहना कि एक आदमी से पूछने

तक मेरे बारे में उसे सन्देह नहीं हुआ है तब तक तो मैं सब तरह से सती हूं पर जिस समय उसे सन्देह हो जायेगा उस समय उसे फिर निर्दोषता का पूरा प्रमाण मिलना चाहिये॥

आर्ट्री०। तुम्हारे चरित्र में जिससे कलंक लगे, ऐसा काम मैं नहीं किया चाहता। आज रात की सब बातें उसे कह देना पर मेरा और राजा का नाम न लेना॥

फिलिपा०। अच्छा किसी दूसरे धनवान तथा डाकूर का नाम बता दूंगी॥

आर्ट्री०। मेरे भाई टेरपेलो का नाम बता सकती हो, इस बात का खयाल रखना कि मेरा नाम वह न सुनने पावे॥

फिलिपा०। ऐसा ही होगा। अच्छा, अब मैं तुमसे एक"

आर्ट्री०। (बात काटकर) मैं समझ गया। उस एक रोग को छोड़ कर और सब तरह से तुम्हारा लड़का अच्छा है॥

इसी तरह की बातों में दो घण्टे बीत गए। इस समय रात के दो बजने का समय था जब फिलिपा जाने के लिये उठ खड़ी हुई। आर्ट्री ने उसे एक बार आलिङ्गन किया और फिर दरवाज़े तक पहुंचा आया। दरवाज़े के बाहर निकलते ही उसे वह बुड्ढा मिला जो उसे कमरे तक पहिले पहुंचा गया था। उसने फिलिपा को राजमहल से बाहर पहुंचा दिया और स्वयं लौट गया॥

फिलिपा अकेली ही अपने घर को चली। कुछ ही दूर गई होगी कि एक लड़का एक मकान के पीछे से निकला और उसका कपड़ा खींच कर बोला "मां! इतनी देर बाद तुम राजमहल से बाहर निकली हो?"

तो वह डाकूर चिल्लावेंगी इसीलिये बाहर खड़ा रहा॥

लूपेः। (फिलिपा की ओर देख कर) डाकूर टेस्पेलो के यहां सिपाही तुम्हें ले गए थे? वे ही तो उस दयावान के भाई———

बात काट कर रैाबर्ट बोला "हां हां, मुझे एक पड़ोसी से पूछने पर मालूम हुआ कि वह उनका ही मकान था॥"

लड़के की बुद्धि का चमत्कार देख कर लूपे बड़ा ही प्रसन्न हुआ और फिलिपा अपने लड़के की पूरा पूरा याद सुन कर मुग्ध हो गई। इसके बाद रैाबर्ट सोने को चला गया॥

लूपेः। फिलिपा' ये कैसी बातें हैं? तुम्हारे हाथ में यह घाव कैसा है तथा तुम डाकूर के यहां क्यों गई थीं? साफ साफ बताओ, मैं बहुत घबड़ा रहा हूं॥

फिलिपाः। देखो, मैं इस बात के लिये कसम खा चुकी हूं पर तुम्हारी प्रीति के कारण तुम्हें कहना पड़ता है। (गिन्नियों से भरी थैली देकर) यह थैली लो और इस बात की प्रतिज्ञा करो कि तुम भी इस भेद को किसी पर प्रगट न करोगे॥

लूपेः। तुमपर मेरा पूरा पूरा विश्वास है। मैं प्रतिज्ञा करता हूं कि मैं इस भेद को किसीसे भी न कहूंगा॥

फिलिपाः। ठीक है। अब सुनो, एक बड़े धनवान मनुष्य की वह डाकूर दवा कर रहा है, वह धनवान भी उसीके यहां आकर टिका हुआ है। रक्त के अभाव से उस धनवान का शरीर सूखता ही जाता था। डाकूर ने एक यन्त्र द्वारा किसी युवा का रक्त———

लूपेः। (घृणा से) बस बस, हो गया। मैं सब समझ

नहीं सुना चाहता। तुम अपना रक्त बेच कर शान्त भाव से लौट आई हो?

फिलिपा०। आह। क्या मैंने सहज ही में उनकी बातें मान ली हैं? पर क्या करती, उनका अधिकार यहां इतना अधिक था कि मेरा कुछ भी वश न चला, उस समय वहां किसी की सहायता की आशा नहीं थी, अधिक जोर करने से प्राण तक जाने का डर था। लाचार होकर उनका कहना मानना ही पड़ा। जब इतना हो गया तब रंज होकर रुपया भी वहीं छोड़ आना बिल्कुल मूर्खता थी॥

लूपो०। यदि तुम अन्न बिना मेरे सामने ही मर जाओ, यदि रैाबर्ट भूख के मारे चारों तरफ रोता फिरे, यदि अकाल में मेरे मुंह में एक दाना अन्न न पड़े, यदि भोजन के अभाव से तुम दोनों मां बेटों की मृत्यु होजाये और यदि मुझे किसी दूसरे कारण से प्राण तक देना पड़े तथापि मैं इस थैली की एक कौड़ी न छूऊं और न कभी छूऊंगा॥

यह कह कर लूपो पागलों की भांति वह थैली लेकर समुद्र की तरफ दौड़ा। फिलिपा भी उसके पीछे पीछे दौड़ी पर उसे न पा सकी। लूपो दौड़ता हुआ चला ही गया और वह थैली उसने समुद्र में फेंक दी॥

लूपो तेजी से अपने घर की तरफ लौटा। रास्ते ही में उसने देखा कि उसकी स्त्री फिलिपा रोती हुई बैठी है, उसका यह भाव देख कर लूपो का सब क्रोध हवा होगया, वह बड़ी नम्रता से बोला—"प्रिये। यदि मेरा कुछ अपराध हुआ हो तो क्षमा करो, उठो घर चलें॥"

लूपे का पहिला भाव देख कर फिलिपा डर गई थी, वह जानती थी कि क्रोध में आकर लूपे डाक्टर को मार भी सकता है। इसीलिये उसने यह ढङ्ग रचा था। वह बोली "स्वामी! मैं क्या क्षमा करूंगी? तुम ही क्षमा करो और शान्त हो॥"

लूपे०। तुम मुझे क्या कहती हो? क्या तुम चुपचाप इस अत्याचार को सहन करना चाहती हो?

फिलिपा०। इस समय हमलोगों को अपनी कसम याद रख कर बदला न लेना चाहिये॥

लूपे०। (शान्तस्वर से) ठीक कहती हो, मैं तो भूल ही गया था। निःसन्देह मैं अपनी प्रतिज्ञा भङ्ग न करूंगा॥

इतना कह कर उसने फिलिपा को उठाया और उसका हाथ पकड़ अपने घर ले गया

पर हाय! फिलिपा ने स्वप्न में भी यह नहीं विचारा कि उसकी इन झूठी बातों का क्या परिणाम होगा, तथा उसके लड़के की झूठी बातों का क्या नतीजा निकलेगा!!

नहीं छूना चाहता। तुम अपना रक्त बेच कर शान्त भाव से छोड़ आई हो?

फिलिपा०। आह! क्या मैंने सहज ही में उनकी बातें मान ली हैं? पर क्या करती, उनका अधिकार वहां इतना अधिक था कि मेरा कुछ भी वश न चला, उस समय वहां किसी की सहायता की आशा नहीं थी, अधिक ज़ोर करने से प्राण तक जाने का डर था। लाचार होकर उनका कहना मानना ही पड़ा। जब इतना हो गया तब रंज होकर रुपया भी वहीं छोड़ आना बिल्कुल मूर्खता थी॥

लूपो०। यदि तुम अन्न बिना मेरे सामने ही मर जाओ, यदि रोबर्ट भूख के मारे चारों तरफ रोता फिरे, यदि अकाल में मेरे मुंह में एक दाना अन्न न पड़े, यदि भोजन के अभाव से तुम दोनों मां बेटों की मृत्यु होजाये और यदि मुझे किसी दूसरे कारण से प्राण तक देना पड़े तथापि मैं इस थैली की एक कौड़ी न छूऊं और न कभी छूऊंगा॥

यह कह कर लूपो पागलों की भांति वह थैली लेकर समुद्र की तरफ दौड़ा। फिलिपा भी उसके पीछे पीछे दौड़ी पर उसे न पा सकी। लूपो दौड़ता हुआ चला ही गया और वह थैली उसने समुद्र में फेंक दी॥

लूपो तेजी से अपने घर की तरफ लौटा। रास्ते ही में उसने देखा कि उसकी स्त्री फिलिपा रोती हुई बैठी है, उसका यह भाव देख कर लूपो का मन क्रोध हवा होगया, वह बड़ी नम्रता से बोला—"प्रिये! यदि मेरा कुछ अपराध हुआ हो तो क्षमा करो, चलो घर चलें॥"

ऐसी ही आज्ञा हो तो मैं तैयार हूं॥

मानिया:। नहीं, नहीं। मैं आपकी इच्छा के विरुद्ध नहीं किया चाहती। आपकी दया से मेरे स्वामी इस विपद से बच गए हैं, मैं इसीसे सन्तुष्ट हूं। क्या दूसरे दूसरे डाक्टर अब यहां आ सकते हैं?

आद्री कुछ जवाब दिया ही चाहता था कि मानिया फिर बोली "नहीं नहीं, अब कोई ज़रूरत नहीं है। जिस मनुष्य ने राजा को इस समय बचाया है वही अब सदैव उन की दवा करेगा, अब दूसरे किसीके आने की ज़रूरत नहीं है।" इतना कह कर रानी ने एक कागज़ निकाला और उस पर कुछ लिख कर और मोहर देकर डाक्टर आद्री को देदिया॥

कुछ ही देर बाद दो डाक्टर और उस कमरे में आये जो शान कर आद्री को नीचा दिखाने की इच्छा से वहां आये थे पर इस समय राजा की अवस्था बदली हुई तथा उस कागज़ पर दृष्टि पड़ते ही समझ गए कि आद्री ने बाज़ी मार ली और हमलोगों से ऊंचे पद पर पहुंच गया॥

अब आद्री की उपाधि फिज़िशियन जेनरल (वैद्यराज) हो गई॥

नौ बजने के कुछ पहिले ही राजा की निद्रा भङ्ग हुई। उनका शरीर तो पीड़ित था ही पर उन्हें बहुत कुछ आराम मालूम होने लगा। उनकी बोली जो बहुत ही धीमी हुई और अस्पष्ट निकलती थी अब साफ़ निकलने लगी और आंखों में शक्ति सी आ गई। आद्री ने उन्हें रानी से अधिक बातें न करने दीं और तुरत ही उठ कर एक दवा पिलादी जिसके

ऐसी ही आज्ञा हो तो मैं तैयार हूं॥

मानिया०। नहीं, नहीं। मैं आपकी इच्छा के विरुद्ध नहीं किया चाहती। आपकी दया से मेरे स्वामी इस विपद से बच गए हैं, मैं इसीसे सन्तुष्ट हूं। क्या दूसरे दूसरे डाक्टर अब यहां आ सकते हैं?

आट्री कुछ जवाब दिया ही चाहता था कि मानिया फिर बोली "नहीं नहीं, अब कोई जरूरत नहीं है। जिस मनुष्य ने राजा को इस समय बचाया है वही अब सदैव उस की दवा करेगा, अब दूसरे किसीके आने की जरूरत नहीं है।" इतना कह कर रानी ने एक कागज निकाला और उस पर कुछ लिख कर और मोहर देकर डाक्टर आट्री को देदिया॥

कुछ ही देर बाद दो डाक्टर और उस कमरे में आये जो खास कर आट्री को नीचा दिखाने की इच्छा से वहां आये थे पर इस समय राजा की अवस्था बदली हुई तथा उस कागज पर दृष्टि पड़ते ही समझ गए कि आट्री ने बाजी मार ली और हमलोगों से ऊंचे पद पर पहुंच गया॥

अब आट्री की उपाधि फिजिशियन जेनरल (वैद्यराज) हो गई॥

भोर होने के कुछ पहिले ही राजा की निद्रा भङ्ग हुई। उनका शरीर तो दुर्बल था ही पर उन्हें बहुत कुछ आराम मालूम होने लगा। उनकी बोली जो बहुत ही धीमी हुई और अस्पष्ट निकलती थी सो अब साफ निकलने लगी और आंखों में ज्योति सी आ गई। आट्री ने उन्हें अधिक बात न करने दी और तुरत ही उठ कर एक दवा पिलादी जिससे

कारण से उन्हें नींद आ गई॥

सन्ध्या तक यह खबर चारों ओर फैल गई। राजा के बड़े बड़े कर्मचारी और राजा की मित्रमण्डली उनके दर्शन को आने लगी॥

इन लोगों में एक युवा भी ऐसा था कि जो देखने में यद्यपि सुन्दर था तथापि चित्त खींच लेने वाला न था। इस की अवस्था सोलह वर्ष की थी। वह बहुमूल्य कपड़े पहिने हुए था और इसके कोट पर एक बड़ा सा हीरा भी लगा हुआ था। इसने कमरे में पैर रखते ही राजा को छोड़ कर और सब कोई उठ खड़े हुए। इसका नाम चार्लस है तथा यह डूरोन का ड्यूक और राजा का भतीजा है। राजा को आराम होते देख वह बड़ा ही असन्तुष्ट हुआ और अपने भाव के छिपाने का उद्योग करने लगा॥

राजा अपनी यह दशा देख एक विल (दानपत्र) लिख चुका था जिसमें उन्होंने अपनी भतीजी "जोवाना" को अपने समस्त धन सम्पत्ति तथा राज का अधिकारी बनाया था। चार्लस को भी इस बात की खबर थी और वह जानता था कि मेरा अब यहां आदर नहीं है तथापि अभी उसे कुछ आशा थी॥

इसी समय एक मजदूरिन छोटी सी लड़की राजकुमारी जोवाना को गोद में लिये हुए इसी कमरे में आ पहुंची। राजा उसे देखते ही हर्षित हो गये पर तुरत ही उनकी दृष्टि चार्लस की ओर घूमी। हिज़ चार्लस भी राजा के इस भाव को समझ गया और अपने मन के भाव को छिपाने के लिये थोड़े थोड़े

हँसने लगा। इसी समय आद्री उठ खड़ा हुआ और उसने बड़ी नम्रता से राजा के शरीर की दुर्बलता का हाल कह कर सभों को विदा किया॥

उन सभों के चले जाने पर आद्री ने राजा को एक दवा और खिलाई। इसी समय एक नौकर उस कमरे में आया और आद्री के हाथ में एक चीठी देकर खड़ा हो गया। पत्र पढ़ते पढ़ते आद्री का चेहरा गम्भीर हो गया और वह मन ही मन बोला "मर गया!" इसके बाद नौकर की ओर देख कर उसने कहा "चीठी लाने वाले से कह दो कि मैं एक घंटे में आता हूं॥"

नौकर प्रणाम करके चला गया। राजा को सोते देख कर आद्री ने रानी को बुला भेजा और उनसे आज्ञा लेकर तथा कुछ समझा कर वह वहां से बाहर निकला॥

डाक्टर के बाहर निकलते ही चार्लेस उस के पास आया और बोला "आप ज़रा ठहरें। मुझे कई ज़रूरी बातें करनी हैं॥"

आद्री०। मैं इस समय बड़ा दुःखित हूं। किसी दूसरे समय मेरे आपके बीच अच्छी तरह बातें होंगी॥

चार्लेस०। आपकी इच्छा न रहने पर मुझे लाचारी से आपको रोकना पड़ता है। मेरी बातें सुनने से आप प्रसन्न हो जायेंगे॥

आद्री०। आपकी बातें माननी भी अत्यन्त आवश्यक हैं पर क्या करूं, इस समय मुझे घर अवश्य पहुंचना चाहिये॥

चार्लेस०। आपकी बड़ी बड़ी इच्छाओं को मैं जानता हूं। अच्छा, मुझे इतना ही कहना है कि यदि आप मेरी सहायता

करेंगे तो मैं आपको अपने राज्य में सब से ऊंचा पद दूंगा॥

आद्री०। मेरे ऊपर आपकी बड़ी कृपा है॥

चार्लस०। (उसे अंधेरे में लेजाकर) लेकिन सबके पहिले मुझे एक काम में सहायता दीजिये॥

आद्री०। मैं नहीं समझा, आप स्पष्ट कहिये॥

चार्लस०। मुझे मालूम है कि राजा ने जीवाना को राज की अधिकारिणी बनाया है पर जीवाना तो अभी लड़की है। इस समय यदि राज सिंहासन खाली हुआ तो मैं सहज ही में उसपर बैठ जाऊँगा पर यदि राजा बच गए तो फिर न जाने क्या हो॥

आद्री०। मैं आपका मतलब समझ गया। इस समय यदि राजा मर जायँ तो उस लड़की को सिंहासन पर से उतार देना बहुत सहज होगा पर यदि राजा जी गए तब कठिन क्या बल्कि असम्भव ही है॥

चार्लस०। बस बस, अब आप इसीसे और बातें भी समझ लें॥

आद्री०। कैसे समझ लूं? मैं कुछ भी नहीं समझ सकता। राजा अभी जीवित हैं,वह अभी कितने दिन और जीते रहेंगे तथा राज करेंगे, यह कौन जानता है?

चार्लस०। जिसकी अपूर्व दया से वह आरोग्य हुए हैं क्या वह उन्हें घोर निद्रा में सदैव के लिये नहीं सुला सकता॥

आद्री०। (घृणा से) राजकुमार! आपने गलती की! आपने अभी मुझे पहिचाना नहीं! किस अधिकार से आप मुझे राजा की हत्या करने के लिये कहते हैं?

चार्लस० । मुझे पूरा पूरा विश्वास है कि मैं आपके स्वभाव को आपका चेहरा देख कर अच्छी तरह पहिचान गया हूं। जो कहा है, उसे खूब विचारना तथा मेरी सहायता करनी और साथ ही यह भी समझ लेना कि मेरा राज्य होने पर मेरे बाद तुम्हारा ही अधिकार रहेगा ॥

आद्री० । मुझे सोचने विचारने की कोई जरूरत नहीं है । आपकी बातों से मेरा दिल कभी हिल नहीं सकता । मैं अब जाता हूं ॥

आद्री जाना ही चाहता था कि चार्लस ने जोर से उसका हाथ पकड़ लिया और बोला "खबर्दार ! मैं आपको चिता देता हूं कि ये बातें किसी दूसरे के कान में न जानी चाहियें आप यह भी समझ लें कि मैं राजकुमार तथा आप एक साधारण मनुष्य हैं, आपको कोई गवाह न मिलेगा ॥

इतनेही में उसी जगह सीढ़ी पर से "कौन कहता है कि कोई गवाह नहीं मिलेगा?" कहती हुई एक स्त्री नीचे उतर आई ।

आद्री० । फिलिपा !!

चार्लस० । चुप चुप ॥

फिलिपा० । राजकुमार ! आपकी सब बातें मैंने सुन लीं हैं, पर आप कुछ डरें नहीं । मैं आपकी बातें किसीसे न कहूंगी

आद्री० । राजकुमार ! हमलोग इस बात को कभी किसी पर प्रगट न करेंगे और एक दिन वह आयेगा कि आपको इसके लिये हमें इनाम देना पड़ेगा ॥

इतना कह कर आद्री और फिलिपा चले गए । चार्लस घबड़ाता हुआ खड़ा ही रह गया ॥

सर्वनाश कर सकेंगे । अच्छा, एक बात और सुनो, तुम्हारा लड़का मर गया ॥

फिलिपा० । जान बची, चलो अच्छा ही हुआ । इसी लिये शायद तुम्हारी मज़दूरिन इतनी उदास थी । पर हा ! मुझे ही यह मृत्युसंवाद लाना पड़ा !!

आद्री० । चलो, एक बार उसे देख लो ॥

फिलिपा० । (कांप कर) नहीं नहीं, मैं अब नहीं देखा चाहती ॥

आद्री० । अच्छी बात है । आज रात को उसे अपने बाग ही में गड़वा दूंगा किसीको खबर तक न होगी । अब मेरा मकान पास आ गया, अब तुम जाओ ॥

फिलिपा० । पर जिस बात के लिये मैं आई थी वह तो रही ही जाती है ॥

आद्री० । अच्छा बताओ ॥

फिलिपा ने अपने पति से तथा उससे जितनी बातें हुई थीं कह सुनाईं और साथ ही यह भी कह दिया कि डाकूर टेस्पेलो को मारने की प्रतिज्ञा करके लूपो ने थैली समुद्र में फेंक दी ॥

आद्री० । लूपो तुम्हारे योग्य नहीं है । पहिले राजमहल में अपना अधिकार जमा लो, फिर उसे छोड़ देना ॥

फिलिपा ने यद्यपि आद्री की बातों का "बहुत अच्छा" कह कर जवाब दिया तथापि अपने पति को छोड़ने का विचार उसका हृदय दुखाने लगा । अस्तु, फिलिपा धीरे धीरे अपने घर लौट आई और आद्री उधर अपने मकान में चला

गया। अपने मकान में पैर रखते ही आद्री को उसकी मज्दूरिन दिखाई दी जो उसकी राह देख रही थी॥

आद्री०। क्या भाई ने उस मरे हुए लड़के को देखा है?

मज्दूरिन०। हां, वे देख चुके हैं॥

"सब बनी बनाई बात बिगड़ गई" कह कर आद्री खड़ा खड़ा कुछ विचारता रहा इसके बाद फिर अपने भाई के पास चला गया। वहां उससे और उसके भाई से क्या २ बातें हुईं वह पूरी पूरी लिखने की कोई जरूरत नहीं दिखाई देती। साधारणतः लड़के की मृत्यु पर शोक, राजा को अद्भुत उपाय से आरोग्य करना तथा आद्री की पदोन्नति इत्यादि विषयों पर बातें होती रहीं। डाक्टर टेस्पेलो अपने भाई के शुभचिन्तक थे, इसलिये उसकी उन्नति का समाचार सुन कर बहुत प्रसन्न हुए॥

रात के ग्यारह बजने के लगभग डाक्टर टेस्पेलो अपने भाई से विदा होकर अपने मकान की ओर चले। जाते समय यह कह गए कि "रात तो अधिक हो गई है पर मैं इस समय सीधा अलतमूरा के मार्कुइस जूलियस के यहां जाऊंगा॥"

*　　*　　*　　*　　*

रात के दो बजने का समय है। इसी समय अलतमूरा के पास ही एक चौकीदार ने एक लाश पड़ी देखी। उसपर दृष्टि पड़ते ही चौकीदार चिल्ला उठा और बोला "यह क्या डाक्टर टेस्पेलो है।"

उसी समय घूमते हुए और भी दो तीन पहरेवाले चिल्लाने की आवाज सुन कर वहां आ पहुंचे। वे सब डाक्टर टेस्पेलो

को अच्छी तरह जानते थे। सड़क पर बहते हुए रक्त को देख कर सब समझ गए कि किसीने उनका खून किया है॥

मैं पहिले ही लिख आया हूं कि डाक्टर का मकान अल्-तमूरा के सामने ही था। पहरेदार उन्हें धर पकड़ कर उनके घर पर ले गए। वहां के नौकर चाकर अपने मालिक की यह दशा देख रोने लगे। एक मनुष्य उनके छोटे भाई आद्री के पास यह समाचार सुनाने के लिये दौड़ा। इसी समय पुलिस भी अपने दल बल समेत वहां आ पहुंची और उसने परीक्षा करके देखा कि किसीने पीछे से उन्हें छुरा मारा है॥

दो घंटे के भीतर ही आद्री भी वहां जा पहुंचा और अपने सहोदर भाई की यह दशा देख लाश से लिपट कर रोने लगा॥

पुलिस ने उससे पूछा "क्या इनका कोई शत्रु भी है?"

तुरत ही नौकरों ने और आद्री ने एक साथ ही कहा "नहीं, ये बड़े सज्जन और शान्तिप्रिय मनुष्य थे, इनसे किसी की शत्रुता नहीं है॥"

पुलिस०। देखो, यदि चोर या डाकू इन्हें मारता तो इन के बदन पर के जेवर भी निकाल लेता। देखो, यह बहुमूल्य अँगूठी अभी तक इनकी उँगली में पड़ी है॥

नौकर०। कदाचित भूल से या धोखे में कोई इन्हें मार गया है॥

आद्री०। जो हो, पता लगाने से ही खूनी पकड़ा जायेगा जो मनुष्य खूनी को पकड़ेगा उसे मैं एक सौ गिन्नी इनाम दूंगा। ऐ मेरे प्यारे भाई! आपके भाग्य में यही लिखा था

आपका खूनी अवश्य पकड़ा जाकर फांसी दिया जायेगा॥"

पुलिस के सिपाही चले गए। आद्री अपने भाई की लाश के पास घुटने टेक कर उसकी आत्मा के कल्याणार्थ प्रार्थना करने लगा॥

दूसरे दिन सबेरे ही उस देश की रीति के अनुसार डाक्टर केनार्ड बन्धु गण और २ राजकर्मचारी उनके मकान में जमा होने लगे। सब लोगों ने मिल कर आद्री को ही उनके समस्त धन सम्पत्ति का अधिकारी बनाया। अचानक इतना धन मिल जाने से आद्री प्रसन्न होगया। इसके बाद बड़े समारोह से डाक्टर की लाश गाड़ दी गई॥

इस करते करते यह सब काम समाप्त हो गये। आद्री को अपने घर आया ही चाहता था कि सिपाहियों का एक दल वहां आया और उनमें से एक ने आगे बढ़ कर कहा "खूनी का पता लग गया॥"

आद्री०। जल्द बताओ, वह कौन है?

सिपाही०। लूपिर, मछली मारने वाला॥

आद्री०। (आश्चर्य से) लूपिर!!

सिपाही०। हां लूपिर, इसके बारे में पूरा पूरा प्रमाण मिल गया है॥

आद्री०। संभव है, पर वह तो मेरे दूकान से हटा हुआ है। मेरे भाई ने उसका कौनसा अपराध किया था?

सिपाही०। यह तो मैं नहीं जानता, पर वह पकड़ लिया गया है और इस समय कैद है॥

आद्री०। क्या मनुष्य के स्वभाव का कोई ठिकाना है!

उसकी सज्जनता और उसके चेहरे को देख कर कौन कह सकता था कि उसके हृदय में इतना ज़हर भरा हुआ है। पर सम्भव है कि मैं जिस लूपो के बारे में कह रहा हूं वह यह न हो! उसकी एक अत्यन्त सुन्दरी स्त्री है जिसका नाम गुलाब है॥

सिपाही०। हां हां, वही॥

आट्टी०। वही है? यह तुमने कैसे जाना?

सिपाही०। यहां से जाने पर हमलोग अलग अलग हो कर पता लगाने के लिये बाहर निकले। शहर के जिस तरफ लूपो का मकान है संयोगवश मैं उधर ही जा पहुंचा और वहां दो मछुओं से मेरी मुलाकात हुई जिन्हें मैं पहिले ही से जानता था। मैंने बात ही बात में उनसे इस खून का सब हाल कहा। मेरे मुंह से यह हत्याकाण्ड सुन कर वे एक दूसरे का मुंह देखने लगा। मैंने बड़ी कठिनता से उन्हें लोभ तथा भय दिखा कर किसी तरह उनके मुंह से असल बात कहला ली। उन्होंने कहा कि "कल सुबह को हमने लूपो को पागलों की भांति समुद्र के तट पर दौड़ते और किसी चीज को समुद्र में फेंकते देखा था। पूछने पर भी लूपो ने इसके बारे में कोई ठीक कर जवाब नहीं दिया बल्कि डाक्टर टेस्पेनो को गाली देने लगा।" यह सब बातें सुन कर मैं लूपो के घर पर पहुंचा और पता लगाने पर यह भी मालूम हुआ कि कल रात को कुछ देर के लिये वह घर से कहीं बाहर गया था पर पूछने पर भी लूपो ने नहीं बताया कि वह कहां गया था। इसके बाद मैंने उसे गिरफ़ार कर लिया। वह सिर्फ इतना ही बोला कि "मैं निर्दोष हूं और इस खून के बारे में कुछ भी नहीं जानता।" पर मैंने

उस की बातों पर कुछ भी ध्यान न दिया और उसको स्त्री तथा लड़की को रोते हुए छोड़ कर उसे पकड़ लाया॥

आड्री०। (१०७ गिन्नी निकाल कर) यह लो, यह तुम्हारा इनाम है॥

सिपाही हँसता हुआ चला गया। इसी समय एक नौकर ने आकर कहा कि "एक स्त्री आपसे मिलने के लिये आई है॥"

यह आने वाली स्त्री फिलिपा थी। वह बड़ी नम्रता से आड्री का सामना होने पर बोली "आपने क्या मेरे स्वामी की दुर्दशा का हाल सुना?"

आड्री०। हां, मैंने सुना है कि तुम्हारा अभागा पति मेरे सहोदर के मारने के अपराध में पकड़ा गया है॥

फिलिपा०। पर मुझे पूरा विश्वास है कि उसने कभी भी यह काम नहीं किया है॥

आड्री०। फिलिपा! लूपो जरूर खूनी है, इसमें कोई सन्देह नहीं क्योंकि पूरा पूरा प्रमाण मिल चुका है। हाइ के कारण से क्रोधित होकर लूपो ने मेरे भाई को मार डाला है। उसने तुम्हें नहीं मार डाला यही बहुत किया। क्या तुम बता सकती हो कि वह कल रात को कहां गया था?

फिलिपा०। वह रात को घर से कहीं बाहर गया था यह ठीक है पर उसने मुझे बता दिया है कि वह मुझे खोजने गया हुआ था जब मैं तुम्हारे पास आई थी परन्तु मेरे चरित्र में कलंक लगेगा इसी कारण से उसने सिपाही से यह बात नहीं बताई और.....................

आड्री०। (बात काट कर) मेरे भाई से मुलाकात हो

पर उसे मार कर चला गया ॥

फिलिपा और कुछ बोल न सकी तथा लूपो के खूनी रहने के बारे में अब उसे कोई सन्देह भी न रहा। आद्री उसे चुप देख कर बोला "फिलिपा! वृथा ही अब लूपो को निर्दोषी प्रमाणित करने का उद्योग न करो। कलेजा पक्का करो और साथ ही यह भी समझ लो कि अब तुम्हारे अच्छे दिन आ गए क्योंकि फिर किसी न किसी तरह तुम्हें अपने पति को छोड़ना ही पड़ता। तुम क्या मेरी पहिली बातें भूल गईं?

फिलिपा०। नहीं, भूली नहीं हूं॥

आद्री०। अच्छा तो अब एक काम करो। तुम लूपो से जाकर क़ैदख़ाने में मिलो तथा रौबर्ट को भी साथ लेती जाओ पर उसकी झूठी बातों पर कभी विश्वास न करो और साथ ही यह भी समझ लो कि अब तुम काउन्टेस (एक उपाधि) तक हो जा सकती हो और तुम्हारा लड़का लोर्ड कौन्ट की पदवी तक पहुंच सकता है। फिर ईश्वर की कृपा से यदि राजकुमारी जोयाना के साथ तुम्हारे लड़के का विवाह हो गया तो वह नेप्लस के राज सिंहासन पर भी बैठ सकता है। यदि मैं चार्लस की बातें मान लेता तो वह इस समय सहज ही में राज्य पा जाता और सदा हमलोगों के हाथ में रहता पर क्या समझती हो कि मैंने किस कारण से उसकी बात न मानी? यह सब तुम्हारे ही लिये। अच्छा अब जाओ, अधिक देर तक यहां रहने से सब सन्देह करेंगे॥

आद्री की बातों से फिलिपा को अपने पति का शोक बिल्कुल जाता रहा, वह हर्ष से बोली "अच्छा ऐसा ही होगा।

आज आप से जो शिक्षा मिली है उसे सदैव याद रक्खूंगी॥"

इसके बाद फिलिपा चली गई॥

आठवां परिच्छेद।

कैदखाने में एक चटाई पर अपने सिर पर हाथ रक्खे हुए लूपो बैठा था, उसके मन में भांति२ की तरंगे उठ रही थीं। सहसा बाहर से किसी आते हुए मनुष्य के पैर की आहट उसे सुनाई दी। तुरत ही दरवाजा खुला और हाथ में लम्प लिये हुए जेलर उसे दिखाई दिया। जेलर लम्प कोठड़ी में रख कर जाना ही चाहता था कि फिलिपा रौबर्ट को लिये हुए वहां आ पहुंची॥

जेलर चला गया। लूपो ने झपट कर फिलिपा को अपने गले से लगा लिया और उसकी आंखों से आंसुओं की बूंदें टपकने लगीं॥

अपने पति की यह दशा देखकर फिलिपा का जी भी उमड़ आया पर तुरत ही उसे आद्री की बातें याद आ गई और वह सँभल गई। रौबर्ट भी एक ओर चुपचाप रोता हुआ बैठ गया॥

लूपो कुछ ठहर कर बोला—"फिलिपा! क्या तुम भी मुझे खूनी समझती हो?"

फिलिपा०। प्राणाधिप! मेरे ऊपर तुम्हारा कितना प्रेम है यह मैं जानती हूं। मेरे ऊपर किसीका अत्याचार देखकर तथा मुझे कलंकित करने पर...... ....

लूपे०। (बात काटकर) तब तो तुम्हें भी विश्वास है कि मैंने ही डाकूर को मारा है॥

फिलिपा०। मुझसे यह बार बार क्यों पूछते हो? मैं तुम्हारे मुख से...........................

लूपे०। हा! ईश्वर!! मेरी स्त्री भी मुझे खूनी समझती है। फिलिपा! क्या मेरे ऊपर तुम्हारा तिल भर भी विश्वास नहीं है? क्या जब से मैं तुम्हें ब्याह कर यहां ले आया हूं तब से आज तक कभी भी तुमने मेरी बातें झूठी पाई हैं?

फिलिपा का कलेजा मारे दुःख के फटने लगा। वह बड़े कष्ट से बोली "नहीं, कभी नहीं॥"

लूपे०। फिर मेरी यह बात क्यों झूठी समझती हो? सुख के समय जिसकी बातों पर तुम्हारा पूरा २ विश्वास था क्या इस दुःख के समय में उसकी बातें झूठी समझने का तुमने कोई प्रमाण पाया है?

फिलिपा०। आह! अब इन बातों को न निकालो पर यह बताओ कि तुम्हें छुड़ाने का अब कौन सा उपाय...........

लूपे०। बस,एक बात और फिलिपा! उस दिन रात को जब मैं बाहर गया था,उतनी देर का घर में न रहना ही मेरा काल हो गया। पर फिलिपा! प्यारी फिलिपा!! तुम्हें तो मालूम ही है कि मैं तुम्हें खोजने गया था। भला तुम्हीं बताओ कि एक पुलिस के सिपाही को मैं क्योंकर यह साफ २ बता देता? जिसे मैं अपना मानता हूं, जिसे अपने प्राणों से भी अधिक मानता हूं, जिसके लिये अपना प्राण तक देने को तैयार हूं, क्या उसीको मैं एक सिपाही के सामने कलंकित

करता? क्या तुम नहीं जानतीं कि यदि मैं उसी आने उस सिपाही से कह देता तो मेरे मुंह से ही तुम पर कलंक लग जाता। इसीलिये वह बातें सिपाही से न कहीं और अब भी जिस समय मेरा विचार होगा और मैं कटघरे में खड़ा किया जाऊंगा, उस समय भी ये बातें मुंह से कभी बाहर न निकालूंगा, चाहे मैं फांसी ही दे दिया जाऊं। मेरी निर्दोषता का प्रमाण रोकने की जरूरत नहीं है। मनुष्यमात्र जो चाहें कहें, मुकद्दमें में चाहे जो हो पर मेरी स्त्री यदि मुझे निरपराधी समझे तो मैं फांसी की भी पर्वाह नहीं करता,इसी लिये एक बार फिर पूछता हूं कि बताओ, तुम मुझे खूनी समझती हो या नहीं? पर सावधान! जो कहना सो सच सच कहना मुझे ढाढ़स दिलाने के लिये झूठ न बोलना॥

फिलिपा०। लूपो! मैं पागल हो जाऊंगी। मुझसे बार२ यह क्यों पूछते हो? तुम्हारी बातों का मैं जवाब नहीं दे सकती॥

"बस बस, हो गया। अब न पूछूंगा।" कह कर लूपो ने फिलिपा को अपने पास से हटा दिया और रौबर्ट को अपनी गोद में लेकर बोला—"बेटा! बताओ तो सही कि तुम भी मुझे खूनी समझते हो?"

रौबर्ट०। डाकूर बड़ा खराब आदमी था उसको तुमने मार डाला, अच्छा ही किया॥

रौबर्ट को गोद से उतार कर लूपो रोता हुआ बोला "हाय! संसार में मुझे सभी खूनी समझते हैं, अब मेरा दुःख कौन सुनने वाला है॥"

फिलिपा भी रो उठी, यह बोली "प्रिय पति। एक बात—"

लूपो। अब कुछ नहीं, अब एक अक्षर भी नहीं सुना जाता। जाओ, हटो मेरे सामने से, खूनी के पास न आनी चाहिये॥

इतना कह कर लूपो ने धक्का देकर फिलिपा और रोबर्ट को अपने पास से हटा दिया। इसी समय जेलर भी वहां आ पहुंचा तथा इन दोनों को अपने साथ लिये हुए बाहर चला गया और दरवाजा बाहर से बन्द हो गया॥

फिलिपा तथा रोबर्ट को वहां से घर गए हुए बहुत देर हो चुकी है, अब इस समय रात के आठ बजने का समय होगा। इसी समय उस कोठड़ी का दरवाजा जिसमें लूपो कैद था फिर खुला और जेलर के साथ पादड़ी साहब आते हुए उसे दिखाई दिये॥

इस बार जेलर भी दरवाजा खुला ही छोड़ कर वहां से चला गया। दरवाजा खुला रहने पर भी कैदी के भाग जाने का कोई डर न था क्योंकि इस कोठड़ी के बाद ही कुछ दूर पर एक और फाटक था जहां सदा पहरा पड़ा करता था॥

लूपो के पास खड़े होकर पादड़ी बोला—"मैं यहां किस लिये आया हूं यह तुम्हें बताना निरर्थक है। हां, इतना बता देता हूं कि अब तुम्हारा समय निकट है इससे तुम कुछ उपदेश सुन लो॥"

लूपो। पवित्र पिता! आपके आगमन से मैं प्रसन्न हुआ पर आप यह भी जान लें कि मुझ पर जो दोष लगाया गया है वह बिल्कुल झूठा है। मैं बिल्कुल निर्दोष हूं॥

पादड़ी। (सिर पर से टोपी उतार कर) झूठ बोल कर

अपने पाप का भार अधिक न करो। इस संसार में तुम्हारे रहने की अब कोई आशा नहीं है, तुम्हारे विरुद्ध पूरा पूरा प्रमाण मिल चुका है। इसी लिये फिर कहता हूं कि एक बार उस ईश्वर को ध्यान देकर याद करो जिसका मैं भक्त हूं॥

लूपी०। पिता! मैं फिर कहता हूं कि आप ही की भांति मैं भी इस दोष से बिल्कुल निर्दोष हूं। इतना कह कर लूपी तीव्र दृष्टि से पादड़ी को देखने लगा॥

पादड़ी०। तुम बड़े हठी मनुष्य हो। तुम मेरी बात मानो और अपना अपराध स्वीकार करो, तुम्हारे पाप की गठड़ी हलकी हो जायगी॥

लूपी०। आप क्षमा करें। मैं इस समय निराशा के महासागर में गोते खा रहा हूं, मैं आपका कोई अनिष्ट न करूंगा। पर इतना अवश्य कहूंगा कि मैं निरपराध फंसाया गया॥

इतना कह कर लूपी झट पट पादड़ी पर टूट पड़ा और उसे फुर्ती से पटक कर उसके मुंह पर उसी का रूमाल बांध दिया और उसी के कपड़ों से उसके हाथ पैर भी बांध दिये। पादड़ी चूं तक न कर सका। इसके बाद पादड़ीका लम्बा कोट (गौन) और टोपी उतार कर लूपी ने पहिन ली और बोला "आप डरें नहीं, मैं आपकी जान न लूंगा। इस व्यवहार के लिये आप क्षमा करें।" इतना कहकर वह किवाड़ बन्द करता हुआ उस कोठड़ी से बाहर चला आया। फाटक के पास ही सिपाही पहरा दे रहा था, वह पादड़ी भेषधारी लूपी को देख कर सम्मान के लिये कुछ हट कर खड़ा हो गया। लूपी बिना रोक टोक के बाहर चला आया, वहां स्वयं जेलर बैठा हुआ

था जो लूपो को देख कर उठ खड़ा हुआ। लूपो वहां से भी चुपचाप बिना कुछ बोले चला गया ॥

नवां परिच्छेद ।

दूसरे दिन सवेरे ही जब जेलर लूपो की कोठड़ी में पहुंचा उस समय वह भय और आश्चर्य से घबड़ा उठा क्योंकि उसने देखा कि हाथ पैर से बँधा हुआ एक आदमी वहां पड़ा है जो देखने में पादड़ी सा मालूम होता है। पास जाने ही पर उसको मालूम हो गया कि स्वयं कैदखाने के पादड़ी इस दशा में पड़े हैं और अच्छी तरह जांचने पर मालूम हुआ कि उनका प्राण पखेरू देह पिंजर को छोड़ कर उड़ गया है ॥

तुरत ही यह खबर चारों ओर फैल गई। डाक्टर भी आये पर अब मनुष्य की सामर्थ के बाहर रोग हो चुका था। सांस बन्द होने के कारण से पादड़ी परलोक सिधार गया था ॥

पादड़ी की मृत्यु तथा लूपो के भागने का समाचार कुछही देर में शहर भर में फैल गया। फिलिपा भी उसे सुन कर मन ही मन बोली—"उसके भागने से मुझे न कोई आनन्द ही हुआ न दुःख ही। इतना अच्छा हुआ कि वधिक (जल्लाद) की तलवार से वह बच गया। जान बची पर अब वह इस शहर में नहीं आ सकता। यही अच्छा ही हुआ।"

इस घटना के कई महीने बाद पादड़ी की कृपा से फिलिपा राज महल में जा पहुंची। राजा एकान्त में उससे मिले। दूसरे ही दिन से वह राजकुमारी जोयाना की धाय नियुक्त हुई। अब

समझ गये कि राजा की बीमारी में फिलिपा होने कुछ काम किया था जिसके कारण से उसे यह पद दिया गया। परन्तु उस काम का पता किसी को भी न लगा। साथ ही लोगों ने यह भी विचार लिया कि उसकी सुन्दरता ही इसका प्रधान कारण हुई रानी वालिया के मनमें भी सन्देह हुआ पर न उसने फिलिपा से कुछ कुव्यवहार ही किया न राजा को कुछ कहा ही क्योंकि वह तो अपने पति के सुख से सुखी और दुःख से दुखी थी बल्कि वह फिलिपा से आदर पूर्वक सम्भाषण और सद्व्यवहार करने लगी॥

रानी का यह व्यवहार देख कर राजमहल की रहने वाली और और स्त्रियां भी फिलिपा को आदर से देखने लगीं। यद्यपि वे सबकी सब कौशलमयी और बड़ी धूर्त थीं तथापि राजा और रानी की इतनी कृपा देख कर वे कुछ कर न सकीं तथा राज के सभासद् लोग और दूसरे दूसरे मनुष्य भी कुछ न बोले फिलिपा भी अपने रूप के प्रभाव से, यौवन की सहायता से राजा को अपने वश में करने लगी॥

कुछ दिनों में फिलिपा ने राजा को इतना मुग्ध कर लिया कि वह काठ के पुतले की भांति फिलिपा के वचन को मानने लगा तथा जिस समय राजा अपना प्रेम फिलिपा को दिखाने लगा उस समय उसने कई प्रतिज्ञायें भी उससे करा लीं॥

धीरे धीरे फिलिपा काउन्टेस आफ केवाना की उपाधि से भूषित हुई। बड़े धूमधाम से उसे यह उपाधि दी गई। राज की धनवती स्त्रियां तथा दूसरे दूसरे लोग भी फिलिपा को इस बात की बधाई देने के लिये आने लगे। फिलिपा सामा

मछुए की स्त्री रहने पर भी बातचीत, हाव भाव विलास तथा और और बातों में किसी से कम न थी॥

ऋाद्री के परामर्श के बाहर फिलिपा कभी कोई काम नहीं करती और इस समय एक प्रकार से ऋाद्री ही राज का सब काम धाम चलाता और राजा का सहायक बना हुआ था। यदि ऋाद्री चाहता तो इस समय राजा से कोई जागीर इत्यादि लेकर स्वयं भी जागीरदार हो जाता पर उसकी यह इच्छा न थी। वह छिपे छिपे अपना अधिकार फैलाया चाहता था। यहां तक कि इस समय राजा के मंत्री इत्यादि सभी उसके हाथ में थे फिर उसको और किसी चीज की जरूरत ही क्या थी? धन ही उसके अभीष्ट देवता थे सो छिपे छिपे उसे बहुत धन मिलता था॥

इस समय वह राजवैद्य था, जब चाहता था, जैान सा काम चाहता था, राजा से लेलेता था। राजमहल में उसे रहने के लिये जगह मिली हुई थी। राजकुमारी के देखने के बहाने से फिलिपा के कमरे में भी वह जब चाहता जा सकता था। इसी तरह फिलिपा और ऋाद्री दोनों अपना अपना उद्देश साधने के लिये राजमहल में जमे थे॥

फिलिपा कौंटेस की उपाधि के बाद ही जीवाना की शिक्षिका हो गई। उसका लड़का भी इस समय सर रौबर्ट आफ केवाना की उपाधि से भूषित हुआ और राजकुमारी जीवाना सर रौबर्ट के साथ साथ शिक्षा पाने लगी॥

इसी तरह वर्ष पर वर्ष बीतते चले गए। राजा के ऊपर फिलिपा का मोहनी मंत्र भी उसी तरह अपना अधिकार

लमाता चला गया। फिलिपा की उम्र के साथ ही साथ उसका रूपलावण्य भी घटने के बदले बढ़ता ही गया। इस समय फिलिपा राजा की मनमोहनी, चित्तविनोदिनी आराध्य देवी हो गई॥

राजकुमारी जीवाना भी उसी प्रकार सर रौबर्ट के रूप तथा गुण से बढ़ने के साथ ही साथ मोहित होती चली। इस समय जीवाना सत्रह वर्ष की तथा रौबर्ट बाईस वर्ष का युवा हो गया। उनकी बन्धुता धीरे धीरे प्रणय रूप में बदल गई। फिलिपा उनका यह प्रेम देखकर प्रसन्न होने लगी। बहुत दिन पहिले आद्री ने जो उसे कहा था वह बात अब सिद्ध होती दिखाई दी॥

रौबर्ट भी अपनी आशाओं को पूरी होने का समय निकट जान प्रसन्न होने लगा। राजकुमारी जीवाना रौबर्ट को हृदय से चाहने लगी पर रौबर्ट यद्यपि उसे प्रेमपूर्ण दृष्टि से देखता था तथापि उसे राज पाने की इच्छा ही अधिक थी। अपने माता की शिक्षा से रौबर्ट धोखा देने तथा बातें बनाने में भी एकता ही था। उसकी मीठी मीठी बातों में जीवाना मुग्ध थी। रौबर्ट से प्रेम करने पर या उससे विवाह करने पर उसे जिस विपद् में पड़ना होगा उसे उसका रत्ती भर भी ख़याल न था॥

जीवाना का यह सुख स्वप्न एक दिन भङ्ग हो गया। राजा ने उसे बुला कर कहा—"हंगरी के राजकुमार यहां आया ही चाहते हैं उनसे विवाह करने के लिये तैयार रहो।" राजा की यह भीषण आज्ञा फिलिपा, आद्री, जीवाना तथा रौबर्ट

के हृदय में आग बरसाने लगी॥

राजा की ऐसी आज्ञा देने का एक प्रधान कारण भी था। उनके बड़े भाई का लड़का "कैरो" ही इस राज का अधिकारी था। यही कैरो आजकल हंगरी का राजा था। राजा एंजूर उसे गद्दी का अधिकार न देकर स्वयं बैठ गये थे। इस समय अपने पाप का प्रायश्चित करने के विचार से ही अपनी इच्छा राजा ने पोप पर प्रगट की और पोप ने उन्हें यह सलाह दी कि तुम कैरो के छोटे लड़के अन्द्रिया से अपनी लड़की की शादी कर दो। इसी कारण से राजा एंजूर अपने सामने ही यह शुभ कार्य्य हो जाना चाहते थे। पोप ने उन्हें साथ ही यह भी कह दिया था कि तुम यदि ऐसा न करोगे तो गद्दी से उतार दिये जाओगे॥

आद्री तथा फिलिपा दोनों ने मिल कर इसके विरुद्ध बहुत सी बातें राजा को कहीं पर उसने एक न मानी क्योंकि वह पोप की आज्ञा के विरुद्ध कोई काम नहीं किया चाहता था। इतने दिनों के बाद फिलिपा की बात नीची पड़ी तथा आद्री भी अपना सा मुंह लेकर रह गया। पोप की प्रबल आज्ञा के सामने राजा फिलिपा की बातें न मान सके तथा राजकुमारी जीवान के रोने धोने ने भी राजा को अपने संकल्प से न हटाया। यथा समय राजकुमारी जीवाना का विवाह अन्द्रिया से हो गया॥

फिलिपा के परामर्श से यद्यपि जीवाना ने अपने कष्ट को छिपाना चाहा पर वह न हो सका। सर्वगुण सम्पन्न अन्द्रिया उसकी आखों में कांटे सा गड़ने लगा॥

अब अन्द्रिया और जोवाना कलेब्रिया के ड्यूक और डचेज के नाम से पुकारे जाने लगे। उनके रहने के लिये राजमहल ही का एक भाग खाली कर दिया गया परन्तु जोवाना अपने पति के पास अधिक देर तक न बैठ कर रैायर्ट और फिलिपा के पास ही बैठने लगी तथा राजा की मृत्यु के उपरान्त राज पर अपना पूरा २ प्रभाव रखने के विचार से फिलिपा फिर अपने उद्योग में लगी॥

यह घटना सम्पूर्ण ऐतिहासिक है। किसी जाति में किसी राज में तथा किसी देश में भी ऐसा अत्याचार न हुआ था जैसा यहां हुआ। जोवाना सरला बालिका थी,रैायर्ट को वह बहुत ही चाहती थी। पापिनी फिलिपा ने उस प्रेम ही से इस समय काम निकाला। उसने जोवाना को कहा कि "देखो, जिसको तुम नहीं प्यार करतीं, जिसे तुम घृणा से देखती हो उसके विरुद्ध भी यदि कोई काम तुम अपनी तृप्ति के लिये करोगी तो कभी पाप की भागिनी न होगी। इस प्रकार की आत्मतृप्ति में कुछ भी पाप नहीं है।" जोवाना फिलिपा की अच्छी प्रकृति की जानती थी उसने उसकी बातें सच्ची मानीं। आड्री से मिलने पर फिलिपा आनन्द से बोली "अब कोई डर नहीं है, नेपल्स की भावी रानी पूरी तरह मेरे अधिकार में है॥"

आड्री०। तब तो जितना जल्द वह सिंहासन पर बैठे उतना ही अच्छा है॥

फिलिपा०। निश्चय, राजा दिनो दिन धार्मिक हुए जाते हैं, दिनो दिन वह डर डर कर कोई काम करते हैं। वृद्ध राजा

के मरने तथा नवीन के बैठने का यही समय है॥

आट्री "अच्छा मैं समझ गया।" कह कर चला गया॥

इस उपन्यास के प्रारम्भ से १८ वर्ष तक अर्थात १३४३ ई०
तक ये सब बातें हो गई॥

दसवां परिच्छेद।

१३४३ ईस्वी के जनवरी महीने की आज रात है। इस समय राजमहल में चारो ओर सन्नाटा छाया हुआ है। कभी कभी पहरेदारों की कर्कश ध्वनि और कुत्तों का भूकना उस निस्तब्धता को भङ्ग कर देता है। इसी समय आट्री राजा डंकूर के कमरे से धीरे धीरे चुपचाप बाहर निकला। उसने राजा के कमरे का दर्वाजा बड़ी सावधानी से बन्द कर दिया और चुपचाप दूसरे कमरे में चला गया। यह दूसरा कमरा भी अच्छी तरह सजा हुआ है और फिलिपा चुपचाप एक आराम कुर्सी पर लेटी हुई है। यद्यपि वह इस समय एक तस्वीर पर दृष्टि जमाये हुए उसे देख रही है तथापि उसका ध्यान दूसरी तरफ है और वह एक प्रेमी प्रेमिका की बातें ध्यान से सुन रही है जो उससे कुछ दूर पर एक खिड़की के पास बैठे बातें कर रहे हैं॥

ये दोनो प्रेमी प्रेमिका कोई दूसरे नहीं हैं बल्कि फिलिपा का पुत्र सर रोपर्ट और राजकुमारी जोआना है। इस प्रेमासक्त युगल मूर्ति को देख कर फिलिपा आनन्दित हो रही है॥

रोबर्ट इस समय चौबीस वर्ष का है, उसका और उसकी मां का चेहरा इस समय बहुत मिलता है। उसका शरीर दीर्घ और बलवान मालूम होता है। चेहरे पर अहंकार और दुष्टता झलक रही है। उसका उन्नत ललाट, उजली और चमकीली आंखें और पतले पतले ओंठ तीक्ष्ण बुद्धि और असीम सा-हसका परिचय दे रहे हैं। उसकी प्रेमिका जोवाना इस समय बहुत ही सुन्दर मालूम होती है। उसके भौंरे से काले काले घुंघराले केश गुच्छे गुच्छे होकर कमर तक लटक रहे हैं। उसकी बड़ी बड़ी काली आंखें उसके प्रेमी के हृदय में खंजर मार रही हैं। उसके पतले और लाल ओंठ उसके रूप को और भी बढ़ा रहे हैं। हंसने के समय छोटे २ दांतों की पंक्ति अनारदाने को भी मात कर रही है। उसका रंग गोरा है तथा दोनों गालों पर गुलाबी छिटक रही है॥

ऐसी सुन्दर जोवाना इस समय रोबर्ट की तरफ प्रेम भरी दृष्टि से देख रही है॥

आन्द्री कमरे में पैर रखते ही कुछ देर तक दर्वाजे पर ही खड़ा रहा। फिलिपा और रोबर्ट ने उसे देख लिया पर जो-वाना उसे न देख सकी क्योंकि वह अपने प्रेमी के कारण अपना कर्तव्य भूल गई थी, जिसके लिये अपने भावी राज का गौरव भूल गई थी उसको सामने पाकर उसकी दृष्टि फिर दूसरी तरफ न घूमती थी॥

आन्द्री चुपचाप फिलिपा के पास चला आया और बोला "हूं: राजकुमारी इतनी प्रेम में मग्न हो गई है कि राज अभिषेक होने का भी उसे ख्याल नहीं है!!"

फिलिपा०। हां, वह रौवर्ट को बहुत ही प्यार करती है पर तुम्हें इतनी देर क्यों हो गई? मैं एक घंटे से तुम्हारी राह देख रही हूं॥

आड्री०। राजा आज अचानक बीमार हो गये हैं रानी और अन्द्रिया अभी तक वहां बैठे थे। क्या मैं ऐसे समय में वहां से चला आता?

फिलिपा०। नहीं, कभी नहीं। मालूम होता है भोजन के साथ जो दवा तुमने खिला दी थी यह उसी का फल है॥

आड्री०। हां, यही बात है पर अब शीघ्रही अपना काम हो जाना चाहिये क्योंकि इस औषध का गुण केवल २४ घंटे तक रहेगा इसके बाद फिर राजा अच्छे हो जायेंगे॥

फिलिपा०। विष चिकित्सा में क्या तुम ऐसे मूढ़ हो कि वह विष राजा को इस लोक से विदा न कर सकेगा?

आड्री०। संसार में जितने प्रकार के विष हैं मैं प्रायः सब को जानता हूं पर राजा को विष देकर नहीं मार सकता क्योंकि जिस समय दूसरे दूसरे डाक्टर शव की परीक्षा करेंगे उस समय यह भेद खुल जायेगा। तब क्या मेरे ऊपर बधिक की तलवार चलने से बाकी रह जायगी?

फिलिपा०। ठीक है। विष या अस्त्र से काम नहीं चल सकता पर अब राजा का जीवित रहना भी ठीक नहीं है अब उन्हें मारना ही होगा॥

आड्री०। निश्चय। १३३५ ईस्वी के जनवरी महीने में जो उपाय किया था इस बार भी वही उपाय करना होगा पर इस बार राजा के शरीर में रक्त देने के समय उसमें तेज विष

मिलाने से किसी को पता न लगेगा क्योंकि वह विष उनके समस्त शरीर में फैल जायेगा॥

फिलिपा०। मैं समझ गई। पर उस काम को कब करेंगे?

आड्री०। कल सबेरे। कल रानी से सब बातें समझा कर कहूंगा और साथ ही यह भी कह दूंगा कि अठारह बरस पहिले जिस उपाय से राजा की जान बचाई थी आज भी उसी तरह का उपाय करना होगा क्योंकि राजा को वही रोग फिर हो गया है। इस बार उन्हें भी वहां ही खड़ा रक्खूंगा जिसमें कोई हमलोगों को अपराधी न ठहरावे॥

फिलिपा०। ठीक है। ड्यूक अभी तक राजा के पास ही था उसे तो कोई सन्देह नहीं हुआ है॥

आड्री०। उससे डरने की कोई जरूरत नहीं। उसका जीवन हमलोगों की दया पर निर्भर है यदि कोई सन्देह करेगा तो उसीके माथे सब दोष मढ़ूंगा॥

फिलिपा०। निश्चय। हमलोग उससे कहीं अधिक बलवान हैं। मेरे पुत्र पर राजकुमारी का प्रबल प्रेम ही हमलोगों को ऊंचे पद पर पहुंचायेगा॥

अचानक कमरे का दर्वाजा खुल गया और एक मनुष्य हाथ में नङ्गी तलवार लिये उस कमरे में आ पहुंचा। व क्रोध से कांप रहा था, उसने जोवाना को देखते ही क "विश्वासघातिनी! इतने दिनों के बाद आज तुम्हारे प्रे के साथ तुम्हें पाया है॥"

यह आनेवाला जोवाना का पति अन्ड्रिया है। व अचानक कमरे में आ जाने से जोवाना घबड़ा उठी। पर तु

ही क्रोध से कांपती हुई उठ खड़ी हुई और कड़क कर बोली—
"इसका क्या मतलब है? तुम यहां क्यों आए हो?"

चन्द्रिदास। स्त्री पति को छोड़ कर दूसरे के साथ प्रेम से बातें करके रात बितावे और उसी विश्वासघातिनी स्त्री को खोजने के लिये क्या उसका पति नहीं आ सकता है?

सीतानाः। खबरदार! फिर ऐसी बात मुंह से न निकालना। रौबर्ट मेरे भाई के बराबर है॥

रौबर्ट। (आगे बढ़ कर) यह मेरी मां का कमरा है, आप यहां से चले जायें॥

आट्री। महाराज इस समय बीमार हैं, ऐसे समय में राजमहल में झगड़ा न होना चाहिये॥

चन्द्रिदास। (ज़ोर से आट्री को हटा कर) आप इस समय हट जायें। (रौबर्ट की ओर देख कर) आओ रौबर्ट! यदि साहस हो तो एक बार मेरे सामने तलवार लेकर आगे बढ़ो॥

तुरत ही रौबर्ट की तलवार म्यान से निकल कर चमक उठी और वह आगे बढ़ा॥

आट्री। (क्रोध से) हे चन्द्रिदा! मेरी बात सुनो! मेरी आज्ञा से अभी तलवार म्यान में करो और यहां से चले जाओ॥

चन्द्रिदास। आप किस बल से ऐसी आज्ञा देते हैं?

आट्री। मैं किस बल से तुम्हें यह आज्ञा देता हूं क्या तुम नहीं जानते? निःसन्देह मेरे पास एक बहुत ही गुप्त शक्ति है!

चन्द्रिदास। भुजबल और गुप्तशक्ति इससे बढ़ कर दिखाने को और कौन सी बात हो सकती है। अब हटिये, ज़रा इन

मिलाने से किसी को पता न लगेगा क्योंकि यह विष उसके समस्त शरीर में फैल जायेगा ॥

फिलिपा०। मैं समझ गई। पर उस काम को कब करोगे?

आट्री०। कल सवेरे। कल रानी से सब बातें समझा कर कहूंगा और साथ ही यह भी कह दूंगा कि अठारह बरस पहिले जिस उपाय से राजा की जान बचाई थी आज भी उसी तरह का उपाय करना होगा क्योंकि राजा को वही रोग फिर हो गया है। इस बार उन्हें भी वहां ही खड़ा रखूंगा जिसमें कोई हमलोगों को अपराधी न ठहरावे ॥

फिलिपा०। ठीक है। हूम अभी तक राजा के पास ही था उसे तो कोई सन्देह नहीं हुआ है ॥

आट्री०। उससे डरने की कोई जरूरत नहीं। उसका जीवन हमलोगों की दया पर निर्भर है यदि कोई सन्देह करेगा तो उसीके माथे सब दोष मढ़ूंगा ॥

फिलिपा०। निश्चय। हमलोग उससे कहीं अधिक बलवान हैं। मेरे पुत्र पर राजकुमारी का प्रबल प्रेम ही हमलोगों को ऊंचे पद पर पहुंचायेगा ॥

अचानक कमरे का दर्वाजा खुल गया और एक मनुष्य एक हाथ में नङ्गी तलवार लिये उस कमरे में आ पहुंचा। वह क्रोध से कांप रहा था, उसने जोवाना को देखते ही कहा "विश्वासघातिनी! इतने दिनों के बाद आज तुम्हारे प्रेमी के साथ तुम्हें पाया है॥"

यह आनेवाला जोवाना का पति अन्द्रिया है। उसके अचानक कमरे में आ जाने से जोवाना घबड़ा उठी। पर तुरत

ही क्रोध से कांपती हुई उठ खड़ी हुई और कड़क कर बोली— "इसका क्या मतलब है? तुम यहां क्यों आए हो?"

अन्द्रिया०। स्त्री पति को छोड़ कर दूसरे के साथ प्रेम से बातें करके रात बिताये और उसी विश्वासघातिनी स्त्री को खोजने के लिये क्या उसका पति नहीं आ सकता है?

जोयाना०। खबरदार! फिर ऐसी बात मुंह से न निकालना। रौबर्ट मेरे भाई के बराबर है॥

रौबर्ट०। (आगे बढ़ कर) यह मेरी मां का कमरा है, आप यहां से चले जायें॥

आट्रो०। महाराज इस समय बीमार हैं, ऐसे समय में राजमहल में झगड़ा न होना चाहिये॥

अन्द्रिया०। (ज़ोर से आट्रो को हटा कर) आप इस समय हट जायें। (रौबर्ट की ओर देख कर) आओ रौबर्ट। यदि साहस हो तो एक बार मेरे सामने तलवार लेकर आगे बढ़ो॥

तुरत ही रौबर्ट की तलवार म्यान से निकल कर चमक उठी और वह आगे बढ़ा॥

आट्रो०। (क्रोध से) ऐ अन्द्रिया! मेरी बात सुनो। मेरी आज्ञा से अभी तलवार म्यान में करो और यहां से चले जाओ॥

अन्द्रिया०। आप किस बल से ऐसी आज्ञा देते हैं?

आट्रो०। मैं किस बल से तुम्हें यह आज्ञा देता हूं क्या तुम नहीं जानते? निःसन्देह मेरे पास एक बहुत ही गुप्त शक्ति है?

अन्द्रिया०। मुझपर और गुप्तशक्ति! इससे बढ़ कर दिल्लगी की और कौन सी बात हो सकती है। अब हटिये, ज़रा इस

मिलाने से किसी को पता न लगेगा क्योंकि यह विष उसके समस्त शरीर में फैल जायेगा॥

फिलिपा०। मैं समझ गई। पर उस काम को कब करोगे?

आट्री०। कल सबेरे। कल रानी से सब बातें समझा कर कहूंगा और साथ ही यह भी कह दूंगा कि अठारह बरस पहिले जिस उपाय से राजा की जान बचाई थी आज भी उसी तरह का उपाय करना होगा क्योंकि राजा को वही रोग फिर हो गया है। इस बार उन्हें भी वहां ही खड़ा रखूंगा जिसमें कोई हमलोगों को अपराधी न ठहराये॥

फिलिपा०। ठीक है। रूफ़ अभी तक राजा के पास ही था उसे तो कोई सन्देह नहीं हुआ है॥

आट्री०। उससे डरने की कोई ज़रूरत नहीं। उसका जीवन हमलोगों की दया पर निर्भर है यदि कोई सन्देह करेगा तो उसीके माथे सब दोष मढूंगा॥

फिलिपा०। निश्चय। हमलोग उससे कहीं अधिक बल-वान हैं। मेरे पुत्र पर राजकुमारी का प्रबल प्रेम ही हमलोगों को ऊंचे पद पर पहुंचायेगा॥

अचानक कमरे का दर्वाजा खुल गया और एक मनुष्य एक हाथ में नङ्गी तलवार लिये उस कमरे में आ पहुंचा। वह क्रोध से कांप रहा था, उसने जीवाना को देखते ही कहा "विश्वासघातिनी! इतने दिनों के बाद आज तुम्हारे प्रेमी के साथ तुम्हें पाया है॥"

यह आनेवाला जीवाना का पति अन्द्रिया है। उसके अचानक कमरे में आ जाने से जीवाना घबड़ा उठी। पर तुरत

ग्यारहवां बयान।

देखते देखते चौबीस घन्टे बीत गए। फिर वही आधी रात का समय आ गया और राजमहल में निस्तब्धता छा गई॥

अपने कमरे में राजा विष के प्रभाव से बेहोश पड़े थे और उनके पास ही फिलिपा और रानी सालिमा खड़ी थी तथा जादूगर नश्तर देने के विचार से वहां खड़ा था॥

सालिमा फिलिपा को अपने पास बुला कर बड़ी नम्रता से बोली "प्यारी कौंटेस फिलिपा! मुझे आज ही मालूम हुआ कि आज से अठारह बरस पहिले तुमने कौन सा उपकार मुझ पर किया था। मैं तुम्हें हृदय से धन्यवाद देती हूं॥"

फिलिपा०। महारानी! मैंने ऐसा कौन सा काम किया है तथा आपका उपकार क्या मुझपर कम हुआ है? जान देने पर भी यदि राजा निरोग हो जावें तो मैं तैयार हूं॥

रानी०। अहा! मनुष्य की भी कितनी अल्प बुद्धि होती है। जिस समय पहिले जादूगर ने राजा को आरोग्य किया था उसी समय मैं समझ गई थी कि किसी विचित्र शक्ति से राजा की जान बची है पर यह नहीं समझ सकी कि तुमने ही अपनी जीवनी शक्ति रक्त के द्वारा राजा के शरीर में दी है। आह! जो देखती हूं, जो सुनती हूं, सभी मानो स्वप्न सा मालूम होता है॥

जादू०। नहीं नहीं, यह स्वप्न नहीं है बल्कि सच्ची बात है। आपके सामने ही तो आज फिर वही काम होगा॥

पहिले ही की तरह राजा के हाथ में एक घाव का टुक

मूर्ख को इसके अपराध का दंड दूं ॥

आद्री०। इधर आइये, आपके कान में एक बात कहूं। इतना कह कर उसने अन्द्रिया के कान में कुछ कह दिया ॥

जादू के मन्त्र की तरह इस बात का प्रभाव अन्द्रिया के ऊपर पड़ा। उसके हाथ से तलवार भूमि में गिर पड़ी और चेहरा पीला हो गया ॥

फिलिया, जीयाना और रोबर्ट चकरा कर उसका मुंह देखने लगे पर आद्री के चेहरे पर न प्रसन्नता ही थी न क्रोध ही। वह गम्भीरता से बोला "डयूक अन्द्रिया! आशा है कि आप अब यहां नहीं खड़े रहेंगे॥"

अन्द्रिया चला गया, फिलिया बोली — "किस मंत्र से उसे हटाया?"

आद्री०। इस बारे में हमसे न पूछो, पर यह निश्चय जानो कि अब वह कभी भी इस तरह राजकुमारी की खोज में न आवेगा॥

आद्री इतना कह कर अपने कमरे में चला गया॥

रानी मालिनी ने फिर चिकित्सा की धन्यवाद दिया और वह उसके कमरे से चली गई, डाक्टर और रानी मालिनी वहीं रह गए ॥

शाम को पास ही जरा घड़ी बीत गए पर राजा की नींद न खुली परन्तु धीरे धीरे उनका चेहरा लाल होने लगा जिसे देखकर रानी मालिनी प्रसन्न हो गई किन्तु डाक्टर उसे देखते ही समझ गया कि विष ने अपना प्रभाव दिखाना शुरू कर दिया ॥

इस समय पांच बजना ही चाहता था। रानी ने देखा कि वह लालिमा धीरे धीरे घटती जाती है और उसके बदले कालिमा अपना अधिकार जमा रही है। डाक्टर भी यह देख कर बोला "महारानी! अन्त हुआ चाहता है, अब राजा को जगाना चाहिये॥"

मालिनी। (कातर स्वर से) क्या इस चिकित्सा का कोई फल न हुआ। जल्द बताइये, राजा बच तो जायेंगे?

डाक्टर। आप इस आने वाली विपद् को झेलने के लिये तैयार हो जायँ। मनुष्य की शक्ति से मृत्यु की शक्ति अधिक बलवती है, अब अधिक देर नहीं है॥

रानी घबड़ा कर बैठ गई और डाक्टर एक प्रकार की दवा राजा को सुंघाने लगा। राजा ने धीरे धीरे आंखें खोल दीं। डाक्टर ने उसे तकिये का सहारा देकर बैठाया। उसने रानी की तरफ देखा और रानी रोती हुई उसके पैरों पर गिर पड़ीं॥

डाक्टर ने एक नौकर को पुकार कर कहा "शीघ्र सब को यह समाचार सुनाओ कि राजा अब कुछही देर के मेहमान हैं॥"

यह समाचार सुनतेही शीलावती, चन्द्रिका, रोबर्ट, किलिया

मल लगाया गया और फिलिपा राजा के पास जा बैठी, प
इस समय फिलिपा कांप उठी क्योंकि समय के हेरफेर से प्र
यह मनुष्य की स्त्री नहीं है बल्कि मान में, धन में, गौरव में
समाज का ऊंचा पद पा चुकी है। इन अठारह वर्षों में उसने
जीवन की रङ्ग भूमि में न जाने कितने षड़यन्त्र रचे गए हैं तथा
कितनी ही चालबाज़ियां की गई हैं, पर क्या वह इस समय
अत्यन्त सुखी है? नहीं नहीं, कभी कभी वह अपना पहिला
हाल याद करके, झोपड़ी में रहने की दशा को स्मरण करके
बहुतही दुःखी होती है। परन्तु हाय! वे दिन बीत गए, अब
तुम वह निर्मल आनन्द, वह अपूर्व स्वतंत्रता अब फिर नहीं
नहीं मिल सकती। फिलिपा पहिली बातें याद करके दुःखी हो
रही थी। उसका मुख कमल मुर्झाता तथा पीला पड़ता जाता
था। आन्द्री उसकी यह दशा देख कर बोला "साहस!"
इतना सुनते ही फिलिपा संभल गई॥

रानी सानिया भी इस समय चारपाई के पास चली आई
थी। इस समय वह कांप रही थी और राजा बेहोश पड़े थे।

आन्द्री ने राजा के शरीर में किस तरह रक्त डाला या
फिर लिखने की कोई ज़रूरत नहीं है क्योंकि यह पहिले ही
लिखा जा चुका है। पर इतना लिख देना आवश्यक है कि
आन्द्री ने इस समय रानी की दृष्टि बचा कर एक प्रकार का वि
रक्त में मिला दिया॥

इस ही मिनिट में यह काम समाप्त हुआ। आन्द्री ने राजा
और फिलिपा के हाथ में पट्टी बांध दी और यन्त्र को अच्छी
तरह धोकर रख दिया॥

रानी मालिया ने फिर फिलिपा को धन्यवाद दिया और वह उसके कमरे से चली गई, आट्री और रानी मालिया वहीं रह गए ॥

रात को पास ही चार घंटे बीत गए पर राजा की नींद न खुली परन्तु धीरे धीरे उसका चेहरा लाल होने लगा जिसे देखकर रानी मालिया प्रसन्न हो गई किन्तु आट्री उसे देखतेही समझ गया कि विष ने अपना प्रभाव जमाना शुरू कर दिया ॥

इस समय पांच बजना ही चाहता था। रानी ने देखा कि वह लालिमा धीरे धीरे हटती जाती है और उसके बदले कालिमा अपना अधिकार जमा रही है। आट्री भी यह देख कर बोला "महारानी! अनर्थ हुआ चाहता है, अब राजा को जगाना चाहिये॥"

मालिया०। (कातर स्वर से) क्या इस चिकित्सा का कोई फल न हुआ। जल्द बताइये, राजा बच तो जायेंगे?

आट्री०। आप इस आने वाली विपद को झेलने के लिये तैयार हो जायें। मनुष्य की शक्ति से मृत्यु की शक्ति अधिक बलवती है, अब अधिक देर नहीं है॥

रानी घबड़ा कर बैठ गई और आट्री एक प्रकार की दवा राजा को सुंघाने लगा। राजा ने धीरे धीरे आंखें खोल दीं। आट्री ने उसे तकिये का सहारा देकर बैठाया। उसने रानी की तरफ देखा और रानी रोती हुई उसके पैरों पर गिर पड़ीं॥

आट्री ने एक नौकर को पुकार कर कहा "शीघ्र सब को यह समाचार सुनाओ कि राजा अब कुछही देर के मेहमान हैं॥"

यह समाचार सुनतेही जोवाना, अन्द्रिया, रोबर्ट, फिलिपा

और एक पादड़ी तथा कई सभासद उस कमरे में आ पहुंचे॥

राजा की आंखें यद्यपि खुली हुई थीं तथापि उनमें बोलने की शक्ति न थी। उन्होंने रानी को धीरे धीरे आलिंगन करके फिर जीवाना को अपने पास इशारे से बुलाया। जीवाना भी आंसू बहाती हुई राजा के पास आकर बैठ गई तथा अन्द्रिया भी निकट चला गया। राजा ने बोलने के बहुत कुछ उद्योग किये पर बोल न सके। इशारे ही में दोनों को समझाया कि अपने हृदय का मलिनभाव तुम दोनों दूर कर दो और सुख से राज करो॥

जीवाना ने भक्ति से राजा का हाथ चूम लिया पर अन्द्रिया आट्री को देखकर कांपने लगा॥

जीवाना और अन्द्रिया वहां से हट कर एक ओर हो गए और डूरासका डूयूक घुटने टेक कर बैठ गया। इसी समय राजा की दृष्टि जीवाना पर पड़ी जो अपने पति का सहारा छोड़ कर रोबर्ट के कंधे पर हाथ रक्खे हुए खड़ी थी। इस दृश्य ने राजा को बड़ा ही कष्ट पहुंचाया। उनकी मृत्यु के समय भी जीवाना अपने स्वामी की तरफ से अपनी घृणा को न हटा सकी। दुःख से राजा के कंठ से एक प्रकार का शब्द निकलने लगा। राजा डूयूक को आशीर्वाद देना भूल गए तथा दोनों हाथों से अपनी आंखें ढंक लीं। आट्री दौड़ कर उनके पास गया पर इतने ही में राजा का प्राण पखेरू उड़ गया था। वह बड़े दुःख से बोला "राजा अब इस संसार से उठ गए॥"

तुरत ही रानी, जीवाना तथा दूसरी दूसरी स्त्रियों की विलाप ध्वनि से राजमहल गूंज उठा। आट्री और फिलिपा

एक दूसरे को देखने लगे॥

आद्री०। महारानी! धीरज धरें! मनुष्य की जहां तक शक्ति थी वहां तक उपाय किया गया॥

रानी०। मैं अपनी इस शोचनीय दशा में भी आनन्द से कहती हूं कि डाकृर आद्री ने राजा का प्राण बचाने के लिये कोई भी उपाय बचा नहीं रक्खा तथा कौउन्टेस फिलिपा को भी हृदय से धन्यवाद देती हूं। मेरा भाग्य ही फूट गया है तब ये लोग क्या कर सकते हैं॥

कुछ देर तक सब चुपचाप बैठे रहे। फिर डूरासका ड्यूक उस निस्तब्धता को भङ्ग कर बोला—"जो होना था सो तो हो ही गया पर महाराज निश्चय ही भावी अधिकारी निर्णय कर गये हैं। नेप्लसका सिंहासन अधिक देर तक खाली न रहना चाहिये। मेरी इच्छा तो यही है कि आज शाम ही को एक सभा करके राजा का दानपत्र पढ़ा जाना चाहिये॥"

ड्यूक के प्रस्ताव को सबने मान लिया और धीरे धीरे लोग उस कमरे से चले गये॥

इस समय निराला पाकर फिलिपा आद्री से बोली, "ड्यूक के प्रस्ताव से मालूम होता है कि वह कोई नई चाल चला चाहता है॥"

आद्री०। जो हो। लौर्ड हाई चैम्बेलर एक अच्छे मनुष्य हैं और भेनचुरा भी मेरे अधिकार में है। ड्यूक मेरी चालों से नहीं बच सकता। जोवाना के सिंहासन पर न बैठने से हमलोगों का सर्वनाश हो जायेगा मैं इसी समय भेनचुरा के पास जाता हूं॥

इतना कह कर आद्री वहां से चला गया॥

बारहवां परिच्छेद।

भैनपुरा और ग्राट्री दोनों ही बड़े लालची थे और एक ही प्रकृति के रहने के कारण दोनों में बड़ा मेल भी था। ग्राट्री को जब कभी किसी को रुपया देने की जरुरत पड़ती तो वह भैनपुरा के द्वारा ही लेन देन करता था। कोई भी यह नहीं जानने वाला था कि ग्राट्री भी महाजनी का काम करता है। ग्राट्री के प्रस्ताव से ही भैनपुरा इस समय लाटेरी जेनरल (नाज़िर) के पद पर नियुक्त था॥

डूरास का ड्यूक एक लम्बा कोट पहिने भैनपुरा के घर पर आया तथा उसे जगाया क्योंकि वह सोया हुआ था। भैनपुरा भी जल्दी जल्दी कपड़े पहिन कर नीचे उतरा और अपने कमरे में ड्यूक को बैठे हुए देखते ही वह चुपचाप एक ओर खड़ा हो गया।

ड्यूक०। आप बैठें, खड़े क्यों हैं? मैं एक जरुरी काम के लिये आप के पास आया हूं॥

भैनपुरा बैठ गया पर उसकी घबड़ाहट अभी तक न गई थी॥

ड्यूक०। यदि यहां हमलोग बातें करेंगे तो कोई सुनेगा तो नहीं?

भैनपुरा०। नहीं, आप निःसकोच रह कर सब बातें कहें। मेरे नौकर चाकर सब सोये हुए हैं और जिसने मुझे जगाया था वह भी फिर सो गया है॥

ड्यूक०। पहिले आपको इस बात की प्रतिज्ञा करनी होगी कि यदि आप मेरी बातों को न मानेंगे तो उसे किसीसे कहेंगे भी नहीं क्योंकि मेरी बातें सब भेद की हैं। यदि आप उसे किसी दूसरे से कह देंगे तो निश्चय जानियेगा कि आपकी जान न बचेगी और इसके बदले यदि आप मेरी बातें मान लेंगे तो आपको बहुत कुछ इनाम भी मिलेगा॥

फ्रेनघुरा०। हूरान के प्रतापी ड्यूक के विरुद्ध एक सामान्य मनुष्य की बातों पर कौन विश्वास करेगा? आप विश्वास रक्खें मैं कभी किसीसे न कहूंगा॥

"बहुत अच्छा" कह कर ड्यूक ने एक थैली निकाल कर टेबलपर रख दी और बोला "इसमें १००० गिन्नियां हैं यह आपको बयाना देता हूं फिर और २००० दूंगा तथा राज्य के हाइ-चेनसेलर (प्रधान विचारपति) का पद भी आपही को मिलेगा॥

फ्रेनघुरा विस्मय से ड्यूक की ओर देखने लगा। ड्यूक फिर बोला "मैं दिल्लगी नहीं करता। महाराज परलोक सिधार गए॥"

फ्रेनघुरा०। कब?

ड्यूक०। एक घंटा हुआ। अब आप साफ साफ बतावें कि आप मुझे राजसिंहासन दिलावेंगे या नहीं?

फ्रेनघुरा०। मैं आपकी बातें मानने के लिये तैयार हूं पर मुझ गरीब आदमी से.....................

ड्यूक०। (बात काट कर) आपही से सब कुछ होगा। जिस समय पहिले राजा बीमार पड़े थे उस समय उन्होंने लीवाना को राजसिंहासन की अधिकारिणी बनाया था। मुझे पूरा २ विश्वास है कि वह विल (वसीयतनामा) आपही के पास है॥

बारहवां परिच्छेद।

भेनथुरा और आद्री दोनों ही बड़े लालची थे और एक ही प्रकृति के रहने के कारण दोनों में बड़ा मेल भी था। आद्री को जब कभी किसी को रुपया देने की जरूरत पड़ती तो वह भेनथुरा के द्वारा ही लेन देन करता था। कोई भी यह नहीं जानने पाता था कि आद्री भी महाजनी का काम करता है। आद्री के प्रस्ताव से ही भेनथुरा इस समय नाटोरी अफसर (नाजिर) के पद पर नियुक्त था॥

डुरास का ड्यूक एक लम्बा कोट पहिने भेनथुरा के घर पर आया तथा उसे जगाया क्योंकि वह सोया हुआ था। भेनथुरा भी जल्दी जल्दी कपड़े पहिन कर नीचे उतारा और अपने कमरे में ड्यूक को बैठे हुए देखते ही वह चुपचाप एक ओर खड़ा हो गया।

ड्यूक०। आप बैठें, खड़े क्यों हैं? मैं एक जरूरी काम के लिये आप के पास आया हूं॥

भेनथुरा बैठ गया पर उसकी घबड़ाहट अभी तक न गई थी॥

ड्यूक०। यदि यहां हमलोग बातें करेंगे तो कोई सुनेगा तो नहीं?

भेनथुरा०। नहीं, आप निःसंकोच रह कर सब बातें कहें। मेरे नौकर चाकर सब सोये हुए हैं और जिसने मुझे जगाया था वह भी फिर सो गया है॥

ड्यूक०। पहिले आपको इस बात की प्रतिज्ञा करनी होगी कि यदि आप मेरी बातों को न मानेंगे तो उसे किसीसे कहेंगे भी नहीं क्योंकि मेरी बातें सब भेद की हैं। यदि आप उसे किसी दूसरे से कह देंगे तो निश्चय जानियेगा कि आपकी जान न बचेगी और इसके बदले यदि आप मेरी बातें मान लेंगे तो आपको बहुत कुछ इनाम भी मिलेगा॥

भेनचुरा०। डूरास के प्रतापी ड्यूक के विरुद्ध एक सामान्य मनुष्य की बातों पर कौन विश्वास करेगा? आप विश्वास रक्खें मैं कभी किसीसे न कहूंगा॥

"बहुत अच्छा" कह कर ड्यूक ने एक थैली निकाल कर टेबलपर रख दी और बोला "इसमें १००० गिन्नियां हैं यह आपको अग्रिम देता हूं फिर और २००० दूंगा तथा राज्य के हाइ-चेनसेलर (प्रधान विचारपति) का पद भी आपही को मिलेगा॥

भेनचुरा विस्मय से ड्यूक की ओर देखने लगा। ड्यूक फिर बोला "मैं दिल्लगी नहीं करता। महाराज परलोक सिधार गए॥"

भेनचुरा०। कब?

ड्यूक०। एक घंटा हुआ। अब आप साफ साफ बतायें कि आप मुझे राजसिंहासन दिलायेंगे या नहीं?

भेनचुरा०। मैं आपकी बातें मानने के लिये तैयार हूं पर मुझ गरीब आदमी से......................

ड्यूक०। (बात काट कर) आपही से सब कुछ होगा। जिस समय पहिले राजा बीमार पड़े थे उस समय उन्होंने ओवाना को राजसिंहासन की अधिकारिणी बनाया था। मुझे पूरा २ विश्वास है कि वह विल (वसीयतनामा) आपही के पास है॥

भेनपुरा०। सभी ऐसा समझते हैं॥

ड्यूक०। पर आज शाम के पहिले कई महीने पहिले की तारीख देकर आपको एक दूसरा विल बनाना होगा, उसमें लीथाना के बदले मेरा नाम लिखना होगा॥

भेनपुरा कांप उठा तथा ड्यूक उसको घूर कर बोला, "मेरी बातें आप समझे?"

भेनपुरा०। हां, समझ गया॥

ड्यूक०। इतना करने से ही आपको २००० गिन्नियां और मिलेंगी॥

भेनपुरा०। अच्छा, करूंगा॥

ड्यूक०। साथ ही विल पर गवाह की तरह अपना नाम भी लिखना होगा॥

भेनपुरा०। दो घंटे के भीतर ही मैं दूसरा विल तैयार कर दूंगा क्या आप महाराज की मोहर लाये हैं? सिर्फ जाल बनाने से तो काम न चलेगा उनकी मोहर भी विल पर होनी चाहिये॥

ड्यूक०। निश्चय, पर यही प्रधान काम तो मैं भूल गया। सो हो, आप विल तैयार करें मैं मोहर लेकर आता हूं॥

ड्यूक भेनपुरा के मकान से बाहर निकला ही था कि आद्री वहां आ पहुंचा और भेनपुरा से बोला "ड्यूक किसी अच्छे काम के लिये यहां नहीं आ सकता यह मैं जानता हूं। अस्तु,उसने जो कुछ तुम्हें इनाम देने के लिये कहा है मैं उसका दूना दूंगा॥"

भेनपुरा०। तुम्हारी बातें न मानने का मुझमें साहस नहीं है। कहो, क्या कहते हो?

आद्री० । ड्यूक यहां क्यों आया था ?

मेनपुरा० । जाली विल बनवाने के लिये, जिससे जीवाना के बदले वही राज्य पा सके ॥

आद्री० । और उसके लिये तुम्हें क्या देगा ?

मेनपुरा० । ३००० गिन्नी और प्रधान विचारपति का पद ॥

आद्री० । मैंने वेनपुरा के राजकुमार को जो ६००० रुपया दिया है उसका तमस्सुक मैंने तुम्हारे पास रक्खा है, वही ६००० मैं तुम्हारे नाम लिख देता हूं और राज के प्रधान कोषाध्यक्ष (खज़ान्ची) का तथा प्रधान विचारपति का पद भी तुम्हें मिलेगा ॥

मेनपुरा० । तुम्हारे लिये मैं सब कुछ कर सकता हूं ॥

आद्री० । तुम जाली विल का एक ढांचा बनाओ मैं तब तक और आवश्यकीय चीजें लेकर आता हूं ॥

आद्री चला गया और मेनपुरा जाली विल का ढांचा बनाने लगा ॥

तुरत ही आद्री लौट कर आ गया और उसने हाथीदांत का एक बक्स और रोशनाई की एक शीशी लाकर रखदी और बोला "लो इस काली स्याही से विल को लिखो और इस बक्स से लाह निकाल कर मोहर करो । ड्यूक इस विल को देखकर प्रसन्न हो जायेगा और सभी के सामने पार्लमेन्ट कागज में विल को रखकर ऊपर से लाह देकर मोहर कर देगी ॥

मेनपुरा० । जाली विल में हमें अपना हस्ताक्षर भी करना होगा ॥

आद्री० । निश्चय और सन्ध्या के समय राजसभा में उप-

स्थित होकर-सभों के सामने ही यह विल निकालना। ऐसा उपाय किये रहना कि जिसमें ड्यूक तुम पर सन्देह न कर सके। इसके बाद मैं समझ लूंगा, तुम्हारे ऊपर कुछ भी आंच न आवेगी॥

भेनतुरा ने आद्री की बातें मान लीं और आद्री चला गया॥

*   *   *   *   *   *

इधर ड्यूक अपने प्रस्ताव को पूरा होता देख आनन्द मे दौड़ता हुआ राजमहल में जा पहुंचा॥

अभी सुबह होने में कुछ देर ही थी। अन्धेरे ही में धीरे धीरे वह गुप्त पथ से राजमहल में पहुंचा। जैसे ही वह राजा के कमरे के पास पहुंचा उसे दो मज्दूरिनें और एक रसायनिक डाक्टर वहां दिखाई दिया। ड्यूक ने मज्दूरिन से पूछा "इस कमरे में कौन है?"

मज्दूरिन०। कोई भी नहीं। (रसायनी की ओर देखकर) ये एक रसायनिक डाक्टर हैं। राजा के शव (लाश) की परीक्षा करने आये थे तथा जिसमें वह शव दुर्गन्धित न हो जावे इसलिये दवा लगा चुके हैं अब दूसरी दवा लेने को जा रहे हैं।

ड्यूक०। मैं इस कमरे में जाता हूं, वहां जाकर मैं राजा की आत्मा की शान्ति के लिये प्रार्थना करूंगा॥

मज्दूरिन०। पर वहां तो अंधेरा है॥

ड्यूक०। कोई जरूरत भी नहीं है, तुम आधे घंटे बाद आना। इतना कहकर उसके हाथ में एक गिन्नी दे दी। मज्दूरिन और डाक्टर चले गए॥

ड्यूक दरवाजा खोल कर भीतर गया, पर कुछ ही दे

आगे बढ़ने पर कांप उठा। उसे ऐसा मालूम होने लगा मानो जहां शव पड़ा है वहां से एक प्रकार की ज्योति निकल रही है॥

वह चुपचाप खड़ा हो गया। हाथों से अपनी आंखें ढँक लीं। फिर दोनों पर अब भी वही ज्योति दिखाई दी। उसे मालूम होने लगा कि मानो समूचा शव चमक रहा है॥

हयूक की दशा बिगड़ी और उसकी हिलने डोलने की शक्ति जाती रही, आगे बढ़ना तो दूर ही रहा। माथे के केश खड़े हो गए तथा पसीना निकलने लगा, साथ ही चिल्लाने की शक्ति भी जाती रही॥

वह चमक धीरे धीरे बढ़ने लगी। अब उसने स्पष्ट देखा कि राजा के शव के चारो ओर कोई चीज घूम रही है॥

यकायक उसे मालूम हुआ कि राजा की नाभी से एक तरह का धूंआ निकल रहा है। हयूक अब सँभल न सका, बड़े कष्ट से चिल्ला उठा और बेहोश होकर गिर पड़ा॥

तेरहवां परिच्छेद।

कुछ ही देर बाद ह्यूक की बेहोशी जाती रही। वह बड़े साहस से कमरे में चारो तरफ देखने लगा। उसने देखा कि अब वह चमक बिल्कुल जाती रही। वह आप ही आप बोला "यह कुछ नहीं बस मेरा भ्रम था॥"

उसके मन में चाहे जो हो, मुंह से जो चाहे सो कहता हो पर उसका हृदय बार बार यही कहता था कि राजा मरने पर भी जोयाना को उसके शत्रु के हाथ से बचायेंगे। पर यह भाव अधिक देर तक न ठहरा। वह आप ही आप जमीन पर हाथ पटक कर फिर कहने लगा, "क्या आश्चर्यजनक व्यापार है, वह दृश्य कुछ भी न था केवल मेरे भय के कारण ही दिखाई देता था! त्रिपिली और जेरूजेलम का राजसिंहासन ऐसी कायरता से अधीकृत न होगा॥"

ऐसा ही विचार उसके मन में बराबर उठने लगा। वह उठ खड़ा हुआ और धीरे धीरे राजा की चारपाई के पास पहुंचा और झपट कर राजा की उँगली से अँगूठी उतार ली और दौड़ता हुआ भेनचुरा के मकान पर जा पहुंचा॥

ह्यूक की घबराहट उसके चेहरे से झलक रही थी और उसका चेहरा पीला पड़ गया था। भेनचुरा उसको यह दशा देख घबड़ा कर बोला "यह क्या? क्या हुआ? जल्द बताइये॥"

ह्यूक०। (कुर्सी पर बैठ कर) कुछ नहीं, बिल तैयार है!

भेनचुरा०। हां॥

ह्यूक०। अच्छा पढ़िये॥

क्षेनघुरा ने विल पढ़ कर सुना दिया। ड्यूक प्रसन्नता से बोला, "बहुत ठीक, लीवाना को साल में बीस हजार गिन्नी दी जायँगी यह भी आपने बहुत ठीक ही लिखा। अच्छा (अँगूठी देकर) लीजिये, मुहर कर दीजिये॥"

क्षेनघुरा ने पादरी के दिये हुए बक्स में से लाह निकाल कर विल पर मुहर कर दी। जाली विल बन गया॥

क्षेनघुरा ने विल एक लिफाफे में बन्द करके उस पर भी मुहर कर दी॥

ड्यूकः। एक घंटे के बाद आप विचारपति के पास जा कर कहियेगा कि मेरे पास दूसरा विल है॥

क्षेनघुराः। बहुत अच्छा। आपकी आज्ञा अवश्य पालन की जायगी॥

ड्यूकः। आप निश्चय जानियेगा कि कल ही आप प्रधान विचारपति के पद को पावेंगे॥

क्षेनघुराः। आप की दया का वारापार नहीं है॥

सुबह होते ही रानी की मृत्यु का सम्वाद चारो ओर फैल गया। राजधानी के गिर्जा घरों से शोक सूचक घंटे बजने लगे॥

संध्या के कुछ पहिले ही बहुत से मनुष्य राजमहल में जमा होने लगे। धीरे२ काले काले वस्त्र पहिने हुए बहुत से मनुष्य तथा औरतें सभाभवन में जमा हो गई॥

उस बड़े भारी सभाभवन की दीवारों में काला कपड़ा लगा हुआ था। एक तरफ एक ऊंची जगह पर राजसिंहासन रक्खा हुआ था। उस पर भी काली मखमल बिछी हुई थी॥

सिंहासन के आगे एक बड़ा टेबल रक्खा हुआ था जिसके चारों तरफ आराम कुर्सियां सजी हुई थीं और सभाभवन में तीन तरफ कुर्सियां सजाई गई थीं ॥

८: बजते ही डूगमका ड्यूक चार्लस कई मनुष्यों के साथ वहां आया और आराम कुर्सी पर बैठ गया उसके साथी कुछ दूर दूसरी कुर्सियों पर बैठ गये । तुरत ही प्रधान विचारपति (जज) और भेनचुरा दोनों धीरे धीरे इस कमरे में आये। इस समय दोनों के हाथ में एक एक मुहर किया हुआ लिफाफा था ॥

प्रधान विचारपति और भेनचुरा के बैठते ही कई मनुष्य और भी इस कमरे में आ पहुंचे। इस दल में सब से आगे शोक से विह्वला रानी मानिया थीं उनके दाहिनी तरफ राजकुमारी ओथाला और बाईं तरफ अन्द्रिया था और ओथाला के दाहिनी तरफ कुछ पीछे हटकर किलिया थी तथा उसके पीछे रीअर्ड, आद्री और कई दूसरे दूसरे मनुष्य तथा स्त्रियां थीं ॥

रीअर्ड एक आराम कुर्सी पर बैठ गया उसके बगल ही में आद्री और ओथाला की प्यारी सहेली करोलिना बैठी ॥

करोलिना रूप में सुन्दर सोहनी पर स्वभाव में दासी से भी बढ़ कर नखरी थी । करोलिना साहस और बहुदर्शिता में एक ही थी । किलिया ने इसे अपनी ही प्रकृति का पाकर उसने बहुतसे काम निकलने की आशा से ओथाला की सहेली बना रखा था । थोड़े ही दिनों में करोलिना ने अपनी चालाकी से ओथाला को अपने वश में कर लिया तथा राजकुमारी

जीवाना इसी सहेली के कारण अपने कर्तव्य से विमुख होने लगी॥

सभाभवन में सबके बैठ जानेपर प्रधान विचारपति उठ खड़े हुए और अपने पासके लिफाफे की मोहर तोड़ कर तथा उसमेंसे विल निकाल कर गम्भीर स्वर से बोले "हमलोगों के मृत महाराज एंडूर ने सन १३१५ ईस्वी में एक विल किया है और उसपर अपना हस्ताक्षर तथा मोहर करके मुझे देदिया है। मैं उसे आज सब सभासदों के सामने पढ़ता हूं। इस विल से जिन सभासदों को सम्बन्ध है वे ध्यानसे सुनें॥"

सभाभवन में सन्नाटा छाया हुआ था। विचारपति विल को पढ़ रहे थे जिसका सारांश यह है कि—"सिसिली और जेरूसेलम का सिंहासन, कैलेब्रिया की जमीदारी तथा दूसरे दूसरे प्रदेश राजा ने राजकुमारी जीवाना के नाम लिख दिये थे। साथ ही उन्होंने यह भी लिख दिया था कि यदि राजकुमारी जीवाना विवाह करेंगी तो उसका पति भी उस सिंहासन का अधिकारी होगा और यदि जीवाना की युवावस्था के पहिले ही राजा की मृत्यु होगी तो कई कर्मचारी मिलकर राज्य का काम चलावेंगे॥"

इस विल में चार्लस का नाम न सुनकर कई आदमी उस की ओर देखने लगे॥

प्रधान विचारपति फिर बोले, "यही विल राजा ने मुझे दिया था यदि इसके बाद कोई नया विल राजा लिख गए हों तो वह मुझे मिलना चाहिये॥"

फ़िलिपा ने यह सुनकर एक दूसरा विल उनके हाथ में दे दिया॥

सभाभवन में ऐसा सन्नाटा छाया हुआ था कि यदि एक सुई भी गिरती तो उसका शब्द सुनाई पड़ता। जीवानी इस समय कांप रही थी तथा चार्लस चुपचाप बैठा था। उसके चेहरे पर हर्ष या विषाद कुछ भी दिखाई न देता था। किलिया कुछ विचलित सी दिखाई देती थी पर आन्द्री स्थिर था॥

विचारपति०। (भेनचुरा से) क्या महाराज ने स्वयं यह विल लिखकर आपको दिया था?

भेनचुरा०। (आंखें नीची करके) हां॥

विचारपति०। तब तो इसमें जो कुछ लिखा है वह आप को मालूम ही होगा?

भेनचुरा०। आप पहिले विल पढ़ें फिर जो कुछ पूछना हो पूछियेगा॥

"ऐसा ही होगा" कहकर विचारपति ने लिफाफे में से विल बाहर निकाला। पर यह क्या? विचारपति विस्मय से घबड़ा क्यों उठे? बार २ विल उलट पलट कर देखने क्यों लगे?

अन्त में वे बोले "मिस्टर भेनचुरा! मालूम होता है आप को भ्रम हो गया है? विल कहां है। यह तो सादा कागज है!"

ड्यूक०। (घबड़ा कर) एँ सादा कागज!" झूठ, बिल्कुल झूठ!!

विचारपति०। (क्रोध से) ड्यूक! इस सभा में मेरे इतना बूढ़ा कोई भी न होगा। मुझे ऐसे कटुवचन कहने के कारण आपको अवश्य पछताना पड़ेगा। यदि विश्वास न होता हो तो यह देखिये, सादा कागज, इसमें एक पंक्ति तो दूर रही एक अक्षर भी नहीं लिखा है। इसपर की मोहर भी इतनी

गल गये हैं कि उसका एक अक्षर भी पढ़ा नहीं जाता ॥

सभासद्गण प्रसन्न हो गये। ड्यूक ने भैनपुरा की ओर एकबार तीव्र दृष्टि से देखकर विचारपति के हाथ से कागज ले लिया, पर उसे सादा देख सहसा चौंक कर बोला, "विश्वास-घात, घोर विश्वासघात ॥"

विचारपति। (हाथ उठा कर) हो सकता है। पर न इस विषय के अनुसन्धान की यह जगह है और न यह समय ही है ॥

ड्यूक। यही समय है और यही जगह है। किसी कारण से कागज पर का लिखा हुआ उड़ गया है पर भैनपुरा तो यहीं उपस्थित हैं, आप उनसे क्यों नहीं पूछते कि उसमें क्या लिखा था तथा उनको अपना हस्ताक्षर बनाने की क्या जरूरत थी ?

इतना कहकर ड्यूक भैनपुरा की ओर देखने लगा। भैनपुरा कांप उठा। वह उठकर कुछ कहनाही चाहता था कि बाधा देकर डाढ़ी उठ खड़ा हुआ और गम्भीर स्वर से बोला "मैं भी कुछ कहा चाहता हूं, क्योंकि जिस समय विल लिखा गया था मैं भी वहां ही उपस्थित था। कृपा कर मेरी बातें भी सुन ली जावें ॥"

विचारपति। मैं प्रसन्नता से आपकी बातें सुनने के लिये तैयार हूं ॥

डाढ़ी। तीन महीने हुए जब एक दिन महाराज ने मुझे और मिस्टर भैनपुरा को बुला कर कहा कि "ड्यूक आफ हुराव की इच्छा मुझसे छिपी नहीं है। वह मेरे बाद जीवाना को सिंहासन पर बैठने न देगा यह भी मैं जानता हूं। मैं उसे

कुछ शिक्षा दिया चाहता हूं, सम्भव है कि इस शिक्षा से आगे उसकी चाल सुधर जाये।" इतना कहकर महाराज ने मेनुआ के हाथ में एक कागज देकर फिर कहा कि "तुम इस बात को प्रकाश कर देना कि मरने के पहिले राजा एक दूसरा विल भी कर गए हैं। लिफाफा खोलते ही सभों को ड्यूक के हृदय का भाव मालूम हो जायेगा, आशा है कि यही आशाभङ्ग उसको दुराशा को जड़ से खोद निकालेगी और उसे पूरी शिक्षा भी मिल जायेगी। अब आपलोग देखें कि महाराज की बातें कहां तक सच हैं। हमलोग भी आशा करते हैं कि ड्यूक अब भविष्यत के लिये सावधान हो जायेंगे॥

आड्री जिस समय ये उपरोक्त झूठी बातें कह रहा था उस समय ड्यूक का कलेजा क्रोध से जल रहा था। कई बार उसका हाथ तलवार पर गया पर वह कुछ कर न सका क्योंकि आड्री के विरुद्ध कोई काम करने का वह साहस ही नहीं कर सकता था॥

विचारपति०। अब मैं प्रसन्नता से राजकुमारी औवाना को सिसिली और नेब्लेल्स की रानी कहकर घोषणा करता हूं और ड्यूक अन्द्रिया..................

इसी समय रोबर्ट उठकर ज़ोर से बोला, "जय, रानी औवाना की जय।" साथ ही सब नर नारी "जय रानी औवाना की जय" बोल उठे॥

सभा में बारबार यह जयध्वनि गूंजने लगी। विचारपति की बातें जो कुछ वह अन्द्रिया के बारे में कहा चाहते थे वो की त्यों दबी ही रह गईं। वह जितनी बार अन्द्रिया की ?

घोषणा करने के लिये उठे उतनी ही बार उनकी चेष्टा व्यर्थ हो गई और रानी जीवाना की जयघोषणा गूंजने लगी। वे हताश होकर बैठ गए॥

रानी जीवाना की जयध्वनि धीरे धीरे सभागृह से बाहर हुई तथा राजमहल के दूसरे दूसरे भागों में गूंजने लगी॥

अधिक आनन्द के कारण रानी जीवाना मुर्छित होकर गिर पड़ीं। फिलिपा, करोलिना तथा दूसरी २ स्त्रियां उसे उठा कर कर राजमहल के भीतर ले गईं॥

इधर चार्लस अन्द्रिया के पास पहुंचा और बोला "आज हमदोनों मनुष्यों की बड़ी ही मानहानि हुई, आओ हम लोग आपस में मिल कर इसका बदला लें॥"

अन्द्रिया और चार्लस दोनों सभाभवन से बाहर चले गए। इस समय चारो दिशा रानी जीवाना की जयध्वनि से गूंज रही थी॥

चौदहवां परिच्छेद।

जिस समय राजमहल में यह आनन्दध्वनि गूंज रही थी उसी समय अलसमूरा मे अठारह वर्ष की एक सुन्दरी दो सहेलियों के साथ बाहर निकली। इस सुन्दरी के रूप का वर्णन करने की शक्ति इस लेखनी में नहीं है। इसके हृदय की पवित्रता तथा प्रकृति की मधुरता इसकी बड़ी बड़ी आम की फांकोंसी आंखों से झलकती है। इसका शरीर न लंबा न बहुत मोटा ही है। सुनहरे और घुंघराले केश की बेनी कमर तक लटक रही है। मुख मण्डल चन्द्रमा की निर्मल कान्ति को भी लजा रहा है। ऊंचा और अर्ध चन्द्र सा ललाट स्वच्छ प्रकृति का परिचय दे रहा है, भौंहे धनुष सी तथा आंखें खंजन के गर्व को खर्व कर रही हैं। गुलाबी गाल आइने से चमक रहे हैं तथा बिम्ब के समान लाल लाल ओंठ चुम्बन का आसरा ही देख रहे हैं,अर्थात उसकी आकृति से ऐसी मधुरता और विमलता फूटी पड़ती है कि देखने वाला पाखण्डी या लम्पट रहने पर भी उसे पापदृष्टि से नहीं देख सकता बल्कि उसे देखते ही एक प्रकार की भक्ति उत्पन्न होती थी॥

इस अनुपम सुन्दरी का नाम लूमिया है। यह मार्कुइस आफ अलसमूरा (जूलियस) की लड़की है। इस समय अपनी सहेलियों के साथ धर्ममन्दिर (गिरजाघर) में जा रही है॥

सन्ध्या हुआ ही चाहती है। गिर्जाघर में इधर उधर दो चार बत्तियां जलरही हैं। वहां अधिक भीड़ भी नहीं है, दो एक पादड़ी घुटने टेक कर बैठे हुए ईश्वर की आराधना कर रहे हैं॥

जिस स्थान पर बैठ कर लूसिया नित्य ईश्वर की आराधना करती थी, उसने देखा कि उसी जगह पर एक दुबला पतला मनुष्य घुटने टेक कर ईश्वर की आराधना कर रहा है, जिसके सुन्दर तथा बहुमूल्य वस्त्रों से एक प्रकार की सुगन्ध आ रही है। लूसिया उसका मुंह न देख सकी क्योंकि वह उसे अपने हाथों से ढके हुए था मानो वह रो रहा है॥

लूसिया चुपचाप एक ओर हट कर खड़ी हो गई, पर जिस समय लूसिया उस जगह से हटने लगी तो उसके पैर की आहट तथा कपड़ों की खड़ाखड़ाहट से उस युवक का ध्यान भंग हो गया। उसने सिर घुमा कर देखा तो अपने सामने एक अपूर्व सुन्दरी को खड़ी पाया॥

वहां की धुंधली रोशनी में लूसिया ने देखा कि इस युवक के मुखमण्डल पर चिन्ता की कालिमा रहने पर भी वह अतुल्य सुन्दर है पर दृष्टि से विषाद और निराशा टपक रही है। इस युवा की अवस्था बीस वर्ष की है॥

लूसिया अलग बैठ कर ईश्वर की आराधना करने लगी पर उसका ध्यान न जमा। आज पहिले ही पहल उसके हृदय में चिन्ता ने अपना अधिकार जमाया था। वह मन ही मन बहुत ही घबड़ाने लगी, पर उपाय क्या था? जितना ही वह अपनी चिन्ता को दूर भगाने का उद्योग करती थी उतना ही उस युवा का मलिन मुख स्मरण होकर उसकी चिन्ताग्नि में घी की आहुति का काम करता था। अन्त में वह यह देखने के लिये कि वह युवक बैठा है या गया घूमी, उसी समय उस युवक ने भी अपना सिर उठाया और इन दोनों की आंखें

आपस में मिल गईं । लज्जा से लूसिया का चेहरा लाल हो गया और वह फिर अपना ध्यान ईश्वर की ओर लगाने का उद्योग करने लगी ॥

इसी समय गिर्जाघर में बाजे बजने लगे और साथ ही पादड़ियों का गाना गूंजने लगा। इस संगीत को सुनते ही लूसिया की चिन्ता लोप हो गई और वह आनन्द से ध्यान लगा कर गाना सुनने लगी। पर इस गाने का प्रभाव उस युवक पर दूसरी ही तरह पड़ा। उसके हृदय में जो चिन्ता सोई हुई थी वह जाग उठी। वह बड़े कष्ट से बोला "इस संगीत के हर एक सुर में मृत्यु की भयानक ध्वनि मिली हुई सुन पड़ती है पर हाय! यह मृत्यु मेरे पास क्यों नहीं आती। क्या मेरे ऐसा अभागा और भी कोई होगा।"

लूसिया ने उस युवा की ये बातें सुन लीं। वह घूम कर उसकी ओर देखने लगी साथ ही वह युवक भी घूम कर देखने लगा कि मेरी बातें किसी ने सुनी तो नहीं। इसी समय फिर इन दोनों की आंखें चार हुईं। इस बार लूसिया ने अपनी दृष्टि नीची न की बल्कि उस युवा के मलिन मुख को कातर नयनों से देखने लगी, लूसिया की करुणदृष्टि से सन्तप्त हृदय युवक के मुख की मलिनता दूर हुई। लूसिया उठ खड़ी हुई और वहां से चलने को तैयार हो गई पर उसी समय उसका रूमाल गिर पड़ा जिसे वह देख न सकी॥

इस अपरिचित युवक ने बड़ी सभ्यता से रूमाल उठा कर लूसिया को दे दिया और नम्रता से बोला "सुन्दरि! आपने जिस करुणदृष्टि से मुझे आज देखा है उसके लिये मैं हृदय

से आपको धन्यवाद देता हूं॥

लूसिया०। मैं समझती हूं कि आपको कोई बड़ा भारी कष्ट है। मैं यही समझ कर दुःखित हुई हूं॥

युवा०। सुन्दरि! मैं सचमुच दुखी हूं, मेरे हृदय में दुःख ही दुःख भरा हुआ है, सुख का तो कहीं चिन्ह भी नहीं है। पर उसी दुःख के कारण आज मैं आप ऐसी सुन्दरी की स्नेह दृष्टि में आकर्षित हुआ हूं। पर हाय! वह कौन सा दुःख है, वह कौन सी चिन्ता है, यह मैं किसीके सामने नहीं कह सकता। इस देवमन्दिर में खड़ा होकर मैं शपथ पूर्वक कहता हूं कि मैंने आज तक कभी कोई पाप नहीं किया है न किसी की हानि ही पहुंचाई है। इस पृथ्वी पर के समस्त फल फूल और कलियों तक को भी कभी पैर नहीं लगाता क्योंकि वे भी उसी परमब्रह्म की सृष्टि में हैं। जाड़े के दिनों में गरीबों के झोपड़े में जाकर जहां तक बन पड़ता है उनकी सेवा करता हूं, रोगी की शय्या पर बैठ कर आद्यन्त से उसकी सुश्रूषा करता हूं, सदा दूसरों की भलाई करने में तत्पर रहता हूं तथापि न जाने ईश्वर की कृपादृष्टि मुझपर क्यों नहीं पड़ती! आप यह निश्चय जानें कि मुझसा अभागा इस संसार में दूसरा नहीं है॥

युवा रोता हुआ इतनी बातें कह गया। अधिक दुःख के कारण उसका मुंह मलिन होने लगा। लूसिया चुपचाप खड़ी खड़ी उसकी ओर देखती रही। उसकी दृष्टि से दया और करुणा टपक रही थी। वह युवा फिर बोला—"मैं आपकी दृष्टि तथा मुख देखकर समझता हूं कि आप मेरे दुःख से दुखी हैं। आपकी सहानुभूति और आपकी दया, परमेश्वर की करुणा की किरण

सी मुझे दिखाई देती है। आपके करुणा की ठंडी धारा ने औषधि की भांति आज मेरे हृदय को ठंडा किया है॥"

लूसिया दुःखी होकर बोली—"आप सब सब वचन के पाप न करने पर भी दुःखी हैं यह बड़े आश्चर्य की बात है॥"

युवा०। मुझे क्षमा कीजिये, मेरे दुःख और दुर्दशा का ध्यान आप छोड़ दें। आप की करुणा भरी बातों से मेरे हृदय की धधकती हुई आंच ठंडी हो चली है॥

इतना कह कर वह युवा आगे बढ़ा और लूसिया के पास जाकर उसका कोमल हाथ अपने हाथों में लेकर चूम लिया। इसके बाद वह वहां से चला गया॥

लूसिया भी अपनी सहेलियों के साथ घर फिर आई पर उस युवा का सुन्दर मुख रात भर उसे याद आ आ कर दुःखित करता रहा॥
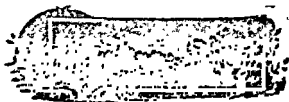
पन्द्रहवां परिच्छेद।

चार्ल्स और चन्द्रिया सभाभवन छोड़ कर एक गुप्त द्वार से चुपचाप बाहर निकले और राजमहल के दूसरी तरफ एक मकान में चले गए॥

चार्लस का अभी विवाह नहीं हुआ था। उसकी माता उसके साथ इसी मकान में रहती थी। चार्लस की मां बड़ी धार्मिक थी, वह कभी घर से बाहर न निकलती और वहीं बैठी २ ईश्वराधना में अपना दिन बिताती थी। उसका दान नेपल्स के हर एक दीनदुखियों के यहां पहुंचा करता था॥

चार्लस चन्द्रिया को साथ लिये हुए चुपचाप एक कमरे में चला गया। इस समय इन दोनों पुरुषों की चिन्ता दो प्रकार की थी। चन्द्रिया अपमानित होने पर भी जोवाना, रौबर्ट तथा फिलिपा के विरुद्ध कोई काम नहीं कर सकता था, उनसे कभी प्रगट रूप से शत्रुता नहीं कर सकता था। आन्द्री तो मानो उसके लिये काल ही था क्योंकि वह उसकी सब गुप्त बातें जानता था। इधर चार्लस विचारता था कि "अब मेरी सब आशायें वृथा हो गईं, यदि किसी तरह चन्द्रिया को मिला कर कुछ सेना (फौज) बटोर सकूं तो कदाचित लड़भिड़ कर जीत भी सकता हूं। यदि किसी तरह जोवाना को सिंहासन से उतार सका तो फिर चन्द्रिया को बैठा दूंगा, वह मेरे हाथ में सदा ही रहेगा। मै सिंहासन पर न बैठने पर भी सब तरह का काम कर सकूंगा॥"

ये लोग जिस कमरे में बैठे हुए थे वह खूब सजा हुआ

था। कमरे में दूसरी तरफ जाने का भी एक रास्ता था और दोनों तरफ दो बड़ी बड़ी खिड़कियां थीं। एक तरफ दीवाल में चार्लस के कपड़े तथा हथियार सजे हुए थे और दूसरी तरफ एक बहुत बड़ी तस्वीर लगी हुई थी॥

चार्लस कमरे में जाकर एक आराम कुर्सी पर लेट गया और अन्द्रिया उसके सामने ही एक कुर्सी खींच कर बैठ गया। इस समय वह तस्वीर ठीक उसके सामने पड़ती थी॥

चार्लस०। अन्द्रिया! इस समय हमलोग एक ही प्रकार से अपमानित हुए हैं, इस लिये हमलोगों को आपस में विचार करके उनसे अवश्य बदला लेना चाहिये॥

अन्द्रिया०। पर यह कठिन काम है। हम लोगों के शत्रु हमलोगों से कहीं बढ़कर बलवान हैं, उन्हें किस तरह हमलोग जीत सकते हैं?

चार्लस०। सुनो, दूसरे विल के अनुसार मैं ही इस गद्दी का अधिकारी था पर अब तो वह सब बातें हो गईं। अब पहिले विल के अनुसार तुम राजसिंहासन पर बैठ सकते हो। सम्राट की आज्ञा कोई टाल नहीं सकता। तुम झण्डा लेकर खड़े हो, अवश्य ही नेपल्स की प्रजा वहां जमा हो जायेगी। हंगरी राज्य से तुम्हें सहायता मिलेगी, पोप भी खोल कर तुम्हें आशीर्वाद देंगे और तुम्हारी संग्रह की हुई सेना का सेनापति बन कर मैं तुम्हें राज्य दिलाऊंगा॥

चार्लस की बातें सुन कर अन्द्रिया प्रसन्न हो गया, पर तुरत ही उसे आद्री का ध्यान आ गया और वह कांप कर बोला—"सैन्यबल से बढ़ कर कौशल से काम निकलता है, जितने

दिनों तक स्राट्री राजमहल में है उतने दिनों तक तो हमलोगों को कोई आशा न रखनी चाहिये॥"

चार्लस०। तब तो तुम्हारे विचार से भी यह स्राट्री ही सब अनर्थों की जड़ है! उसीके कौशल से तुम्हारा सर्वनाश हुआ है॥

अन्ड्रियाट। निःसन्देह॥

चार्लस०। फिर देर क्यों करते हो, उसे मार डालो॥

अन्ड्रियाट। हां, बिना उसको मारे तो काम नहीं चल सकता॥

चार्लस०। उसके मरते ही हमलोगों की आशा पूर्ण होगी, वही परम शत्रु है और उसीके कारण से हमलोगों की यह दुर्गति हुई है॥

इसी समय अन्ड्रिया की दृष्टि अचानक उस तस्वीर पर जा पड़ी। उसने देखा कि वह तस्वीर हिल रही है। वह एक टक दृष्टि से उधर देखने लगा। चार्लस फिर बोला, "विष देकर स्राट्री को मार डालने से ही हमलोगों की राह का कांटा दूर हो जायेगा। वही दुष्ट फिलिपा को राजमहल में ले आया है, उसीकी बातों में आकर फिलिपा ने राजा को अपने वश में किया था तथा वही भारी पाखण्डी है। उसको अवश्य विष देकर मार डालो॥"

ठीक इसी समय तस्वीर चुपचाप एक ओर खिसक गई और एक दरवाजा दिखाई दिया जिसमें डाकृर स्राट्री खड़ा था। उसका चेहरा इस समय बड़ा ही भयंकर था, लाल लाल आंखों से मानो आग बरस रही थी। उसे यकायक वहां देख कर अन्ड्रिया की बोली बन्द हो गई। स्राट्री ने उसे भय दि-

खाने के लिये हाथ उठाया और फिर चला गया। दरवाज़ा बन्द हो गया और तस्वीर अपने ठिकाने आ गई॥

अन्द्रिया का उसे देखते ही ऐसा सिर घूमा कि यदि चार्लस उसे पकड़ न लेता तो वह कुर्सी पर से गिर पड़ता॥

चार्लस०। अन्द्रिया! क्या हुआ!! तुम्हारा मुंह इतना मलिन क्यों हो रहा है?

इतना सुनते ही अन्द्रिया संभल गया पर आट्री की भयानक मूर्ति अभी तक उसकी आंखों में घूम रही थी॥

अन्द्रिया०। हां, कुछ ऐसा ही गड़बड़ हो गया था॥

चार्लस०। (क्रोध से) मैं समझ गया, तुम्हारे दुःख का कारण समझ गया॥

अन्द्रिया०। समझ गये?

चार्लस०। हां, समझ गया। आट्री को विष देकर मारने की बात सुनकर ही तुम्हारा बालहृदय कांप उठा है। तुम्हारे ऐसा डरपोक दूसरा न होगा॥

अन्द्रिया०। मैं डरपोक या कायर नहीं हूं, मैं अभी तलवार निकाल कर डरपोक कहने का दण्ड तुम्हें दे सकता हूं पर धोखा देकर किसी का प्राण नहीं ले सकता। मैं अपमान से दुखी होकर तुम्हारे साथ आया था पर अब प्रतिज्ञा करता हूं कि कभी आट्री का प्राण न लूंगा॥

चार्लस ने देखा कि उसकी रही सही आशा भी जाती रही। वह नम्रता से बोला, "क्षमा करो भाई! मैं तुम्हारे ही लिये यह उपाय बताता था॥"

अन्द्रिया०। मैं अपने भाई, हंगरी के राजा "लूई" के पास

चोरी मिलूंगा, यह तो कहीं भी नहीं होगा॥

चार्लमट। रे भाग्यवान! यहां तुम्हारा प्राण तक लिया जा सकता है॥

अल्फ्रेड। नहीं, कदापि नहीं। मुझे पूरा विश्वास है कि वे लोग कुटिल, दुराचारी तथा कितने ही अपराधी रहने पर भी मेरी जान न लेंगे। मैं यहीं राजमहल ही में रहूंगा॥

इतना कहकर अल्फ्रेड उठ खड़ा हुआ और वहां से चला गया। इस घटना के दूसरे दिन राजा एडगर का मृतदेह बड़े समारोह से गिर्जाघर में गाड़ दिया गया और रानी श्री-धारा ने राजमुकुट धारण किया॥

राज्य के प्रधान विचारपति मंत्री और सेनापति विचारपति तथा कोषाध्यक्ष नियत किया गया॥
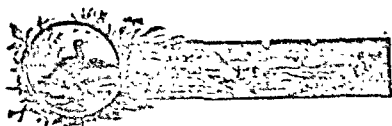
सोलहवां परिच्छेद।

सन्ध्या का समय है, इसलिये जूलियन अपनी स्त्री के साथ इस समय अपने बाग में टहल रहा है॥

धीरे धीरे सन्ध्या बीत गई। साथ ही निशानाथ चन्द्रमा तारागणों के साथ आकाश में उदय हो गए और समस्त संसार पर चांदनी फैल गई॥

मार्कुइस जूलियन की स्त्री लिडमारा अपने पति का एक हाथ पकड़े घूम रही थी। वह बोली, "बगीचे में घूमने से मेरी चिन्ता कुछ दूर तो हो गई पर प्रियतम! यह तो बताओ कि आज दिन भर तुम इतने उदास क्यों थे?"

जूलियन कांप उठा। वह बोला, "प्रियतमे! आज बाईस वर्ष हो गए जब मेरी तुम्हारी चार आंखें हुई थीं और जिसके कुछ दिन बाद ही तुम मेरी गृहलक्ष्मी होकर मेरे यहां आई थीं। मैं बराबर तुम्हारे मुंह से सुना करता हूं कि तुम मुझे दुःखित तथा चिन्तित देखा करती हो पर यह तो बताओ कि कभी भी मैंने तुमसे या लूसिया से अनुचित व्यवहार किया है?

लिडमारा०। तुम्हारा भाव देख देखकर मेरे हृदय में यह विश्वास जम गया है कि तुम्हारे हृदय में कोई चिन्ता सदा ही बनी रहती है। तुम मुझसे क्यों यह भेद छिपाते हो, मैं नहीं जानती, पर इतना अवश्य समझती हूं कि यह लूसिया के कारण से है॥

जूलियन। यह तुम्हें कैसे मालूम हुआ?

लिउनारा०। प्रिय स्वामी ! लूसिया के उत्पन्न होने के बाद से ही मैं बराबर तुम्हें दुःखित तथा चिन्तित देखा करती हूं और यह समझती हूं कि तुम सदा किसी भेद के छिपाने का उद्योग किया करते हो पर इस बात का कि वह आधी माला लूसिया सदा क्यों पहिने रहती है, मुझे पता नहीं लगता॥

जूलियन०। मैं तो तुमसे पहिले ही कह चुका हूं कि पिता की दी हुई इस माला में अपूर्व शक्ति है॥

लिउनारा०। ठीक है, मैं तुम्हारी बातें झूठी नहीं समझती पर क्या करूं? मेरे मन का खटका और हृदय की आशंका किसी तरह नहीं जाती। ऐसा मालूम होता है कि लूसिया पर कोई विपद् आने वाली है जिसका हाल किसी तरह तुम्हें मालूम हो गया है और उसी कारण से तुम सदा दुखी रहते हो। तुम सदा पूछा करते हो कि लूसिया वह माला पहिनती है या नहीं? एक दिन........

जूलियन०। (बात काट कर) हां, तुम जो कुछ कहोगी मैं समझ गया। एक दिन लूसिया को जो बात मैंने कही थी वही फिर कहता हूं। लूसिया जब पन्द्रह वर्ष की हो गई थी तब मैंने एक दिन उसे बुला कर कहा था कि—"बेटी! तुम्हारी अब जवानी की अवस्था आई। इस समय अवस्था के कारण से संभव है कि तुम्हारे हृदय में प्रेम का संचार हो गया हो और बात भी यही है कि पवित्र प्रेम ही स्त्री पुरुष का प्रधान धर्म है। पर सावधान! ऐसा न होने पावे कि यही प्रेम तुम्हारा काल हो जाये। जिस दिन तुमने जन्म लिया था उसी दिन मैंने एक माला के दो टुकड़े कर एक तुम्हारे गले में

पहिना दिया था और दूसरा एक दूसरी जगह भेज दिया था। जिस प्रकार एक टुकड़ा सदा तुम्हारे गले में पड़ा रहता है उसी प्रकार वह दूसरा टुकड़ा भी उसी दिन से किसी दूसरे के गले में पड़ा हुआ है। याद रखना कि जिस दूसरे पुरुष के गले में तुम अपने ऐसा ही दूसरा टुकड़ा देखो उससे कभी प्रेम न करना। यदि कभी कोई सुन्दर युवा तुमसे प्रेम प्रार्थना करे तो कौशल से उसके गले की माला का टुकड़ा अवश्य देख लेना। यदि वह दूसरा टुकड़ा दिखाई दे तो उसकी बातों पर कभी ध्यान न देना, उससे सदा दूर ही रहना, क्योंकि यह माला पहिरे हुए स्त्री पुरुषों का यदि आपस में विवाह होगा तो वह जोड़ी सदा दुःखित रहेगी और संभव है कि उनका प्राण तक चला जाये।" प्यारी लिज़नारा! मैंने ठीक वेही बातें लूसिया को समझाई थीं। इसमें सन्देह की तो कोई बात दिखाई नहीं देती॥

लिज़नारा०। (संकोच से) क्षमा करो! मेरा सन्देह झूठा था, अब वह दूर हो गया॥

जूलियस ने जिस तरह अपनी स्त्री को समझा दिया उसने भी उसी तरह उसकी बातें सच्ची समझ लीं। वह नम्रता से बोली "अब उस माला के बारे में तो कोई सन्देह नहीं रहा पर तुम्हारे दुःख का कोई कारण अवश्य है, वह तुम स्पष्टरूप से मुझे बताओ। मैं तुम्हारी जीवन संगिनी, सुख दुःख की समभागिनी तथा अर्धाङ्गिनी हूं फिर मुझसे क्यों छिपाते हो? मुझे भी यह भेद बताओ। मैं केवल तुम्हारे सुख, सम्पत्ति की अंशभागिनी ही नहीं हूं बल्कि तुम्हारे दुःख के दिनों की सहचरी भी हूं॥

जूलियन०। मैं तुम्हें क्या बताऊं? जिस समय मुझे अपने पुरखों के किये हुए पाप याद आ जाते हैं, उसी समय मेरे चित्त की प्रफुल्लता न जानें कहां चली जाती है। तुम उसके लिये दुःखित न हो। तुम्हारा मुख मलिन देखने से मुझे बड़ा ही कष्ट होता है॥

लिउनारा०। क्या तुम अरनिम की बातें कहते हो? उस बात को बीते तो चार सौ बरस हो गए, उसका अब क्या सोच करते हो? क्या नेटलस का कोई घर भी निष्कलंक देखा है?

जूलियन०। बात तो ठीक है। अच्छा, अब इस विषय की बातें भूल जाओ॥

जूलियन कह तो गया पर उस भीषण पाप और उसका फल याद आते ही वह सिहर उठा। वह चुपचाप अपनी स्त्री का हाथ पकड़े हुए मकान में चला गया॥

सत्रहवां परिच्छेद ।

लिउनारा लूसिया के पास चली गई और जूलियन उस चित्रालय में चला गया ॥

कमरे में आकर उसने दरवाजा बन्द कर दिया और कुर्सी पर बैठना ही चाहता था कि उसकी दृष्टि जरनिग की तस्वीर पर पड़ी। वह उसे देखते ही कांप उठा क्योंकि तस्वीर जमीन पर गिरी हुई थी ॥

जूलियन आप ही आप जोर से कहने लगा, "कैसे आश्चर्य की बात है! मुझे अच्छी तरह याद है कि जिस दिन मेरे पिता का देहान्त हुआ था उस दिन भी यह तस्वीर इसी तरह औंधी गिरी हुई थी फिर मेरी विवाह वाली रात को तथा उस रात को जब कि डाक्टर टेरपेलो मेरे अभागे लड़के को यहां से ले गया था यह तस्वीर इसी तरह गिरी हुई दिखाई दी। जिस अपूर्व शक्ति की कठोर आज्ञा से मेरा वंश इस शाप को भोग रहा है क्या वही शक्ति इस तस्वीर को भी बारबार गिरा देती है? क्या अब फिर मेरे वंश में कोई उलट फेर हुआ चाहता है? ओह! कुछ समझ में नहीं आता ॥

इतना कहकर जूलियन ने तस्वीर को फिर से दीवाल में लगा दिया। उसने देखा कि न कांटी ही ढीली हुई है न रस्सी ही कुछ गड़बड़ हुई है। केवल गांठ खुल कर तस्वीर जमीन में गिर पड़ी है ॥

जूलियन बोला, "कांटी उखड़ी नहीं, डोरी कटी नहीं और तस्वीर गिर पड़ी: इससे मालूम होता है कि अवश्य

कोई नई बात होने वाली है। हाय जरलिम! तुम्हारे किये हुए पापों का देखें कितना फल भोगना पड़ता है॥

जूलियन एक कुर्सी पर बैठ कर उस तस्वीर को देखने लगा। उसे बारबार वह भविष्यतवाणी याद पड़ने लगी। वह जरलिम की तस्वीर को देखकर कहने लगा—"हाय! जरलिम! यद्यपि तुम मेरे पूज्य हो, तुम्हारे कारण से मेरा इतना मान है, इतना धन वैभव है, तथापि मैं यही कहता हूं कि यदि तुम ऐसा काम न किये होते, यदि मैं धनाढ्य होने के बदले दरिद्री रहकर भीख ही मांगता फिरता तो अच्छा होता। मुझे यह धन, यह सम्पत्ति, यह मान तथा गौरव विष की भांति मालूम होता है। कारण वही भविष्यतवाणी, वही तुम्हारे पाप का परिणाम जो अभी तक तुम्हारा वंश भोग रहा है। इत्यादि॥

मैं अपने प्रिय पाठकों को इस शाप का कारण अब बता दिया चाहता हूं॥

८१४ वीं ईस्वी में चार्लिमन की मृत्यु के बाद उसका विशाल राज्य कई हिस्सों में बँट गया। इटली और उसके पास के टापू चार्लिमन के जामाता (दामाद) बर्नर्ड के हाथ में गये। उसकी मृत्यु के बाद लूथारी को यह राज मिला। लूथारी के मरने के उपरान्त कुछ दिनों के लिये यह राज्य दूसरे दूसरे मनुष्यों के हाथ में चला गया। अन्त में "बारेन्जर" नाम का एक वीर पैदा हुआ जिसने अपने शत्रुओं को मार कर समस्त इटली राज्य पर अपना अधिकार जमा लिया। इसकी सेना में जरलिम पलसूरा नाम के एक युवक ने युद्ध में इतनी वीरता दिखाई

कि उसको मार्कुइस की उपाधि और कैलेब्रिया की जमीदारी जागीर में मिली। परन्तु जरनिम को नेपल्स नगर ही बहुत पसन्द था, इसलिये उसने वहीं अपना मकान बनवाया और उसका नाम अलतमूरा रखकर वहीं रहने लगा तथा एक धन-वती स्त्री से विवाह भी कर लिया। कुछ ही दिनों में उसके दुष्कर्म से जो कुछ धन उसे मिला था सब खर्च हो गया और केवल जमीदारी ही रह गई जिसे उसने जमाइल नाम के एक यहूदी के यहां बन्धक रखकर रुपया कर्ज लिया॥

जरनिम बड़ा ही कुटिल और दुराचारी था। उसको असीम साहस और बड़ा बल था। लड़ाई में जहां भयंकर मार काट होती थी और चारो ओर मृत्यु ही मृत्यु दिखाई देती थी उसी स्थान में जरनिम निश्चल भाव से खड़ा रहकर लड़ता था। लड़ाई समाप्त हो जाने पर भी वह द्वन्द्व युद्ध और शिकार में ही अपना दिन बिताता था। उसकी प्रजा, कर्मचारी तथा दास दासी सभी उसके डर से कांपा करते थे, उसके भाई बन्धु भी उसके गर्वित आचरण से दुःखी रहते थे तथा उसकी स्त्री उसके कर्कश व्यवहार से सदा पीड़ित रहती थी। उसकी यही इच्छा रहती थी कि किसी तरह उसके कीर्ति की ध्वजा इटली में सदैव फहराती रहे॥

एक दिन अचानक उसे मालूम हुआ कि अब खजाना खाली हो गया। कैलेब्रिया से भी अब रुपया मिलने की आशा नहीं है। यह जान कर उसे बड़ा ही दुःख हुआ क्योंकि समय पर रुपया न देने से कैलेब्रिया की जमीदारी भी उसके हाथ से निकल जा सकती थी। तब उसने एक नई चाल चली। दुर-

बाद उसके भाई बन्धु तथा दूसरे लोगों को यहूदियों को दुःखित करने के लिये उसने भड़काया ॥

यहूदी लोग दुःख, अत्याचार तथा मारकाट के भय से भागने लगे । उनका मकान लूटा जाने लगा और स्त्रियों का सतीत्व हरण किया जाने लगा । इसी समय क़ासिम ने इस्माइल को जिसको पिशाच की उपाधि दी बुला भेजा और कहा कि "मैं तुम्हारा रुपया आज ही दूंगा, जो दस्तावेज़ तुम्हारे पास है वह ले आओ ॥"

इतना सुनतेही इस्माइल का कंठ सूख गया। वह बोला— "इसी समय आप रुपया देंगे ? यह बात मेरे शत्रुओं को मालूम होतेही मैं लूट लिया जाऊंगा और साथ ही मेरी जान भी न बचेगी ॥"

क़ासिम: । तुमने मुझे बड़े संकट से बचाया है इसलिये मैं भी तुम्हें अपने घर ही में रक्खूंगा । तुम्हारे पास जो कुछ धन है लेकर चुपचाप मेरे यहां चले आओ । इसके बाद जब तुम्हारे शत्रु सब भाग जायेंगे तब अपने घर पर चले जाना । बूढ़ा इस्माईल क़ासिम की बातों को सच्ची मान कर उसी रात को जो कुछ धन उसके पास था लेकर ढलमहूरा में चला आया । क़ासिम ने उसे अपनी सन्दूक दिखा कर कहा "इसमें सब धन रख दो ।" इस्माइल ने सब धन रख उसी सन्दूक में बन्द कर चाभी अपने पास रख ली । क़ासिम बोला—"देखो मित्र ! एक काम और करो, यह सब धन रखना यहां उचित नहीं है, चलो इसे एक कुछ खोदही में रख आवें ।" यहूदी ने यह बात भी मान ली और क़ासिम सिन्दूक तथा यहूदी एक

कि उसको मार्कुइस की उपाधि और कैलेब्रिया की जमींदारी जागीर में मिली। परन्तु जरनिम को नेप्लस नगर ही बहुत पसन्द था, इसलिये उसने वहीं अपना मकान बनवाया और उसका नाम अल्तमूरा रखकर वहीं रहने लगा तथा एक धनवती स्त्री से विवाह भी कर लिया। कुछ ही दिनों में उसके दुष्कर्म से जो कुछ धन उसे मिला था सब खर्च हो गया और केवल जमींदारी ही रह गई जिसे उसने जमाइल नाम के एक यहूदी के यहां बन्धक रखकर रुपया कर्ज लिया॥

जरनिम बड़ा ही कुटिल और दुराचारी था। उसको असीम साहस और बड़ा बल था। लड़ाई में जहां भयंकर मार काट होती थी और चारों ओर मृत्यु ही मृत्यु दिखाई देती थी उसी स्थान में जरनिम निश्चल भाव से खड़ा रहकर लड़ता था। लड़ाई समाप्त हो जाने पर भी वह द्वन्द्व युद्ध और शिकार में ही अपना दिन बिताता था। उसकी प्रजा, कर्मचारी तथा दास दासी सभी उसके डर से कांपा करते थे, उसके भाई बन्धु भी उसके गर्वित आचरण से दुःखी रहते थे तथा उसकी स्त्री उसके कर्कश व्यवहार से सदा पीड़ित रहती थी। उसकी यही इच्छा रहती थी कि किसी तरह उसके कीर्ति की ध्वजा इटली में सदैव फहराती रहे॥

एक दिन अचानक उसे मालूम हुआ कि अब खजाना खाली हो गया। कैलेब्रिया से भी अब रुपया मिलने की आशा नहीं है। यह जान कर उसे बड़ा ही दुःख हुआ क्योंकि समय पर रुपया न देने से कैलेब्रिया की जमींदारी भी उसके हाथ से निकल जा सकती थी। तब उसने एक नई चाल चली। बुr-

बाप उसके भाई बन्धु तथा दूसरे लोगों को यहूदियों को दुःखित करने के लिये उसने भड़काया ॥

यहूदी लोग दुःख, अत्याचार तथा मारकाट के भय से भागने लगे । उनका मकान लूटा जाने लगा और स्त्रियों का सतीत्व हरण किया जाने लगा । इसी समय जरनिम ने जमाइल को जिसकी पियार की उपाधि थी बुला भेजा और कहा कि "मैं तुम्हारा रुपया आज ही दूंगा, जो दस्तावेज तुम्हारे पास है वह ले आओ ॥"

इतना सुनतेही जमाइल का कंठ सूख गया। वह बोला– "इसी समय आप रुपया देंगे ? यह बात मेरे शत्रुओं को मालूम होतेही मैं लूट लिया जाऊंगा और साथ ही मेरी जान भी न बचेगी ॥"

जरनिम०। तुमने मुझे बड़े संकट से बचाया है इसलिये मैं भी तुम्हें अपने घर ही में रक्खूंगा । तुम्हारे पास जो कुछ धन है लेकर चुपचाप मेरे यहां चले आओ । इसके बाद जब तुम्हारे शत्रु सब भाग जायँगे तब अपने घर पर चले जाना। बूढ़ा जमाईल जरनिम की बातों को सच्ची मान कर उसी रात को जो कुछ धन उसके पास था लेकर अलतमूरा में चला आया। जरनिम ने उसे अपनी सन्दूक दिखा कर कहा "इसमें सब धन रख दो।" जमाइल ने सब धन रख उसी सन्दूक में बन्द कर चाभी अपने पास रख ली। जरनिम बोला–"देखो मित्र! एक काम और करो, यह सब धन रत्न यहां रखना उचित नहीं है, चलो इसे एक गुप्त कोठड़ी में रख आवें।" यहूदी ने यह बात भी मान ली और जरनिम लैम्प तथा यहूदी सब

धन रत्न लेकर वहां से चला। दोनों एक अंधेरी जगह में सीढ़ी से उतरने लगे। अभी दस ही पांच सीढ़ियां उतरे होंगे कि जरनिम के हाथ से सहसा वह लैम्प गिर कर बुझ गया। लैम्प बुझते ही जरनिम ने देखा कि यहूदी के वस्त्रों के भीतर से भांति भांति की चमक निकल रही है। वह समझ गया कि यहूदी ने रत्न जो अपने वस्त्रों में छिपा रक्खे थे उन्हीं में से यह चमक निकल रही है। अब जरनिम अपने संकल्प में दृढ़ हो गया। यहूदी ज्यों ही अपनी गठड़ी रख कर लैम्प जलाने की चेष्टा करने लगा त्यों ही दुष्ट जरनिम ने छुरा निकाल कर उसकी गर्दन पर मारा। आहत यहूदी के मुंह से एक बार ही चिल्लाने की आवाज निकली और फिर वह शान्त हो गया। उसका प्राण इस लोक को छोड़ परलोक सिधार गया॥

जरनिम ने यहूदी के कपड़ों में से रत्न निकाल लिये और बाहर चला आया। वह मृत देह वहां ही पड़ा रहा और सड़ने लगा। पीछे जब बड़ी ही दुर्गन्ध फैली तब मिट्टी में गाड़ दिया गया॥

अब जरनिम को धन का कष्ट नहीं रहा। जिस अर्थ के कारण से उसने ऐसा अनर्थ किया था वह उसे भरपूर मिल गया। वह त्रिगुण धनी हो गया पर सुखी न हुआ क्योंकि उस के पाप का फल उसको जीवित अवस्था में ही मिला। मरते समय वह अपने पुत्र फ्रेडरिक को अपना पाप तथा उसका अंतिम फल और नाश हो यह भी कह गया कि जरनपुर वंश के सब अनुयायों की तस्वीर एक चित्रशाला में लगाई जाय॥

कुलिनचम जरनिम की तस्वीर देख कर सब आंखें मूंद कर

के दुखी हो रहा था कि यकायक उस कमरे के द्वार में किसीने धक्का दिया। जूलियन ने उठकर दरवाजा खोला तो उसे डाक्टर आद्री दिखाई दिया। बड़े आदर से जूलियन ने आद्री को उसी विश्रालय में बुला लिया॥

आद्री०। आज कई दिनों से मैं आपके पास आने का उद्योग कर रहा था पर राजसभा में इतना काम है कि.........

जूलियन०। (बात काट कर) इसके लिये आप कोई चिन्ता न करें। अपने अभागे लड़के वालटन के बारे में कई बातें आप से पूछनी थीं जिसके लिये आपको कष्ट देना पड़ा॥

आद्री०। मेरी जहां तक सामर्थ्य है वहां तक उसे सुख से रखता हूं॥

जूलियन०। कौन वंश में वह उत्पन्न हुआ है, किसका लड़का है तथा उसका पिता कौन और कहां रहता है, इन सब बातों के बारे में उसे कभी कोई सन्देह तो नहीं हुआ है?

आद्री०। नहीं, वह क्यों सन्देह करेगा? उसे किसी बात का कष्ट तो है ही नहीं तथा उसका जन्मरहस्य केवल चार मनुष्यों को मालूम ही था। जिनमें से मेरे भाई और हेम जूलिया तो मर ही गए, अब हम और आप दोही बाकी रह गए जिनके मुंह से यह भेद कभी बाहर निकल ही नहीं सकता है॥

जूलियन०। वालटन इस समय युवा अवस्था को प्राप्त हो गया। मैंने आपही के मुंह से पहिले सुना है कि उसका हृदय बड़ा कोमल है तथा वह दानी और परोपकारी भी है। उसके कामों में कोई बाधा न पड़े इसलिये ५०० गिन्नी वार्षिक व्यय बढ़ा दिया चाहता हूं॥

आड्री०। ठीक है,आप क्या उसे एक बार देखा चाहते हैं?

जूलियन०। क्षमा कीजिये। मैं उसे देखकर अपनी ममता छिपा न सकूंगा। जब कभी ईश्वर मेरी प्रार्थना के स्वीकार करेंगे तब उसे पुत्र कहकर ही अपने यहां बुलाऊंगा॥

आड्री०। अच्छा, ते मुझे अब आज्ञा दीजिये॥

जूलियन०। यह माला ते सदा उसके गले में रहती है?

आड्री०। हां॥

जूलियन०। कालवश अगर हम देनों की मृत्यु भी होगई ते यही माला भाई बहिन के पहिचानने में सहायता देगी॥

आड्री "ठीक है।" कहकर उठ खड़ा हुआ। जूलियन भी उस चित्रालय से बाहर चला आया। जरनिम की तस्वीर के बारबार गिर पड़ने से उसे पूरा विश्वास हो गया है कि अवश्य कोई उलट फेर इस वंश में हुआ चाहता है पर वह शुभ है या अशुभ यह कौन जानता है?
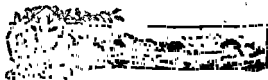
अठारहवां परिच्छेद ।

पृथ्वी के उत्तर भाग में यद्यपि इस समय जाड़े के दिन हैं तथापि दक्षिणप्रान्त के प्रवालद्वीप पर अभी गर्मी ही अपना अधिकार जमाये हुए है। आकाश निर्मल और नीलवर्ण का है। दृष्टी स्वच्छ तथा समुद्र की धारा शान्त है जिस पर सूर्यदेव की सुनहरी किरणें पड़ रही हैं और नारिकेल के पत्ते डोल रहे हैं ॥

बूढ़े को इस टापू में रहते बहुत दिन हो गए। अब उसने देखा कि टापू के अगले भाग का रूपान्तर हो रहा है ॥

बहुत तरह से पता लगाने पर उसे इस रूपान्तर का कारण मालूम होगया। उसने देखा कि करोड़ों कीड़े किसी अपूर्व शक्ति के बल से धीरे धीरे समुद्र में डूबे हुए स्थान पर चले जा रहे हैं ॥

आज १३५३ ईस्वी की २३ वीं जनवरी की रात है। इटली देश में यद्यपि इस समय जाड़ा अपना अधिकार जमाये हुए है तथापि प्रवाल द्वीप पर गर्मी ही छा रही है। सुतरां ठीक उसी दिन, उसी समय जब कि जूलियस अपनी प्रिय पत्नी के साथ अनन्तपुरा के बाग में घूम रहा था ठीक उसी दिन उसी समय बूढ़ा भी अकेला समुद्र के किनारे बैठा था ॥

उस की दृष्टि में अब विषाद नहीं है। चेहरे पर उत्साह झलक रहा है। अठारह वर्ष पहिले मैंने अपने पाठकों को उसका परिचय दिया था अब इस समय उसकी अवस्था अस्सी वर्ष की हो गई है। वह इस समय सीधा एक गुफा की ओर चला जा रहा है। गुफा के भीतर घनघोर अंधकार रहने पर भी बूढ़ा गुफा में सीधा बिना कुछ रोक टोक के चला गया क्योंकि उसमें कहां क्या है यह अच्छी तरह जानता था ॥

बूढ़े ने टूटी हुई नाव का एक टुकड़ा धारा में बहता हुआ पहिले ही पाया था जिसे उसने सावधानता से इस गुफा छिपा रक्खा था तथा साथ ही उसके एक लोहे का टुकड़ा उसे मिला था। बूढ़े ने एक पत्थर को फाड़ कर आग जल और नारियल का तेल निकाल कर मशाल तैयार करने लग थोड़ेही परिश्रम में मशाल तैयार होगई और बूढ़ा वह मश लेकर फिर गुफा में घुस गया॥

बूढ़े ने मशाल जला कर एक ओर गुफा में रख दी औ स्वयं घुटने टेक कर प्रार्थना करने लगा। फिर उठा और थ कांपते हुए हाथों से अपने कपड़े उतारने लगा। आधा आनन्द और भय के निरानन्द से उसका चेहरा लाल व मलिन हो रहा था। सहसा उसका चेहरा दमक उठा। आनन्द और गदगद कण्ठ से ज़ोर से बोला "करुणासिन्ध प्रभो॥ तुम्हारी समस्त करुणापर अविश्वास करना ही न्याय है। मेरे ऊपर तुम्हारी अतुलनीय दया है॥"

बूढ़ा आनन्द से अधीर हो उठा। उसे बिजली बातें सी मालूम होने लगीं। आनन्दके आंसू से उसके गाल र छाती भींज गई॥

उस महाव्याधिका अन्त हो गया, उस घोर दुःख का नाश हो गया। परमेश्वर की दया से बूढ़ा आरोग्य हो गया। आनन्द! आनन्द! बूढ़े के आनन्द का आज ठिकाना नहीं है॥

ठीक इसी दिन इसी समय सारों कोस दूर नेव्लस नगरी के प्रसन्नपुरा मकान की चित्रशाला में अरमिन की तस्वीर भूमि पर पड़ी हुई जूलियस को दिखाई दी थी॥ प्रथमाध्याय

अर्थ में अनर्थ

-या-

प्रवाल द्वीप ।

(उपन्यास)

द्वितीय भाग ।

[अवस्थान्तरित]

रमाबाई, मदालसा, विलासिनी-विलास इत्यादि उपन्यासों के

रचयिता

विहार निवासी

पण्डित चन्द्रशेखर पाठक लिखित

-: तथा :-

बाबू देवकीनन्दन खत्री

प्रोप्राइटर लहरी प्रेस द्वारा प्रकाशित ।

PRINTED BY

PANNA LAL ROY MANAGER

AT THE LAHARI PRESS, BENARES CITY.

1910.

॥ श्रीः ॥

अर्थ में अनर्थ

—या—

प्रवाल द्वीप।

(उपन्यास)

द्वितीय भाग।

पहिला परिच्छेद।

गिर्जाघर में जूलियस की लड़की लूसिया के साथ जिस युवा की भेंट हुई थी, पाठकगण कदाचित उसे भूले न होंगे॥

इस बात को एक सप्ताह हो गया। लूसिया उसी दिन से नित्यप्रति गिर्जाघर में जाने लगी पर इतने दिनों के बीच में एक दिन भी उस युवा से उसकी भेंट न हुई। गिर्जाघर में जाते ही न जाने उसका हृदय क्यों कांप उठता था, न जाने उसकी चंचल आंखें क्यों उस अपरिचित युवा को खोजने लगती थीं और उससे भेंट न होने पर न जाने क्यों लूसिया एक ठंढी सांस खींच कर व्याकुल हो जाती थी। उसका यह हाल यद्यपि कोई दूसरा नहीं जानता था तथापि वह लज्जा से अपना मस्तक झुकाये रहती थी॥

उस युवा से केवल मुहूर्तभर ही लूसिया से बातें हुई थीं, परन्तु उसका मलिनमुख, उसकी दुःख भरी बातें याद आ आ कर लूसिया के कोमल हृदय को कँपा देती थीं॥

धीरे धीरे उस युवा के रूप से और उसकी दुःख भरी व
मीठी बातों से लूसिया का हृदय भर गया। कभी कभी वह
विचारती थी कि अब इस गिर्जाघर में कभी न आऊंगी पर
इस डर से कि यकायक वहां का आना बन्द करने से लोग
सन्देह करने लगेंगे यह विचार भी निश्चय न कर सकी। फिर
विचारने लगी, "क्यों, नहीं क्यों जाऊं? वह युवा कौन है!
मालूम होता है अब उसके दर्शन न होंगे॥"

ऐसी ही ऐसी चिन्ता करते करते एक सप्ताह और बीत
गया। पर ज्योंही आठवें दिन वह गिर्जाघर में पहुंची, आंख
उठी। उसने देखा कि वह अपरिचित युवा बैठा हुआ ईश्व
की आराधना कर रहा है॥

यद्यपि लूसिया इस अपरिचित युवा को देखने के लिये
सदैव उत्सुक रहती थी पर आज अचानक उससे भेंट होने पर
वह मन में पहिले गिर्जाघर से चले जाने का विचार करने लगी
पर फिर यह विचार कर कि "किसी के पूछने पर कि इतना
शीघ्र क्यों चली आई, क्या जवाब दूंगी? तथा सहेलियां भी
न जाने क्या समझें। आज तक मैं कभी झूठ बोली नहीं, ऐसे
क्या आज शरीर अस्वस्थ रहने का बहाना करना पड़ेगा! नहीं
यह नहीं हो सकता।" इत्यादि विचार कर फिर अपनी जगह
पर जा लगा आंखें मूंद कर ईश्वर के ध्यान में मग्न हुई॥

कुछ ही देर बाद उस युवा को भी मालूम हो गया कि
लूसिया आई है। उससे वह प्रसन्न हो गया पर तुरत ही
उसकी अवस्था पर ध्यान आते ही वह दुःखी हो गया॥

जब गिर्जाघर में बाजे बजने लगे। पादड़ी होम देव

धना के गीत गाने लगे। इसी समय उन दोनों युवक युवती की आंखें आपस में मिल गईं॥

वह युवा अभी तक घुटने टेक कर बैठा हुआ था पर अब उठ खड़ा हुआ और लूसिया के निकट चला गया। लूसिया भी उठ खड़ी हुई। युवा और आगे बढ़ा और बोला, "मालूम होता है, आप मुझे भूल गईं? पन्द्रह दिन के लगभग हुए कि आप से इसी जगह भेंट हुई थी, मालूम होता है उसके कुछ ही देर बाद आपने मुझे बिसार दिया॥"

लूसिया०। (लज्जा से सर झुका कर) नहीं, यदि मैं यह कहूं कि भूल गई थी तो निश्चय झूठ बोलना होगा क्योंकि आपके वचन और आपकी दशा अभी तक मेरी आंखों के सामने घूम रही है॥

युवा०। (आनन्द से लूसिया का हाथ धर कर) आपकी बातों से सहानुभूति और सज्जनता का मधुर रस टपक रहा है। चाहे आप विश्वास करें या न करें पर मैं तो यह अवश्य ही कहूंगा कि आज कई दिन से केवल आप ही की बातें, आप ही के मधुर और कोमल वचन मेरे हृदय की सुलगती हुई आग को ठंढी कर रहे हैं॥

लूसिया०। (हाथ खींच कर मधुर स्वर से) यदि वास्तविक हो मेरी बातों ने आपके सन्तप्त हृदय को शीतल किया है तो मेरे ऐसा सुखी शायद ही कोई दूसरा होगा। पर क्या आपकी माता तथा बहिन कोई भी ऐसी नहीं हैं जो आपको दुःख में सान्त्वना दें॥

युवा०। माता! बहिन!! नहीं नहीं, मुझे कोई नहीं है।

मैं बिना मां बाप का, निराश्रय हूं। मेरे भाई बन्धु कोई भी हैं कि नहीं, आज तक नहीं जानता। आपकी करुणदृष्टि तथा मीठी बातों से मैं कितना सुखी हुआ हूं यह आप नहीं समझ सकतीं। मेरे लिये आप देवी हैं यदि आपकी भांति मेरी कोई बहिन होती तो मैं निश्चय बहुत ही सुखी होता॥

लूसिया चुपचाप खड़ी रही। युवा फिर बोला, "मैं सच कहता हूं कि मेरे लिये आपने स्वर्ग की देवी बन कर मेरे दुःख में दया दिखलाई है। मैं आपकी प्रशंसा नहीं करता, पर बात सचमुच ऐसी ही है॥"

लूसिया चुपचाप खड़ी थी पर अब इधर उधर देखने लगी कि मेरी बातें कोई सुनता तो नहीं है, पर पास कोई भी न था किञ्चित दूर पर एक बुढ़िया घुटने टेक कर बैठी हुई ईश्वर की आराधना कर रही थी। युवा फिर बोला, "मेरे दुःख का अन्त नहीं है पर मैंने जान बूझ कर आज तक कोई पाप नहीं किया है। मैं समझता हूं कि सौ या दो सौ बरस के बुड्ढे ने भी कभी ऐसा कष्ट न भोगा होगा जैसा कि मैं भोग रहा हूं। नित्य सन्ध्या को मेरा जी यहां आने के लिये व्याकुल हो उठता है। बड़े कष्ट से मैं आत्मदमन करता हूं पर आज ऐसा न कर सका और एक बार या अन्तिमबार आपके दर्शन के लिये यहां आना ही पड़ा॥"

इतना कह कर वह युवा लूसिया की ओर दुःख भरी दृष्टि से देखने लगा और बोला, "सुन्दरि! अच्छा, अब जाता हूं। आप सब प्रकार से सुखी रहें यही ईश्वर से प्रार्थना है॥"

इतना कह कर तथा लूसिया का हाथ चूम कर वह युवा

शीघ्रता से गिर्जा के बाहर चला गया॥

जब तक युवा दिखाई देता रहा लूसिया उसे देखती रही। इसके बाद उसकी आंखों से आंसू की बूंदें टपकने लगीं। उसने बड़ी कठिनता से अपने को संभाला और अपनी दोनों सहेलियों के साथ गिर्जाघर से बाहर निकल आई॥

दूसरा परिच्छेद।

मैं अभी अभी ऊपर लिख आया हूं कि जिस समय लूसिया और वह युवा बातें कर रहे थे उस समय उनसे कुछ दूर एक बुढ्ढी बैठी हुई ईश्वराधना कर रही थी॥

युवा के गिर्जाघर से बाहर निकलते ही उस बुढ्ढी का कपटध्यान भङ्ग हुआ। वह अभी तक दोनों की बातों की ओर ध्यान लगाये बैठी थी। यद्यपि वह इनकी बातें न सुन सकी तथापि वह इतना अवश्य समझ गई कि यह नवीन प्रेमी प्रेमिका की जोड़ी है। वह युवक को देख देख कर अपने मन में कह रही थी कि "हे सुन्दर युवक! यदि यही लजीली स्त्री तुम्हारे मन को इतना चंचल कर रही है तब मेरी स्वामिनी के भुवनमोहन रूप के सामने तुम्हारी क्या दशा हो जायेगी यह समझ में नहीं आता॥"

युवा गिर्जाघर को त्याग करके सड़क पर आ पहुंचा। बाहर सन्ध्या की ठंढी ठंढी हवा लगते ही वह प्रसन्न हो गया पर तुरत ही उसका ध्यान बदला और वह चिन्ता करता हुआ

उनके सामने ही एक दूसरी कुर्सी पर बैठ गई। युवा अभी तक चुप था॥

सुन्दरी बोली "मालूम होता है यहां आने का कारण अभी तक आप समझ नहीं सके॥"

युवा०। (सन्देह से) कई बातें आपकी भेजी हुई दासी से सुन चुका हूं, मेरे जीवन का उद्देश ही सहायता करना है॥

सुन्दरी०। (प्रसन्नता से) तब तो आप यह भी जान गये होंगे कि मैं कौन हूं?

युवा०। नहीं, न आप को कभी पहिले मैंने देखा ही है न नाम ही सुना है॥

सुन्दरी०। (आश्चर्य से) क्या कहते हैं! आपकी बातों से मुझे आश्चर्य होता है। मुझे कभी देखा नहीं, पहिचानते नहीं। तिस पर भी कहते हैं कि "मेरे जीवन का उद्देश ही यही है।" क्यों महाशय! क्या मेरी दाई से मेरे रूपगुण की जो प्रशंसा आपने सुनी थी वैसा मुझे नहीं पाया? क्या मैं आप के प्रेम के योग्य नहीं हूं॥

युवा इतनी बात सुनते ही घृणा, लज्जा तथा क्रोध से कांप उठा। वह स्त्री फिर बोली, "मालूम होता है मेरी बातों से तुम्हारे कोमल हृदय में कष्ट पहुंचा॥"

युवा०। (खड़े होकर) भूल हो गई। दुखिया के दुःख में सहायता करने ही के लिये मैं यहां आया था। पर.........

सुन्दरी०। (व्यंग स्वर से) ओः! तब तो आप पुरोहिताई करने आये थे, प्रेम करने नहीं आये॥

इतना कहकर वह स्त्री चुप हो रही। दुःख तथा निराशा

से उसका कलेजा जलने लगा। युवा की अनुपम रूपमाधुरी, सरल मुखकान्ति, सुन्दर देह तथा मनोहर आंखें देख देख कर उसका हृदय अधीर हो गया। वह मधुर कण्ठ से फिर बोली "प्यारे युवा! मेरी बातों पर क्रोध न करना। यदि कोई दोष हुआ हो तो क्षमा करो। मुझे ऐसी तीव्र दृष्टि से न देखो, सचमुच यहां एक दुःखित हृदय, तुम्हारे मुंह की दो चार मीठी बातें सुनने के लिये ललच रहा है। बैठो, बैठो, मेरी एक प्रार्थना सुन लो॥"

इस सुन्दरी की कातर प्रार्थना सुन कर वह युवा बैठ गया। सुन्दरी मधुर स्वर से बोली, "एक दिन मैं जब पहाड़ पर घूमने को गई हुई थी उस दिन तुम्हें देखा था, फिर एक दिन समुद्र के किनारे भी देखा, इसके बाद और भी कई बार तुम्हें देख चुकी हूं। जब से मैंने तुम्हें देखा है तब से तुमसे मिलने और बातें करने के लिये तड़प रही हूं, अन्त में जब किसी तरह मेरा हृदय शान्त न हुआ तब अपनी विश्वासी दासी की सहायता से तुम्हें इस तरह चुपचाप बुलवा भेजा। मैं तुमसे प्रेमभिक्षा मांगती हूं, तुम्हारा पैर धरती हूं, मुझे क्षमा करो, अब अधिक लज्जित न करो॥"

सुन्दरी युवा के आगे घुटने टेक कर बैठ गई और अपने दोनों हाथों से युवा के दोनों हाथ धर कर चूमने लगी। सुन्दरी के इस व्यवहार से युवा दङ्ग हो गया, उसके मुंह से एक बात भी न निकली॥

सुन्दरी फिर बोली, "हे सुन्दर युवक! मैं सचमुच तुम्हीं को से प्यार करती हूं। तुम्हारे प्रेम की भिखारिणी हूं।" पर

यह क्या? यकायक सुन्दरी कांप क्यों उठी। वह युवक के गले में एक वस्तु देख कर उसका हाथ छोड़ चिल्लाती हुई उठ खड़ी हुई॥

कुछ देर तक दोनों चुप रहे। वह स्त्री भय से और आ-श्चर्य्य से आंखें फाड़ फाड़ कर उस युवा को देखने लगी। युवा भी उसका ऐसा भाव देखकर उठ खड़ा हुआ। थोड़ी देर बाद फिर उस स्त्री ने युवा का एक हाथ पकड़ लिया और ध्यान से उसके गले को देखने लगी, पर अब भी वह सन्तुष्ट न हुई। उसके कोट का कलर हटाना चाहा। युवा उसका अभिप्राय समझ कर बल पूर्वक उसका हाथ हटा कर बोला, "छोड़ो, छोड़ो, मुझे छूने की कोई जरूरत नहीं है, मुझे जाने दो॥"

स्त्री०। (भयार्त स्वर में) जाओ, जाओ, तुम्हारी अब कोई जरूरत नहीं है॥

युवा तेजी से वहां से बाहर निकला। बाहर वही बुड्ढी बैठी थी। युवा क्रोध से उसकी तरफ देखकर बोला "दुष्टा! मुझे यहां क्यों ले आई थी? जल्द बाहर जाने का रास्ता बता॥"

बुड्ढी युवा की रुद्र मूर्त्ति देखकर डर गई। चुपचाप उसे घर के बाहर निकाल कर भीतर से दरवाजा बन्द कर दिया॥

युवा उस मकान से निकल कर ज्योंही बाहर आया त्योंहीं न जाने किधर से चार मनुष्यों ने निकल कर उसपर आक्रमण किया। उस बेचारे युवा को तलवार निकालने का भी अवसर न मिला। उन लोगों ने बलपूर्वक उसकी आंखों और मुंह पर पट्टी बांध दी और उसे उठा कर तेजी से अन्ध-कार में विलीन हो गये॥

तीसरा परिच्छेद।

युवा को जिस समय उन चारो मनुष्यों ने मिल कर पकड़ा उस समय उसकी दशा बहुत ही खराब हो गई। उसे बड़ा ही कष्ट होने लगा जिसके कारण से उसने अपना होंठ इस ज़ोर से दांतों से दबाया कि उसमें से रक्त निकलने लगा, परन्तु शीघ्र ही उसका कष्ट दूर होगया क्योंकि वह एक घोड़े की पीठ पर सवार करा दिया गया। इसके बाद वे चारो मनुष्य भी अपने अपने घोड़ों पर सवार हो गये और उस युवा को साथ लेकर बड़ी शीघ्रता से वहां से भागे॥

वह युवा चुपचाप अपनी दशा को विचारता हुआ लाचार इन लोगों के साथ चला। वह अपने मन में विचारता जाता था कि "ये लोग कौन हैं और मुझे कहां लिये जाते हैं? क्या उसी स्त्री ने ही यह कपट प्रबन्ध मेरे लिये कर रक्खा था? क्या वही राक्षसी यह चाल चली है? नहीं, यह नहीं हो सकता क्योंकि मैं उसके मकान से जब बाहर निकला था तब इन चारों मनुष्यों ने मुझे पकड़ा है। तब ये लोग कौन हैं?"

यकायक उसके मन में एक दूसरी बात आई और वह विचारने लगा "कई वर्षों से नेप्लस में डाकुओं ने उपद्रव मचा रक्खा है, यह बात मैं बहुत से मनुष्यों से सुन चुका हूं। इन लोगों के शस्त्र की झनझनाहट से मालूम होता है कि ये भी सशस्त्र हैं। हाय! मेरी आंखों पर पट्टी बांध दी है, यह भी नहीं जान सकता कि कहां तथा कितनी दूर आ गया हूं और अभी कितनी दूर जाना है॥"

थोड़ी ही दूर पर इन्हें एक दरवाजा मिला। जिसे खोल वे सब भीतर चले गये और फिर दरवाजा भीतर से बन्द कर लिया गया। युवा की आंखों तथा मुंह पर से पट्टी खोल दी गई। उसने देखा कि वह एक बड़ी गुफा में खड़ा है जहां एक लोहे का दीपक जल रहा है और पचास मनुष्य सशस्त्र बैठे हैं। कई बातें कर रहे हैं, कई सोये हैं तथा कई जूआ खेल रहे हैं॥

इन पचास भयानक मनुष्यों को देखकर उस युवा को निश्चय हो गया कि यह डाकुओं की मण्डली ही है। वहां से वे डाकू युवा को लिये हुए एक दूसरे कमरे में पहुंचे फिर वहां से सीढ़ी पर से ऊपर चढ़ने लगे। कुछ देर बाद युवा को चन्द्रमा की धुंधली रोशनी दिखाई दी। उसने देखा कि वह किसी बड़े दुर्ग (किला) में जिसकी अवस्था अब जीर्ण हो गई है खड़ा है॥

इस छत पर से दूसरी तरफ जाने का एक छोटा सा दरवाजा था। सब उसी दरवाजे में होकर इसे एक दूसरे कमरे में ले गए। यह जगह उसे गिर्जाघर सी दिखाई दी। यहां पर एक दीया जल रहा था, जिसकी झिलमिलाती हुई रोशनी में उसने देखा कि गिर्जाघर की दशा बहुत खराब हो रही है, उसकी छत एक ओर को कुछ झुक गई है, स्थान स्थान पर जङ्गली घास उत्पन्न हो गये हैं। वहीं थोड़ी सी जगह पर से कूड़ा कर्कट हटा कर जगह साफ कर दी गई है। उस परिष्कृत स्थान पर नया वस्त्र बिछा हुआ है। बीच में एक ऊंची वेदी है जिसपर सिंहासन और उसके सन्मुख टेबलपर राजदण्ड तथा राजमुकुट रक्खा है। इन सब चीज़ों को देखकर युवक के

आश्चर्य्य का ठिकाना न रहा। वह विचारने लगा कि इस टूटे फूटे स्थान में यह राज चिन्ह क्यों रक्खा है ?

वह युवा यह सब देखकर बोला, "मैं कहां हूं ? तुमलोग मुझे कहां ले आये हो ?

पर किसी ने उसकी बातों का उत्तर न दिया। उत्तर पाने की आशा से युवक हरएक मनुष्यों के मुंह की ओर देखने लगा पर कोई भी कुछ न बोला। अन्त में उसकी दृष्टि घूमती हुई एक ऐसे मनुष्य पर पड़ी जो और और मनुष्यों की अपेक्षा बहुमूल्य और सुन्दर कपड़े पहिने हुए था तथा जिसके माथे की टोपी पर एक पर खोंसा हुआ था। उसके चेहरे से दया और सज्जनता झलक रही थी तथा वह इस डाकुओं की मण्डली का सर्दार मालूम होता था॥

वह सर्दार युवा की ओर देख कर बोला, "बड़ी भूल होगई।" इसके बाद युवा का हाथ धर के दीये के पास ले गया और उसको अच्छी तरह देख कर बोला, "भूल भूल, बड़ी ही विचित्र भूल होगई। किसको लेने गया था और किसे ले आया। यह क्या ड्यूक अन्द्रिया है ?"

एक मनुष्य बोला, "कप्तान ! इसमें हमलोगों का कोई अपराध नहीं है, मैं और मेरे साथी गेस्पर तथा जेनिनो राजकुमार अन्द्रिया को नहीं पहिचानते॥"

कप्तान०। ऐ आटक। मैं तुमलोगों को अपराधी नहीं कहता॥

आटक०। आज बड़ी ही भूल हुई। ड्यूक आफ डूराव, पादड़ी और दूसरे दूसरे मनुष्य हमलोगों की राह देखते होंगे॥

कप्तान०। तुम लोग यहीं ठहरो, मैं इस युवा को लेकर

ड्यूक चार्लस के पास जाता हूं, देखूं वह इस के साथ कैसा व्यवहार करता है। (युवक की ओर देख कर) आओ, मेरे साथ आओ॥

क्रोध से उस युवा का चेहरा लाल होगया और वह दांतों से अपना होंठ काटने लगा॥

कप्तान उसकी यह दशा देख कर बोला "आओ! मैं तो तुम्हें पकड़ लाया हूं। अब तुम्हें छोड़ देने के लिये दूसरे दूसरे मनुष्यों की सम्मति लेनी पड़ेगी॥"

इतना कह कर कप्तान बेरिमन उस युवा को साथ लेकर एक दूसरे कमरे में चला गया॥
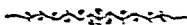
चौथा परिच्छेद।

इस दूसरे कमरे के बीचोबीच एक टेबल रक्खा हुआ है। जिस पर ज़रीका काम किया हुआ मखमल बिछा है और उसके चारो तरफ कुर्सियां लगी हुई हैं॥

एक कुर्सी पर डूरान का ड्यूक चार्लस बैठा हुआ है और दूसरी कुर्सियों पर उसके बन्धुबान्धव और पादड़ी बैठे हुए हैं॥

बेरिमन के कमरे में पैर रखते ही सब उत्सुकता से उसकी ओर देखने लगे पर इस युवा पर दृष्टि पड़ते ही सभों का चेहरा क्रोध से लाल हो गया॥

चार्लस उठ कर और गरज कर बोला, "यह क्या? तुम किसे ले आये?"

चार्लस०। कब?

युवा०। आप की माता से जब मैं मिलने गया था तब एक बार लौटते समय भी आप से भेंट हुई थी॥

चार्लस०। तब तो तुम उसके प्रतिनिधि हो॥

युवा०। हां, मुझपर वह पूरी तरह विश्वास करती है॥

चार्लस०। तुम राजमहल में किस लिये गये थे? और फिर गुप्त पथ से जाने का कारण ही क्या था?

युवा०। इन दोनों प्रश्नों का मैं उत्तर न दूंगा॥

चार्लस०। उत्तर नहीं देने से तुम्हारी जान न बचेगी। राजमहल में किसी से मिलने के लिये तुम गये थे, इसमें कोई भी सन्देह नहीं है। मालूम होता है कि गुप्त प्रेम ही तुम्हारे वहां जाने का कारण था। बताओ, ठीक ठीक बताओ॥

युवा०। फिर कहता हूं कि आपके इन प्रश्नों का उत्तर मैं नहीं दे सकता॥

युवा की बातों से चार्लस क्रोधित हो गया। वह तलवार पर हाथ रख कर बोला—"तुम्हें अवश्य बताना पड़ेगा॥"

युवा०। गिर्जाघर में तथा पादड़ी के सामने ही फिर कहता हूं कि आप के भय दिखाने से मैं नहीं डरता तथा आपकी इन बातों का उत्तर मैं नहीं दूंगा॥

युवा धीर भाव से खड़ा था। बेरियम इस युवा का साहस, धीरता और मधुर स्वर से मोहित होकर उसकी ओर देख रहा था॥

ड्यूक युवा का यह भाव देखकर और भी क्रोधित हो गया और बोला, "खबरदार मूर्ख!!"

तुबाट। (सब बैठे हुए मनुष्यों की तरफ़ देखकर) आप लोग देखें कि मैं हूदूक बार्लंस से कोई अनुचित व्यवहार नहीं कर रहा हूं पर यह बार बार मुझे धमका रहे हैं॥

बार्लंस। (अपनी कुर्सी पर से उठ कर) मैं अवश्य तेरी गुस्ताखी का तुझे दण्ड दूंगा॥

किसी भय से अचानक दुबा का कलेजा कांप उठा। वह मलिन मुख और दीन स्वर से बोला, "नहीं, नहीं, मुझे छूना मत, मेरे शरीर पर हाथ न लगाना।" पर तुरत ही वह सँभला और अपनी किरिच म्यान से बाहर निकाल कर बोला "हूदूक! इसी जगह खड़े रहो। अब अगर एक इंच भी आगे बढ़ोगे या मेरे शरीर पर हाथ लगाने का साहस करोगे तो समझ रक्खो कि इसी किरिच से तुम्हें मारूंगा। मुझे छूते ही यह किरिच तुम्हारे शरीर के पार हो जावेगी॥"

बार्लंस। (अपनी तलवार म्यान में रख कर) ठहरो, सिंह सियारों से नहीं लड़ता॥

यह कहकर हूदूक अपनी कुर्सी पर बैठ गया॥

तुबाट। बार्लंस! तुमने जैसा व्यवहार मेरे साथ किया है वैसा ही मैं भी तुम्हारे साथ करता हूं, जो गाली तुमने मुझे दी है वही मैं तुम्हें देता हूं। इस पवित्र गिर्जाघर को छोड़ कर जहां तुम्हारी इच्छा हो, जहां तुम कहो, वहां मैं तुम से लड़ने के लिये तैयार हूं॥

बेरिक्स दुबा की साहस भरी बातें सुन कर आनन्द से बोला, "वाह, युवक तुम धन्य हो तुम्हारी सभी बातें जरूरी हैं।"

चार्लस०। तुम कौन हो और तुम्हारा नाम क्या है?

युवा०। मेरा नाम वालटन है॥

चार्लस०। मकान कहां है?

वालटन०। मैं डाकूर आट्री के मकान में रहता हूं॥

चार्लस०। डाकूर आट्री के मकान में!!

अपने भाव को न छिपा सकने के कारण चार्लस के मुंह से ऊपर वाली बात निकल गई। जितने मनुष्य वहां बैठे थे सब उसकी तरफ देखने लगे। कप्तान बेरियन भी घबड़ा उठा। "आट्री" का नाम सुनते ही सब के सब घबड़ा उठे॥

पादड़ी०। महाशयगण! अब विपद आने में देर नहीं है। हमलोगों के सब भेद यह युवा जान गया है। इसे छोड़ देने से फांसी ही हमलोगों को इनाम में मिलेगी॥

चार्लस०। निश्चय! यह पुरुष आट्री के साथ रहता है, यह निश्चय ही उसका भेदिया है। भेदिया न होने से राजमहल में जाता ही किस लिये? मेरी मां से भी मेरा भेद लेने के बहाने से ही मिलता है। भेदिये को जो दण्ड दिया जाता है वही इसको भी देना चाहिये॥

वालटन०। (गम्भीरता से) मिथ्या, सम्पूर्ण मिथ्या। मैं कभी किसी का भेदिया नहीं बनाया गया॥

पादड़ी०। बातें बना कर हमलोगों को ठगने का उद्योग न करो। हमलोग तुमसे अधिक बुद्धिमान हैं। तुम्हारे विरुद्ध बहुत से प्रमाण मिल चुके हैं। तुम अवश्य भेदिये हो॥

चार्लस०। बेरियन! इसे ले जाओ। हमलोग विचार करके इसके लिये दण्ड निश्चित करते हैं॥

बेरिदन : (युवा से) युवक : शान्तभाव से मेरे साथ चलो, नहीं तो मुझे बलपूर्वक तुम्हें ले जाना पड़ेगा ॥

इच्छा न रहने पर भी युवक बेरिदन के साथ वहां से बाहर निकला। जहां दूसरे तीनों डाकू बैठे हुए थे वहां जा कर बेरिदन बोला, "इसे शीघ्र कैदखाने में ले जाओ पर याद रक्खो अन्याय या अत्याचार न करना। जो खाना चाहे वही खाने को देना। इसके दिन अब पूरे हो गये। पीछे सब भेद तुम्हें बतलाऊंगा ॥"

इतना कहकर बेरिदन वहां से उस कमरे में चला गया जहां चार्लस इत्यादि बैठे हुए थे ॥

पांचवां परिच्छेद ।

बेरिदन की आज्ञा के अनुसार तीनों डाकू वालटन को कैदखाने की ओर ले चले। कई आंगन तथा दालानों को पार करके वे लोग एक कोठड़ी के दरवाजे पर जाकर खड़े हो गये। फाटक ने कोठड़ी का दरवाजा खोला और वालटन को भीतर जाने के लिये कहा। जब वह कोठड़ी के भीतर चला गया तब फाटक यह कह कर कि मैं अभी भोजन और रोशनी लेकर आता हूं, दरवाजा बाहर से बन्द करता हुआ वहां से चला गया। वालटन अंधेरे ही में कोठड़ी के भीतर खड़ा रहा। कोठड़ी कितनी बड़ी है तथा उसमें कहां पर क्या रक्खा है यह उसे कुछ भी मालूम न हुआ ॥

कुछ ही देर बाद फाटक भोजन और दीया लेकर वहां

आ पहुंचा और उन्हें कोठड़ी में रखकर दरवाजा बन्द करता हुआ चला गया॥

अब बालटन ने देखा कि यह छोटी कोठड़ी पत्थर की बनी हुई है,कहीं से भी भागने की राह नहीं है। यह देखकर वह कांप उठा। पर तुरत ही वह अपने ध्यान को बटोर कर ईश्वर की आराधना करने लगा, परन्तु उसका ध्यान न जमा और बीती हुई बातें धीरे धीरे उसे याद आने लगीं। वह विचारने लगा, "हाय! मैं क्यों उस बुड्ढी के साथ गया? उस राजमहल की स्त्री ने मेरे साथ ऐसा बुरा व्यवहार क्यों किया? उसे क्या मेरे गले की माला के बारे में कुछ मालूम है? क्या वह जानती है कि मुझे कौन सा दुःख है? हाय! क्या उसे यह भेद मालूम हो गया? मैं अपना प्राण दे सकता हूं पर यह भेद किसीको नहीं बता सकता।" साथ ही उसके जी में यह भी आया कि वह इस समय दुष्ट डाकुओं के फंदे में फँसा हुआ है। पर ये डाकू लोग कौन सा काम किया चाहते हैं तथा यहां राजदण्ड और राजमुकुट क्यों रक्खा है? यह उसकी समझ में नहीं आया। आद्री को वह दयालु और सज्जन जानता था पर आज उसके बारे में भी लोगों को सन्देह करते सुना। वह बार बार अपनी विपद को विचारने लगा। वह कैदी है तथा लोग उसे भेदिया समझते हैं यह भी वह जान ही गया था और यह भी जानता था कि भेदिये को फांसी ही दण्ड में दी जाती है॥

परमेश्वर पर उसकी अचल भक्ति थी, उस करुणामय की करुणा पर उसे पूरा विश्वास था। क्या उसीका फल अब उसे

मिलना चाहता है ? वह मन ही मन बोला, "हाय ! मेरे दुःख शोक और सन्ताप का ठिकाना नहीं है । तो क्या दुःखियों को अपना प्राण प्यारा नहीं होता ? नहीं, कुष्टरोगी (कोढ़ी) का जीना वृथा है ॥"

यद्यपि यह युवा इस तरह से दुखी था तथापि उसको इसे जीने की इच्छा थी । सम्भव था कि इसकी दुःख रात्रि का प्रभात हो जावे । केवल इसी विचार से वह अभी जीवित रहना चाहता था ॥

एक घंटे के लगभग वह इन्हीं विचारों में पड़ा रहा । जब कभी लूसिया उसे याद आ जाती उससे एकबार फिर मिलने के लिये वह तड़प उठता था, पर लाचार था ॥

न जाने कब तक वह इन्हीं विचारों में पड़ा रहता पर यकायक उस कोठड़ी का दरवाज़ा ज़ोर से खुला और ग्रेरियन कमरे में आता उसे दिखाई दिया ॥

वालटनः । (शान्त स्वर से) आप अवश्य कोई कुसम्वाद लाये होंगे । पर सम्वाद कितना ही बुरा क्यों न हो आप कोई चिन्ता न करें और मुझे ठीक ठीक बतावें ॥

वालटन का साहस देख कर ग्रेरियन का वीर हृदय कांप उठा वह बड़ी कठिनता से अपने को सँभाल कर बोला, "क्या तुम शान्तभाव से मरना चाहते हो ?"

वालटनः । हां ! मनुष्य मेरा प्राण ले सकते हैं पर ईश्वर मेरी अविनाशी आत्मा के लिये अवश्य कोई उपाय कर चुके होंगे । बताओ, मेरे मरने में कितनी देर है ?

ग्रेरियनः । एक घंटे की । वह पादड़ी जिन्हें तुमने उस कमरे

में देखा या तुम्हारी आत्मा के। शान्ति देने के लिये आवेंगे॥

वालटन०। नहीं, कभी नहीं। जो मेरा मारने वाला है, जिसके कहने से मेरा प्राण लिया जाता है। वह कभी मुझे धर्म का उपदेश नहीं दे सकता। ऐ कप्तान! उसे मत भेजना, परमेश्वर पर मेरा पूर्ण विश्वास है अब किसीके उपदेश की जरूरत नहीं है, मैं स्वयं प्रार्थना कर लूंगा॥

इस बात के। सुनकर वेरियम के हृदय में कष्ट पहुंचा। उसने अपने मन के भाव के। छिपाने के लिये मुंह फेर लिया। ईश्वर पर युवा का विश्वास और साहस देखकर वह मोहित हो गया। वह बड़े कष्ट से बोला, "ऐ युवा! आंद्री से मैं घृणा करता हूं इसी कारण से तुम्हारे दण्ड के बारे में मैंने अपनी सम्मति बिल्कुल नहीं दी। पर तुम्हारे बचाने की भी शक्ति मुझमें नहीं है, मैं एक सामान्य मनुष्य हूं॥"

वालटन०। तुम्हारे इस अच्छे व्यवहार के लिये मैं तुम्हें हृदय से धन्यवाद देता हूं पर यह तो बताओ कि आंद्री से तुम घृणा क्यों करते हो?

वेरियम०। यह न पूछो। उसके अत्याचार याद पड़तेही– जो हो, इस समय ये बातें वृथा हैं, मैं तुम्हारे इस बहुमूल्य समय के। नष्ट नहीं किया चाहता॥

वालटन०। अच्छा यह तो बताओ कि मेरा प्राण किस उपाय से लिया जायेगा?

वेरियम०। हाय! घातक (जल्लाद) तुम्हारा सिर काट डालेगा? अभागे युवक! क्या मृत्यु के पहिले या बाद मैं तुम्हारा कोई काम कर सकता हूं?

बाल्टन०। डेरिमन ! यदि तुम मेरा एक उपकार करो तो मैं आनन्द से अपना प्राण दूं ॥

डेरिमन०। अच्छा, बताओ वह कौन सा काम है ?

बाल्टन०। मुझे तो विश्वास नहीं होता कि तुम यह काम कर दोगे ॥

डेरिमन०। हे युवक! यद्यपि मैं डाकू हूं तथापि ईश्वर पर विश्वास रखता हूं। मैं जन्म से ही डाकू नहीं था, भाग्य दोष से और लाचारी से यह काम करना पड़ा। मैं शपथ पूर्वक कहता हूं कि मैं तुम्हारी आज्ञा पालन करूंगा ॥

बाल्टन०। अच्छा सुनो। जहां मेरा प्राण लिया जावेगा उसी जगह पर कुछ हट कर खूब आग सुलगा रखना और बहुत सी लकड़ी भी जमा कर रखना। ज्यों ही मेरा मस्तक शरीर से अलग हो त्योंही देह उस अग्निकुण्ड में छोड़ देना और ऊपर से लकड़ी लाद देना। जब तक वह देह जल कर राख न हो जावे वहां से न हटना। यही मेरी प्रार्थना है और यही मेरी अन्तिम बात है ॥

डेरिमन०। (आश्चर्य से) मैं ईश्वर को साक्षी रख कर कसम खाता हूं कि तुम्हारी आज्ञा अवश्य पालन की जावेगी ॥

बाल्टन०। मेरी बातें अच्छी तरह समझ लो। मेरा देह कोई दूसरा मनुष्य छूने न पावे। कोई भी मेरी लाश पर से कपड़ा न उतारे यहां तक कि एक फीता या बटन भी मेरे शरीर पर से न उतारा जाय ॥

डेरिमन०। ऐसा ही होगा। हाय ! यदि मैं तुम्हें बचा सकता——

वालटन०। (बात काट कर) मेरी एक प्रार्थना और भी है।

येरियन०। बताओ, शीघ्र बताओ, मैं तुम्हारी सब प्रार्थनायें पूरी करूंगा॥

वालटन०। तुम किसी तरह इसकी खबर जाट्री के पास भिजवा देना कि वालटन मर गया। कहां और किस तरह मरा यह कहलाने की कोई जरूरत नहीं है॥

युवा की बातें दुःख से भरी हुई निकलती थीं तथा उसकी आंखों में बार बार आंसू भर आते थे। यह देख कर येरियन व्याकुल हो गया। वह बड़े दुःख से बोला, "ऐसा ही होगा॥"

वालटन०। मैं इस कृपा के लिये तुम्हें धन्यवाद देता हूं, जाओ अब आग सुलगाओ और लकड़ी मँगा रक्खो॥

येरियन दरवाजा बन्द करता हुआ वहां से बाहर चला आया। वालटन वहीं बैठा बैठा भांति भांति की चिन्ता करने लगा। उसका निर्मल तथा निश्चल हृदय मरने की खबर सुन कर भी न कांपा और वह ईश्वर की आराधना करने लगा॥

देखते देखते एक घंटा बीत गया और घातक उसे वध-भूमि पर ले जाने के लिये आ पहुंचा॥

वालटन उसे देख कर बोला, "चलो, मैं स्वयं चलने के लिये तैयार हूं, मुझे पकड़ कर ले चलने की कोई आवश्यकता नहीं है॥"

घातक भी उसकी धीरता, स्थिरता तथा शान्तता देख कर मुग्ध हो गया। वालटन घातक के साथ बाहर चला आया। उसने देखा कि येरियन ने उसकी प्रार्थना के अनुसार सब काम ठीक कर रक्खा है॥

छठां परिच्छेद।

बालटन को इस टूटे हुए मकान के एक कमरे में लाकर घा-टक ने खड़ा कर दिया। जहां एक कोने में आग जल रही थी और एक घातक (जल्लाद) हाथ में तलवार लिये खड़ा था तथा दूसरी तरफ चार्लस और पादड़ी इत्यादि बैठे हुए थे। उनसे कुछ दूर हट कर बेरियन खड़ा था जिसके चेहरे से अप्रसन्नता और गम्भीरता झलक रही थी तथा साथ ही उसके चेहरे से यह भी झलक रहा था कि इस हत्याकाण्ड से वह दुःखित है॥

सब चुप थे। आग की कांपती हुई रोशनी डाकुओं के उजले वस्त्रों पर, घातक की तलवार पर तथा चार्लस इत्यादि के बहुमूल्य वस्त्रों पर पड़ कर भयंकर दृश्य दिखा रही थी॥

बालटन कमरे के बीच में घुटने टेक कर बैठ गया और आकाश की ओर देख कर ईश्वर की आराधना करने लगा। इस समय उसके चेहरे से करुणा झलक रही थी॥

बालटन की ऐसी अवस्था देखकर बेरियन कांप उठा। वह मन ही मन कहने लगा, "इच्छा तो यही होती है कि इस युवा को बचा लूं॥"

बेरियन के हृदय का भाव उसके चेहरे पर झलक गया, जिसे देखते ही चार्लस बोला, "बेरियन! तुमने जो प्रतिज्ञा की है वह याद तो है?"

बेरियन०। (दुःख से) ठीक है, इसी प्रतिज्ञा के कारण

तो मैं इस समय चुप हूं और यह हत्याकाण्ड दुःख से देख र
हूं। नहीं तो………………

एकाएक थेरियस चुप हो गया क्योंकि वालटन इस सम
ज़ोर से ईश्वर की आराधना कर रहा था, उसी आराधना
सुन कर थेरियस के हृदय में चोट लगी थी। वालटन अप
हत्याकारियों के पापों के लिये भी ईश्वर से क्षमा भिक्षा
रहा था। वह कहता था—"हे परमेश्वर! जिन लोगों के क
रण से मेरा प्राण लिया जाता है उन्हें भी क्षमा करो। वि
करके जिस मनुष्य की तलवार से मेरा प्राण जावे उसे तो तु
अवश्य ही क्षमा करना। जो थेरियस भ्रम से अन्धा हो
इस समय कुराह चल रहा है उसके ज्ञान चक्षु खोल
जिसमें……… ………"

थेरियस चुपचाप खड़ा उसकी आराधना सुन रहा था
वालटन ने झट कर उसका हाथ पकड़ा पर तुरत ही झट
देकर थेरियस ने छुड़ा लिया और उसे धक्का देकर बोला "मे
आज्ञा से इस युवा का प्राण कभी न लिया जायेगा। वालट
उठो, तुम्हें कुछ भी डर नहीं है, ईश्वर को साक्षी देकर कह
हूं कि मेरा ही प्राण क्यों न चला जाये पर तुम्हारा रक्त
भर भी न गिरने दूंगा॥"

थेरियस ने वाल्टन का हाथ पकड़ कर उसे उठाय
वाल्टन आश्चर्य से चुपचाप इधर उधर देख रहा था। था
भी प्रसन्न होकर अपनी तलवार म्यान में रख वहां से च
गया तथा दूसरे दूसरे डाकू वाल्टन के छोड़ दिये जाने
प्रसन्न हो गये॥

चार्लस क्रोध से तलवार निकाल कर उठ खड़ा हुआ और कर्कश स्वर से बोला, "कप्तान! तुमने प्रतिज्ञा करके भी अपनी प्रतिज्ञा भङ्ग की। इस अभागे युवा की रक्षा करके तुम अपनी विश्वासघातकता का परिचय दे रहे हो॥"

बेरियन। (व्यंग स्वर से) मेरे दल का कोई भी मनुष्य इसे न मारेगा। आप घातक का रूप धर कर सामने आवें॥

ड्यूक चार्लस क्रोध से तलवार लेकर वाल्टन पर झपटा पर वाल्टन का ध्यान इस ओर न था वह आश्चर्य से इधर उधर देख रहा था। पर बेरियन ने देख लिया कि अब युवा का प्राण जाना चाहता है। वह तेजी से अपनी तलवार निकाल कर चार्लस की तरफ बढ़ा और डपट कर बोला "चार्लस! सावधान!!"

वाल्टन ने बेरियन के हाथ से तलवार ले ली और बोला "महाशय! मुझे मनुष्य रक्त के प्यासे इस ड्यूक की रक्तपिपासा निवारण करने दीजिये॥"

बेरियन हट कर खड़ा हो गया। यह सब बातें इतने समय में हो गईं कि पादड़ी इत्यादि कोई भी चार्लस को समझा न सके॥

वाल्टन तलवार चलाने में बिलकुल मूर्ख था मगर चार्लस पूरा निपुण होने पर भी क्रोध से ज्ञानरहित हो गया था। वाल्टन तलवार चलाने में मूर्ख रहने पर भी साहस से तलवार चलाता जाता था और चार्लस के वारों को बचाता जाता था। बेरियन यह सब देख कर प्रसन्न हो रहा था। जिस प्रकार से युद्ध में पिता अपने पुत्र की वीरता देख कर प्रसन्न हो जाता

वहां से एक दूसरे सजे हुए कमरे में चला गया॥

एक चौदह बरस का लड़का वेरियन के सामने आकर खड़ा हो गया। वेरियन बोला "फ्लोरिलो! शीघ्र एक बोतल शराब और कुछ खाने के पदार्थ ले आओ॥"

फ्लोरिलो ने सब चीजें लाकर टेबल पर रख दीं और चला गया। वेरियन ने बड़े भाव भगत से वालटन को भोजन कराया। वालटन वेरियन के सद्व्यवहार से मुग्ध हो गया। वेरियन बोला "मालूम होता है तुम घर जाने के लिये घबड़ा रहे हो। अब तुम्हारी इच्छा हो तुम चले जा सकते हो पर न जाने क्यों तुम्हें जाने देने का जी नहीं चाहता! न जाने क्यों तुमपर मेरी ममता बढ़ती ही जाती है॥"

वालटन०। मुझे बहुत ही शीघ्र नेप्लस पहुंचना चाहिये, यदि रात को घर न पहुंच सका तो बड़ा गड़बड़ होगा। आर्ट्री पूछेंगे तो क्या उत्तर दूंगा? आज रात की बातें तो मुझे छिपानी पड़ेंगी॥

वेरियन०। ठीक है। आजकल जैसे दिन बीत रहे, हैं मैं देखता हूं कि तुम्हारे ऐसे सदाशय और सरलचित्त के मनुष्य को निर्विघ्नता से संसार में रहना कठिन दिखाई देता है। मैं अब तुमसे मित्र की भांति व्यवहार करूंगा। तुम प्रतिज्ञा करो कि जब कभी तुम्हें आवश्यकता पड़ेगी या तुम विपद में पड़ोगे तो मेरी सहायता मांगोगे। उस विपद से मैं तुम्हें बचा सकूंगा या नहीं, यह विचारने की तुम्हें कोई जरूरत नहीं है॥

वालटन आश्चर्य से कप्तान वेरियन की ओर देखने लगा। वेरियन फिर बोला, "मैं झूठ नहीं बोलता। ऐसा

कभी मत बिचारना कि मैं तुम्हारी सहायता न करूंगा। (हाथ में एक त्रिशुल देकर) क्या तुम इस त्रिशुल को खूब ज़ोर से चला सकते हो?

वालन्टन। हां, चला सकता हूं॥

सेरियन। तब मेरे प्रेम का उपहार यह त्रिशुल ग्रहण करो। सदा इसे अपने वस्त्रों में छिपाये रखना। किसी न किसी दिन इसके द्वारा तुम्हारा बड़ा उपकार होगा। यदि कभी किसी विपद में पड़ो, यदि कभी अपने बन्धु की सहायता आवश्यक हो, दिन हो या रात हो, नगर हो या पर्वत हो, मेक्सिको से लेकर बारह सौ कोस इधर उधर तक जब तुम्हें आवश्यक पड़े, इस त्रिशुल को चलाना, उसी समय तुम्हें सहायता मिलेगी॥

वालन्टन। (त्रिशुल लेकर) मैं बड़ी प्रसन्नता से तुम्हारे दिये हुए इस उपहार को ग्रहण करता हूं॥

इतना कहकर वालन्टन ने त्रिशुल अपने हाथ में ले लिया। सेरियन उसे साथ लेकर बाहर निकला। उसके साथी सिपाही लेकर बाहर खड़े थे। सेरियन बोला—"तुमलोग इस युवा को स्टेशन ले जाओ, और यहीं मेरी राह देखो, मैं कल शाम को तुमसे मिलूंगा। (वालन्टन की ओर घूम कर) मेरी मण्डली का यह नियम है कि बाहर के मनुष्यों को ले जाने और ले आने के समय आंखों पर पट्टी बांध दी जाती है॥

वालन्टन। नियम अवश्य पालन होना चाहिये॥

सेरियन। यह नियम मान्य है नहीं तो मुझे इन भेदों को प्रकाश न करना चाहिये। मैं अपनी समस्त मण्डली का जीवन तुम्हारे ही भरोसे पर छोड़ता हूं। अच्छा अब जाओ॥

आस्टन की आंखों पर पट्टी बांध दी गई और पहिले ही की तरह घोड़े पर चढ़ा कर नेप्ल्स पहुंचा दिया गया ॥

सातवां परिच्छेद।

दूसरे दिन ग्यारह बजे रात के समय फिर उसी स्थान पर सब लोग जमा हुए। चार्लस, पादड़ी तथा दूसरे २ मनुष्य पहिले ही की तरह बैठे हुए बेरिदन के आने की राह देख रहे थे ॥

आज की रात बड़ी ही अंधेरी थी। हवा सनसन करती हुई बह रही थी, आकाश में बादल घिरे हुए थे और जङ्गली पशु तथा उल्लुओं का भयानक शब्द रह रह कर सुन पड़ता था॥

यकायक उस कमरे का दरवाज़ा खुल गया और राजकुमार अल्फ्रिया को लिये हुए बेरिदन कमरे में आ पहुंचा। अल्फ्रिया का चेहरा पीला हो रहा था, आंख इधर उधर फिरते हुए थे तथा हाथ पैर कांप रहे थे। उसको देखते ही मालूम होता था कि भय से उसका प्राण निकला चाहता है। उसकी यह दशा देख कर चार्लस उसके पास चला गया और बोला, "हूं! तुम्हारी ऐसी दशा क्यों हो रही है? यहां जितने मनुष्यों को तुम देखते हो वे सब तुम्हारे शुभचिन्तक हैं॥"

अल्फ्रिया एक कुर्सी पर बैठ गया। एक मनुष्य उठ कर एक गिलास मदिरा (शराब) ले आया और उसके सामने रख कर चला गया। अल्फ्रिया गिलास उठा कर शराब पी गया। अब उसकी तबीयत कुछ ठिकाने हुई। वह संभल कर बोला, "चार्लस! मुझ पर यह अत्याचार क्यों किया गया है?"

चार्लस०। शान्त हो। मुझ पर क्रोध न करो, मैं तुम्हारी एक विश्वासी प्रजा हूं॥

अन्द्रिया०। प्रजा! मुकुटधारी राजा जो होता है प्रजा उसकी होती है। मैं न राजा ही हूं न मुझे राज्य का कोई अधिकार ही मिला है। फिर मुझे लज्जित क्यों कर रहे हो!

चार्लस०। तुम्हें अपमानित नहीं करता, बल्कि सच कहता हूं, आज ही तुम्हारा राज्याभिषेक होगा और आज ही तुम राजा होगे॥

अन्द्रिया०। मैं आपकी बातों का अर्थ नहीं समझ सका। मैं कहां हूं तथा मुझे यहां ले आने का कारण क्या है? साफ २ बताओ॥

चार्लस०। तुम जिस स्थान पर बैठे हो यहां के सब मनुष्य तुम्हारे लिये अपना प्राण तक देने को तैयार हैं। यह देखो, ये सर्दार हैं, इनका नाम बेरियन है॥

अन्द्रिया०। बेरियन! डाकूओं का सर्दार!! जिसकी आश्चर्यजनक बातें मैं आजकल बराबर नेप्लस में सुन रहा हूं।

चार्लस०। हां, वही हैं। इनकी आधीनता में इस समय तीन हज़ार सिपाही हैं जो तुम्हारे काम के लिये लड़कर अपनी जान तक दे देने को तैयार हैं॥

अन्द्रिया०। यह सब तो मैं समझ गया पर यह तो बताओ कि जिन पर तुम लोगों की इतनी भक्ति है उसको इस तरह चुपचाप पकड़ लाने का क्या कारण है? यहां आकर इन मनुष्यों का चेहरा देख मैं तो घबड़ा उठा। ओह! कैसी भयानक आकृति है।

इतना सुनते ही बेरियन क्रोध से अपना होंठ काटने लगा॥

चार्लस०। सुन्दर चेहरे के भीतर सदा वीर हृदय नहीं पाया जाता। सुन्दरता और वीरता में बड़ा भेद है, यह सब मनुष्य अस्त्र विद्या में निपुण तथा तुम्हारी सेवा में उद्यत हैं। पोपने तुम्हें राज दिलाने का भार (पादड़ी के दिखा कर) इन्हें दिया है। हमलोग आज तुम्हें सिसिली और जेरुजेलम का राजा बनायेंगे॥

अन्द्रिया०। मैं तुम लोगों के हृदय से धन्यवाद देता हूं पर मुझे बल पूर्वक बांध लाने की क्या जरूरत थी?

चार्लस०। इस समय यही उचित था, नहीं तो तुम हाथ न आते॥

अन्द्रिया०। आज से मैं अपने के तुम्हीं लोगों के हाथों में सौंपता हूं। मेरी रक्षा करनी अब तुम्हीं लोग का काम है। तुमलोग मुझे मेरे प्रधान शत्रु आट्री के हाथ से बचाओ और उसके शीघ्र मार डालो॥

चार्लस०। हमलोगों ने जो सलाह की है सो सुनो। मैं पहिले कह चुका हूं कि पोपने इन्हीं (पादड़ी) के तुम्हें राज-सिंहासन पर बैठाने का भार दिया है और यही आज तुम्हारा राज्याभिषेक करेंगे। तुम्हारा राज्याभिषेक हो जाने पर हम-लोग पोप के पास कहला भेजेंगे। यह सम्वाद पाते ही कुछ सेना भेज देंगे। पोपकी सेना के यहां पहुंचते ही बेरियन के सिपाही भी उनसे मिल कर तुम्हारी जय घोषणा करेंगे और राजपताका खड़ी करेंगे। उस राजपताका के पास नेप्लस की

बहुत सी प्रजा जमा हो जायगी। आजका अभिषेक कार्य गुप्त ही रक्खा जायगा। पोप की सेना के यहां पहुंचते ही सबके पहिले आन्द्रो की देह से उसका मस्तक काट लिया जायेगा॥

अन्द्रिया०। बहुत ठीक, अब मेरा भी ठिकाने हुआ। आन्द्रो के बाद ही फिलिपा को भी फांसी दी जायगी॥

यकायक मेरियन कांप उठा। वह कर्कश स्वर से बोला "राजकुमार! हमलोग स्त्री के रक्त से अपने हाथ कलंकित न करेंगे॥"

यह सुन कर चार्लस बोला "राजकुमार! हमलोग स्त्रियों के ऊपर अत्याचार नहीं करते। किसी तरह अलतमुरा के मार्कुइस के साथ पहिले मित्रता करनी होगी, उसको अपनी मण्डली में मिलाना पड़ेगा। मैंने उसकी लड़की लूसिया से बियाह करने की प्रार्थना की थी पर उसने मेरी बातों पर कुछ भी ध्यान न दिया और मेरा अपमान किया। ओह! वह अपमान याद आते ही मेरा हृदय कांप उठता है। अच्छा, रात अधिक होगई,चलो अब यहां बैठने की कोई जरूरत नहीं है॥

सब कोई वहां से उठ कर उस जगह पहुंचे जहां राजसिंहासन रक्खा हुआ था॥

राजसिंहासन के पीछे गैस्पर, लेनिसो और आटक नंगी तलवार लिये खड़े थे और बीम डाकू तलवार लिये हुए सिंहासन के दोनो तरफ खड़े थे तथा सामने की तरफ सुन्दर भृत्य फ्लोरिसो हाथ में चँवर लिये खड़ा था॥

ज्योंही ये लोग उस कमरे में पहुंचे त्योंही चार्लस ने अन्द्रिया को लेजा कर सिंहासन पर बैठा दिया और स्वयं

उसकी दाहिनी ओर एक कुर्सी पर बैठ गया। फ्लोरिलो ने चँवर डुलाना आरम्भ कर दिया और पादड़ी घुटने टेक कर ईश्वर की प्रार्थना करने लगा। पर उसके मुंह से शब्द बाहर निकलते ही उल्लू एक बार जोरसे बोल उठा, सियारों की कर्कश ध्वनि सुन पड़ने लगी और एक चमगादड़ उड़ कर अन्द्रिया के सिर पर से चला गया॥

अन्द्रिया कांप उठा। इन सब बुरे शकुनों से वह डरने लगा। इतने ही में पादड़ी उठ कर उसके पास गया। पादड़ी के हाथ में एक शीशी थी जिसमें एक प्रकार का पवित्र तेल था जिसे पोपने उसके पास भेज दिया था। पादड़ी ने उस तेल की दो चार बूंदें अन्द्रिया के सिर पर डाल दीं और राजमुकुट उसे पहिना कर बोला "सिसिली और जेरुजेलम के राजा की जय।" तुरत ही जितने मनुष्य वहां बैठे हुए थे सब "राजा अन्द्रिया की जय।" बोल उठे और फिर सन्नाटा हो गया। पादड़ी ने राजदण्ड अन्द्रिया के दाहिने हाथ में दे दिया और सब मनुष्य राजा के सम्मानार्थ घुटने टेक कर बैठ गये॥

पर इसी समय उल्लू फिर बोला और चमगादड़ भी उड़ कर अन्द्रिया के चारो ओर घूम गया। अन्द्रिया भय से फिर कांप उठा॥

इसी तरह अभिषेक कार्य समाप्त हो गया। सब अपने २ घर चले गये। बेरियन अन्द्रिया को नेप्लस पहुंचा आया॥

करोलिना ने यकायक फिलिपा से पूछा, "क्या डाक्टर आट्री न आवेंगे ?"

फिलिपा०। अवश्य आवेंगे। पर यह तो तुम जानती ही हो कि इस तरह के आमोद प्रमोद को वह इतना पसन्द नहीं करते ॥

करोलिना०। उस बार उनकी बातें सुन कर मुझे इतना डर मालूम हुआ कि मैं नहीं कह सकती। दाइयों ने तथा रसायनिक डाक्टर ने राजा के शव (लाश) के चारों तरफ जो उजली रोशनी देखी थी उसका वर्णन तथा उसका कारण जब वह कहने लगे तो मैं सुन कर घबड़ा उठी ॥

वारटंड०। (हँस कर) पर मुझे बड़ी दिल्लगी मालूम हुई। आट्री कहते थे कि शव के चारों तरफ कभी कभी ऐसी ही रोशनी घूमा करती है ॥

करोलिना०। देखो वारटंड! यदि तुम फिर उस बारे में कुछ कहोगे तो मैं तुमसे बातें न करूंगी ॥

वारटंड०। पर तुमने ही पहिले यह चर्चा चलाई है, इस में मेरा कोई दोष नहीं है। जो हो, डाक्टर आट्री एक अच्छे वैज्ञानिक हैं ॥

फिलिपा०। निश्चय : उनके समान वैज्ञानिक इस पृथ्वी पर दूसरा नहीं है जिस अपूर्व कुशलता से उन्होंने चार्ल्स के दिल को खाली बना दिया था ॥

करोलिना०। रसायन शास्त्र में इनकी असाधारण बुद्धि है, जिस तरह इन्होंने रोशनाई बनाई है कि जो लिखने के समय तो बिलकुल ठीक पर कई घंटों के बाद ही उसका चिन्ह

तक नहीं पाया जाता॥

फिलिपा०। हां, पार्लमेन्ट काग़ज़ पर की मोहर तक न जाने कहां उड़ गई॥

करोलिना०। चार्लस राजा की मोहर किस तरह ले गया?

फिलिपा०। क्या तुम्हें नहीं मालूम है। राजा के हाथ से अंगूठी उतार ले गया था॥

सभों ने घृणा से अपनी अपनी नाक सिकोड़ ली। बारटेंड बोला, "क्या जिस समय चार्लस अंगूठी चुराने गया था उसी समय वह रोशनी दिखाई दी थी? मैंने सुना है...... ..."

करोलिना०। (बात काट कर) यदि मुझे प्यार करते हो तो यह बात फिर न निकालो॥

बारटेंड हँसने लगा। इसी समय आड्री उस कमरे में आ पहुंचा। उसको देख कर सब चुप हो गए॥

आड्री कमरे में आकर चुपचाप एक कुर्सी पर बैठ गया। फिलिपा बोली, "डाक्टर! तुम इतने चिन्तित क्यों दिखाई देते हो?"

आड्री०। (गम्भीर स्वर से) यह हमलोगों को हँसी खुशी का समय नहीं है। घर के दरवाजे पर शत्रु खड़ा है, मेल्मथ का दुर्भाग्य उदय हो गया है। विपद् एक तरफ से नहीं, चारों तरफ से आ पहुंची॥

यकायक जीवानार की सब प्रसन्नता हवा हो गई। वह रानी की भांति गौरव से अपनी गर्दन ऊंची करके बोली, "कहो कहो, क्या हुआ है?"

आड्री०। चार्लस, नरक के पादरी तथा दूसरे दूसरे धर्म-

वान और सामर्थ्यवान सर्दारों ने एकमत होकर हमलोग
अयोग्य स्वामी अन्द्रिया को सिंहासन पर बैठाने का नि
किया है और डाकुओं के सर्दार बेरियन ने उन लोगों का
दिया है॥

जीवाना०। तब इसमें घबड़ाने की क्या आवश्यकता
मेरी प्रजा सब तो स्वामी भक्त है, सेना सब मेरे बश में है,
पर ये लोग भी (कमरे में बैठे हुए मनुष्यों को दिखा कर)
पक्षपाती हैं, फिर डरने का कौन सा कारण है?

आट्री०। ठीक है, पर इस दुर्घटना का पूरा पूरा
तो आपको मालूम ही नहीं है। डाकुओं की मण्डली में
एक भेदिया भी है उसके मुंह से जो कुछ हुआ है सब
चुका हूं॥

जीवाना०। क्या हुआ है?

आट्री०। पोप ने शत्रुपक्ष अवलम्बन किया है। उ
तरन्ता के पादड़ी के पास पवित्र तेल भेज दिया है और उ
सेना की सहायता देने की प्रतिज्ञा की है। आज तीन
हुए कि चुपचाप अन्द्रिया का राज्याभिषेक हो गया॥

इस बात के सुनते ही मानो समस्त मण्डली पर वज्र
पड़ा। रौबर्ट आधी तलवार म्यान से निकाल कर बो
"विश्वासघाती अन्द्रिया को अवश्य मारूंगा॥"

बारटंह उठ खड़ा हुआ। आट्री फिर गंभीर स्वर से
"तुम लोग अभी युवा हो, तुम्हारे साहस की प्रशंसा
हूं पर यकायक कोई काम न करना चाहिये। खतर तो
अवश्य है, पर अन्त में जय हम ही लोगों की होगी॥

जीवानाथ। मेरी सेना भेज कर डाकुओं को मार भगाओ। तुम चुप क्या बैठे हो?

आड्री०। नहीं, यह न होगा। कौशल से अपना काम निकालना पड़ेगा। बेरियन की सेना यहां से बारह मील तक फैली हुई है, उसके भेदिये सब जगह हैं यहां तक कि सेना, पुलिस तथा राजमहल में भी उसके भेदिये हैं। मेरा भेदिया दो चार दिनों में पूरा पूरा भेद बतायेगा। तब विचार करके कोई काम किया जायेगा। मुझपर भरोसा रख कर आपलोग न घबड़ायें॥

जीवानाथ। आप ही मेरी विपद् के सहायक हैं॥

आड्री०। अब एक दूसरी भयंकर बात आपलोग सुनें। एक बड़ा ही भयानक रोग नेटलस में आ गया है। लोग सदा हँसते खेलते रहेंगे और हँसते हँसते पागल होकर मर जायेंगे॥

सब मण्डली एकबार ही बोल उठी, "ईश्वर हमलोगों की रक्षा करें॥"

आड्री०। यह रोग सचमुच बड़ा ही भयंकर है। जर्मनी से यह रोग इटली में आ पहुंचा है। इसके आक्रमण से नर, नारी, बालक, वृद्ध, युवा सभी भूत लगने की तरह पागल हो जाते हैं। हाथ पैर नोचते खसोटते हैं। पागलों की तरह उछलते कूदते हैं और आपस में पिशाचों की भांति लड़ते और एक दूसरे को मार डालते हैं। बड़े कड़े दिल का दानव भी इससे बच नहीं सकता। धनी, निर्धन, विद्वान, मूर्ख सभी एक ही तरह पर रोगी हो जाते हैं। सब एक साथ मिल कर उत्पात मचाते हैं, उनकी चिल्लार से चारो दिशा कांप उठती है॥

जीवानाo। ओह! क्या भयंकर रोग है !!

आद्रीo। भयंकरता में क्या सन्देह है। रोगी पिशाचों की भांति चिल्लाते हुए सड़क पर दौड़ते हैं। कब्र से गड़े हुए मुर्दे निकालते हैं और उनको नख तथा दांतों से टुकड़े टुकड़े कर डालते हैं, मनुष्य का मांस खाकर अपनी पैशाचिक क्षुधा (भूख) को निवारण करते हैं। दो ही चार दिनों में यह भयंकर रोग इस राजधानी में दिखाई देगा !!

इतना सुनते ही करोलिना चिल्ला उठी॥

जीवानाo। उस भयंकर रोग का नाम क्या है?

करोलिनाo। हां हां, उसका नाम बताइये॥

फिर सब एक साथ बोल उठे, "उस रोग का नाम बताइये जिसमें हमलोग ईश्वर से दयाभिक्षा मांग सकें॥"

आद्रीo। इसका नाम "सेन्टजन का नाच" है। ऐसा कठिन रोग, पृथ्वी पर दूसरा नहीं है॥

आद्री की बातों से सब घबड़ा उठे। जिस कमरे में पहिले आनन्द की धारा बह रही थी वहां अब केवल भय और विषाद विराजने लगा॥

नवां परिच्छेद।

इसी सन्ध्या को एक दूसरे स्थान पर और ही घटना घटी। तीन सवार सिर से पैर तक अपने को काले वस्त्रों में छिपाये हुए शान्ताचार गिर्जा के पीछे की सैकरी और छोटी गली में घुसे। थोड़ी ही दूर जाकर उनमें से दो मनुष्य घोड़े से उतर पड़े तथा अपने घोड़े तीसरे को सहेज कर वहां से गिर्जाघर की ओर चले॥

ये दोनों चुपचाप एक छोटे दरवाजे के पास जाकर खड़े हो गए और उनमें से एक बोला, "देखो, जब तक मैं न लौटूं, तुम यहीं खड़े रहना॥"

"जो आज्ञा" कहकर वह मनुष्य अन्धकार में जा छिपा और दूसरा का ड्यूक चार्लस गिर्जाघर में चला गया॥

कुमारी लूसिया पहिले ही की तरह अपनी सहेलियों के साथ यहां आकर बैठी हुई ईश्वर की आराधना कर रही थी। चार्लस उसके पीछे एक खम्भे की आड़ में खड़ा हो गया और ललचौंही आंखों से उसे देखने लगा। बहुत देर तक उसे इसी तरह देखता रहा पर अचानक उसका विचार बदला और वह वहां से बाहर निकल कर अपने साथी से बोला "जाता हूं। नौकरों के साथ मेरा घोड़ा गिर्जा के बाहर दरवाजे पर भेजो और तुम भी चले आओ॥"

इस आदमी का नाम कमसो था। वह "जो आज्ञा" कह कर चला गया और चार्लस गिर्जा के फाटक पर आकर खड़ा होगया॥

कुछ ही देर के बाद लूसिया अपनी सहेलियों के साथ गिर्जाघर के बाहर निकली। उसे इस बात की कुछ भी सुध न थी कि उसके पीछे पीछे दो मनुष्य चले आ रहे हैं। यकायक चार्लस और कसमों ने लूसिया को पकड़ लिया। लूसिया और उसकी सहेलियां चिल्ला उठीं। पास ही एक सजा सजाया घोड़ा खड़ा था। चार्लस झपटकर लूसिया को लिये हुए वहां पहुंचा जहां घोड़ा खड़ा था तथा लूसिया को उस पर बैठा कर स्वयं उसके पीछे बैठ गया और वहां से तेजी से भागा। उसके साथी भी उसके पीछे पीछे चले॥

रात अंधेरी थी इस कारण से महल्ले के आदमी यह भी न जान सके कि उसे कौन उठा ले गया। उन्हें इतना ही मालूम हुआ कि एक युवा एक स्त्री को उठाकर ले भागा॥

इधर चार्लस ने अपने साथियों के साथ शहर के बाहर आकर घोड़े की चाल धीमी की। लूसिया अभी तक भय से मूर्छित हो चार्लस की गोद में पड़ी हुई थी। आधे घन्टे के बाद सब एक सुन्दर वाटिका में जा पहुंचे। यहां पहिले ही से एक बुढ्ढी इन लोगों की राह देख रही थी। चार्लस लूसिया को उसकी रक्षा में छोड़ कर वहां से चला गया॥

कुछ देर बाद लूसिया की मूर्छा भंग हुई। उसने आंखें खोल कर देखा तो अपने को एक सुन्दर और सजे हुए कमरे में चारपाई पर पाया जहां एक लम्प में सुगन्धित तेल जल रहा था। वह आश्चर्य से बोली, "एं। मैं कहां हूं?"

दाई०। (नम्रता से) सदाशय और धनवान ड्यूक चार्लस के कमरे में॥

लूसिया०। एँ! ड्यूक चार्लस के कमरे में!! क्या यह सम्भव है कि उन्होंने ही मुझे ऐसा धोखा दिया है? नहीं नहीं, तुम्हें भ्रम हो गया है॥

इसी समय चार्लस कमरे में आकर बोला, "नहीं सुन्दरी! न इसमें कोई भूल ही हुई न कुछ भ्रम ही है॥

लूसिया०। आप किस अधिकार से तथा क्यों इस तरह मुझे पकड़ लाये हैं?

चार्लस०। (लूसिया के प्रश्न से घबड़ा कर) तुम यह प्रश्न अपनी उस सुन्दरता से करो जिसके कारण से मैं अपने को भी भूल गया हूं॥

लूसिया०। तुम्हारा यह अत्याचार मैं जन्म भर न भूलूंगी। तुम्हारी बातों से प्रसन्नता के बदले घृणा उत्पन्न होती है॥

चार्लस०। क्यों सुन्दरि! मुझपर इतना क्रोध किसलिये?

लूसिया०। मुझे यहां से जाने दो तो मैं तुम्हें क्षमा करदूं और तुम्हारा यह अत्याचार किसी को मालूम भी न हो॥

चार्लस०। मेरे आगे कोई दूसरी प्रार्थना करो। मैं तुम्हें सब कुछ दे सकता हूं पर यहां से चले जाने की आज्ञा नहीं दे सकता। मुझसे विवाह कर लो और कूरास की डचेस बन कर यहां से जाओ॥

लूसिया०। मैं आप का मतलब न समझ सकी॥

चार्लस०। (लूसिया के सामने घुटने टेक कर और उसका एक हाथ थाम कर) ऐ सुन्दरी! मैं तुम्हें प्यार करता हूं और तुम्हें अपने प्राणों से अधिक चाहता हूं॥

चार्लस के हाथ धरते ही लूसिया डर से घबड़ा उठी और

दे। दग पीछे हटकर मूर्छित सी होकर गिर पड़ी ॥

चार्लस उसके निकट जाकर धीरे से बोला, "लूसिय
क्या तुम मुझे नहीं चाहतीं? क्या मेरी जगह पर किसी दू
ने अपना अधिकार जमा लिया है? या मैं कुरूप हूं ॥

यह अन्तिम बात सुनते ही लूसिया कांप उठी। यह
उसके कोमल हृदय में जाकर घुस गई। इतने दिनों के बाद
समझी कि वालटन के साथ उसका कैसा सम्बन्ध है ॥

चार्लस०। ओह! अब मैं तुम्हारे मन का भाव समझ ग
तुम्हारा कोई और भी प्रेमी है। मेरी प्रीति का प्रतिद्वन्द्वी
एक मनुष्य है। यदि किसी तरह इसी समय वह यहां
जाय तो इसी तलवार की सहायता से उसे तुम्हारे पैरों
नीचे गिरा दूं और तुमसे विवाह करूं ॥

लूसिया०। (भय से चिल्ला कर) ड्यूक चार्लस!
बारबार मेरा अपमान क्यों करते हो?

चार्लस ने मुंह फेर लिया। वह बुढ़ी जिसे पहिले च
ने लूसिया को सदेश दिया था एकाएक सामने आकर
हो गई और बोली, "आप इतने घबड़ा क्यों रहे हैं?"

चार्लस०। अच्छा उर्सला! ठीक है, अब मैं कुछ न बोलूं
राजनैतिक बातें जितनी मैं नहीं समझता उतना ही प्रेम
तो हो, मैं अब जाता हूं, तुम इस सुन्दरी को किसी तरह
समझा बुझा कर मेरे साथ विवाह करने को प्रसन्न करो ॥

उर्सला०। मैं सब ठीक कर दूंगी। आप कल आकर
ठीक पावेंगे ॥

चार्लस०। तब तो कल ही इससे विवाह करूंगा ॥

चार्लस चला गया। उर्सला धीरे धीरे लूसिया के पास आ कर बैठ गई और बहुत तरह से चार्लस के रूप, गुण तथा धन की प्रशंसा करने लगी। लूसिया ने यह सब सुन कर भी अपना मुंह फेर लिया और चुप हो रही॥

लूसिया को चुप देख कर उर्सला ने समझा कि मेरी बातों का प्रभाव इस पर पड़ा है। वह लूसिया से बार बार भोजन करने के लिये आग्रह करने लगी पर लूसिया ने उसकी बात न मानी और भोजन न किया। उर्सला भी यह कह कर कि "अब आप सोयें, टेबल पर घंटी रक्खी हुई है, आवश्यकता होने पर उसे बजा कर आप मुझे बुला सकती हैं।" वहां से चली गई॥

लूसिया अब कुछ शान्त हुई, बिछौने पर लेट कर बार बार अपने हृदय से पूछने लगी कि "अब कौन सा उपाय करूं?"

पर उसके हृदय ने कोई उत्तर न दिया। चार्लस की इच्छा भी वह समझ गई थी और साथ ही यह भी समझ गई थी कि चार्लस की बात न मानने से वह बलपूर्वक उससे विवाह करेगा। पर उसकी स्त्री बनने के बदले वह मरना उत्तम समझती थी। इस समय बोलटन उसे याद आया। वह उसे हृदय से प्यार करती है, उसको छोड़ कर कभी ड्यूक के साथ विवाह करने की उसकी इच्छा नहीं है॥

दसवां परिच्छेद।

सुबह का सुहावना समय है, अभी सूर्यदेव अपने उद-याचल पर्वत पर से बाहर नहीं निकले हैं। ठंढी ठंढी हवा दुःखियों के दुःखित हृदय में लग कर अपूर्व आनन्द दे रही है॥

इसी समय वालटन अपने घर से घूमने के लिये बाहर निकला। वह धीरे धीरे टहल रहा है। अङ्गों पर सुन्दर और बहुमूल्य वस्त्र पहिने हुए है। कमर में बेरियन का दिया हुआ बिगुल और एक छोटी सी तलवार लटक रही है। धीरे २ उसे बीती हुई बातें याद आ रही हैं। वह बार बार लूसिया को याद करके दुःखित हो रहा है। इन्हीं सोच विचार में वह नगर के बाहर बहुत दूर निकल गया। यकायक सामने से आती हुई घोड़े के टाप की आवाज सुन कर वह एक वृक्ष की आड़ में जा छिपा, पर अकस्मात् वह सवार उसी तरफ से आ निकला जिधर वह छिपा हुआ था और उसे पहिचान कर खड़ा हो गया। वालटन ने देखा कि यह डाकूओं के सर्दार बेरियन का नौकर फलोरिलो है॥

फलोरिलो बोला, "आप हैं! आपको देख कर मुझे बड़ी प्रसन्नता हुई!!"

वालटन०। क्यों, मुझे देख कर प्रसन्न होने का कारण क्या है!!

फलोरिलो०। आप जैसे सदाशय हैं, वैसे ही साहसी भी हैं। मैं आप के रूप गुण का पक्षपाती हूं॥

वालटन०। पर तुमने जितना गुणवान मुझे समझ लिया

है मैं सुनता नहीं हूं॥

फ्लोरिलो०। मैं आपकी सब बातें सुन चुका हूं। मार मारने वाले शत्रु के लिये कौन ईश्वर से क्षमा भिक्षा मांगता है? आपकी सज्जनता और अच्छे विचार मुझसे छिपे नहीं हैं?

वाल्टन०। क्यों तुम्हारे मालिक क्या सज्जन नहीं हैं?

फ्लोरिलो०। हां, यही तो मुझे दुःख है, यही चिन्ता तो……………

फ्लोरिलो यकायक चुप हो गया। हृदय की व्याकुलता के कारण उसके मुंह से जो बात निकल गई थी उसके लिये वह लज्जित होने लगा। वाल्टन आश्चर्य से उसके मुंह की ओर देखने लगा॥

फ्लोरिलो०। अचानक मेरे मुंह से एक बात निकल गई। मैं बड़ा अभागा हूं। मेरे समान दुःखी इस संसार में दूसरा नहीं है॥

फ्लोरिलो की आंखों से आंसू गिरने लगे। वाल्टन ने पूछा "क्या तुम सचमुच दुःखी हो?"

फ्लोरिलो०। मैं बड़ा दुःखी हूं पर अपने कर्मों से ही दुःख पाता हूं। मेरे मालिक महाशय और अच्छी प्रकृति के हैं पर मैं……………

फ्लोरिलो फिर चुप हो गया॥

वाल्टन०। तुम जिस मण्डली में रहते हो मालूम होता है उन्हीं लोगों के बुरे कामों से दुःखित हो॥

फ्लोरिलो०। नहीं, मैं जो काम करता हूं उससे डाकुओं के काम बहुत अच्छे हैं। पर अब आज अधिक कुछ न कहूंगा।

कल संध्या को नौ बजे झरने के पास आना, वहीं मैं मिलूंगा। सम्भव है कि आपके कारण से किसी महात्मा का कोई उपकार हो जाये॥

फलोरिलो ने अपनी बातों के जवाब की राह न देखी और घोड़े को एड़ लगा कर वहां से भागा तथा बात की बात में वालटन की दृष्टि के बाहर हो गया॥

वालटन आगे बढ़ा और टीले पर चढ़ कर चारो ओर प्रकृति की शोभा देखने लगा। उसकी दृष्टि सुन्दर सुन्दर मकान तथा बड़ी बड़ी वाटिकाओं पर से घूमती हुई विसूवियस पर्वत पर जा पहुंची, जिसकी भयंकर छटा देखने वालों के हृदय में भय उत्पन्न करती थी॥

वालटन उस टीले पर से उतर कर ज्योंहीं एक बाग के पास पहुंचा त्योंहीं किसी ने एक खिड़की के किवाड़ खोले और एक स्त्री आकर उस खिड़की में खड़ी हो गई तथा इसे देखते ही अपना रूमाल हिला कर कुछ इशारा करने लगी॥

वालटन खड़ा होकर उसे देखने लगा और मन ही मन बोला, "एं : यह कौन है? शायद यह इशारा किसी दूसरे के लिये हो। पर फिर वही, हां हां, फिर उसने रूमाल हिलाया और अब दोनों हाथ फैला कर मानो मुझसे सहायता मांग रही है। परन्तु क्या यह सम्भव है या मेरा भ्रम है? एं : क्या यह वही सुन्दरी है जिसे मैं दो बार गिर्जाघर में देख चुका हूं और जिसका नाम मैं नहीं जानता?" "हां, यह वही है, अवश्य वही है" और यो कह कर वालटन ने अपनी टोपी उतार ली और उसके इशारे का जवाब देने लगा॥

यकायक उसके ध्यान में यह बात आई कि मालूम होता है, "यह स्त्री क़ैद है और रूमाल हिला कर मुझसे सहायता मांग रही है।" क्योंकि वे इशारे जो उसने वालटन को देख कर किये थे सभ्यता के बिल्कुल विरुद्ध थे और कोई भी स्त्री ऐसा इशारा उसके लिये नहीं कर सकती थी जिससे उसका यता सम्बन्ध न हो॥

उस स्त्री ने फिर वही इशारा किया और वही करुणा भरी दृष्टि से वालटन की तरफ़ देखा। अब वालटन ठहर न सका और किसी तरह उसके पास पहुंचने की राह सोचने लगा। वालटन ने देखा कि एक वृक्ष उस बाग के पास ही है जिसकी बड़ी बड़ी शाखायें बाग की दीवारों तक पहुंच गई हैं। वह तेज़ी से उस वृक्ष पर चढ़ गया और बाग की दीवार पर उतर कर भीतर कूद पड़ा तथा उस खिड़की के नीचे आ कर खड़ा हो गया जिसपर वह स्त्री खड़ी थी। अब उसने स्पष्ट देखा कि यह वही स्त्री है॥

लूसिया उसे देखकर बोली, "मुझे बचाओ, शीघ्र बचाओ।"

वालटन०। मैं किस राह से तुम्हारे पास आऊं? मैं अपनी जान तुम्हारे काम के लिये देने को तैयार हूं। बताओ, शीघ्र बताओ, राह किधर से है?

लूसिया०। (शोक से) मैं राह क्या बताऊं? सब दरवाज़ों में ताले बन्द हैं और खिड़कियां भी बहुत ऊंचे पर हैं॥

वालटन०। खैर कोई चिन्ता नहीं। मैं अभी सामने के दरवाज़े से होकर तुम्हारे पास आता हूं। या तो तुम्हें बचाऊंगा या तुम्हारे लिये अपना जीवन विसर्जन करूंगा॥

इतना कहकर वालटन ने अपनी तलवार निकाल ली और बड़ी शीघ्रता से सदर दरवाजे की तरफ झपटा। पर ज्योंहीं वह दरवाजे के पास पहुंचा त्योंहीं एक मनुष्य आकर उसके सामने खड़ा हो गया। वह डूरामका ड्यूक चार्लस था॥

चार्लस०। ऐं! क्या तुम वही शत्रु हो जिसने कल रात को मुझे नीचा दिखाया था? तुम यहां क्यों आये हो?

वालटन०। यहां एक स्त्री अपनी इच्छा के विरुद्ध लाकर रक्खी गई है। मैं कसम खा चुका हूं कि उसे अवश्य बचाऊंगा॥

चार्लस०। (तलवार निकाल कर) तब लो, तुम्हारा अन्तिम समय भी आ पहुंचा॥

यह कहकर चार्लस ने अपनी बड़ी और लम्बी तलवार से वालटन पर वार किया, पर वालटन ने बड़ी फुर्ती और चालाकी से उसके वार को बचाया। इसी तरह कई मिनिटों तक दोनों में लड़ाई होती रही यहां तक कि हटते हटते दोनों उस जगह पहुंच गये जिस जगह की ऊपर वाली खिड़की में लूसिया खड़ी थी। लूसिया वालटन की यह दशा देख चिल्ला उठी॥

वालटन०। डरो नहीं, डरो नहीं, मैं अभी तुम्हारे पास पहुंचता हूं॥

इस समय लूसिया का सुन्दर चेहरा देखते ही वालटन के शरीर में एक अपूर्व शक्ति आ गई और चार्लस क्रोध से ज्ञान-रहित हो गया। समय पाकर वालटन ने अपनी तलवार की उलटी धार से इस जोर से चार्लस के ललाट पर मारा कि वह सँभल न सका और मुर्छित होकर भूमि पर गिर पड़ा॥

वालटन उसे वहीं छोड़,तेजी से सीढ़ी की ओर बढ़ा, पर

तुरत ही एक दूसरा मनुष्य उसके सामने आकर खड़ा हो गया और बोला, "तुम कौन हो तथा किसे खोजते हो?"

वालटन०। (अपनी तलवार दिखाकर) चुप रहो, अपने प्रश्न का उत्तर यह देख लो॥

इतना कहकर बिना विचारे वालटन आगे बढ़ा और सीढ़ी पर से उस कमरे के पास पहुंचा जहां लूसिया क़ैद थी। पर यहां सीढ़ी पर चढ़ते ही उसे एक दरवाज़ा मिला जिसमें ताला बन्द था, परन्तु उसी जगह भाग्यवश उसे एक बड़ा हथौड़ा मिल गया जिसे उठा कर उसने ज़ोर से ताले पर मारा जिससे ताला चूर चूर हो गया। अब वह उस कमरे में पहुंचा जिसमें दर्वाज़ा खोली थी और जिसके बगल में वह कमरा था जिसमें लूसिया क़ैद थी। उसने वहां का भी ताला तोड़ दिया और दरवाज़ा खुलते ही लूसिया दौड़ कर उससे लिपट गई॥

प्रिय पाठक! आप लोग किसी और बात का विचार न करें। जिस प्रकार भाई बहिन आपस में एक दूसरे से बहुत दिनों के बाद मिलते और स्नेह से लिपट जाते हैं उसी प्रकार से इस समय लूसिया भी वालटन से लिपट गई थी। यदि इस समय वालटन ने लूसिया का अर्धचन्द्रमा ललाट चूम भी लिया तो क्या हुआ? इस काम से प्रिय पाठक पाठिकायें उसको दोषी न ठहरायें क्योंकि जब कभी उसका ध्यान प्रेम की ओर जाता था तब ही वह किसी अज्ञानक भय से कांप उठता था॥

लूसिया०। चलो, अब शीघ्र चलो, अब एक क्षण भी व्यर्थ न जाना चाहिये॥

इतना कहकर वह तेज़ी से वालटन का हाथ पर कर

सीढ़ी पर से नीचे उतरी, पर इसी समय उसे उसका दिखाई दी जो उसे इस तरह भागती देख चिल्ला उठी और स्वयं भी वहां से भागी। इतने ही में वह दूसरा मनुष्य भी तलवार लेकर आ पहुंचा जिसे बात की बात में वाल्टन ने नीचे गिरा दिया और उसकी गर्दन पर तलवार रख कर खड़ा हो गया। वह मनुष्य बड़ी नम्रता से क्षमा भिक्षा मांगने लगा। वाल्टन ने उसे छोड़ दिया और लड़की से लूसिया का हाथ पकड़ कर दरवाजे की तरफ बढ़ा और बिना किसी रुकावट के बाहर हो गया॥

पर ये लोग थोड़ी ही दूर आगे बढ़े होंगे कि यकायक उन्हें कई आदमियों के चिल्लाने की आवाज़ सुनाई दी जो तेजी से उन दोनों के पीछे दौड़े चले आते थे॥

लूसिया घबड़ा कर वाल्टन का सहारा लेकर खड़ी हो गई और घबराहट भरी हुई दृष्टि से पीछे की तरफ देखने लगी॥

वाल्टन ने भी पीछे फिर कर देखा और अपने पीछे चार्लस तथा उसके दो साथियों को आते देख घबड़ा उठा, साहस उसका पल्ला छोड़ने लगा और निराशा अपना अधिकार जमाने लगी। पर अचानक उसे वह बिगुल याद आया और उसने उस बिगुल को निकाल कर बड़े जोर से बजाया जिसकी आवाज़ जङ्गल, पहाड़ों तथा कन्दराओं में गूंज उठी। तुरत ही उसे घोड़ों के टापों की आवाज़ सुनाई दी मानो बहुत से सवार दौड़े चले आ रहे हैं॥

इधर चार्लस तेजी से आगे बढ़ा और पास पहुंच कर चाहता ही था कि वाल्टन को पकड़ कर बाँध ले जावें कि यकायक बारह सवार सशस्त्र से वहां आ पहुंचे। उस मण्डली

ने अपना घोड़ा इनको देना चाहा पर वालटन ने यह कहकर कि शहर में एक घोड़े पर दो मनुष्यों का सवार हो कर जाना उचित नहीं है, घोड़ा न लिया और वेरियन को धन्यवाद देकर, दोनों वहां से घर की ओर चले॥

दोनों युवक युवति आपस में अपरिचित हैं, कोई भी किसी का पता ठिकाना तथा नाम नहीं जानता। वालटन इस समय लूसिया से उसका परिचय पूछा ही चाहता था कि यकायक सैकड़ों मनुष्यों का चिल्कार उसे सुन पड़ा और आंखों के सामने एक भयंकर और लोमहर्षण दृश्य दिखाई दिया॥

ग्यारहवां परिच्छेद।

वालटन और लूसिया जिस स्थान पर खड़े थे वह एक गली का मोड़ था। उसके सामने वाली गली में बहुत से पुरुष स्त्रियां, बालक, बालिका शोर से चिल्लाते, गरजते, नाचते कूदते उनकी ओर चले आ रहे थे॥

हजारों मनुष्य एक साथ मिल कर पिशाचों की तरह नाचते थे। कोई अपना मुंह भयंकर बनाता था, किसीके मुंह पर भय विराज रहा था, कोई निराश और मलिन दृष्टि से चुपचाप देख रहा था, कोई अपनी आंखें घुमा रहा था, किसी के मुंह से फेन निकल रहा था और कोई दांत निकाल कर शोर से हँस रहा था। वे लोग दुःख के कारण बड़े वेग से दौड़ते और चिल्लाते थे। कोई बाघ की तरह शोर से गरजता था तो कोई

सियारों की तरह शब्द करता था। जङ्गली पशुओं की भांति एक दूसरे से लड़ते, नखों से नोचते, दांतों से काटते तथा घूंसों से मारते थे। कभी २ अपना मस्तक दूसरे के मस्तक पर इस ज़ोर से पटक देते थे कि दूसरा मनुष्य भूमि पर लोट जाता था॥

मालूम होता था कि पिशाचराज ने नर्क का द्वार खोल दिया है, नहीं तो यह नारकी दृश्य, दानवों का नाच और प्रेतों के स्वरूप वाले मनुष्य कहां से दिखाई देते?

वालटन और लूसिया घबड़ा कर चुपचाप खड़े एक दूसरे का मुंह देखने लगे। कुछ ही देर बाद वालटन ने अपने को संभाला और लूसिया का हाथ पकड़ कर जल्दी से वहां से भागा। इनको भागते देख पागल मनुष्यों की मण्डली भी इनकी ओर दौड़ी॥

क्या ही भयंकर दृश्य है! लूसिया ने भय से अपनी आंखें मूंद लीं, उसका ज्ञान लोप होने लगा। वालटन ने उसे पकड़ कर एक दीवाल के सहारे से खड़ा कर दिया॥

यह मण्डली भी कुछ देर के लिये खड़ी होगई, इसके बाद फिर वही पिशाचों की तरह नाचना और आपस में आक्रमण आरम्भ हुआ। जिनके पास शस्त्र थे वे निकाल कर दूसरों पर चलाने लगे, साथ ही अपना शरीर भी काट काट कर फेंकने लगे॥

जो स्त्रियां थक गई थीं वे भूमि पर गिरी हुई थीं। पागल मनुष्यों की मण्डली उनपर पैर रख कर कुचलती, रौंदती, लातों से मारती आगे बढ़ती चली जाती थी, इसी कारण से उन भूमि पर पड़ी हुई स्त्रियों की भवलीला भी शान्त हो जाती थी॥

डाक्टर चाट्री ने ठीक ही कहा था। देखो, देखो, ओह! कैसा भयंकर दृश्य है, कोई युवा दौड़ कर ऊंचे टीले पर चढ़ जाता है और वहां से नीचे कूद कर यहीं शान्त हो जाता है। इधर एक सुन्दरी अपनी देह आग मे जलती हुई समझ कर ज़ोर से चिल्ला उठी और इधर उधर छटपटाने लगी। छटपटाती छटपाती मर गई। और देखो कोई बड़े भारी साँप को पकड़ लाता है, साँप उसे काट लेता है, जिसके कारण से उसका देह काला हो जाता है, फिर वह उस साँप को दूर फेंक कर चिल्लाने लगता है, हँसता है और मर कर भूमि पर गिर पड़ता है। चारो ओर यही दृश्य दिखाई दे रहा है। हज़ारों नये नये मनुष्य आकर इस मण्डली में मिल रहे हैं॥

वालटन बोला, "सुन्दरी! डरो मत। साहस से आगे बढ़ो, चलो तुम्हें घर पहुंचा दूं॥"

लूसिया०। मैं क्या स्वप्न देख रही हूं? यह क्या है? क्या ही भयंकर दृश्य है! ईश्वर ही हमलोगों को बचावें॥

वालटन०। जब तक मेरे शरीर में शक्ति रहेगी तब तक तुम्हारा अनिष्ट न होने दूंगा॥

लूसिया०। आह! मैं आपके उपकार का क्या बदला दे सकती हूं! आपके उपकार को मैं जन्म भर नहीं भूल सकती॥

इसी समय वह मण्डली इनकी ओर दौड़ी। वालटन ने बहुत कुछ उद्योग किया कि लूसिया को बचा सकें, पर न बचा सका और वह मण्डली इनके पास आकर उत्पात मचाने लगी। पागलों ने धक्का देकर दोनों को अलग कर दिया, कोई किसी को देख न सका। वालटन ने लूसिया को बहुत पुकारा, ढूंढ़ा,

पर पता न लगा। दुःख से उसका हृदय कांप उठा। सुन्दरी कहां है? क्या पागलों की मण्डली में मिल कर वह स्वर्णलतिका अकाल ही में काल के कराल गाल में जा पड़ी?

हाय! हाय!! क्या भयंकर......ओह! सर्वनाश हो गया॥

यकायक वालटन की दृष्टि अपनी बांह पर पहुंची, उसने देखा कि कोट फट गया है और कमीज़ का कफ़ खुल गया है। वह व्याकुल हो गया। चारों ओर भय से देखने लगा। मन में विचारने लगा, "सम्भव है कि वह सुन्दरी घर पहुंच गई हो।" पर यह बात भी उसके हृदय में न जमी। वह वहां से ज़ोर से भागा और जितना शीघ्र हो सका घर लौट आया॥

बारहवां परिच्छेद।

इधर उन पागलों की मण्डली ने गिर्जाघर पर आक्रमण किया। गिर्जाघर का दरवाज़ा तोड़ने के लिये सब व्याकुल हो उठे। पास ही लकड़ी का एक बड़ा सा कुन्दा पड़ा हुआ था। कई मनुष्य उसे उठा ले आये और ज़ोर से दरवाज़े पर मारने लगे पर दरवाज़े की कुछ भी हानि न हुई। अपना यह उद्यम निष्फल देख कर आगे की मण्डली पीछे हटने लगी और पीछे से दूसरी मण्डली आकर दरवाज़ा तोड़ने के उद्योग में लगी। पागलों की भीड़ धीरे धीरे बढ़ने लगी॥

बार बार के आघात से गिर्जाघर के किवाड़ कुछ हिलने लगे। इतने ही में एक दूसरा दल हाथ में आग लिये आ पहुंचा

और गिर्जाघर के दरवाजे में आग लगा दी। कुछही देर में आग सुलग उठी, गिर्जाघर का दरवाजा जलने लगा, आग की लपट वहां खड़े हुए पागलों को झुलसाने लगी। तो भी यह मण्डली वहां से न हटी, बारबार किवाड़ों पर धक्का मारती रही। देखते २ किवाड़ जल उठे और दरवाजा ज़ोर से पीछे की तरफ गिरा साथही पागलों की मण्डली भी उस आग में प्रवेश करने लगी। कितने ही किवाड़ों के साथही भीतर धधकती हुई आग में जा गिरे। सब उसी आग को पैरों से कुचलते हुए गिर्जाघर में जा घुसे। किसी के कपड़ों में, किसी के बालों में आग लग गई, पर उस ओर किसी का ध्यान न था, एक को एक धक्का देते हुए बराबर गिर्जाघर में घुसते चले जाते थे। कितनोंही के हाथ पैर और मुंह आग में झुलस गये। कितनों ही के समूचे शरीर में आग लग गई। उसी आग से जली हुई लाशों को उठा कर एक दूसरे को मारने लगे॥

इसी समय गिर्जाघर में गाड़ने के लिये दो मुर्दे लाये गये। एक पन्द्रह सोलह वर्ष की युवति का और दूसरा एक युवा का था। पागल नरनारियों का झुण्ड उसी तरफ बढ़ा, उनकी विकट मूर्ति देखते ही मुर्दे को छोड़ कर उसके आत्मीय, सम्बन्धी तथा पादड़ी भाग गये। सामने लाश देख कर, जङ्गली जानवरों की भाँति पागलों का जी प्रसन्न हो गया। भूखे बाघ की भांति सब उन शवों पर जा टूटे और नख, दांत तथा हाथों से उनके टुकड़े टुकड़े कर डाले। श्मशान भूमि में पिशाचों की तरह उस नरमांस को खाकर सब बालक बालिका, वृद्ध युवा हँसने और नाचने लगे। इसके बाद फिर क्या हुआ? यह

लिखने की इस लेखनी में सामर्थ्य नहीं है ॥

* * * * *

इसी दिन दो पहर के समय फिलिपा के कमरे में रानी जोवाना, फिलिपा, रौबर्ट, बारटंड और करोलिना इत्यादि बैठ कर बातें कर रहे थे। सभों का चेहरा मलिन हो रहा था। भय से सभी कांप रहे थे। फिलिपा यथासाध्य अपने हृदय के दुःख को छिपाने का उद्योग कर रही थी। रौबर्ट हँस कर सभों को प्रसन्न करना चाहता था, परन्तु रानी जोवाना और करोलिना चुपचाप बैठी हुई थीं। उनके चेहरे से भय टपक रहा था। बारटंड हृदय से व्याकुल रहने पर भी बाहर से शान्त दिखाई देता था ॥

रौबर्ट बोला, "प्लेग कोई वस्तु नहीं है। चित्त में प्रफुल्लता और हृदय दृढ़ रहना चाहिये, फिर प्लेग कुछ नहीं कर सकता ॥"

जोवाना०। (कांप कर) रोग के साथ चालाकी नहीं चल सकती, इसके समान भयङ्कर रोग संसार में दूसरा नहीं है ॥

फिलिपा०। महारानी! आप धीरज धरें, मन प्रफुल्ल रखना ही इस समय उचित है ॥

करोलिना सब से अधिक डर रही थी, बारटंड बहुत कुछ उद्योग करने पर भी उसे समझा न सका और उसके हृदय का भय दूर न हुआ। वह बारबार उसके चित्त को प्रसन्न रखने का उद्योग करता था पर इसका फल कुछ भी न होता था तथा करोलिना भय से शिथिल होती चली जाती थी ॥

इसी समय डाक्टर आद्री कमरे में आ पहुंचा और प्रफुल्लता

दिखाने का उद्योग करने लगा। वह बोला, "प्लेग अधिक करके दरिद्र और नीच मनुष्यों पर ही आक्रमण करता है। इस समय आप लोग यथासाध्य प्रसन्न रहने का उद्योग करें और हँसी खुशी में दिन बितावें॥"

इतने ही में एक बुढ़िया उस कमरे में आ पहुंची और बोली, "हाय! अब क्या होगा" ऐसा भयङ्कर रोग कहां से आ पहुंचा? सब मनुष्य पागल हो गये हैं और दैत्यों की तरह चिल्लाते और नाचते हैं इत्यादि॥"

आर्द्री ने डपट कर उसे चुप रहने के लिये कहा। बुढ़िया वहां से भागी। करोलिना चिल्ला उठी और अपने दोनों हाथों से मुंह छिपा कर लेट गई और जीवाना घबड़ा कर कुर्सी से उठ खड़ी हुई। इसी समय एक दूसरी विपद् भी आ पहुंची। पागल मनुष्य सब चिल्लाते हुए राजमहल के सामने आकर खड़े हो गये और नाचने लगे। कमरे के सब मनुष्य खिड़की के पास जाकर खड़े हो गये॥

जीवाना उस भयङ्कर दृश्य को देख न सकी और खिड़की के पास से भाग आई। उसका मस्तक घूमने लगा। रौबर्ट सहारा देकर उसे समझाने लगा। धीरे धीरे सभी लौट आये पर करोलिना वहां से न हटी। वह एकटक दृष्टि से रोगियों की तरफ देखने लगी। आरटंड बहुत कुछ उद्योग करने पर भी उसे न हटा सका॥

करोलिना चिल्ला उठी और इधर उधर घूमने लगी। उसकी आंखें भी साथ ही घूमने लगीं और वह पागलों की भांति नाचने, कूदने तथा चिल्लाने लगी॥

लिखने की इस लेखनी में सामर्थ्य नहीं है ॥

*   *   *   *   *

इसी दिन दो पहर के समय फिलिपा के कमरे में रानी जीवाना, फिलिपा, रोबर्ट, बारटंड और करोलिना इत्यादि बैठ कर बातें कर रहे थे। सभों का चेहरा मलिन हो रहा था। भय से सभी कांप रहे थे। फिलिपा यथासाध्य अपने हृदय के दुःख को छिपाने का उद्योग कर रही थी। रोबर्ट हँस कर सभों को प्रसन्न करना चाहता था, परन्तु रानी जीवाना और करोलिना चुपचाप बैठी हुई थीं। उनके चेहरे से भय टपक रहा था। बारटंड हृदय से व्याकुल रहने पर भी बाहर से शान्त दिखाई देता था ॥

रोबर्ट बोला, "प्लेग कोई वस्तु नहीं है। चित्त में प्रफुल्लता और हृदय दृढ़ रहना चाहिये, फिर प्लेग कुछ नहीं कर सकता ॥"

जीवाना०। (कांप कर) रोग के साथ चालाकी नहीं चल सकती, इसके समान भयङ्कर रोग संसार में दूसरा नहीं है ॥

फिलिपा०। महारानी! आप धीरज धरें, मन प्रसन्न रखना ही इस समय उचित है ॥

करोलिना सब से अधिक डर रही थी, बारटंड बहुत कुछ उद्योग करने पर भी उसे समझा न सका और उसके हृदय का भय दूर न हुआ। वह बारबार उसके चित्त को प्रसन्न रखने का उद्योग करता था पर इसका फल कुछ भी न होता था तथा करोलिना भय से शिथिल होती चली जाती थी ॥

इसी समय डाक्टर आल्ट्री कमरे में आ पहुंचा और प्रफुल्लता

दिखाने का उद्योग करने लगा। वह बोला, "प्लेग अधिक करके दरिद्र और नीच मनुष्यों पर ही आक्रमण करता है। इस समय आप लोग यथासाध्य प्रसन्न रहने का उद्योग करें और हँसी खुशी में दिन बितावें॥"

इतने ही में एक बुढ़िया उस कमरे में आ पहुंची और बोली, "हाय! अब क्या होगा" ऐसा भयङ्कर रोग कहां से आ पहुंचा? सब मनुष्य पागल हो गये हैं और दैत्यों की तरह चिल्लाते और नाचते हैं इत्यादि॥"

डाक्टर ने डपट कर उसे चुप रहने के लिये कहा। बुढ़िया वहां से भागी। करोलिना चिल्ला उठी और अपने दोनो हाथों से मुंह छिपा कर लेट गई और लीवाना घबड़ा कर कुर्सी से उठ खड़ी हुई। इसी समय एक दूसरी विपद् भी आ पहुंची। पागल मनुष्य सब चिल्लाते हुए राजमहल के सामने आकर खड़े हो गये और नाचने लगे। कमरे के सब मनुष्य खिड़की के पास आकर खड़े हो गये॥

लीवाना उस भयङ्कर दृश्य को देख न सकी और खिड़की के पास से भाग आई। उसका मस्तक घूमने लगा। रौबर्ट सहारा देकर उसे समझाने लगा। धीरे धीरे सभी लौट आये पर करोलिना वहां से न हटी। वह एकटक दृष्टि से रोगियों की तरफ देखने लगी। मारटेंड बहुत कुछ उद्योग करने पर भी उसे न हटा सका॥

करोलिना चिल्ला उठी और इधर उधर घूमने लगी। उसकी आंखें भी साथ ही घूमने लगीं और वह पागलों की भांति नाचने, कूदने तथा चिल्लाने लगी॥

आट्री ने बहुत मन्द रोबर्ट को बाजा बजाने वालों को बुलाने के लिये कहा। वे सब आकर मधुर स्वर से बाजा बजाने लगे। संगीत की मधुर ध्वनि से बाहर का कोलाहल कम सुनाई पड़ने लगा तथा करोलिना का हृदय कुछ शान्त हुआ, उसका पागलपन धीरे धीरे कम होने लगा तथा चिल्लाना भी कम हुआ। अन्त में शान्त, क्लान्त, लुप्तचैतन्या करोलिना की देहलतिका यकायक भूमि पर गिर पड़ी॥

तेरहवा परिच्छेद।

सन्ध्या हो गई है। पागलों की मण्डली इस समय राजमहल के सामने से हट कर नगर के दूसरे भाग में उत्पात मचा रही है॥

राजमहल में करोलिना अपने कमरे में बेसुध पड़ी हुई है। आट्री ने कहा है कि कई घंटों के बाद जब इसकी नींद खुलेगी तब रोग का चिन्ह तक नहीं पाया जायगा। वारटंड अपनी प्रणयिनी के पास ही बैठा हुआ है॥

जोवाना रोबर्ट को लेकर अपने कमरे में चली गई है और वहां बैठ कर उससे बातें कर रही है। इसी प्रकार सभी अपने अपने कमरे में चले गये हैं अब उस कमरे में फिलिपा और आट्री दो ही मनुष्य बैठे भांति भांति के विचार कर रहे हैं॥

आट्री बोला, "फिलिपा! आज सुबह को अपने भेदिये

से सुना है कि आज से तीसरी रात को बेरियन अपनी मण्डली को भोजन करायेगा और साथ ही इनाम भी बाँटेगा। उस दिन सब डाकू उसके रहने के स्थान पर जमा होंगे। सेदिये ने उस मकान का एक नक्शा भी लाकर दिया है। उसी दिन हम डाकूदल को हम एकदम नष्ट करेंगे॥

फिलिपा०। तीन हजार सशस्त्र डाकुओं को मारने के लिये तुम्हें कम से कम छः हजार सिपाही तो भेजने पड़ेंगे? सुना है, कदाचित तुम्हीं कहते थे कि उसके दल के मनुष्य अपनी सेना में भी हैं। इसलिये उनको मार भगाना सहज काम नहीं है॥

आट्रो०। मैं सहज ही में केवल दो सौ सेना भेज कर उसकी मण्डली को ध्वंस कर दूंगा। उनका गुप्त स्थान ही उनका समाधिक्षेत्र (मरने की जगह) हो जायेगा। अपनी सेना में तथा और और स्थान पर उनके कौन कौन से भेदिये तथा साथी हैं इसकी भी सूची मेरे पास आ गई है। उन मनुष्यों को छांट कर दूसरी सेना के दो सौ मनुष्यों से ही उन डाकुओं का संहार हो जायेगा॥

फिलिपा०। क्या चार्लस और सरन्ता के पादड़ी भी उस समय वहां रहेंगे?

आट्रो०। अभी निश्चय नहीं है। चार्लस का खानसामा मेरे वश में है। उसकी सहायता से मैं जब चाहता हूं उसके मकान में चला जाता हूं। कल सन्ध्या को एकबार फिर चार्लस के मकान पर जाकर उसका पता लगाना होगा। एक बार अब्ड्रिया और डाकुओं का नाश हो जायेगा तो फिर किसी बात का भय न रहेगा॥

१

फिलिपा०। तब क्या अन्द्रिया को भी मार डालोगे?

आद्री०। निश्चय। अन्द्रिया को अवश्य मारना होगा और यही ठीक समय भी है, फिर ऐसा समय हाथ नहीं आ सकता।

फिलिपा०। कैसे? मैं तुम्हारा अभिप्राय समझ नहीं सकी।

आद्री०। इस प्लेग के समय सभी नगरनिवासी प्रजा भयभीत हैं, इस समय असंभव बातों पर भी लोगों का ध्यान न जायेगा। अन्द्रिया सेन्टजमों की भांति आप कूद कर अपना प्राण देगा॥

फिलिपा०। अब समझी, बात तो ठीक है, परन्तु ऐसा न होना चाहिये॥

आद्री०। जिस रात्रि को डाकुओं का दल नष्ट होगा, उसी रात को अन्द्रिया भी मारा जायेगा। हमलोग जिस तरह कह देंगे, सभी वैसा ही समझेंगे। यदि कोई विश्वास न भी करेगा तो मेरी ऐसी कुछ हानि नहीं है। जिस समय शत्रुओं का बनाया हुआ राजा और डाकुओं का दल नष्ट हो जायेगा, उस समय हमलोग अवसर पाकर चार्लस और तरन्तो के पादरी को भी दोषी ठहरा कर दण्ड दिला सकेंगे, पर जोवाना से तुम सलाह कर लो। यह भार तुम्हें देता हूं, उसको यह सब बातें समझा कर अपनी इच्छा पूरी करनी होगी॥

फिलिपा०। यह कठिन काम है। जोवाना का हृदय बड़ा कोमल और उदार है। दया..................

आद्री०। चलो चलो, ऐसा उदार हृदय रखने से काम न चलेगा, जिसने उसे सिंहासन पर बैठाया है वह उसे उतार भी सकता है। जोवाना क्या हमलोगों के हाथ की कठपुतली नहीं

है। उनके कलंक की बातें क्या मैं नहीं जानता? उसे तुम्हारे पुत्र रैायर्ट की उपपत्नी किस लिये होने दिया है? कौशल से यदि काम न चले तो भय दिखा कर उसे अपने वश में करो॥

फिलिपा०। अच्छा, तुम्हारी आज्ञा पालन की जायेगी॥

आट्री०। पर सावधान! करोलिना कल आरोग्य हो जायेगी और तुम्हारी सहायता करेगी। तुम उसे भी समझा देना। करोलिना के रोगी होने का सम्वाद मैं नगर में फैला दूंगा। उसके ऐसी सुन्दरी जब राजमहल में न बच सकी और रोगी हो गई तो हरपोक अन्द्रिया को यह रोग हो गया था, यह कौन विश्वास न करेगा॥

चौदहवां परिच्छेद।

सन्ध्या के समय वालटन फिर अपने घर से बाहर निकला। "वह अज्ञात सुन्दरी नित्य सन्ध्या को गिर्जाघर में आती है, सम्भव है कि आज भी आई हो।" यही विचार कर वह सीधा शान्ताचार गिर्जा की ओर चला। उससे मिलने के लिये वालटन घबड़ा उठा। किसी तरह वह गिर्जाघर में पहुंचा पर वहां न लुसिया ही उसे दिखाई दी न उसकी कोई सहेली ही। वह निराश होकर वहां से लौटा। इसी समय उसे याद आया कि फलोरिलो ने मुझे झरनेपर बुलाया है। वह जल्दी से उसी ओर चला और वहां पहुंच कर देखा तो फलोरिलो पहिले ही से आकर बैठा हुआ है। फलोरिलो इसे देखते ही

उठ खड़ा हुआ और हाथ पंर कर बोला, "आपकी राह मैं बहुत देर से देख रहा था॥"

वालटन०। ठीक है, देर हो गई, पर यह तो बताओ कि वह कौन सी बात है जिसके कहने के लिये तुम इतने व्यग्र हो रहे हो?

फलोरिलो०। यदि आप उस बात को समझते तो ऐसा कदापि न कहते। आप बैठ जायें और मेरी दो चार बातें सुन लें, मैं अब यहां अधिक नहीं ठहर सकता॥

वालटन०। (बैठ कर) कहो क्या कहते हो?

फलोरिलो०। मैं दो मनुष्यों की सेवा करता हूं। एक मनुष्य ने सज्जनता, सरलता और दयालुता से मुझे अपने वश में कर रक्खा है और दूसरे ने न जाने किस बल से मुझे वशीभूत कर रक्खा है कि मैं उसकी आज्ञा को टाल नहीं सकता॥

वालटन०। क्या अन्तिम मनुष्य बेरियन है जिसके जाल में तुम ऐसे फँस गये हो कि निकल नहीं सकते?

फलोरिलो०। नहीं, बेरियन सा सज्जन मनुष्य इस संसार में शायद ही कोई दूसरा हो, उसके ऐसा मालिक मुझे दूसरा नहीं मिल सकता॥

वालटन०। फिर वह दूसरा मनुष्य कौन है?

फलोरिलो०। आप क्षमा करें, उस दूसरे मनुष्य का मैं नाम नहीं ले सकता। उस दुष्ट ने मुझे अपने जाल में इस तरह फँसा रक्खा है कि मैं निकल नहीं सकता पर बेरियन ने अब से भी कभी मुझपर सन्देह नहीं किया है। अब आप समझ गए होंगे कि मैं एक घृणित कार्य करने वाला भेदिया हूं।

अच्छा, अब मेरी बातें आप सुनें। वह यह कि बेरियन बड़ी विपद् में गिरा चाहता है और आप ही उसे बचा सकते हैं, दूसरे की सामर्थ्य नहीं है॥

बालटन॰। ऐं! बेरियन पर विपद्!! बताओ, शीघ्र बताओ मुझे क्या करना होगा?

फलोरिलो॰। आप बेरियन का निवास स्थान तो देख ही चुके हैं, आज से तीसरी रात को वहां एक बड़ा समारोह होगा। राजमहल में आट्री को न जाने कहां से उस जगह का एक नक्शा मिल गया है और उसने विचार लिया है कि उसी दिन मैं सब को नाश करूंगा। आप किसी तरह बेरियन को यह सम्वाद भेज दें। पर मेरा नाम न बताइयेगा यदि आप ऐसा न कर सके तो निश्चय जानियेगा कि बेरियन अवश्य मारा जायेगा, उसके दल का एक मनुष्य भी जीता न बचेगा॥

बालटन॰। तुम निश्चिन्त रहो। बेरियन मेरा जीवनदाता है, मैं अवश्य उसकी रक्षा करूंगा। पर फलोरिलो! तुम क्या उद्योग करके अपना यह घृणित काम छोड़ नहीं सकते? तुम जानते हो, यह काम निन्दनीय है फिर इसे छोड़ते क्यों नहीं? मैं बन्धु की भांति और अपने प्यारे भाई की भांति, तुम्हें मानूंगा चलो मेरे साथ रहो और यह काम छोड़ दो॥

फलोरिलो कांप उठा। वह बोला, "आपके साथ! क्षमा करिये, मेरी ऐसी सामर्थ्य नहीं है, मैं अब चला, बेरियन विपद् में है यह आप न भूलें॥"

इतना कह कर फलोरिलो वहां से भागा। बालटन उसी जगह पर खड़ा हो कर भांति भांति की चिन्ता करने लगा

और इस सोच में लगा कि बेरियन से किस तरह भेंट हो सकती है ॥

यकायक उसे बिगुल याद आया, बिगुल याद आते ही वह निश्चिन्त हो कर घर फिर आया और भोजन इत्यादि करके सो रहा। दूसरे दिन सुबह को फिर घूमने के लिये निकला और एक पहाड़ी स्थान पर पहुंच कर उसने ज़ोर से बिगुल बजाया। बिगुल का शब्द एकबार चारों तरफ गूंज उठा। तुरत ही उसे घोड़ों की टापों का शब्द सुनाई दिया और आन की आन में तीन सवार उस स्थान पर आ पहुंचे जहां क्राम्पटन खड़ा था ॥

ये तीनों सवार जेनिसो, गैस्पर और आटस थे। ये बोले "कहिये, क्या आज्ञा है?"

क्राम्पटन०। मुझे शीघ्र एकबार बेरियन के पास पहुंचाओ बड़ा ही आवश्यक कार्य है ॥

जेनिसो ने कुछ दूर पर के एक वृक्ष को दिखा कर कहा, "आप उस वृक्ष के नीचे जायें, कप्तान के दर्शन वहीं मिलेंगे।"

इतना कह कर तीनों सवार वहां से चले गये। क्राम्पटन ने उस बताये हुए वृक्ष के पास पहुंच कर देखा तो बेरियन को घोड़े से उतरते पाया ॥

बेरियन०। (क्राम्पटन का हाथ पकड़ कर) कहो, मुझसे मिलने की कैसे की आवश्यकता तुम्हें आ गई ॥

क्राम्पटन०। केवल इतना ही कि किसी आनेवाली विपद से तुम्हें सावधान कर दूं परन्तु यह नहीं बता सकता कि उस विपद का ज्ञान मुझे किसने बताया ॥

डेरियनः। मैं न पूछूंगा। तुम्हें जो कुछ कहना हो कह जाओ, इस उपकारके लिये मैं तुम्हें हृदयसे धन्यवाद देता हूं॥

बालटनः। कल तुमने कुछ नेवते का सामान किया है? तुम्हारे शत्रु............

डेरियनः। क्या राज की सेना?

बालटनः। हां, वही उस समय तुम्हारा अनिष्ट किया चाहती है॥

डेरियनः। अच्छे समय पर तुमने यह सम्वाद दिया। अवश्य मेरे दल में कोई शत्रुओं का भेदिया है, अच्छा मैं पता लगा लूंगा, कोई चिन्ता नहीं। अब इसी दिन तुम भी सुन लोगे कि डेरियन ने किस तरह राज सेना को मार भगाया॥

बालटनः। पर मित्र! अधिक रक्त न बहाना, यही मेरी प्रार्थना है॥

डेरियन "ऐसा ही होगा।" कह कर वहां से चला गया और बालटन भी घर लौट आया॥

पन्द्रहवां परिच्छेद।

नेपल्स से सात मील उत्तर पूर्व के कोने पर सेन्ट पिटर नाम का एक पुराना मठ है। मठ के महन्त इत्यादि मर गये हैं और मठ की भी दशा खराब हो रही है॥

इस मठ के बारे में नाना प्रकार की बातें सुनने में आती हैं। इस समय से अर्धशताब्दि पहिले इस नामक कोई मनुष्य सन्यासी होकर इस मठ में रहता था। सुना जाता है कि यह मनुष्य अपने से बड़ी अवस्था की किसी स्त्री को प्यार करता था और उसके प्रेमजाल में फँसा हुआ था। यह स्त्री विधवा थी और इस को बहुत प्यार करती थी। इस सदा अकेला अपने कमरे में बैठा रहता था और कभी किसी से बातचीत या सम्बन्ध नहीं रखता था। कुछ दिनों के बाद नये आये हुए एक सन्यासी से उसकी प्रीति हो गई इस नये सन्यासी का नाम मांसिस्को था। अब इन दोनों में इतनी प्रीति होगई कि दोनों सदा एक साथ रहने लगे। दोनों का खाना पीना, हँसना बोलना, पढ़ना और उपासना भी साथ ही होने, लगी। इस का इस प्रकार से स्वभाव का बदलना देखकर मठ के दूसरे दूसरे मनुष्य प्रसन्न हो गये। एक दिन मठ में एक विचित्र काण्ड हुआ जिससे मठ वाले भयभीत और चकित हो गये। इस के सोने के कमरे से किसी तुरत के जनमे हुए लड़के के रोने का शब्द सुनाई दिया। इस के कमरे के बगल में जो सन्यासी रहता था वह बाहर आकर इस विषय की खोज में लगा और इस के कमरे के किवाड़ों में कान लगा कर सुनने से उसे मालूम हुआ कि इसी कमरे में से किसी

लड़के के रोने का शब्द सुनाई दे रहा है, पर फिर तुरत ही यह शब्द बन्द होगया। भय से इस सन्यासी का सर्व्वांग काँप उठा। कुछही देर बाद हन अपने कपड़ों में कोई वस्तु छिपा कर बाहर निकला और बगीचे में जा कर गाड़ आया। वह सन्यासी भी उसके पीछे पीछे आकर यह सब देख आया और मठ के महन्थ से सब हाल कह सुनाया। महन्थ क्रोध से उठा और उसने बगीचे में आकर वह जगह खोदी वहां एक लड़का उसे मिट्टी के नीचे छिपाया हुआ दिखाई दिया। महन्थ ने दूसरे दूसरे सन्यासियों को भी यह हाल बताया। वे सब एक साथ मिलकर हन के कमरे की ओर चले। इधर हन भी सब हाल जानकर समझ गया कि अब कठिन हो गया। इस महापाप का कठोर दंड क्या है यह भी वह जानता था। उसने जल्दी जल्दी अपनी प्रणयिनी से सब हाल कहा और उसे अपनी गोद में उठाकर मठ की छत की तरफ भागा। दूसरे दूसरे सन्यासी भी उसे पकड़ने के लिये उनके पीछे दौड़े पर उसे पकड़ न सके। हन अपनी उपपत्नी को गोद में लिये भागता ही चला गया और मठ की छत पर से नीचे कूद पड़ा। दूसरे दिन सुबह को महन्थ ने देखा कि उन दोनो का शरीर चूर चूर होकर भूमि पर पड़ा हुआ है॥

इसके बाद ही एक दूसरी बात सुनाई देने लगी। सब कहने लगे कि वह दोनो नर नारी भूत होकर रात को मठ में उपद्रव मचाया करते हैं। इसी कारण से सब मनुष्य उस मठ को छोड़ कर चले गये और मठ जनशून्य हो गया॥

धीरे धीरे मठ की अवस्था खराब होती गई और वह कई

जगह से टूट गया मगर भूत के भय के कारण से कोई भी उस की दशा सुधारने के लिये वहां न गया॥

इस अर्थ की बात है कि कई डाकू पुलिस के भय से भाग कर इसी मठ में आकर रहने लगे थे। डाकुओं के हृदय में भूतप्रेत का कुछ भी भय नहीं था पर पुलिस उस भय से वहां नहीं जा सकती थी। इसी कारण से डाकू लोग निश्चिन्त होकर वहां रहते और आनन्द करते थे। बेरियल ने उसी जगह को अपना निवास स्थान बनाया था। वहां बेरियल को एक सुरंग भी दिखाई दी थी, जिसके भीतर जाकर उसने देखा तो लगभग चौथाई मील की जगह दिखाई दी। दूसरे ही दिन वह सुरंग मिट्टी निकाल कर साफ कर दी गई, उसके भीतर कई मकान भी उसे दिखाई दिये जिनमें हजारों मनुष्य रह सकते थे तथा उसी सुरंग के भीतर से बाहर निकल जाने की एक दूसरी राह भी उसे दिखाई दी। उसी स्थान पर बेरियल ने अपना अधिकार जमाया और निश्चिन्तता पूर्वक वहां रहने लगा। उसने पिछले दर्वाजे में लोहे के किवाड़ लगा कर उसे और भी दृढ़ कर दिया॥

धीरे धीरे बेरियल की मण्डली बढ़ने लगी। लोग दल बांध कर इधर उधर घूमने लगे। शहर के चारो तरफ ग्यारह मील तक उसकी मण्डली भेष बदल कर घूमने लगी। दरिद्रों की झोपड़ी, पुलिस, राजदर्बार, राजसेना, यहां तक कि राजमहल में भी बेरियल के विश्वासी लोग जा लगे॥

सोलहवां परिच्छेद।

आज ही की रात को डाकुओं का सर्वनाश करना आही ने विचारा था और आज ही अन्द्रिया का प्राण लेने का विचार भी था। ओह ! देखते देखते दिन बीत गया और वह भयंकर रात आ पहुंची॥

नौ बजने के कुछ ही देर बाद दो सौ सवारों को साथ ले रौबर्ट नेप्लस के दुर्ग से बाहर निकला। सैनिकों का कलेजा सेन्ट-पिटर के मठ की ओर जाने का विचार सुनते ही कांप उठा। वे पीछे हटने लगे पर इनाम की लालच से और उसका कुछ अंश पहिले इसी समय मिल जाने से उनको जाना ही पड़ा॥

आकाश में चन्द्रदेव विराज रहे थे। नगर के बाहर निकलते ही जिस समय पर्वत श्रेणी सैनिकों को दिखाई दी, वे कांप उठे। मठ के बारे में जो जो सम्वाद उन्हों ने सुने थे उनकी मूर्ति एक बार उनकी आखों के सामने घूम गई, पर लाचारी से आगे बढ़ना ही पड़ा॥

मठ के पास पहुंचकर रौबर्ट की आज्ञानुसार सब घोड़ों से उतर पड़े और वृक्ष से घोड़ों की बागडोर बांध तथा दो चार मनुष्यों को उनकी रक्षा के लिये छोड़,सब उस मठ की ओर चले। रौबर्ट ने अपनी सेना को दो भागों में बांट दिया। एक भाग पिछले दर्वाजे की ओर भेज दिया और दूसरा अपने साथ लेकर मठ में घुसा। मठ के आंगन में पहुंचते ही उसे सुरङ्ग का द्वार भी दिखाई दिया॥

जिस जगह वह अपने सैनिकों के साथ खड़ा था उस

जगह के सब बन्द दर्वाजे अचानक खुल गये और बायें ह मशाल तथा दाहिने में नङ्गी तलवार लिये हजारों डाकु भीतर से निकल कर रैबर्ट तथा उसकी सेना को चारों से घेर लिया॥

डाकुओं को इस तरह प्रगट होते देख राजसेना उठी, सब भागने का विचार करने लगे, पर डाकुओं ने रोक ली थी, इस कारण वे भाग भी न सके॥

सभी द्वार तथा खिड़कियों पर हाथ में नङ्गी तलवार डाकू खड़े थे। कहीं से भी भागने की राह न थी। बार२ उनको उत्साह दिलाता था, पर उन लोगों क किसी तरह नहीं जाता था॥

बेरियन ज़ोर से बोला, "अपने अपने शस्त्र डाल दो, नहीं तो सभों का प्राण ले लूंगा॥"

इतना सुनते ही रैबर्ट के सब सिपाहियों ने अपने शस्त्र रख दिये। रैबर्ट मारे क्रोध के कांप उठा। वह बोला, "डरपोक! विश्वासघातक! तुम लोगों ने मेरा डुबो दिया। बेरियन! मैं आत्मसमर्पण न करूंगा॥"

इतना सुनते ही तीन डाकू हाथ में तलवार लेकर की ओर झपटे। बेरियन बोला, "अस्त्र ले लो, पर साव "रैबर्ट का बाल बांका न हो॥"

रैबर्ट ने बहुत कुछ उद्योग किये पर सब वृथा। तुरत ही उसके शस्त्र छीन लिये गये और वह कैद कर लिया गया। उसी समय भ्राटक वहां आया और बोला, "सब शत्रु पराल .ि गये॥"

वेरियम०। क्या सब कैद कर लिये गये?

स्काटक०। हां, बिना मार काट के ही सबों ने आत्म-समर्पण किया। उनके शस्त्र छीन लिये गये। जो घोड़ों की रक्षा करते थे वे भी कैद कर लिये गये॥

रौबर्ट भी समझ गया कि उसकी आधी सेना जो दूसरे द्वार पर भेजी गई थी वह भी कैद कर ली गई॥

वेरियम०। अच्छा, सब लोगों को छोड़ दो जिसमें अपना काला मुंह लेकर नेटलस चले जायँ। गैब्बर! तुम इन मनुष्यों को भी मठ के बाहर कर दो। (रौबर्ट से) रौबर्ट! मेरे साथ आओ॥

वेरियम अपने कमरे में चला गया। कई डाकू रौबर्ट को पकड़ कर उसी कमरे में ले गये। रौबर्ट एक कुर्सी पर बैठाया गया। कुछ देर तक सब चुप रहे। रौबर्ट कैदी होने पर भी पहिले बोलना अपमानजनक समझता था। वेरियम भी न जाने क्यों कुछ विचलित सा दिखाई देने लगा और बहुत देर तक रौबर्ट को सिर से पैर तक देखता रहा, फिर बोला, "बन्दी! क्या तुम्हें कुछ भय नहीं मालूम होता?"

रौबर्ट०। वीर लोग भय क्या पदार्थ है? यह नहीं जानते। यदि मेरे ही समान मेरी सेना साहसी होती तो फिर मैं तमाशा दिखाता॥

वेरियम०। इस मुट्ठी भर सेना से तुम हमलोगों का क्या बिगाड़ लेते?

रौबर्ट०। कुछ नहीं बिगाड़ने पर भी वीरों की भांति तलवार हाथ में लेकर मरता। इस तरह अपमान और कलंक

तो नहीं लगता॥

बेरियन०। युवक! तुम निःसन्देह साहसी हो, पर.......

रैाबर्ट०। मेरी तलवार मुझे दे दो फिर देखो कि मुझमें कितना साहस है। मैं तुमसे अभी भी लड़ने को तैयार हूं॥

बेरियन०। चुप रहो! किसके साथ लड़ना चाहते हो यह अब भी नहीं समझे?

रैाबर्ट०। अच्छी तरह समझ गया। सुनो, फांसी पर प्राण देने की अपेक्षा तुम्हारे ऐसे मीचात्मा, राजद्रोही डाकू का मेरे ऐसे वीर के हाथ से मरना उत्तम है॥

बेरियन०। (क्रोध से) चुप रह निर्बोध बालक! मछुए के लड़के के मुंह से इतने गैारव और सम्मान की बातें शोभा नहीं पातीं। तुम क्या यह भूल गये कि तुम लूपो नामक मछुए के लड़के हो॥

रैाबर्ट क्रोध से उठ खड़ा हुआ और घूंसा तान कर बोला, "खबर्दार! डाकू! अभी मारे घूंसों के तुम्हारा......"

बेरियन०। (शान्त भाव से) ठीक है, मैं सचमुच डाकू हूं, परन्तु तुम्हारा अभी तक कोई अनिष्ट नहीं किया। तुम्हें मेरी कृतज्ञता स्वीकार करनी चाहिये॥

रैाबर्ट०। क्यों? किस लिये?

बेरियन०। तुम्हारे सिपाहियों को बिना हानि पहुंचाये घर जाने देने के लिये। क्या तुम नहीं जानते कि मैं इच्छा करने पर तुम्हें फांसी दे सकता हूं?

रैाबर्ट०। एक डाकू की यह उदारता निःसन्देह प्रशंसनीय है, पर यदि मेरा प्राण लिया चाहो तो फांसी के बदले तलवार

है ? तुम्हारे पिता के ऊपर जो झूठा कलंक लगा था क्या तुमने उस कलङ्क लगाने वाले से कभी बदला लेने का विचार किया है?

रौबर्ट कुछ व्याकुल होकर बोला, "मेरी मां के बारे में तुम्हारा कहना सत्य है परन्तु पिता के सम्बन्ध में मुझे दोषी नहीं ठहरा सकते, वे मर गये या जीते हैं मैं नहीं जानता।"

बेरियम०। यदि वह मर गये तो उनके नाम में और उनकी कीर्ति में धब्बा क्यों लगा रहे ? तुम अपनी मां से पूछना कि यह बात कहां तक सत्य है कि लूपो ने डाकूर टेरन्सो को मारा है? क्या तुम जानते हो कि उन डाकूर टेरेन्सो का सब धन किसने लिया? क्या तुमने इन बातों पर कभी विचार किया है?

रौबर्ट०। तुम क्या मेरे पिता को पहिचानते हो?

बेरियम०। न्याय और धर्म की मर्यादा रखने के लिये यदि किसी को कोई न पहिचाने तो भी हानि नहीं है। अब मैं तुमसे यही कहा चाहता हूं कि तुम्हारे हृदय में जितने अनेक गुण वर्तमान हैं, उन सभों को अच्छी राह पर ले जाओ। कुमाता का कुदृष्टान्त और राज सभा के विलास क्षेत्र में अपना जीवन और मनुष्यत्व न डुबाओ। अपने मनुष्यत्व की रक्षा करना मनुष्य का कर्तव्य है। पिता के लिये पुत्र का कर्तव्य और वीरों का कर्तव्य पालन करो। अब तुम जाओ, मेरी कही हुई बातों को विचारना, मैं तुम्हारा शत्रु नहीं हूं। यदि कभी सहायता की आवश्यकता पड़े तो डाकुओं के सर्दार बेरियम को याद करना, अवश्य सहायता मिलेगी।

रौबर्ट और भी व्याकुल हो गया। डाकू की बातें उसके

हृदय में चुभ गई। वह बोला, "मैं तुम्हारी सज्जनता पर मोहित हो गया हूं॥"

बेरियन ने अपने नौकरों को पुकार कर कहा, "सर रौयर्ट को घोड़ा और शस्त्र दे कर विदा कर दो॥"

बेरियन उत्तर की राह न देख कर वहां से चला गया। रौयर्ट जिस समय नेप्लस पहुंचा उस समय रात के दो बज चुके थे और राजमहल में एक लोमहर्षण व्यापार हो रहा था॥

सत्रहवां परिच्छेद।

जब रौयर्ट सेना साथ लेकर डाकुओं की ओर गया तब फिलिपा अपने कमरे में से निकल कर धीरे धीरे जोवाना के कमरे की ओर चली॥

जोवाना इस समय चुपचाप अपने कमरे में अकेली बैठी हुई थी, वह बैठी बैठी अपनी, रौयर्ट की तथा अपने राज्य की दशा याद कर करके व्याकुल हो रही थी। जब कभी उसका ध्यान डाकुओं की ओर जाता तो वह व्याकुल हो जाती थी और ईश्वर से प्रार्थना करती थी कि मेरा प्यारा रौयर्ट कुशल-पूर्वक लौट आवे॥

यकायक कमरे का दरवाजा खुला और फिलिपा आती हुई उसे दिखाई दी। वह बोली, "कौउन्टेस! आज मेरा हृदय न जाने क्यों व्याकुल हो रहा है। तुम्हारा लड़का———"

फिलिपा०। (बाधा देकर) उसके लिये आप कोई चिन्ता

न करें। वह कुशल पूर्वक लौट आयेगा। उसके बल और वीरता के आगे डाकू क्षण भर भी ठहर न सकेंगे॥

जीवाना०। तुमसे अब क्या छिपाऊं? मैं सत्य कहती हूं कि तुम्हारे लड़के को मैं अपने प्राणों से बढ़ कर मानती हूं॥

फिलिपा०। उसी प्रकार से वह भी आपको प्यार करता है। मैं फिर कहती हूं कि आप निश्चिन्त रहें। वह कुछ ही देर में विजय करके आ पहुंचेगा पर रानी! क्या कोई दूसरी चिन्ता इस समय आपको नहीं है?

जीवाना०। ओह! कल की बातें? निश्चय यह बड़ा भयंकर विषय है॥

फिलिपा०। आपका अयोग्य स्वामी अन्द्रिया, बड़ा ही कुटिल है। वह आपको कुछ भी प्यार नहीं करता। जिसके साथ नाम मात्र के लिये विवाह हुआ, जिसके साथ और किसी प्रकार का सम्पर्क अभी तक नहीं है, वह हमलोगों पर इतना अत्याचार करे और आप कुछ भी न विचारें यह न होना चाहिये॥

जीवाना०। तुम्हारा कहना सच है, वह मुझे कुछ भी नहीं मानता, केवल राज्य की अभिलाषा से उसने मेरे साथ विवाह किया है। उसे मैं हृदय से घृणा करती हूं॥

प्रिय पाठकों को कदाचित स्मरण होगा कि एक दिन अन्द्रिया फिलिपा के कमरे में जाकर जीवाना और रोबर्ट को एक साथ देख बहुत क्रुद्ध चिल्लाया था पर जाते समय उसके कान में एक बात कह कर उसे भगा दिया था। आज फिलिपा ने वही विषय जीवाना को समझाया और कहा कि

अन्ड्रिया पुरुषत्व हीन है, उसने केवल राज्य की इच्छा से ही आपके साथ विवाह किया था पर जब वह आपसे पूरी शत्रुता करने पर उतारू हो गया है और आपको कुछ भी नहीं चाहता। आज आन्ड्री के मुंह से यह सब हाल सुना है। ऐसे कुटिल और दुराचारी मनुष्य को आपके सुख और स्वतंत्रता के लिये हटाना ही उचित और आवश्यक दिखाई देता है॥

जोवाना की प्रकृति दयालु है, इतना कठोर कार्य करने की उसकी इच्छा नहीं है। वह फिलिपा की बातें सुनकर किसी तरह उसको बचाने की चेष्टा करने लगी। पर फिलिपा भी अपने संकल्प में दृढ़ थी। जब उसने देखा कि अब कौशल से काम नहीं चलता तब बोली, "यदि आप इस काम में सम्मत नहीं हैं, तब रौबर्ट भी अब आपके पास नहीं आयेगा। उसका विरह सहने के लिये आप तैयार हो जायें॥"

जोवानाः। (कुछ क्रोध से) क्या कहा? क्या रौबर्ट को छोड़ना पड़ेगा? तुम क्या मुझे डराती हो? उसे क्या अब राजमहल में आने न दोगी?

फिलिपाः। आप क्षमा करें, यह काम मेरी शक्ति के बाहर है। मैं इस कारण से इतनी बातें कह गई कि पोप की सेना अन्ड्रिया को राजसिंहासन पर बैठाने के लिये आया ही चाहती है और अन्ड्रिया सिंहासन पर बैठते ही रौबर्ट को, मुझे, आन्ड्री को, काउन्ट आरटंह को तथा करोलिना को अवश्य मार डालेगा। आपके सब प्यारे बन्धु बान्धवों को मार कर वह राज सिंहासन पर बैठेगा॥

जोवाना क्रोध से गरज कर बोली, "क्या कहती हो?

क्या उस दुराचारी ने यहां तक विचारा है ? मैं उसको क्षमा करती और बचा लेती पर अब नहीं। मेरे हितैषी लोगों को और प्यारे बन्धु बान्धवों को मार कर मुझे संसार में अकेली रक्खा चाहता है। ओह! अब नहीं सह सकती। वह अब निश्चय मरेगा। रानी और रमणी की प्रतिहिंसा से कभी बच न सकेगा॥

फिलिपा०। ठीक है, ऐसा ही होना चाहिये। अब मैं शान्त हुई। जब से यह सब हाल सुना है तब से मेरा तो जी घबड़ा रहा है। अच्छा, पादड़ी को कह आऊं॥

सीयामा०। एक बात और सुनो। मेरे इसी कमरे में यह काम होगा। मैं उसे यहां आने के लिये चीठी लिखूंगी और तुम लोगों का भी आज यहां निमन्त्रण है॥

फिलिपा "बहुत अच्छा।" कह कर वहां से चली गई॥
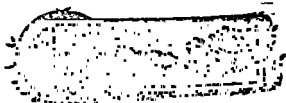
अठारहवां परिच्छेद।

अपनी उस स्त्री का जो आज तक कभी हँस कर उनसे न बोली थी निमन्त्रण पत्र पाकर अन्द्रिया कुछ विस्मित हुआ। उन दोनों में जैसा व्यवहार रहता था वह निःसन्देह निन्दनीय था। उसी निन्दनीय काम को त्यागने के लिये आज का नेवता है। रानी जीवाना के पत्र से ऐसा ही भाव झलक रहा है। अन्द्रिया यह विचार कर कि उसकी बातें अभी तक छिपी हैं मन ही मन हँसा॥

इस समय रात के दस बजने का समय है। अपने कमरे में जीवाना बैठी हुई है तथा उसके साथी और सहायक आद्री, फिलिपा, बारटंट, करोलिना इत्यादि भी बैठे हुए हैं। इसी समय अन्द्रिया उस कमरे में आ पहुंचा। उसको देखते ही जीवाना उठ खड़ी हुई और अपना दाहिना हाथ आगे करके बोली, "अहा! आ गये! आज तुम्हारे ही लिये यह सामान हुआ है। आओ, आज हमलोग अपने अपने हृदय की मलिनता दूर करके एक दूसरे के अपराध को क्षमा करें॥"

अन्द्रिया जीवाना के हाथ को चूम कर बोला, "यही मेरी भी इच्छा है॥"

इसके बाद और सब पुरुष स्त्रियों के साथ बैठ कर वह बातें करने लगा तथा जीवाना एक आराम कुर्सी पर बैठ कर कुछ रेशम तथा जरी मिला कर रस्सी बटने लगी। यह देख कर अन्द्रिया आश्चर्य से तथा हँस कर बोला, "यह क्या रानी! यह क्या करती हो? क्या खिड़कियों में पर्दा लटकाने के लिये

रस्सी बटने वाला तुम्हें कोई दूसरा नहीं मिलता !!"

जीयाना० । (हँस कर) पर्दा लटकाने के लिये यह रस्सी
नहीं बटी जाती ॥

अन्द्रिया० । फिर क्या होगी ?

जीयाना० । तुम्हें लटकाऊँगी ॥

अन्द्रिया० । (ऊपरी प्रसन्नता दिखाने के लिये हँस कर
यद्यपि वह भीतर ही भीतर कांप उठा था) तुम ऐसा न कहो,
यह बात तुम्हारे मुंह से शोभा नहीं पाती । हां, करोलिना
यदि ऐसा कहती तो ठीक था ॥

करोलिना० । तब क्या हँस कर बात उड़ा देते ?

अन्द्रिया० । बात उड़ाता नहीं तब भी इस काम को
भोजन हो जाने तक रोक रखने की प्रार्थना करता ॥

करोलिना० । हां, यह हो सकता है ॥

जीयाना० । ऐसा ही होगा, भोजन के बाद ही यह काम
होगा, अपराधी तब तक निश्चिन्त रह सकता है ॥

अन्द्रिया तथा जीयाना का परिहास सुन कर सब हँस
पड़े । पर ओह ! इस हँसी में कैसा विष भरा है यह अन्द्रिया
न समझ सका ॥

सब भोजन करने के लिये बैठे । भांति भांति की बातें
होने लगीं । भोजन के बाद अब मदिरा (शराब) की बारी
आई । गिलास भर भर कर सब मदिरा पीने लगे । मदिरा के
महात्म्य से सब का हृदय प्रफुल्लित हो गया । यकायक जीयाना
बोली, "क्या मिष्टान्नों का सामना देख कर तुम्हें कुछ भी
नहीं सूझा ?"

अन्द्रिया०। खिड़की से यह भयानक काण्ड देख कर मेरा तो हृदय कांप गया था पर ईश्वर की कृपा से अब उस रोग का जोर कम होता जाता है॥

करोलिना०। उसने एक बार राजमहल में भी पैर रक्खे थे और फिर भी आ सकता है पर आप न डरें, आप पर आक्रमण न करेगा॥

अन्द्रिया०। क्यों ?

करोलिना०। क्योंकि आपको फांसी दी जायेगी॥

करोलिना जोर से हंसने लगी। अन्द्रिया बोला "फिर वही बात ? अब तो चुप रहो॥"

करोलिना०। क्यों, आप क्यों डरते हैं ? हमलोगों को तो प्रसन्नता होती है॥

जीवाना०। हमलोग सचमुच बहुतही प्रसन्न होते हैं, मेरी मण्डली में मिलने से फिर हमलोगों की प्रसन्नता में तुम्हें बाधा न देनी पड़ेगी॥

अन्द्रिया०। क्यों रानी! क्या मेरी यह इच्छा नहीं रहती ?

जीवाना०। प्राणपति! आज हमलोगों के लिये बड़े आनन्द का दिवस है! आज हमलोग सब कोई मिल कर लड़कों की भांति नाचेंगे और प्रसन्न होयेंगे॥

आज पहिली ही बार जीवाना ने अन्द्रिया को प्राणपति कह कर पुकारा था। मदिरा से विह्वल अन्द्रिया यह शब्द सुनते ही प्रसन्न हो गया। स्वयं उठ कर गया और रेशम की डोरी उठा कर जीवाना के हाथ मे देदी॥

करोलिना०। तीन पुरुषो मे से किसी [illegible]

डाल कर नाचना होगा। बूढ़े हो जाने के कारण ठाकुर साहब (आद्री) का नाचना अच्छा न मालूम होगा॥

जीवाना०। अब दो मनुष्य बचे। मेरे प्रिय स्वामी और कौएट वारटड। इन दोनों में से जो तैयार हो जायँ उनको इनाम में यहां उपस्थित स्त्रियों में से जिसको चाहेंगे होंठ चूमने को मिलेगा॥

अन्द्रिया०। यहां तो तीन स्त्रियां हैं, उनमें एक रानी हैं, क्या वह भी इसमें साथी हैं॥

जीवाना०। (हंस कर) हां॥

अन्द्रिया इतना सुनते ही प्रसन्न हो गया और अपने हाथों से अपने गले में रस्सी डाल ली॥

जीवाना फिर एक गिलास में शराब भर कर अन्द्रिया के सामने ले आई और बोली, "पीयो प्रिय स्वामी! प्रिय प्राणेश्वर! आज हमलोगों के मिलन का दिवस है॥"

अन्द्रिया यह गिलास भी उठा कर पी गया और बोला "सचमुच आज बड़े सुख का दिवस है!" इतना कह कर वह रेशम की डोरी अपने गले में बांध कमरे में नाचने लगा॥

आद्री और फिलिपा का हृदय पैशाचिक आनन्द से पूर्ण हो गया। उनकी मनोकामना पूरी होने में अब अधिक देर नहीं है। जीवाना कभी व्याकुल हो जाती है, कभी शान्त हो जाती है। वारटड भी स्वभावतः निर्दय न होने पर कुसंगति से ममताशून्य हो रहा है। करोलिना आनन्द से पैशाचिक कांड देख रही है॥

अन्द्रिया नशे के झोंक में पागलों की भांति नाचने लगा।

नाचते नाचते ज़ोर से हाथ पैर पटकने तथा चिल्लाने लगा। उसके मुंह से फेन निकलने लगा। ओह ! यह क्या हुआ ? यह तो सेन्टवाइटसों की नाच है ! झाड़ी की इच्छा पूर्ण हुई। अन्द्रिया सचमुच कोरिया का रोगी होकर भयानक नाच नाचने लगा॥

उसके चिल्लाने तथा ज़ोर से हाथ पांव पटकने का शब्द महल में गूंज उठा। कई दास दासी दौड़ते हुए कमरे के दरवाज़े पर आकर खड़े हो गये। इसी समय झाड़ी उठ कर कमरे के बाहर आया और उनको देखकर बोला, "ओह ! दुष्ट अन्द्रिया को कोरिया हो गया। तुमलोग यहां से हट जाओ, तुम्हारे सहायता की कोई आवश्यकता नहीं है॥"

नौकर सब डर कर चले गये। झाड़ी कमरे का दरवाज़ा भीतर से बन्द कर चला आया। अन्द्रिया नाचता नाचता थक कर भूमि पर लोट गया। इसी समय कारटेज़ दौड़ कर उसके पास पहुंचा और उसके शरीर पर चढ़ गया, पर अन्द्रिया शराब के नशे में फिर उठ खड़ा हुआ और कारटेज़ को गिरा कर स्वयं उसी पर गिर पड़ा। यह हाल देख फिलिप्पा और झाड़ी ने दौड़ कर अन्द्रिया के गले में लटकती हुई रस्सी पकड़ ली और दोनों ने मिलकर इस ज़ोर से खींचा कि अन्द्रिया के गले में फांसी की तरह वह रस्सी जकड़ कर बैठ गई और उसका दम घुटने लगा॥

जोआना ने झट से दोनों हाथों से अपनी आंखें ढकलीं पर उन्हें देर तक बन्द न रख सकी। खोलने पर जो देखा उससे उसका हृदय विदीर्ण हो गया। अपने पति की वह भीषण मूर्ति, फटी हुई दोनों आंखें, जीभ बाहर देख कर वह

एक दम घबड़ा उठी। यह बातकी रानी जोवाना ज़ोर से यह कह कर "ईश्वर हमलोगों की रक्षा करो।" एक आराम कुर्सी पर लेट गई और अपना मुंह ढंक लिया॥

मुहूर्त मात्र में ही अन्द्रिया का प्राण इस संसार को छोड़ कर चला गया। आन्द्री की आज्ञानुसार वारटंड ने अन्द्रिया की लाश उठा कर खिड़की से नीचे फेंक दी। लाश के नीचे गिरने का शब्द सुन कर जोवाना घबड़ा कर उठ बैठी और उच्च स्वर से रोने लगी॥

आन्द्री सभों को कुछ समझा बुझा कर वहां से बाहर चला आया। वारटंड तथा करोलिना भी चले आये। बाहर आते ही सब नौकर चाकरों ने आकर उन लोगों को घेर लिया और अन्द्रिया का हाल पूछने लगे। आन्द्री रोता रोता बोला "सर्वनाश होगया। रानी अन्द्रिया नाचता नाचता खिड़की से नीचे कूद पड़ा!!"

सब दौड़ते हुए नीचे बाग में आ पहुंचे तो क्या देखते हैं कि राजकुमार अन्द्रिया का मस्तक चूर चूर होकर गिरा हुआ है और शरीर फट गया है। सब मिल कर उस लाश को बड़ी कठिनता से ऊपर ले आये। यह देख कर जोवाना रो रो कर अपने स्वामी के शव पर गिरने लगी, फिलिपा और करोलिना उसे बहुत कुछ समझाने लगे। बड़ी देर तक राजमहल में हाहाकार मचा रहा। बड़ी कठिनता से जब जोवाना कुछ शान्त हुई तब फिलिपा उसे उसके कमरे में सुला आई। उस रात को फिर जोवाना किसी से कुछ न बोली॥

सुबह को फिलिपा ने वहां आकर देखा तो जोवाना को

बहुत ही चिन्तित तथा दुःखित पाया ॥

सुबह होते ही अन्द्रिया की मृत्यु का सम्वाद नगर में फैल गया। थोड़े ही मनुष्यों को इसकी सत्यता पर विश्वास हुआ। चार्लस के दल वालों ने भी सुना पर उनको यही विश्वास हुआ कि यह मृत्यु नहीं हत्या है ॥

प्रजागणों को भी सन्देह होने लगे। वेलोग राजमहल के सामने जमा हो गये और इस विषय की खोज में लगे। भांति भांति की बातें कह कर चिल्लाने लगे। अन्त में राज्य की सेना ने निकल कर उन लोगों को हटा दिया ॥

उन्नीसवां परिच्छेद।

रात्रि कैसी भी भयंकर हो पर दक्षिण महासागर के बीच के प्रवालद्वीप पर प्रभात अवश्य ही रमणीक होता है ॥

गत रात्रि की भयंकर वृष्टि के बाद आज सूर्यदेव उदय हो गये हैं। सूर्यदेव की सुनहली किरणें समुद्र के जल पर तथा प्रवाल द्वीप के कुञ्जों पर पड़ कर अपूर्व शोभा दिखा रही हैं। वृक्ष पौधे, भूमि सभी चमक रहे हैं, भांति भांति के पक्षी अपनी मधुर ध्वनि से बोल रहे हैं ॥

इस समय वह प्रवालद्वीप का अकेला राजा बूढ़ा कहां है? देखो, वह अपनी झोपड़ी से निकलकर चला आ रहा है। उसको आरोग्य हुए थोड़े ही दिन हुए हैं, पर इतने ही दिनों में उसके शरीर का रक्त बदल गया है। अब उसका शरीर आगे की ओर झुका हुआ नहीं है बल्कि सीधा और दृढ़ है मानो उसकी युवा अवस्था आ गई है तथा उसकी चाल इस समय

तेज और दृढ़ मालूम होती है। अब उसका ध्यान अपने वस्त्रों की ओर भी अधिक नहीं है और यदि उसका कपड़ा कहीं से फट जाता है तो वह उसकी पर्वाह नहीं करता। वह कठोर चिन्ता और दुःख जो सदा उसके चेहरे को मलिन किये रहती थे अब कोसों दूर भाग गये हैं और उनके बदले प्रसन्नता विराज रही है तथा दृष्टि से उत्साह टपक रहा है॥

अपनी झोपड़ी से निकल कर वह बूढ़ा सीधा एक खाड़ी की ओर चला जा रहा है जिसके पास पास कई बड़े और ऊंचे वृक्ष हैं। उसने कई वृक्षों को काट भी डाला है जिनकी कटी हुई शाखायें पानी पर तैर रही हैं। उसने एक पत्थर के नीचे से कुछ बढ़ई के औजार जो उसे एक बहते हुए लकड़ी के तख्ते पर मिल गये थे निकाले और उनकी सहायता से वह लकड़ियों को काट कर ठीक करने लगा तथा नारियल इत्यादि वृक्षों की छाल से रस्सी बट कर उनको बांधने लगा। उसने कई जगह काटियां ठोंक कर उनको ऐसा दृढ़ कर दिया कि उसमें एक भी छेद न रहा। अब उसने उस बनाये हुए बेड़े को पानी पर छोड़ दिया और वृक्ष से डालियां काट तथा उसको चारो ओर से बांध कर उसका किनारा ऊंचा करने लगा। इसके बाद बहुत से फल तोड़ कर लाये और अपनी बनाई हुई नाव पर रखने लगा॥

जिस समय वह इन कामों को कर रहा था, उसका ध्यान बारबार इटैली देश की ओर जाता था, यद्यपि उसे प्रवाल-द्वीप में रहते बहुत दिन हो गये थे तथापि वह अपने देश इटैली को जाने के लिये अब बहुत ही व्याकुल था, पर इतने दूर महासागर को लांघ कर बिना किसी की सहायता के बिना

किसी बल के वहां पहुंचना असंभव ही दिखाई देता था, पर ईश्वर की दया पर उसे पूरा विश्वास था, वह जानता था कि जिस ईश्वर ने उसको इतनी दूर यहां लाकर रक्खा है वह इच्छा करने पर उसे वहां भी पहुंचा सकता है। उसे मालूम होता था मानो उससे कोई कह रहा है कि तुम हताश न हो। यह विचार कर वह अपना काम करता ही चला गया॥

संध्या के पहिले ही उसका काम समाप्त होगया। वह उस बेड़े पर चढ़ कर इधर उधर घूम भी आया और निश्चय कर लिया कि यह टूट नहीं सकता॥

इस समय संध्या की अपूर्व छटा प्रवाल द्वीप पर छा रही थी। बादल अपना रंग बदल बदल कर अनोखी छटा दिखा रहा था। पक्षीगण चहक २ कर अपने घोंसलों की ओर जा रहे थे और वृद्ध भी अपने काममें दृढ़ता से लगा हुआ था तथा अब उसे पूरा किया ही चाहता था॥

वह इस समय दौड़ कर एक कुंज की ओर गया और एक वृक्ष के पत्तों से कुछ रस निकाल कर बड़ी २ कौड़ियों में भर उसका मुंह मिट्टी से बन्द करने लगा। कुछ ही देर में उसका यह काम भी समाप्त हो गया। अब वह अपने बेड़े की ओर आया और अपनी बनाई हुई बड़ी २ रस्सियां तथा एक बड़ा बांस हाथ में लेकर उसपर चढ़ गया। बेड़ा खोल दिया गया और समुद्र की लहर में कभी उठता कभी नीचे जाता हुआ प्रवाल द्वीप को छोड़ कर आगे बढ़ गया॥

इस समय सन्ध्या बीत गई थी और रात्रिने अपना अधिकार जमा लिया था। आकाश में असंख्य तारे चमक रहे थे॥

बीसवां परिच्छेद।

अन्त्रिया की हत्या को आज तीन दिन हो गये हैं। इन तीन दिनों में रोबर्ट एक बार भी अपने कमरे से बाहर नहीं निकला है। आट्री और फिलिपा ने बहुत कुछ उद्योग उससे मिलने के लिये किये पर व्यर्थ, एक बार भी उससे मिल न सके। जीवाना ने भी उससे मिलने की अपेक्षा की और पत्र लिखा पर कोई फल न हुआ। रोबर्ट एक बार भी किसी से न मिला॥

रानी जीवाना अपने प्यारे के इस व्यवहार से बड़ी ही दुःखित हुई, उसके हृदय में एक प्रकार की चोट लगी। साथही उसके मन में यह भी आया कि मैं रानी होकर उसको बुलाती हूं तिसपर भी वह मेरा अनादर करता है और यहां नहीं आता। फिलिपा ने जीवाना को बहुत तरह से समझाया कि वह डाकुओं से हारकर आया है, इस कारण से किसी से नहीं मिलता पर जीवाना ने इन बातों पर विश्वास नहीं किया। उसका हृदय फटने लगा और वह बड़ी ही दुःखित हुई पर मुंह से कुछ न बोली॥

रोबर्ट की मा फिलिपा यही जानती है कि वह डाकुओं से हार आया है इस लज्जा से किसी से नहीं मिलता पर आट्री का कुछ और ही सन्देह है। वह अपने सन्देह की बातें किसी से न कहकर मन ही मन चिन्तित हो रहा है॥

फिलिपा संध्या के समय अपने कमरे में बैठी हुई इन्हीं सब बातों को विचार रही थी कि इतने ही में कमरे का

दर्वाजा खोलकर रौबर्ट आता हुआ उसे दिखाई दिया॥

फिलिपा उठ खड़ी हुई क्योंकि उसने देखा कि रौबर्ट की दशा बुरी हो रही है, उसके चेहरे पर क्रोध, लज्जा और घृणा विराज रही है। यह देखते ही फिलिपा घबड़ा उठी और न जाने किस भाव ने उसके हृदय में उदय होकर उसका मुंह बन्द कर दिया। वह चुपचाप खड़ी रही॥

रौबर्ट बहुत धीरे धीरे टहलता हुआ उसके पास पहुंचा और एक कुर्सी खींच अपनी मां के पास बैठ गया॥

बहुत देर तक दोनो इसी तरह चुपचाप बैठे रहे। अन्त में रौबर्ट बोला, "तुम मुझे इस तरह घबड़ा कर क्यों देख रही हो?"

फिलिपा०। तुम्हारी चाल, बोली तथा चेहरा सभी इस समय भयानक दिखाई देते हैं। ईश्वर ही कुशल करे, तुम्हें क्या हो गया है?

रौबर्ट०। (कुछ मुस्कुरा कर) एं! मुझे क्या हो गया है? कुछ भी नहीं॥

फिलिपा०। (घबड़ा कर) यह तीन दिनों का निर्जन वास, किसी को अपने पास आने न देना और तुम्हारी सूरत यह सब मुझे डरा रही हैं। रौबर्ट! ठीक ठीक बताओ, तुम ऐसा क्यों कर रहे हो? इन सब का कारण क्या हैं?

रौबर्ट०। चिन्ता, शोक और दुःख यही कारण है॥

फिलिपा०। क्या तुम डाकुओं से हार आये हो, इसी कारण से............

रौबर्ट०। (बात काट कर) यदि यही कारण होता तो

मुझे कुछ भी डर न था । इस हार से मैं कुछ भी लज्जित न हुआ । मैं अकेला क्या कर सकता था, सेना ने प्रस्थ त्याग दिया। नीच सेना के कारण से ही मैं यों काला मुंह कर लौट आया। मां! मैं सच कहता हूं कि इससे मुझे ज़रा भी लज्जा न हुई वल्कि मनुष्य की बातें सुनकर मेरा कलेजा फटने लगा। उसने सच ही कहा है कि शस्त्रविद्या जानने से ही मनुष्य वीर नहीं होता, हृदय की उदारता और सद्भाव ही मनुष्यत्व और वीरत्व के प्रधान अंग हैं । उसने और भी कितनी ही बातें कहीं। मैं कहांतक बताऊं? इस जीवन से तो मरण अच्छा है॥

फिलिपा०। (आश्चर्य से) किसने ये बातें कहीं ? नाम भी तो बताओ॥

रैाबर्ट०। डाकुओं के सर्दार वेरियन ने और उसने सब सत्य कहा॥

फिलिपा०। क्या एक राजद्रोही डाकू की बातें तुमने सब सच मान लीं?

रैाबर्ट०! डाकू ठीक, परन्तु उसके समान सज्जन मनुष्य कितने हैं ? मुझे उसने जितनी बातें कहीं हैं वे सब सुन कर तुम्हें बड़ा ही आश्चर्य होगा॥

फिलिपा०। रैाबर्ट! तुम्हें अभी कुछ भी बुद्धि नहीं आई इसी कारण से एक डाकू की बातों पर विश्वास कर लिया है। राजेश्वरी जीवाना तुमसे मिलने के लिये घबड़ा रही हैं। क्या यह समय चुप रहने का है? क्या तुम नहीं जानते कि नेटपल्स का सिंहासन इस समय खाली है और राजमुकुट तथा राजदण्ड तुम्हारी ही राह देख रहे हैं॥

रोबर्ट इतना सुनते ही चौंक उठा। फिलिपा की बातों ने उसके हृदय के ऊंचे विचारों को दूर कर दिया और उनके बदले एक दूसरे ही भाव ने उसके हृदय पर अपना अधिकार जमा लिया॥

फिलिपा कुछ देर तक उसके मुंह की ओर दृष्टि जमाये देखती रही। फिर बोली, "जाओ मूर्ख बालक ! रानी का पैर पकड़ कर उससे क्षमा मांगो। वह तुम्हें प्यार करती है। निराश मत होना, अभी बहुत कुछ आशा है॥"

रोबर्ट०। (शोक से) अब बहुत देर हो गई। वह अवश्य ही रुष्ट हो गई होगी॥

फिलिपा०। जाओ वह तुम्हें प्यार करती है, यही बहुत है॥

रोबर्ट०। अच्छा, मैं जाकर उद्योग करूंगा॥

इतना कह कर वह वहां से उठ खड़ा हुआ। उसका चेहरा प्रसन्नता से दमक उठा। वह चुपचाप कुछ विचारता हुआ वहां से चला गया। फिलिपा अकेली अपने कमरे में बैठी हुई भांति भांति की बातें विचारने लगी। कुछ ही देर बाद आन्द्री वहां आया और बोला, "क्या तुमने अपने लड़के को देखा ?"

फिलिपा०। हां, वह अभी अभी यहां से गया है और इस समय निःसन्देह रानी जोयाना के पास होगा॥

आन्द्री०। (गम्भीरता से) ठीक है। क्या उसने तुम्हें इस एकान्तवास का कारण भी कुछ बताया ?

फिलिपा०। उसने कहा कि बेरिंघम की बातों से मुझे

बड़ा दुःख हुआ न कि हार खाकर चले आने से॥

आद्री०। ठीक है। आज मैंने अपने भेदिये से वह सब बातें जो वेरियन ने रोबर्ट को समझाई थीं, सुनी हैं। उस समय मेरा भेदिया वहीं था उसने बहुत सी बातें........

फिलिपा०। (बात काट कर) क्या वे बातें इतनी भयङ्कर थीं जिन्हें सुनकर तुम्हारा चेहरा भी मलिन हो गया?

आद्री०। हां, उसने कहा कि वेरियन..............

इसके बाद आद्री ने फिलिपा के कान के पास मुंह लेजा कर कुछ कहा जिसे सुनते ही वह जोर से चिल्ला उठी और मूर्छित होकर भूमि पर गिर पड़ी॥

इक्कीसवां परिच्छेद।

जीवाला अपने कमरे में अकेली बैठी हुई है। उसके सब वस्त्र इस समय काले हैं क्योंकि राजमहल में अभी अल्फ्रिडा का शोक मनाया जा रहा है। उसका सुन्दर चेहरा इस समय मलिन होने पर भी वह अद्वितीय सुन्दरी मालूम होती है क्योंकि उसके भौरे की भांति काले केश, बड़ी सुन्दरता से गुच्छे गुच्छे होकर लटक रहे हैं। उसकी आंखों से ऐसी नम्रता, दयालुता और करुणा टपक रही है मानो ईश्वर अपनी करुण दृष्टि से किसी को देख रहे हैं॥

शोक! शोक! क्योंकि उसके हृदय में देवता के समान करुणा नहीं है बल्कि उसके बदले दुष्टता, स्वार्थपरायणता और नीचता उसके हृदय में अपना अधिकार जमाये हुए हैं॥

उसने अपने सब नौकर चाकर तथा सहेलियों को वहां से इस लिये हटा दिया है कि जिसमें एकान्त में बैठकर अपनी दशा को विचारने और रौबर्ट को अपनी आज्ञा न पालन करने के लिये दण्ड निश्चित करने का अवसर मिले पर वह जितना ही विचारती थी कि अब रौबर्ट से कभी न बोलूंगी, न मिलूंगी यहांतक कि कभी उसकी ओर देखूंगी भी नहीं, उतना ही रौबर्ट का सुन्दर चेहरा याद आ आकर उसके ध्यान तथा विचारों में बाधा डाल देता था। अन्त में जब वह किसी तरह अपने विचारों को दृढ़ न करसकी तो उठ कर कमरे में टहलने लगी। कभी २ उसका ध्यान उस भयंकर घटना की ओर भी जाता था जिसके कारण से वह विधवा हो गई है। अब फिर उसे रौबर्ट का ध्यान आया। वह जोरसे बोली, "वह मेरे योग्य नहीं है। मैं रानी हूं और इस समय उसकी आराध्य देवी हूं। अब मुझे विचारना चाहिये कि उसने मेरे साथ कैसा बुरा व्यवहार किया और———"

वह कुछ और भी कहा चाहती थी पर इतने ही में किसी ने दरवाजा खटखटाया। जीआना ने यह समझ कर कि शा-यद करोलिना होगी दरवाजा खोल दिया। दरवाजा खुलते ही रौबर्ट कमरे में आया और उसके पैरों पर गिर पड़ा॥

स्त्रियों की भी कैसी आश्चर्यजनक प्रकृति होती है। जिस मनुष्य को देखने के लिये जीआना व्याकुल होरही थी, जिसके लिये जी अकुलाता था, जिसके थोड़े से अनादर पर इतना क्रोधित हो रही थी पर क्रोध क्षण भर भी स्थायी न रहता था उसको सामने, अपने पैरों पर देखकर अभिमान से फूल उठी

और अपना मुंह पीछे फेर कर उसको हाथ से चले जाने के लिये इशारा करने लगी॥

यदि रौबर्ट जिस उदासीनता से अपनी मां के पास गया था उसी प्रकार से यहां भी आता तो सम्भव था कि जीवाना उस पर दया करती, उससे बड़े प्यार से बातें करती और इस उदासीनता का कारण उसके गले में अपनी बांह डाल कर पूछती तथा उसके दुःख में सहानुभूति प्रकाश करती, पर अब, जब उसने देखा कि वह उसके पैरों पर गिरा हुआ है तब स्त्रियों और रानी का गर्व उसके हरएक अंगों में समा गया तथा वह झटका देकर उससे अलग होगई और उसकी ओर एक बार देखा भी नहीं॥

जीवाना की यह दशा देखकर रौबर्ट को क्रोध आया और दो एक बुरे शब्द उसके मुंह से निकला ही चाहते थे क्योंकि येरियम की कही बातें यकायक उसे फिर याद आगई यों पर उसने अपने को यह विचार कर कि मुझे राजसिंहासन मिल सकता है, सम्हाला और बड़ीही नम्रता तथा करुणा भरे हुए स्वर से बोला, "जीवाना! क्या हमारी आशा त्याग दूं?"

इतना सुनतेही जीवाना वहां से आगे बढ़ी और मुंह फेरे ही हुए चलने लगी मानो रौबर्ट का मुंह देखना भी नहीं चाहती थी। रौबर्ट भी उसके पीछे२ चला। अब जीवाना आगे न बढ़ सकी क्योंकि आगे दीवाल थी और झखमार कर उसे घूमना ही पड़ा, पर ज्योंहीं वह घूमी और इन दोनों की आंखें चार हुईं। रौबर्ट ने देखा कि उसके चेहरे पर घृणा, ईर्षा और क्रोध

दिखाई देरहा है। यह फिर बोला, "क्या महारानी की दया अब सुन्दर न होगी? क्या उस मनुष्य को जिसने अपना जीवन आपको समर्पण कर दिया है, क्षमा न मिलेगी?"

जीवाना०। (घबड़ाके) यदि तुम मुझे रानी की तरह समझतेहो तो मैं आज्ञा देती हूं कि तुम अभी यहां से चले जाओ पर यदि स्त्री की तरह मानते हो तो मैं कह सकती हूं कि तुमने मेरा दिल तोड़ दिया गया और——

रैम्बर्ट०। तब तो मैं आपको स्त्री की भांति मानता हूं और आशा करता हूं कि आप क्षमा करेंगी क्योंकि उस समय मैं पागल हो गया था, मुझे न जाने क्या हो गया था जिससे आपकी प्रीति पर ध्यान न देकर आपकी आज्ञा उल्लंघन की॥

जीवाना०। अब प्रीति का नाम न लो अब कि तुमने एक दम मुझे भुला दिया मानो किसी ने तुम्हें सिखाया है——

रैम्बर्ट०। नहीं जीवाना! यह तुम्हारी भूल है, मुझे किसी ने कुछ नहीं सिखाया। आह! मैं अपना तन, मन, प्राण सब तुम्हें अर्पण कर चुका हूं और मैंने जान बूझ कर कभी तुम्हारा दिल नहीं दुखाया है॥

जीवाना०। (सन्देह और प्रीति से) क्या तुम सच कहते हो? मुझे तो विश्वास नहीं होता॥

रैम्बर्ट०। (एक घुटना टेक कर तथा जीवाना का हाथ पकड़ कर) हां, मैं सच कहता हूं॥

जीवाना०। (कुछ हाथ खींच कर) पर तुम्हें सबूत देना होगा और बताना होगा कि तीन दिन तक तुम्हारे यहां न आने का कारण क्या था?

रैावर्ट०। बस, आप इतनी ही बात न पूछें॥

जीवाना०। यदि यह भी मालूम हो जाये कि वह एकाल-वास मेरे कारण से न था तब भी कुछ..................

रैावर्ट०। (बात काट कर क्योंकि फिलिपा की बातें उसे याद आ गई थीं) क्या मुझे बताना ही पड़ेगा? अच्छा, इतने ही से समझ लीजिये कि लज्जा, शोक और दुःख के कारण मैं नहीं आ सका॥

जीवाना०। बस, बस, बहुत हुआ, अब अधिक नहीं सुना चाहती। रैावर्ट! मेरे प्यारे रैावर्ट!!

इतना कह कर जीवाना उससे लिपट गई॥

रैावर्ट०। अब मेरा जी ठंढा हुआ॥

दोनों एक पलङ्ग पर बैठ गये। जीवाना बड़े प्यार से बोली, "उस भयंकर रात्रि के बाद आज ही हम तुम मिले हैं अब—"

रैावर्ट०। हां, जिस दिन पापी अन्द्रिया को उसके बुरे कामों का फल मिला था।

जीवाना०। तुम बड़े भाग्यशाली हो कि उस दिन यहां न रहे और उस दुखदायी दृश्य को न देख सके। आह! यदि किसी तरह वह जी जाता..................

रैावर्ट। उसका अब नाम न लो बल्कि ईश्वर को धन्यवाद दो कि उसने ऐसे कुटिल और दुराचारी मनुष्य के हाथ से तुम्हें बचाया॥

जीवाना०। आह! मैं कभी उस काम में सम्मत न होती पर जब मैंने देखा कि अन्द्रिया के सिंहासन पर बैठते ही तुम्हारा भी प्राण जायेगा तब लाचारी से मुझे सम्मत होना पड़ा॥

रैायर्टं०। (प्रसन्नता से) तब तो तुम मुझे बहुत ही प्यार करती हो॥

जीवाना०। क्या अब भी सन्देह है, क्या अब भी मेरी प्रीति पर तुम्हें भरोसा नहीं हुआ? क्या मैंने अपनी प्रीति का पूरा २ परिचय तुम्हें नहीं दिया है? जब पुरुष किसी स्त्री के प्रेमजाल में फँसता है तो वह अपनी कीर्ति और मर्यादा खो देता है तथा अपने प्राणों की भी पर्वाह नहीं करता और यही प्रीति का पूरा २ प्रमाण है, पर उस स्त्री को क्या कहना चाहिये जिसने अपने प्यारे के लिये अपना तन, मन, धन सब खो दिया, जिसके लिये अपनी कीर्ति में कलंक लगाया और जिसके लिये हत्या करने वाली कहलाई? रैायर्ट! क्या तुम इससे बड़ा प्रमाण कोई देसकते हो? मैं तुम्हारे ही लिये हत्याकारिणी कहलाई! नहीं तो मुझे क्या ज़रूरत थी?

रैायर्टं०। प्यारी जीवाना! उसी प्रकार से तुम्हें भी मेरी प्रीति पर सन्देह न करना चाहिये। तुम जानती हो कि मैं सब तरह से तुम्हारा दास बना हुआ हूं और तुम्हारे लिये सब कुछ सहने को तैयार हूं। यदि मैं तीन दिनों तक तुम से न मिला और अकेला रहा, यह भी इसी कारण से कि मुझे इस बात का बड़ा ही दुःख हुआ कि मैं तुम्हारी आज्ञा पालन न कर सका तथा तुम्हारे शत्रु को मार न सका। ऐ जीवाना! मैं केवल तुम्हारे ही लिये इस संसार में जी रहा हूं, जब कभी मुझे इस बात का ध्यान आता है कि मुझे तुमसे अलग होना पड़ेगा तब मैं नहीं कह सकता कि मेरी क्या दशा हो जाती है, मुझे यह जीवन भारी मालूम होने लगता है, पर अब तुम्हारी

दया और कृपा पर ध्यान आता है तो मैं मारे प्रसन्नता के फूला नहीं समाता और.........

जोयाना०। ऐ रौबर्ट ! बताओ मैं तुम्हारे लिये अब कौन सा काम करूं और किस तरह तुम्हें अपनी प्रीति का प्रमाण दूं। मैं तुम्हारे लिये सब कुछ कर सकती हूं ॥

रौबर्ट०। तुम मुझ से पूछती हो कि क्या करूं ? इस प्रश्न का उत्तर तो तुम स्वयं अपने मन से पूछ सकती हो। मैं तो इतना ही कहूंगा कि मुझे तब तक पूरी प्रसन्नता नहीं मिल सकती जब तक यह न निश्चय हो जावे कि मैं अब तुम से जुदा न हो सकूंगा। यही एक बात है जो मुझे सदा दुःखित किये देती है ॥

जोयाना०। तुम्हारे हृदय में यह व्यर्थ की बातें क्यों कर समाई ? क्या मैं इस देश की रानी नहीं हूं ? मेरे विरुद्ध कौन खड़ा हो कर तुम्हें मुझ से पृथक कर सकता है ?

रौबर्ट०। मेरी प्यारी जोयाना ! यह विचार मुझे बार २ इसी कारण से सताता है कि तुम इस देश की रानी हो क्योंकि जब अन्द्रिया के शोक मनाने के दिवस निकल जायेंगे तब सब प्रजा यही कहेगी "महारानी को अब एक ऐसे मनुष्य से फिर विवाह करना चाहिये, जो हमलोगों को विपत्ति से बचा सके और जिस पर हमलोग पूरा २ विश्वास रख सकें।" जोयाना ! ये ही बातें मुझे पागल किये देती हैं और इन्हीं बातों से मैं दुःखित रहता हूं ॥

जोयाना० रौबर्ट क्या तुम्हें मेरी प्रीति और प्रतिज्ञा पर विश्वास नहीं ? यह अवश्य मेरी प्रजा कहेगी कि तुम पुन॰

विवाह करो पर जब वह उचित समय आवेगा कि मैं अपने लिये किसी मनुष्य को चुनूं तब मैं बड़े२ धनवानों, मन्त्री और बादशाहों को तथा जो जो मनुष्य अच्छे दिखाई देंगे उनको बुला कर एक सभा करूंगी। वह समय मेरे लिये धन्य होगा जब मैं सर रौबर्ट को अपने पास बुला कर सभों से कहूंगी, "यह देखिये, यही वह साहब हैं जिनसे मैं विवाह करूंगी॥"

रौबर्ट०। अब मैं प्रसन्न हुआ। जीवाना! तुम्हारी प्रीति अनिर्वचनीय है। अब मैं सुखी हुआ और..............

जीवाना०। मेरी प्रीति के बारे में तुम्हारा कहना ही वृथा था। मैं फिर कहती हूं कि वही समय मेरे लिये सब से बढ़कर होगा जब मैं तुम्हें यह कह सकूंगी कि "रौबर्ट! मेरे प्यारे रौबर्ट! तुम अब नेपल्स के राजा हो॥"

ठीक उसी समय जब कि यह अन्तिम वाक्य कहा गया कमरे का दरवाजा ज़ोर से खुल गया और एक विचित्र मूर्ति दरवाजे पर खड़ी दिखाई दी। रौबर्ट उसे देखते ही चिल्ला उठा और जीवाना मूर्छित होकर भूमि पर गिर पड़ी॥

बाईसवां परिच्छेद।

यह कोई आश्चर्य की बात न थी कि रौबर्ट और जीवाना दरवाजे पर खड़ी हुई मूर्ति को देख कर डर गये क्योंकि उन्होंने देखा कि एक मूर्ति कवच पहिने खड़ी है और चेहरे पर नकाब पड़ी हुई है। यह कवच वही था जो नेप्लस के मृत राजा रौबर्ट एंजूर पहिना करते थे, सर पर भी उनका ही मुकुट था मानो उनकी प्रेतात्मा दरवाजे पर आकर खड़ी होगई हो॥

जीवाना अपने उपपति को नेप्लस के राजसिंहासन पर बैठाया चाहती थी और इसी विषय की बातें इस समय दोनों में हो रही थीं, इसीलिये मानो राजा एंजूर की प्रेतात्मा उनको धिक्कारने और मना करने के लिये यहां आकर खड़ी हो गई थी। रौबर्ट के हृदय में भी यही विचार आया कि यह मृत राजा की ही मूर्ति है, वह भी घबड़ा गया। कुछ ही देर बाद जीवाना की मूर्छा भङ्ग हुई, उसने आंखें खोल कर दरवाजे की ओर देखा फिर भी उस मूर्ति को वहीं खड़ी पाया॥

जीवाना को देखते देख मूर्ति ने अपना दाहिना हाथ उठाया। रौबर्ट फिर घबड़ा गया और जीवाना मूर्छित हो गई। इसी समय ज़ोर से दरवाजा बन्द हुआ। रौबर्ट ने दर्वाजे की ओर देखा तो अब वह मूर्ति वहां नहीं दिखाई दी॥

यकायक डर के बदले सन्देह ने रौबर्ट के हृदय पर अपना अधिकार जमाया। वह विचारने लगा कि किसी ने इमलोगों को डराने के लिये यह काम किया है। वह चाहता ही था कि तलवार निकाल कर उसका पीछा करे कि यकायक उसको

दृष्टि जीवाना पर पड़ी,तो मुर्दे की भांति भूमि पर गिरी हुई थी। वह उसके बगल में घुटने टेक कर बैठ गया और जीवाना के कलेजे पर हाथ रख कर देखने लगा कि जीवाना जीवित है या मर गई, पर जांच करने पर उसने जाना कि अभी उसका कलेजा धकधक कर रहा है। उसने उसे भूमि पर से उठा कर एक पलङ्ग पर लेटा दिया तथा मुंह पर पानी छिड़क कर उसे होश में लाने का उद्योग करने लगा। जीवाना ने धीरे धीरे आंखें खोल दीं और रौबर्ट को अपने पास देख कर मुस्कुराई पर तुरत ही पिछली घटना याद आने से भय ने उसके चेहरे पर अपना अधिकार जमा लिया तथा वह रोने लगी॥

रौबर्ट बोला—"जीवाना! प्यारी जीवाना! अपने को सँभालो॥"

पर जीवाना ने निराशा से अपनी गर्द्दन हिला दी॥

रौबर्टः। जीवाना! उठो उठो, बहुत देर हो गई॥

जीवानाः। (बहुत धीरे धीरे) क्या अब भी वह मूर्ति दरवाजे पर खड़ी है?

रौबर्टः। नहीं, वह तो मन का विकार मात्र था॥

जीवानाः। (उठ कर) नहीं रौबर्ट! वह मन का विकार नहीं था, वह देखो पैर के निशान अभी तक दिखाई देते हैं॥

रौबर्टः। (क्रोध से) तब तो अवश्य ही किसी ने हम लोगों को डराने के लिये यह रूप रचा था। वह अभी दूर नहीं भागा होगा, मैं अभी उसकी खोज में जाता हूं॥

इतना कह कर और अपनी तलवार म्यान से बाहर निकाल वह जाना ही चाहता था कि जीवाना ने उसे ज़ोर से

पकड़ लिया और बोली "नहीं, नहीं, तुम अकेले न जाओ। (कुछ विचार कर) मैं भी तुम्हारे साथ चलूंगी॥"

रोवर्ट ने उसका एक हाथ पकड़ लिया और दोनों कई दालान तथा कमरों को लांघते हुए एक ऐसे कमरे में पहुंचे जहां दोनों तरफ तीस बत्तीस कवच इस ढङ्ग से सजे हुए रक्खे थे मानो तीस बत्तीस आदमी युद्ध के लिये तैयार खड़े हैं॥

जीवाना रोवर्ट का हाथ पकड़े हुए कमरे के बीच में जाकर खड़ी हो गई। अचानक कहीं से तेज रोशनी आकर उनके चेहरे पर पड़ी जिससे दोनों डर गये॥

जीवाना भय से कांप कर बोली "यह क्या? यह रोशनी कहां से आती है?"

रोवर्ट०। मालूम होता है किसी खुले हुए दरवाजे से यह तेज रोशनी आ रही है॥

जीवाना०। असम्भव! इस कमरे के बगल में ऐसी कोई जगह नहीं है जहां से यह चमकीली रोशनी इस कमरे में आ सके॥

रोवर्ट०। ढाढ़स रक्खो। डरती क्यों हो? हमलोग वह नहीं हैं कि ऐसी ऐसी बातों से डरा करें॥

जीवाना०। यह देखो राजा एंजूर का कवच यहां रक्खा है॥

रोवर्ट०। हां, देखता हूं कि वह रक्खा हुआ है और सामने की दीवार पर वह चमकीली रोशनी भी पड़ रही है॥

जीवाना०। (रोवर्ट से लिपट कर) तब तो यह सच है कि यह मूर्ति जो हमलोगों ने कमरे में देखी थी.........आह! क्या ईश्वर हमलोगों के विरुद्ध हो रहे हैं?

रौबर्ट०। धीरज धरो, यह समय घबड़ाने का नहीं है। हमलोगों को अवश्य इस बात का पता लगाना चाहिये॥

जीवाना०। ठीक है, ऐसा ही होगा, जबतक इस भेद का पता न लगेगा मैं यहां से न हटूंगी॥

रौबर्ट०। जीवाना! देखो, अभी पता लगाता हूं॥

जीवाना०। पता क्या लगेगा? तुम देखते ही हो कि यह कवच यहां रक्खा है, कोई मनुष्य इतनी जल्दी यहां आकर और इसे उतार कर कभी रख नहीं सकता यह अवश्य........

रौबर्ट०। इसी को लड़कपन कहते हैं। यदि यह भूतों का काम होता तो क्या जमीन पर पैर के दाग दिखाई देते? प्रेतात्मा का पद चिन्ह दिखाई देना असंभव है॥

कुछ देर तक दोनों चुपचाप खड़े रहे, उनकी दृष्टि कभी उस रोशनी पर कभी कवच पर जाती थी, जिससे भांति भांति के विचार उनके हृदय में उत्पन्न हो रहे थे॥

कुछ देर और ठहर कर जीवाना बोली, "चलो, आगे बढ़ो खड़े क्या हो शायद कुछ पता लग जाये?"

इतना कह कर वह तन कर खड़ी हो गई और रौबर्ट का हाथ पकड़े धीरे धीरे आगे बढ़ने लगी। कुछ दूर कमरे में जाने बाद वे लोग ठीक उस स्थान के सामने जा पहुंचे जहां से रोशनी आ रही थी। उनके मुंह से एक आनन्द की ध्वनि निकली क्योंकि उन्हें आशा थी कि किसी भयानक वस्तु को देखेंगे पर उसके बदले उन्हें एक आश्चर्यजनक और कौतूहल-वर्द्धक दृश्य दिखाई दिया॥

तेईसवां परिच्छेद ।

उस कमरे की दीवार में एक तरफ गुफा की तरह एक कोठड़ी थी जहां एक सुन्दर लैम्प जल रहा था जिसकी चमकीली रोशनी कमरे में आ रही थी। उस छोटी कोठड़ी में पांच मूर्तियां रक्खी हुई थीं जो ठीक मनुष्य की भांति थीं और उसी प्रकार के कपड़े भी पहिने हुई थीं जैसे कि वे मनुष्य पहिनते थे जिनकी ये मूर्तियां थीं॥

रैाबर्ट और जीवाना कुछ देर तक बड़े ध्यान से इन मूर्तियों को देखते रहे। उन मूर्तियों को देख कर उनके आश्चर्य्य का ठिकाना न रहा और वे बनाने वाले की प्रशंसा मन ही मन करने लगे, पर ज्यों ज्यों वे उन मूर्तियों को देखने लगे त्यों त्यों उनका आश्चर्य्य बढ़ने लगा। पहिली मूर्ति जिसपर उनकी दृष्टि पड़ी फिलिपा की थी, वह अपने वस्त्र ठीक ठीक पहिने हुए एक आराम-कुर्सी पर बैठी हुई थी। इसके बाद दूसरी मूर्ति स्वयं रानी जीवाना की थी माना वह हँस हँस कर अपने पास वाले मनुष्य से बातें कर रही है। तीसरी मूर्ति जो जीवाना के बगल में खड़ी थी रैाबर्ट की थी। इसके बाद आन्द्री भी उसी जगह एक कुर्सी पर अपना चेहरा गम्भीर बनाये बैठा हुआ था। पर पांचवीं मूर्ति पर ध्यान देते ही जीवाना और रैाबर्ट दोनों एक साथ कांप उठे मानो दोनों ने एक साथ ही भूत देखा हो। यह राजा पेंडूर की मूर्ति थी॥

राजा पेंडूर की मूर्ति देखकर जीवाना इतनी घबड़ा गई कि अगर रैाबर्ट उसे पकड़ न लेता तो वह मूर्छित हो गिर पड़ती॥

रैायर्ट बड़े नम्र स्वर से बोला, "जीवाना ! मोम की मूर्तियां देख कर इतना डरती हो। मूर्तियां तो ठीक ठीक बनाई हैं पर यहां रखने का उद्देश क्या है यह नहीं मालूम होता॥"

जीवाना ने फिर राजा एंजूर की मूर्ति को देखा। ठीक उसी समय उस मूर्ति के मुंह का भाव बदलता हुआ दिखाई दिया। जीवाना चिल्ला कर बोली, "देखो, देखो रैायर्ट। कैसे आश्चर्य की बात है! मैं क्या स्वप्न देख रही हूं? हे भगवान! क्या भयंकर दृश्य है!"

इच्छा न रहने पर भी जीवाना भय से उस मूर्ति की ओर देखती रही मानो उसमें आंखें बन्द करने की भी शक्ति न थी। इस समय राजा एंजूर की मूर्ति के चेहरे का भाव धीरे धीरे बदल रहा था मानो उनका प्रसन्न मुखमण्डल किसी विष के कारण से धीरे धीरे काला हो रहा है और मृत्यु की भयंकर छाया क्रमशः बढ़ रही है। चेहरे के साथ ही साथ उनके वस्त्रों में भी परिवर्तन होने लगा। उनके सब कपड़े छिन्न भिन्न होकर गिर पड़े। मूर्ति भी गिर पड़ी। तुरत ही न जाने कहां से और किस ऐन्द्रजालिक बल से बहुत से चूहे आकर उस लाश को खाने लगे, बड़े बड़े कीड़े निकल कर इधर उधर घूमने लगे। इसी तरह राजा एंजूर के शरीर का पतन और ध्वंस भी हो गया॥

इस लोमहर्षण दृश्य को देख कर रैायर्ट और जीवाना के हृदय की क्या दशा हुई, यह लिखना इस लेखनी की शक्ति के बाहर है। दोनो भय से चुपचाप उसी जगह खड़े रहे। एक कदम चलने या मुंह से बोलने की भी शक्ति उनमें न रही॥

उस कोठड़ी में फिर एक दूसरा दृश्य दिखाई दिया। कोठड़ी के एक कोने में से एक दूसरी मूर्ति और निकल आई उसके हाथ पैर टेढ़े, कठिन, आंखें ज्योतिहीन, चेहरा मलिन, मानो मुर्दा खड़ा है और गले में रेशम की डोरी पड़ी हुई है। यह मृत अन्द्रिया की मूर्ति थी॥

जीयाना भय से चुप थी और रौबर्ट कांप रहा था। इसके बाद वाली घटना और भी भयङ्कर थी। जीयाना की मोम की मूर्ति भी उसी तरह ध्वंस होने लगी। उसके सुन्दर चेहरे पर कालिमा छा गई, वह लावण्य और सुन्दरता न जाने कहां चली गई। बहुमूल्य कपड़े सब भी कट कर गिर पड़े। सुन्दर देह फूल उठा फिर पचक गया॥

रौबर्ट अब स्थिर न रह सका। इस दृश्य को देख कर उसने जीयाना को जो भय से उसके साथ लिपट गई थी दूर हटा दिया॥

जीयाना उसके इस व्यवहार से दुःखित हुई और चाहती थी कि फिर उसके पास जाकर उसे पकड़े कि इतने ही में एक दूसरी मूर्ति फिर निकल कर कोठड़ी में आ पहुंची। उसकी विकट आकृति, भयंकर आंखें, देख कर जीयाना और रौबर्ट दोनों कांप उठे, यह नेप्लस राज्य के घातक की मूर्ति थी॥

घातक की मूर्ति आते ही अन्द्रिया की मूर्ति झुकने लगी परन्तु अदृश्य होने के पहिले ही घातक ने उसके गले से रेशम की डोरी निकाल कर आन्द्री के गले में पहिना दी॥

ठीक इसी समय एक और मूर्ति वहां आ पहुंची। रौबर्ट आंखें फाड़ फाड़ कर उस मूर्ति को देखने लगा। यह डाकुओं

के सर्दार घेरियन की मूर्ति थी॥

घेरियन की मूर्ति के देखते ही फिलिपा की मूर्ति कुर्सी परसे नीचे उतर आई और घुटने टेक कर रैायर्ट की मूर्ति के सामने इस भावसे बैठ गई मानो उससे अपने किये हुए अपराधों की क्षमा माँगती हो॥

घेरियन की मूर्ति आगे बढ़ी और उसने रैायर्ट का एक हाथ पकड़ लिया। इसी समय यकायक उस छोटी कोठड़ी के भीतर जोर से शब्द हुआ "रैायर्ट ! एक तुम ही बच गये॥"

जीवाना जोर से चिल्ला उठी, "हे ईश्वर ! रक्षा करो।" उसका हर एक अंग भय से कांपने लगा। वह घुटने टेक कर बैठ गई और बार बार ईश्वर से हाथ उठा कर क्षमा भिक्षा माँगने लगी। वह फिर बोली, "हे ईश्वर! मेरे किये हुए अपराधों को क्षमा करो। मैंने नाहक तुम्हारी दिखाई हुई राह को छोड़ दिया, व्यर्थ ही पाप कर्म में लिप्त हुई॥"

जीवाना की कातर प्रार्थना रैायर्ट को भी सुनाई दी पर वह उसे उठाने या समझाने के लिये अपनी जगह से न हटा बल्कि उसी जगह खड़ा रहा। केवल एकबार उसने उसकी दशा देख ली॥

यकायक फिलिपा की मूर्ति उस समय, जिस समय यह शब्द हुआ कि रैायर्ट ! एक तुमही बच गये, भूमि पर गिर पड़ी और तुरत ही उस कोठड़ी में घोर अन्धकार छा गया जहां वह दृश्य दिखाई देता था॥

कुछ ही देर में रैायर्ट ने अपने को संभाला और वह तेजी से उस तरफ बढ़ा जिधर वह नाटक के समान दृश्य उसे दिखाई

दिये थे, पर वहां पहुंचने पर उसे दीवार के अतिरिक्त और कुछ न दिखाई दिया। उसने बहुतेरा पता लगाया और ध्यान देकर दीवार को देखा पर कहीं दरवाजे का कोई निशान तक न दिखाई दिया॥

रौबर्ट यह हाल देख कर और इस भेद का पता पाने से निराश हो कर जीवाना की ओर लौटा जो इस समय उसी प्रकार से बैठी निराशा, भय और चिन्ता के महासागर में गोते खारही थी। रौबर्ट उसके पास आया और सहारा देकर उसे खड़ी कर दिया॥

जीवाना०। (आश्चर्य से) रौबर्ट! क्या यह स्वप्न था!!

रौबर्ट०। हां जीवाना! यह भयंकर स्वप्न और मन का विकार था, डरने का कोई कारण नहीं दिखाई देता॥

जीवाना०। चलो, अब जल्द इस कमरे से चलो। इस दृश्य ने मेरे हृदय पर ऐसा विकार उत्पन्न कर दिया है कि मुझे ऐसा मालूम होता है कि मैं पागल हो जाऊंगी॥

जीवाना के गले में हाथ डाल कर रौबर्ट उस कमरे से बाहर आने के विचार से लौटा पर इसी समय उन्हें कवच के खड़कने का शब्द जोर से सुनाई दिया और जब उन दोनों ने घूम कर पीछे देखा तो उनके आश्चर्य और भय का ठिकाना न रहा, क्योंकि राजा एज़ूर का कवच उनकी ही ओर चला आ रहा था॥

"धोखा! धोखा!! मैं अवश्य इसका पता लगाऊंगा॥" कहकर रौबर्ट कवच की ओर जानाही चाहता था कि जीवाना चिल्लाई और दोनों हाथों से उसे जोर से पकड़लिया॥

इसी समय मुंह रक्खे हुए कपड़ों के पीछे से कई मनुष्य झपट कर बाहर निकल आये। रैवर्ट और जीवाना दोनों पकड़ कर समान समान भूमि पर लेटा दिये गये, पर जब तक वे अपने को संभालें इनमें से दई मनुष्य आगे बढ़े और उनमें से एक ने किसी प्रकार का अर्क उन दोनों के मुंह में टपका दिया जिससे दोनों बेहोश हो गये और उनको कुछ भी ज्ञान न रहा॥

चौबीसवां परिच्छेद।

दूसरे दिन सुबह को जब जीवाना की मूर्छा भंग हुई तो उसने देखा कि वह अपने कमरे में सोई हुई है। उसके सर में बड़ी दर्द थी, गला सूख रहा था। बड़े कष्ट से उसने अपने चित्त को शान्त किया। यकायक गत रात्रि की भयंकर घटना उसे याद आई और वह किस तरह अपने कमरे में आगई इस बात पर जब उसका ध्यान गया तब वह मन ही मन बोली, "क्या मृत राजा की प्रेतात्मा का दर्शन, शस्त्रागार की भयंकर घटना यह सब स्वप्न है?"

पर वह कुछ निश्चय न कर सकी। विचारते विचारते उसका माथा घूमने लगा, वह बार बार अपने हृदय को इन घटनाओं को स्वप्न ही कह कर सन्तोष देने लगी॥

इधर रैवर्ट को जब सुध हुई तब उसने भी अपने को उसी कमरे में पाया जिसमें वह सोया करता था। वह जीवाना की भांति इस घटना को स्वप्न नहीं समझता। उसका दृढ़

विश्वास है कि "यह समस्त घटना किसी ऐन्द्रजालिक या जादूगर के कारण से घटी है। जीवाना की तरफ से मेरे हृदय में विराग उत्पन्न कराना ही इनका उद्देश है। बेरियन और घातक की मूर्ति सजीव है वे मोम की बनी हुई नहीं हैं।" यह विचार वह क्रोध से अपना होंठ काटने लगा, उसे इस बात में अणुकुछ भी सन्देह न रहा कि इस नाटक का प्रधान पात्र बेरियन ही है॥

वह मन ही मन बोला, "बेरियन निश्चय ही चार्लस का साथी है। उसके इस कर्म के दे। कारण दिखाई देते हैं। पहिला कारण—जीवाना के हृदय में वैराग्य उत्पन्न कराना जिससे चार्लस के पूरा पूरा लाभ हो। दूसरा कारण—मेरे हृदय में भय उत्पन्न कराना जिससे मैं जीवाना के छोड़ कर चला जाऊं। आट्री और मेरी मां के शरीर का परिणाम दिखा कर मुझे चार्लस के दल में मिलाया चाहता है। पहिले जब मुझसे और बेरियम से बातें हुई थीं तब मैं उसके। उत्तम समझता था, पर अब मैं उसको पहिचान गया। अब यदि यह जीवित रहेगा तो मेरा अवश्य ही अनिष्ट करेगा। आज से यह मेरा परम शत्रु हुआ। उसके जीवित रहने से राज सिंहासन हाथ से निकल जावेगा॥"

वह उठ खड़ा हुआ और जितना शीघ्र हो सका अपने प्रातःकृत्य से निश्चिन्त होकर जीवाना के कमरे में पहुंचा। उससे बातें करने पर जब उसे यह मालूम हुआ कि गत रात्रि की घटना के वह स्वप्न समझती है तो वह कुछ निश्चिन्त हुआ क्योंकि उसे डर था कि कहीं जीवाना भय से राजमहल छोड़

योगिन का भेष धारण कर, किसी मठ में जाकर न रहने लगे। अब यह दृढ़ होकर इसी बात का उद्योग करने लगा कि जोयाना इस घटना को बराबर स्वप्न ही समझती रहे। उसने जोयाना को इस घटना को प्रकाश करने के लिये मना कर दिया जिसे उसने तुरतही स्वीकार कर लिया। इससे रौबर्ट ने समझा कि रानी जोयाना के ऊपर अभी मेरा प्रभाव बहुत कुछ है॥

कई कारणों से इस घटना को छिपाना ही रौबर्ट ने उचित समझा। प्रधान कारण तो बारटंह था जिसे वह बराबर ईर्षा भरी दृष्टि से देखा करता था क्योंकि रौबर्ट यदि किसी कारण से राजमहल से निकाल दिया जाता तो बारटंह ही उस का स्थान पाने के योग्य था। दूसरे इस घटना का हाल सुन कर सम्राट् रौबर्ट को कायर समझ कर राजमहल से निकाल दे सकता था। वह जानता था कि अन्द्रिया की मृत्यु के बाद से सम्राट् की कृपा बारटंह पर कुछ अधिक रहती है। उसके हटते ही बारटंह ऊंचे पद पर पहुंच जायेगा यह भी निश्चित बात थी। इन सब कारणों से यह विषय छिपा रखना ही इस समय उसे उचित दिखाई देता था॥

बेरियम परम शत्रु है, किसी तरह उसको नाश करें यही चिन्ता अब रौबर्ट को सताने लगी, पर इतने बड़े बलवान शत्रु को मार भगाना एक सामान्य मनुष्य का काम नहीं है। अन्त में बहुत कुछ विचारने पर रौबर्ट ने एक सिद्धान्त पक्का कर लिया जो समय पर पाठकगणों को मालूम हो जायेगा॥

भांति भांति के मनुष्य आकर उस दल को बढ़ाते चले जाते थे। आट्री का भेदिया जल्दी जल्दी आकर नये नये कुसम्बाद उसको सुनाता था। इस समय राजमहल के सभी सभासदों के चेहरे पर चिन्ता विराज रही थी। इतने सभासदों में केवल रौबर्ट ही कुछ स्थिर था क्योंकि वह विचारता था कि मेरा कोई कार्य अब सिद्ध होगा॥

जीवाना मलिन और दुःखित हो रही थी। राजविद्रोहियों की सभी बातों को भेदिया सुना जाता था पर वह कोई उपाय नहीं कर सकती थी॥

आट्री भीतर ही भीतर भीत और चिन्तित होने पर भी देखने वालों को शान्त दिखाई देता था। फिलिपा भी भीतर ही भीतर भय से कांप रही थी। वह जानती थी कि प्रजा का पूरा कोप मेरे ही ऊपर है। विद्रोहियों की जीत होने पर सब के पहिले मेरा ही प्राण लिया जावेगा। इसी कारण से वह भय से भीतर ही भीतर कांप रही थी पर बाहर वालों को निर्भय दिखाई देती थी। ऍमबुर सुन्दरी करोलिना भी इस समय भय से पीली हो रही थी पर बारटंड ऐसा न था, वह पूरे साहस से आने वाली विपद का सामना करने के लिये तैयार था। वृद्ध भेनचुरा को सब से अधिक भय था। वह अपने मन का भाव किसी तरह छिपा नहीं सकता था और उसके कांपते हुए शरीर तथा लड़खड़ाती हुई बोली से उसके हृदय की दशा मालूम होती थी।

आट्रीः। शत्रु सब अपना काम तेजी से कर रहे हैं, अब अपना कर्तव्य भी शीघ्रही निश्चय कर लेना चाहिये। यदि

प्रजा को किसी प्रकार से शान्त न किया जायेगा तो बड़ा ही बुरा परिणाम होगा ॥

फिलिपा०। क्या सेना से काम नहीं लिया जा सकता?

आट्रो०। नहीं। साधारण मनुष्य अधिक करके भीच मनुष्य बड़े ही उत्तेजित हो रहे हैं। हमलोगों के विपक्षियों ने उनको समझा दिया है कि रानी के पाप के कारण से ही नेप्लस में यह महामारी रोग हुआ था। सम्भव है कि सेना के मनुष्यों का भी यही विश्वास हो ॥

मारटंह०। चार्लस और उसके दल वाले ही इस उत्तेजना और आन्दोलन के कारण हैं। प्रधान विचारपति क्यों नहीं उनके नाम से वारंट भेज कर उनको गिरफ्तार कर लेते?

आट्रो०। उनको गिरफ्तार करते ही डाकुओं की मसली दलबल के साथ उनका उद्धार करने के लिये आक्रमण करेगी। इस समय वेरियन के साथ शत्रुता नहीं करनी चाहिये क्योंकि जिस समय वेरियन हमलोगों पर आक्रमण करेगा उस समय प्रजा भी अवश्य ही उसका साथ देगी और इसका परिणाम क्या बड़ा ही भयंकर न होगा?

मारटंह०। पर इस तरह क्या आप समझते हैं कि वेरियन आक्रमण न करेगा?

आट्रो०। मैं यह नहीं कहता कि वेरियन उन लोगों का साथ नहीं देगा पर मेरे कहने का यह मतलब है कि अगर हमलोग चार्लस से शत्रुता करने लगेंगे और यह बात वेरियन को मालूम हो जायेगी तो इसमें कोई सन्देह नहीं कि वह लड़ाई छेड़ देगा ॥

फिलिपा। (जो देरियन का नाम सुनकर घबड़ा गई थी) यह हो सकता है फिर अब कौन सा उपाय किया जाय?

करोलिना। क्या देरियन धन देकर वश में नहीं किया जा सकता? मैं तो समझती हूं कि महारानी धन देकर ऐसे २ कितने ही डाकुओं को वश में कर ले सकती हैं॥

फिलिपा। तुम अभी देरियन की प्रकृति का हाल नहीं जानतीं, इसी लिये ऐसा कहती हो। वह ऐसा मनुष्य है जो......

माद्री। (बात काट कर) फिलिपा! यह देरियन की प्रकृति की समालोचना करने का समय नहीं है॥

जोवाना। (जो अभी तक चुप बैठी थी) आप ठीक कहते हैं। इस समय हमलोगों को अपनी रक्षा का उपाय निश्चय करना है न कि देरियन की प्रकृति की समालोचना करनी है, साथ ही मैं यह भी कहती हूं कि आपलोगों को निराश न होना चाहिये क्योंकि जब मैं यह देखूंगी कि आप लोग राज्य की रक्षा का कोई उपाय नहीं विचार सकते तब मैं दर्बारी कपड़े पहिन और अपने उजले घोड़े पर सवार हो अकेली बिना किसी मनुष्य को साथ लिये राजमहल से बाहर निकलूंगी और उनलोगों से जाकर मिलूंगी जो इस समय उपद्रव कर रहे हैं। यदि वे लोग मेरा प्राण लेकर ही प्रसन्न होंगे तो कोई चिन्ता नहीं मैं वह भी देदूंगी पर इतनी प्रार्थना उनसे अवश्य करूंगी कि मेरे प्यारे बन्धु बान्धवों को छोड़ दें॥

जोवाना जिस समय यह कह रही थी वह अपने साथियों का मुंह देखती जाती थी, उसकी बोली कांप रही थी और आंखों से आंसू की बूंदें टपक रही थीं। यद्यपि उसके सभी

साथी आपस्वार्थी थे तथापि रानी की सहानुभूति भरी बातें सुनकर उनका जी भर आया॥

बारटंड०। (अपनी कुर्सी से उठ कर) नहीं महारानी! यह काम आपका नहीं है बल्कि मेरा है। आप मुझे आज्ञा दीजिये कि मैं उनलोगों के पास जाकर उनको शान्त करने का उद्योग करूं॥

जोवाना०। (बारटंड की ओर प्रेम से देख कर) मैं आपको धन्यवाद देती हूं पर बन्धु! आपको अपना जीवन संशय में डालने की आवश्यकता नहीं है। आप चुपचाप बैठें और देखें कि मैं क्या करती हूं॥

रौबर्ट जोवाना को प्रेमसे बारटंड की ओर देखते देख क्रोध से कांप उठा। वह उठ कर कुछ कहना ही चाहता था पर क्रोध ने उसका मुंह बन्द कर दिया और वह बैठा रहा। रौबर्ट की यह दशा देख फिलिपा बोली "मेरा लड़का ऐसे अवसर पर चुप क्यों बैठा हुआ है? क्या वह कोई उपाय नहीं विचार सकता?"

जोवाना०। (बिना जाने कि मैंने रौबर्ट को रंज कर दिया है) हां हां, रौबर्ट! तुम क्यों चुप बैठे हो? तुम ही कोई उपाय विचारो। (कुर्सीसे उठ कर) पर यह क्या! हजारों मनुष्यों के चिल्लाने का शब्द कहां से आ रहा है!! मालूम होता है शत्रु सब इधर ही आ रहे हैं!!!

आन्ड्रो०। (घबड़ा कर और कुर्सीसे उठ कर) तब तो लाचार होकर सेना से काम लेना पड़ेगा!!

रौबर्ट०। (हाथ से चुप रहने का इशारा करके) मेरी भी

बातें सुन लीजिये। मैं अभी तक इसी कारण से चुप रहा जिसमें आप लोग अपना विचार प्रगट करें तो उसी के अनुसार मैं भी कार्य करूं। पर अब, जब मैंने देखा कि आप लोग कुछ नहीं कर सकते तो लाचार होकर बोलना ही पड़ा। मुझे अब कोई उपाय सोचने का भी समय नहीं है क्योंकि यह देखिये (खिड़की की ओर दिखा कर) हजारों मनुष्य राजमहल पर आक्रमण करने के लिये इधर ही चले आ रहे हैं। अब मैं आपलोगों से यही प्रार्थना करता हूं कि मुझे पूरा२ अधिकार दीजिये और ऐ महारानी! आप मेरे ऊपर विश्वास रख कर चुपचाप बैठिये, मैं विद्रोहियों के सामने जाकर उनको अभी शान्त करता हूं॥

जोवाना०। (उसे प्रेम से देख कर) मैं तुम्हें पूरा२ अधिकार देती हूं॥

आन्द्री०। मैं भी तुम पर विश्वास रख कर आज्ञा देता हूं कि तुम ही इस उपकार को करके यश के भागी हो॥

रोबर्ट ने झुक कर उनको सलाम किया और वारटंह को डाह से देखता हुआ तेजी से उस कमरे के बाहर चला गया। रोबर्ट की इस समय की दृष्टि ने वारटंह को समझा दिया कि रोबर्ट उससे घृणा करता है।

इधर विद्रोही सब राजमहल के सामने एक मैदान में आकर खड़े हो गये थे। उनकी चिल्लाहट के सुनने तथा चेहरे और शस्त्रों को देखने से साफ मालूम होता था कि कुछ ही देर में अनर्थ हुआ चाहता है॥

अब विद्रोहियों की मण्डली आगे बढ़ने लगी, उनकी

चिल्लाहट तथा शस्त्रों की झनझनाहट से चारों दिशा गूंज उठी। ये लोग बराबर राजमहल की ओर बढ़ने लगे॥

इधर राजमहल की खिड़कियों में पीली और घबड़ाई हुई मूरतें खड़ी दिखाई देती थीं और कई कमरों में दासियां अच्छी अच्छी चीजें जो उनको मिल सकती थीं बांध रही थीं और इसी विचार में थीं कि जिस समय राजमहल पर आक्रमण हो तो इन चीजों को लेकर यहां से भाग जायें॥

विद्रोहियों की मण्डली राजमहल से लगभग पचास गज की दूरी पर होगी जिस समय राजमहल का सदर दरवाजा खुला और घोड़े पर सवार एक सुन्दर युवा वहां से बाहर निकला। इसके पास कोई शस्त्र न था परन्तु सर पर योद्धाओं की टोपी और हाथ में एक छोटा उजला झंडा था॥

इस युवा को सन्धिका चिन्ह लिये हुए बाहर आते देख विद्रोही खड़े हो गये पर ज्योंही उनलोगों ने पहिचाना कि यह फिलिपा का लड़का रैायर्ट है त्योंही वे लोग जोर से चिल्ला उठे—"रानी का जयपति। फिलिपा का लड़का। इसे मार डालो!! यही अन्द्रिया की हत्या करने वाला है!!"

इतना कह कर ये लोग जोर से उसकी तरफ दौड़े॥

पर ज्योंही रैायर्ट ने ये शब्द सुने और उनको अपनी ओर आते देखा उसने सम्मान के लिये अपनी टोपी उतार ली और झंडा हिलाने लगा तथा जोर से बोला—"नेपल्स के रहने वाले वीर हैं न कि डाकू। मैं आशा करता हूं कि वे लोग उस मनुष्य का प्राण न लेंगे जो बिना शस्त्र लिये उनके पास ... है तथा जिसके हाथ में पवित्र उजला झण्डा है॥"

कितने ही विद्रोही बोल उठे—"सुनो सुनो, यह क्या कहता है? इसकी बातें सुन लेनी चाहियें॥"

रौबर्टः। प्यारे भाइयो! आपको धन्यवाद है। आपलोग मेरी प्रार्थना सुनें। यदि मैं आपलोगों के प्रश्नों का सन्तोषजनक उत्तर न दे सकूं तो आपलोगों को अधिकार है कि जो जो चाहे करें पर मेरी प्रार्थना आपलोग कृपाकर सुन लें॥

रौबर्ट की बातें सुन कर कई मनुष्य बोल उठे—"यह ठीक कहता है, इसकी बातें सुन लेनी चाहियें॥"

इतने ही में दूसरे दूसरे मनुष्य चिल्ला उठे—"नहीं, यह अल्फ्रिया का खूनी है। इसकी बातें न सुननी चाहियें।" पर बहुत से मनुष्य फिर ज़ोर से चिल्लाये—"सुनो, सुनो, वह क्या कहता है?" इसके बाद एकदम सन्नाटा छा गया। सबों ने अपनी अपनी गर्दन आगे इस ढङ्ग से झुका दी कि रौबर्ट का एक भी शब्द बिना सुने न रह जावे॥

रौबर्टः। मेरे प्यारे भाइयो! आप लोग मेरी प्रार्थना पर ध्यान दें। आपलोगों की सज्जनता और वीरता संसार में प्रसिद्ध है। आपलोग याद रक्खें कि मैं भी आपलोगों में से ही हूं और एक सामान्य मछुए का लड़का हूं. आपलोग मुझे अल्फ्रिया का खूनी समझते हैं, यदि आपही की बातें सच हों और अल्फ्रिया मारा ही गया हो तो भी मैं खूनी नहीं हो सकता क्योंकि जिस रात को अल्फ्रिया मरा है उस रात को आप ही लोगों की रक्षा के लिये मैं डाकुओं से लड़ने के लिये गया था। यह बात हजारों मनुष्यों से आप लोग पूछ सकते हैं। साथ ही मैं यह भी ज़ोर देकर कहता हूं कि आपलोग तटस्थ बातों को भी सुने न

समझें वह भी उतनी ही निर्दोष हैं जितना कि एक दूध पीता बच्चा। शत्रुओं ने आपको झूठी बातें कहकर भड़काया है, उनकी बातों से आपलोग अपनी वीरता और सज्जनता को न गवावें और याद रक्खें कि रानी का कोई दोष नहीं है तथा अल्फ्रिया स्वयं मरा है॥

बहुत से विद्रोही बोल उठे—"तुम्हारी बातों का क्या मतलब है, साफ साफ कहो?"

रोबर्ट०। मेरी बातों का यह अर्थ है कि रानी के ऊपर झूठा कलङ्क लगाया गया है। ऐ नेप्लसवासियो! मैं आपलोगों से प्रार्थना करता हूं कि आपलोग जल्दी न करें। मैं आप ही लोगों पर न्याय करने का भार देता हूं। इस समय आपलोगों को शान्त होकर रानी और उनके शत्रुओं का विचार करना चाहिये। यदि आप ही लोग अपनी रानी को दोषी कहेंगे तो दूसरा कौन उनकी रक्षा करेगा? इस कारण मैं आप ही लोगों को इन बातों के विचार का भार देता हूं। मैं रानी को निर्दोष प्रमाण करने के लिये हरएक गुप्त शत्रु को या जो कोई रानी पर कलङ्क लगाया चाहते हों उनको आपलोगों के सम्मुख बुलाऊंगा और सुबह के आठ बजे से तीन बजे दिन तक उन मनुष्यों के लिये मैं हाथ में तलवार लेकर खड़ा रहूंगा। जो रानी को दोषी ठहराना चाहते हों, आवें, मैं उनसे अकेला लड़ूंगा। ऐ नेप्लसवासियो! मैं तीन दिन का समय देता हूं, इन तीन दिनों में जो मनुष्य चाहे मुझसे अकेला आकर लड़ ले और आपलोग भी इसी द्वार धर्म के विचार का न्याय करें। इस समय रङ्गभूमि में (जहां लड़ाई होगी) नेप्लस के प्रतिष्ठित

मनुष्य और बड़े २ धनवान सभी उपस्थित रहेंगे और उन्हीं लोगों के सामने यह युद्ध होगा॥

इसके बाद कुछ देर तक सन्नाटा छाया रहा॥

रौबर्ट फिर बोला—"क्या मेरी प्रार्थना स्वीकार की गई?

विद्रोहियों में से कई मनुष्य बोले—"हां ईश्वर सत्य की रक्षा करे॥"

इतने ही में दूसरे विद्रोही बोल उठे—"नहीं, हम यह नहीं मानते। यह छल कर अपना प्राण बचाया चाहता है। इसे मार डालो, रानी को मार डालो, आद्री को पकड़ कर मारो और राजमहल लूट लो॥"

इसके बाद बड़ा ही हल्ला हुआ। विद्रोही लोग आपस में झगड़ने लगे, पर अधिक विद्रोहियों की सन्धि की राय न ठहरी इस कारण से सभों को उनकी ही बातें माननी पड़ीं॥

अब रौबर्ट का बचना कठिन दिखाई देने लगा। विद्रोही सब चिल्लाते, गरजते रौबर्ट की ओर तेजी से दौड़े। रौबर्ट भागा पर कुछ ही दूर भागने पर घोड़े को ठोकर लगी और वह घोड़े से गिर कर मूर्छित हो गया॥

॥ द्वितीय भाग समाप्त ॥

अर्थ में अनर्थ

वा प्रवाल द्वीप।

तृतीय भाग।

बिहार निवासी—

[illegible]

अर्थ में अनर्थ

वा

प्रवाल द्वीप ।

(उपन्यास)

तृतीय भाग ।

[भाषान्तरित]

रमाबाई, मदालसा, विलासिनी-विलाप इत्यादि उपन्यासों के
रचयिता
बिहार निवासी—
पण्डित चन्द्रशेखर पाठक लिखित

तथा
बाबू दुर्गाप्रसाद खत्री
प्रोप्राइटर लहरी प्रेस द्वारा प्रकाशित ।

॥ श्रीः ॥

अर्थ में अनर्थ

— वा —
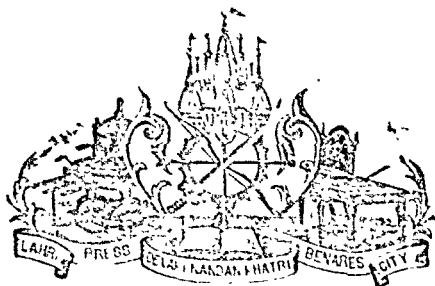
प्रवाल द्वीप।

(उपन्यास)

तृतीय भाग।

पहिला परिच्छेद।

इस समय विद्रोहियों की मण्डली में हुल्लड़ सा मच रहा था। कोई चिल्लाता था, कोई पाद्री को गाली देरहा था और कितने ही विद्रोही रोबर्ट की ओर दौड़े चले जाते थे॥

इस विद्रोहियों की मण्डली में न जाने कहां से घूमता फिरता बाल्टन भी आ पहुंचा था ओ पाद्री को गालियां देते हुए बड़े आश्चर्य से विद्रोहियों की ओर देख रहा था और जब उसने यह देखा कि रोबर्ट भागा जारहा है तथा विद्रोही तेजी से उसका पीछा किये जाते हैं तब वह घबड़ा गया और भौंचक सा खड़ा रहकर इधर उधर देखने लगा। रोबर्ट की दशा देख तथा पाद्री को गालियां देते हुए उसको बड़ी चिन्ता उत्पन्न हो गई और वह समझ गया कि मेरे पालनकर्ता और आश्रय-दाता पाद्री पर अब विपद आयाही चाहती है, उसको बचाने के लिये वह कोई उपाय सोचने लगा॥

इसी समय किसी ने पीछे से उसका कपड़ा खींचा। उसने घूम कर देखा तो बेरियन का नौकर फ्लोरिलो दिखाई दिया॥

फ्लोरिलो बोला—"यदि आइटी को बचाना हो तो मेरे साथ आओ॥"

आलटन उसके पीछे२ चला। दोनों बड़ी कठिनता से भीड़ को चीरते हुए आगे बढ़े और कुछ दूर आगे बढ़कर राजमहल की वाटिका की दीवाल के पास पहुंचे। यहां पर एक बड़े वृक्ष की छाया पड़ रही थी जिसके नीचे ये लोग खड़े होगये। फ्लोरिलो बोला, "यह जो सुनहला बिगुल तुम्हारे कमर में लटक रहा है इसे ज़ोर से बजाओ, अभी सहायता मिलेगी॥"

इतना कहकर फ्लोरिलो वहां से तेज़ी से भागा और कुछ दूर आगे जाकर छिप रहा॥

आलटन इस समय भी चुप चाप खड़ा कुछ विचार रहा था। विद्रोहियों के चिल्लाने का शब्द यहां भी उसे सुनाई देरहा था और मालूम होता था कि अब ये राजमहल पर आक्रमण किया ही चाहते हैं। इस घबड़ाहट में फ्लोरिलो के उपाय सुझाने पर भी वह न जाने खड़ा २ क्या सोच रहा था! इसी समय रीवर्ट भागता हुआ उसके पास आया और घोड़े पर से गिर कर मूर्छित हो गया*॥

इसी समय विद्रोहियों के मुंह से एक आनन्द की ध्वनि निकली और वे उछलते कूदते लोगों में रीवर्ट पर झपटे। अब आलटन ने दूसरा कोई उपाय न दिखाई देता समझ कर अपने पास वाला बिगुल ज़ोर से बजाया जिसकी ध्वनि दूर दूर तक

* दूसरे भाग का पांचवां परिच्छेद देखिये।

चारो ओर गूंज उठी। यह ध्वनि राजमहल में भी पहुंची जिसे उनलोगों ने विद्रोहियों की आनन्दसूचक ध्वनि समझी और अपनी २ जान बचाने का उपाय विचारने लगे॥

इधर बाहर उस बिगुल के शब्द ने और ही काम किया। इसी समय कई सवार जो कि सशस्त्र थे सामने से आते हुए दिखाई दिये जिन में आटक, गैस्पर और जेनिओ भी थे। साथ ही अचानक उस बिगुल के शब्द को सुन कर वे विद्रोही जो रोबर्ट की ओर जारहे थे रुक गये और इधर उधर देखने लगे॥

बेरियन के साथी आटक, गैस्पर और जेनिओ तथा उनके साथ वाले सिपाही वालटन और रोबर्ट को घेर कर खड़े हो गये। इस समय वालटन रोबर्ट को होश में लाने का उद्योग कर रहा था॥

आटक०। वालटन! क्या आज्ञा है? इस समय हमलोग आपका कौन सा काम करें?

वालटन०। भाई! किसी तरह इन विद्रोहियों को शान्त करो और इन्हें समझाओ कि ईश्वर की सृष्टि में विना कारण विद्रोह मचाकर रक्त बहाना बड़ा पाप है॥

आटक०। ऐसा ही होगा। (जेनिओ की ओर देख कर) तुम अपनी मण्डली के तिहाई मनुष्यों को लेकर इनलोगों को शान्त करो और जोर जोर से बेरियन का नाम लेकर विद्रोहियो से कहो कि उनकी आज्ञा है कि एक भी मनुष्य का प्राण न लिया जाये, यहां तक कि यदि कोई बड़ा शत्रु भी सामने आ जाये तो वह भी छोड़ दिया जाये और साथ ही यह भी कह दो कि रोबर्ट का किया हुआ प्रस्ताव मान लिया

गया, अब किसी प्रकार के विद्रोह की इस समय आवश्यकता नहीं है ॥

लेनिभो कई मनुष्यों को साथ लेकर वहां से चला गया और फाटक की आज्ञानुसार काम करने लगा। फाटक की यह आज्ञा जङ्गली आग की तरह बात की बात में चारो ओर फैल गई और वे विद्रोही जो कुछ ही देर पहिले शेर की भांति मनुष्य रक्त के प्यासे हो रहे थे अब बकरी की भांति शिथिल हो गये मानो वे बेरियन की आज्ञा के विरुद्ध कुछ कर ही नहीं सकते और एक दूसरे से कहने लगा कि बेरियन दरिद्रों और दुखियों का प्राणदाता है, यही एक ऐसा मनुष्य है जो दुःखियों का दुःख दूर करता है, कैसा भी धनवान क्यों न हो पर उसे भी दण्ड देता है और यही हमलोगों को उन्नति की राह बताता है। हमलोगों को उसकी आज्ञा माननी ही पड़ेगी॥

यही कहते हुए लोग शान्त हो कर अपने अपने घर की ओर लौट चले ॥

इसी बीच में रैायर्ट की मूर्छा भङ्ग हुई और उसने आंखें खोल कर देखा तो अपने ऊपर एक बहुत ही सुन्दर युवा को जिसकी बड़ी बड़ी काली आंखें उसके चेहरे की ओर उत्सुकता से देख रही थीं, झुके हुए पाया॥

रैायर्ट को आंखें खोलते देख वालटन बड़ी नम्रता से बोला, "मैं तो बड़ी चिन्ता में था कि घोड़े से गिरकर कहीं तुम्हें कोई हानि न पहुंची हो !!"

रैायर्ट०। (धीरे धीरे उठकर तथा अपने चारो ओर कई मनुष्यों को खड़े देख) येलोग कौन हैं?

इसके बाद रौबर्ट ध्यान से सब मनुष्यों को देखने लगा और आटक तथा गैस्पर को पहिचान कर बोला "आह! मैं इनको पहिचानता हूं, ये बेरियन के साथी हैं॥"

बालटन। तुम्हें इनको धन्यवाद देना चाहिये, क्योंकि इनलोगों ने ही तुम्हारी जान बचाई है॥

आटक। ऐ बालटन! सब से पहिला धन्यवाद आपको मिलना चाहिये क्योंकि यदि आप बिगुल बजाकर हमलोगों को न बुलाते तो हमलोगों को किसी तरह यह नहीं मालूम हो सकता था कि रौबर्ट को सहायता की आवश्यकता है। और ऐ रौबर्ट! जब कभी तुम्हें समय मिले तुम अपनी रानी से कहना कि उन्हीं डाकू और लुटेरों के कारण जिनको तुम सदा घृणा की दृष्टि से देखती हो, तुम्हारी जान और राजमहल बचा है॥

गैस्पर। (बहुत धीरे से) सम्भव है कि बेरियन की इच्छा कुछ दूसरी ही हो॥

आटक। (गैस्पर की ओर देखकर) बेरियन कभी रक्त बहाना नहीं चाहता॥

गैस्पर। सो हो, हमलोगों ने तो इस बिगुल की और इसके बजाने वाले की आज्ञा पालन की है, अब हमलोग किसी तरह दोषी नहीं हो सकते॥

इन लोगों की बातों से रौबर्ट अच्छी तरह समझ गया कि इस युवा ने केवल मेरी ही जान नहीं बचाई है बल्कि इसने राजमहल के सब मनुष्यों के साथ उपकार किया है। वह चाहता ही था कि बालटन को धन्यवाद दे कि इतने ही

में एक सवार तेजी से वहां आ पहुंचा और आटक से बोला, "जेनिंगो ने मुझे भेजा है कि जाकर कह दो कि राजमहल का आक्रमण रुक गया, विद्रोही सब शान्त हो गये और यहां से चले आ रहे हैं तथा अब सब दोषों का विचार रोबर्ट के किये हुए प्रस्ताव के अनुसार ही होगा॥"

आटक०। बहुत अच्छा। अब हमलोगों को भी चलना चाहिये। (वाल्टन की ओर देखकर) ईश्वर आपको चिरायु करे आप एक ऐसे मनुष्य हैं कि आपका काम करने से हमको बड़ी प्रसन्नता होती है क्योंकि जब कभी आपने विगुल बजाकर हमलोगों को बुलाया है, तब परोपकार ही के लिये। अच्छा, अब हमलोग जाते हैं॥

इतना कहकर उत्तर पाये बिना ही आटक तेजी से घोड़े पर सवार होकर वहां से चला गया। गिल्बर तथा दूसरे दूसरे मनुष्य भी इधर उधर चले गये॥

जब तक बेरियन के मनुष्य दिखाई देते रहे रोबर्ट टकटकी बांधे उनकी ओर देखता रहा और जब वे लोग उसकी दृष्टि से बाहर हो गये तब बोला "यह बड़े आश्चर्य की बात है कि बेरियन के साथियों ने मेरी जान बचाई!!"

इसी समय उसे शस्त्रागार के मोम की मूर्तियों का दृश्य याद आया कि उस कोठड़ी में जोर से यह शब्द हुआ था कि "रोबर्ट तुम बच गये॥"

रोबर्ट०। ऐ बुआ! मैं तुम्हारा बड़ा ही अनुगृहीत हूं, मेरी जीभ में इतनी सामर्थ्य नहीं है कि यह तुम्हें धन्यवाद

* द्वितीय भाग का अन्तिम परिच्छेद देखिये।

दे सके। अस्तु, मेरा नाम तो तुम जानते ही हो, अब अपना मुझे बतादो, जिसमें सदा तुम्हारे उपकार को स्मरण कियाकरूँ।

वालटन०। मेरा नाम "वालटन" है॥

रोवर्ट०। क्या यह सच है? क्या तुम वही हो जिसका नाम मैंने कई बार बाद्री से सुना है? क्या तुम वही युवा हो जो सदा एकान्त में रहना और परोपकार करना चाहता है?

वालटन०। हां, मैं वही हूं॥

रोवर्ट०। मैंने कई बार तुम्हारी प्रशंसा सुनी है और आज इसका पूरा पूरा प्रमाण भी मिल गया। आह! यह कोई आश्चर्य की बात नहीं है कि बाद्री ने तुम्हें राजमहल में लाने के बारे में सदैव इन्कार किया है। परन्तु इस समय तुम्हें कृपाकर महारानी के पास चलना होगा। आओ, वालटन! चलो॥

वालटन०। मैंने ऐसा कौन काम किया है जिसके लिये आप मेरी इतनी प्रशंसा कर रहे हैं। इस समय मैंने जो कुछ काम किया है वह अपने धर्म और कर्तव्य के अनुसार ही किया है, फिर मुझे महारानी के पास ले जाना व्यर्थ है। आप क्षमा कीजिये॥

रोवर्ट०। नहीं, ऐसा नहीं हो सकता। यदि मैं तुम्हें इस समय महारानी के पास न ले जाऊंगा तो वे कभी मुझे क्षमा न करेंगी, साथ ही मैं यह भी कहता हूं कि इस समय तुम्हें यहां देख कर बाद्री भी प्रसन्न होगा। इसके अतिरिक्त तुम्हें फिलिप, करोलिना और वारटंह इत्यादि बहुत से धन्यवाद देंगे॥

वालटन०। मुझे धन्यवाद की तो कोई आवश्यकता नहीं

है। अच्छा चलिये, आपकी बातें न मानती भी ठीक नहीं॥

क्योंकि इस समय इसे वह स्त्री याद आ गई थी जिसने इसे सुनाया था*। यह समझता था कि शायद वह भेद भी इस समय खुल जाये॥

अब रैबर्ट उठ खड़ा हुआ। वह अपने बहादुर घोड़े के लिये इधर उधर देखने लगा पर वह कहीं दिखाई न दिया। अस्तु उसने उसका ध्यान छोड़ वालटन का हाथ पकड़ा और उसे राजमहल की ओर लेचला॥

थोड़ीही दूर पर इन्हें एक छोटासा दर्वाज़ा दिखाई दिया जिसे रैबर्ट ने अपने जेब से चाभी निकाल कर खोला। वाल्टन को अच्छी तरह याद था कि यह वही दर्वाज़ा है जिससे सुन्दरी उसे पहिले लेगई थी। सीढ़ियों पर चढ़कर रैबर्ट उसे लिये हुए एक कमरे में चलागया। यह कमरा भी वालटन का परिचित था और इसके बाद वे दोनों उसी कमरे में पहुंचे जिसमें एक सुन्दरी पलंग पर लेटी हुई वालटन को दिखाई दी थी॥

* [illegible]

दूसरा परिच्छेद।

अब हम अपने पाठकों का ध्यान राजमहल में रहनेवाले प्रधान प्रधान मनुष्यों की उस समय की अवस्था पर दिलाया चाहते हैं जिस समय कि रौबर्ट उन लोगों से बिदा होकर विद्रोहियों को शान्त करने के लिये बाहर निकला था॥

एक खिड़की में बारटबड, करोलिना और जीवाना खड़ी थीं, दूसरी में आड्रो, फिलिपा और मेनचुरा खड़े थे तथा ध्यान देकर उस दृश्य को देख रहे थे जो उनके सामने मैदान में दिखाई दे रहा था॥

जिस समय रौबर्ट विद्रोहियों को समझा रहा था कि रानी जीवाना बिल्कुल निर्दोष हैं उस समय जीवाना अपने मनही मन बहुत प्रसन्न हो रही थी, फिलिपा अपने पुत्र की वीरता और बातों का परिणाम अच्छा निकलता समझ आनन्द से गद्गद हो रही थी और आड्रो प्रसन्न होकर विचार रहा था कि रौबर्ट अब भी अपनी उन्नति कर सकता है बल्कि उसने फिलिपा के कानके पास मुंह ले जाकर कह भी दिया कि रौबर्ट के राजसिंहासन पर बैठने की अब भी आशा है। इसी समय करोलिना रौबर्ट की इतनी प्रशंसा करने लगी जिसे सुन बारटबड ईर्षा से जल मरा॥

इससे कुछ ही देर पहिले जीवाना घबड़ा कर चाहती थी कि राजमुकुट और राजसिंहासन को त्यागकर रानी मालिदा की भांति मठ में जाकर शान्तनापूर्वक अपना दिन बितावें परन्तु अब, जब उसने देखा कि उसका प्यारा उसे निर्दोषी

प्रमाणित करने के लिये इतना उद्योग कर रहा है और कह रहा है कि जो कोई रानी को दोषी ठहराता हो उससे मैं अकेला लड़ने के लिये तैयार हूं तो उसकी इच्छा बदल गई और उसने कर्ममय जगत् की इस सुख स्वच्छन्दता को त्याग देना उचित न समझा। उसका हृदय आनन्द से फूल उठा और रोबर्ट के समान सुन्दर उसे कोई दूसरा दिखाई न देने लगा॥

परन्तु उसका यह आनन्द भी देर तक ठहर न सका और तुरत ही उस आनन्द के बदले शोक का चिन्ह उसके चेहरे पर बिराजने लगा, क्योंकि उसी समय उसने देखा कि विद्रोहियों की मण्डली में फुटमत हो गई और वे लोग राजमहल की ओर बढ़ने लगे॥

अचानक आट्री को बालटम दिखाई दिया जो शीघ्रता से फ्लोरिलो के साथ वहाँ से भागा जाता था। आट्री को बालटम और फ्लोरिलो दोनों को एक साथ देखने की स्वप्न में भी आशा न थी। वह इन दोनों के बारे में कुछ विचार ही रहा था कि उसका ध्यान यकायक फिर सामने मैदान की ओर गया और रोबर्ट भागता हुआ उसे दिखाई दिया जिसके पीछे बहुत से विद्रोही दौड़े चले आते थे॥

रानी जोआना ने भी यह हाल देखा। उसकी सब आशा निराशा से बदल गई और उसकी दशा ऐसी खराब हुई कि आट्री को उसे समझाना ही पड़ा यद्यपि उसकी इच्छा इस समय यह न थी और वह किसी दूसरी ही धुन और विचार में मग्न रहना चाहता था। इसी समय बिगुल का शब्द उनको सुनाई दिया जिससे वे लोग और भी घबड़ा गये॥

करोलिना घबड़ा कर बोली, "हमलोगों को झट्‌ भागना चाहिये, अब यहाँ ठहरने का समय नहीं है॥"

फिलिपा:। (निराशा से) हमलोग भागकर कहाँ जासकते हैं? भागने के बदले यहीं रह कर उन मनुष्यों की कृपा पर भरोसा रखना अच्छा है जो इस कमरे में आजायेंगे न कि बाहर निकल कर लाखों मनुष्यों की भीड़ में अपने टुकड़े टुकड़े कराने और विद्रोहियों के बुरे व्यवहार से अपनी मानहानि करानी उचित है॥

मारटंड:। भागो भागो, तुमलोग शीघ्र अपने को कहीं छिपाओ। (कुछ सोच कर) तुमलोग इस समय तहखानों में जा छिपो और मैं सेना की ओर जाता हूं॥

मीयाना:। नहीं, मैं नहीं जाऊँगी। यदि विद्रोही राज-महल में आ जायेंगे तो मैं उनके पास जाऊँगी और या तो उन्हें शान्त करूंगी नहीं तो अपना प्राण दूँगी॥

मारटंड:। और मेरी यह तलवार तब तक तुम्हारी रक्षा करेगी जब तक कि मैं जीता रहूँगा॥

आड्री:। सम्भव है कि विद्रोही रुक जायें और राजमहल उनके अत्याचार से बच जावे॥

इसके बाद एकदम सन्नाटा छा गया और सब खिड़की के पास से हट कर चुपचाप खड़े हो गये॥

कुछ ही देर बाद मारटन प्रसन्नता से चिल्ला उठा, "अब डर नहीं है, सहायता पहुँच गई॥"

इस शुभ सम्वाद को सुनकर सभों के हताश हृदय में कुछ कुछ आशा का संचार हो गया। सभों ने खिड़की के पास जाकर

देखा तो कई सशस्त्र मनुष्य राजमहल की वाटिका की दीवार के पास से निकलते हुए उनको दिखाई दिये जिनका प्रत्यक्ष बेरियन का नाम लेकर विद्रोहियों को शान्त कर रहा था। बेरियन के नाम में मानो कोई मोहिनी शक्ति थी जिसको सुनते ही विद्रोही सर झुकाकर वहाँ से इधर उधर जाने लगे। यह देख कर वारटंड फिर बोला, "कैसे आश्चर्य की बात है! क्या हमलोगों का उद्धारकर्त्ता और राजमहल का बचाने वाला, डाकुओं का सर्दार बेरियन है !!"

आर्ट्री०। हमलोगों को यह मानना ही पड़ेगा कि बेरियन के साथी डाकुओं की प्रकृति बड़ी ही रहस्यमयी है॥

वारटंड०। देखो देखो, वे लोग शान्त होकर चले जा रहे हैं,वेलोग अपनी महारानी से पुरस्कार या धन्यवाद भी नहीं लिया चाहते मानो उनको अपनी रानी की कुछ पर्वाह ही नहीं हो॥

सीवाना०। (सन्देह से) पर रौबर्ट कहाँ है?

फिलिपा०। (शोक से) हां हां, मेरा लड़का किधर गया और क्या हुआ, वह कहीं दिखाई नहीं देता॥

आर्ट्री०। मैंने उसे घोड़े पर सवार भागते हुए देखा है और अब वह अवश्य किसी जगह जाकर छिप रहा होगा। जब वह सुनेगा कि विद्रोही शान्त हो गये तब यहाँ लौट आवेगा। आपही इस समय उसे खोजने के लिये बाहर निकलना निरर्थक है क्योंकि मैं यह नहीं जानता कि वह किधर गया तथा कहाँ छिपकर बैठा है॥

इसके बाद कुछ देर तक फिर सन्नाटा छा गया और स

अपने अपने विचारों में लवलीन हो गये॥

इस समय आड्री की विचित्र दशा थी। जब वह वाल्टन और फलोरिलो के एक साथ रहने के बारे में विचारता तो वह बड़े क्रोध में आ जाता कि उनके भेदिये ने उसे यह भेद क्यों न बताया, फिर जब उसका ध्यान बिगुल के शब्द पर जाता तो यह विचारता कि क्या वाल्टन ही ने हमलोगों की रक्षा की। क्योंकि वह एक सुनहला बिगुल वालटन के कमर में लटकता हुआ कई बार देख चुका था। वह बारबार अपने हृदय से यही प्रश्न करता कि क्या वाल्टन हेरियन का साथी है?

इसी समय यकायक कमरे का दर्वाज़ा ज़ोर से खुल गया और रौबर्ट तथा वाल्टन कमरे में आते हुए दिखाई दिये॥

यकायक जीयाना के मुंह से एक आनन्द की ध्वनि निकली क्योंकि उसने देखा कि मेरा प्यारा रौबर्ट निरापद लौट आया। फिलिया के कण्ठ से भी एक प्रकार की ध्वनि निकली थी पर वह आनन्द की न थी बल्कि उससे शोक, आश्चर्य और घबड़ाहट टपक रही थी क्योंकि उसने वाल्टन को भी रौबर्ट के साथ आते हुए देखा॥

आड्री फिलिया का शब्द सुनकर उसकी ओर घूमा तो उसके चेहरे को मुर्दे के समान पीला और उसकी आंखों को भय से वाल्टन को देखते हुए पाया क्योंकि फिलिया ने वाल्टन को पहिचान लिया था और जिसके कारण से उसकी यह दशा होगई थी॥

आड्रीः। (फिलिया के कान के पास मुंह लेजा कर) क्या तुम उसे जानती हो?

फिलिपा०। हां हां, मैं उसे जानती हूं, मैंने उसे पहिले भी देखा है। उसे हटाओ, उसे मेरे सामने से दूर करो॥

आर्ड्री०। मैं आज्ञा देता हूं कि तुम चुप रहो और अपने को सम्हालो॥

इन शब्दों ने बिजली की तरह फिलिपा पर अपना प्रभाव दिखाया। उसकी दशा बहुत जल्द सुधर गई और वह एकबार चारो ओर देखकर तेजी से वालटन की ओर बढ़ी जो अभी तक दर्वाजे ही के पास खड़ा खड़ा विचार रहा था कि उस कमरे में जायँ या न जायँ जहां वही स्त्री बैठी हुई दिखाई दे रही है जिसने मुझे एकबार पहिले प्रेम से बुलाया था और फिर कुछ देख घबड़ा कर भगा दिया था॥

फिलिपा वालटन के पास जाकर बोली, "मालूम होता है आप मेरे लड़के सर रैाबर्ट के मित्र हैं। आइये, आप भीतर आइये। (बहुत धीमे स्वर में) आपकी सज्जनता के ऊपर भरोसा करके आपसे प्रार्थना करती हूं कि आपके साथ मेरा पहिले भी साक्षात हुआ था यह यहां प्रगट न करेंगे॥"

वालटन समझ गया कि यह कोई दूसरी स्त्री नहीं है बल्कि वही प्रसिद्ध फिलिपा है जिसकी सुन्दरता की प्रशंसा उसने कई बार सुनी है। उसने इशारे ही में फिलिपा को समझा दिया कि उसका भेद प्रगट न किया जायेगा और फिर आर्ड्री की ओर देख मुसकुराता हुआ कमरे में चला आया॥

आर्ड्री०। (मुसकुराकर) निर्जन प्रियता ही जिसके लिये प्रधान है वह राजमहल में किस तरह से चला आया!!

वालटन कुछ उत्तर दिया ही चाहता था कि रैाबर्ट

जीवाना को सम्बोधन करके और वालटन की ओर देखते हुए बोला, "आप से मिलने की प्रसन्नता के कारण मैं उस मनुष्य को जिसने केवल मेरा ही प्राण नहीं बचाया बल्कि राजमहल के सब मनुष्यों के साथ बड़ा भारी उपकार किया, आपसे मिलाना भूल गया। आशा है वह सज्जन मेरा अपराध क्षमा करेंगे।"

जीवाना०। (वालटन की ओर देखकर) हमलोग हृदय से आपको धन्यवाद देते हैं। मुझे अब अपना नाम बताइये जिसमें सदा आपके उपकार को सम्मान से स्मरण किया करूँ॥

आट्री०। इन्हीं का नाम वालटन है जिसके बारे में मैं कई बार आपसे कह चुका हूं॥

जीवाना०। एं! क्या यही है जो तुम्हें बहुत प्यारा है और जिसे तुमने बचपन ही से पाला है!!

आट्री०। हां, यह वही है।

जीवाना०। (वालटन की ओर देखकर) ऐ बन्धु! आपने किस तरह इस राजमहल को और रेवर्ट को बचाया?

रैवर्ट०। यह देखिये, यह बिगुल जो इनके कमर से लटक रहा है इसके शब्द में एक अपूर्व शक्ति है, जिसके कारण से हमलोगों की जान बची और डाकुओं के एक दल ने आकर सब विद्रोहियों में शान्ति फैला दी॥

जीवाना०। (हँस कर) आपके इस बिगुल में वह कौन सी मोहिनी शक्ति है जिससे डाकुओं ने भी इसकी आज्ञा पालन की। आशा है आप इस भेद को यहाँ प्रगट कर देंगे यद्यपि मैं अच्छी तरह समझती हूँ कि डाकुओं से आपका कोई लगाव न होगा, पर यह बड़े आश्चर्य की बात है कि वेरियन

के साथियों ने हमलोगों की जान बचाई॥

वालटन०। यह सच है महारानी! कि येरियन के साथियों ही ने आपकी जान बचाई और यह भी सच है कि इसी बिगुल के शब्द ने डाकुओं को बुलाया जिससे विद्रोहियों में शान्ति फैली पर आप इतना अवश्य विश्वास रक्खें कि मैं उस का साथी नहीं हूं और न मेरा उससे कोई सम्बन्ध ही है। तथा मुझे इस बिगुल का भेद बताने से क्षमा करें॥

जोवाना०। हे वालटन। आपके उपकार को मैं जन्मभर नहीं भूल सकती। आपने आज बड़ा भारी काम किया जिसके लिये मैं फिर हृदय से धन्यवाद देती हूं। अब मैं इस बिगुल का भेद भी नहीं सुना चाहती। पर कैसे आश्चर्य की बात है! येरियन भी कैसा अद्भुत शक्ति सम्पन्न मनुष्य है !! कि नेपल्स के रहनेवाले अपनी राजमुकुटधारिणी रानी को त्याग कर डाकुओं के सर्दार की आज्ञा इतनी मानते हैं, मैं इस डाकुओं के सर्दार येरियन को एकबार देखा चाहती हूं !!!

रानी जोवाना के मुंह से इतना बाहर निकलते ही कमरे का दूसरा दरवाजा जोर से खुला और "रानी की इच्छा पूर्ण हो।" कहता हुआ येरियन रानी के सामने आकर खड़ा हो गया!!

तीसरा परिच्छेद।

अचानक डेरियन के कमरे में आजाने से सभी मनुष्य भीत, स्तम्भित तथा चिन्तित से हो गये। यहां तक कि वालटन भी चकित हो गया। जीवात्मा ने देखा और पहिचाना कि अस्त्र-शाला में यही मूर्ति उसे दिखाई दी थी जिसने कहा था कि "रौबर्ट तुम बच गये।" इस समय इस मूर्ति को देखकर उसे दृढ़ विश्वास हो गया कि उस रात्रि की घटना स्वप्न ही नहीं थी वरन् सच्ची और वास्तविक घटना थी। डाकू सर्दार डेरियन ही इस नाटक का प्रधान नट था॥

जिलिया भय से घबड़ा उठी। उसकी गर्दन एक ओर झुक गई और आंखें थरथराहट के साथ डेरियन को देखने लगीं। डेरियन को अपनी ओर देखते देख वह भय से चिल्ला उठी, उसका ज्ञान लोप होने लगा और थरथराहट से चेहरा पीला पड़ गया। आट्री उसका यह हाल देख उसे जल्दी से दूसरे कमरे में ले गया। यह देख डेरियन मुसकुराया। सारांश यह कि इस समय जितने मनुष्य इस कमरे में थे सभी भय और थरथराहट से कांप रहे थे॥

कुछ देर तक तो वालटन आश्चर्य से डेरियन की ओर देखता रहा पर जब उसका आश्चर्य कुछ कम हुआ वह बड़ी नम्रता और प्रीति से बोला—'तुम्हारे मनुष्यों ने आज जो उपकार मेरे साथ किया है उसके लिये मैं [illegible] धन्यवाद देता हूं।'

डेरियन: [illegible]

द्वार से बड़ा ही प्रसन्न हुआ और आज उन्हें आज्ञा दे दी है कि जब कभी दया और परोपकार के लिये तुम उन्हें बुलाओ वे सदा तुम्हारी आज्ञा पालन करने के लिये प्रस्तुत रहें। तुमने आज उन्हें बुलाकर और राजमहल तथा रौयर्ट को बचाकर मुझपर भी उपकार किया क्योंकि मैं रौयर्ट को कष्ट नहीं दिया चाहता, आशा है कि सर रौयर्ट अब आगे के लिये सचेत हो जायेंगे॥

रौयर्ट०। ऐ बेरियम! तुम्हारे मनुष्यों ने मेरे साथ जो उपकार किया है उसके लिये मैं भी तुम्हें धन्यवाद देता हूं परन्तु मैं अब आशा करता हूं कि फिर कभी तुम मुझे उपदेश न दोगे। मेरे हृदय में जो बातें भरी हुई हैं वे किसी ऐन्द्रजालिक के मोहमन्त्र से नहीं निकल सकतीं॥

जीवात्मा अभी तक चुप बैठी थी, अब रानी की भांति गर्व से माथा ऊँचाकर बोली—"बेरियम क्या अपनी रानी के पास आधीनता स्वीकार करने और क्षमा मांगने आया है?"

वारटंह हाथ में नङ्गी तलवार लिये आगे बढ़कर बोला, "अवश्य! नहीं तो आज उसकी दुर्दशा भी हो जायेगी!!"

बेरियम के चेहरे पर क्रोध के चिन्ह दिखाई देने लगे पर उसने अपने को सम्हाला और शान्त स्वर से बोला, "मूर्ख बालक! मुझे क्यों क्रोधित किया चाहता है?"

इतना सुनते ही वारटंह क्रोधित होकर बेरियम पर आक्रमण किया ही चाहता था कि जीवात्मा ने उसको रोका और ऐसा करने के लिये मना किया। वारटंह पीछे हट गया॥

बेरियम०। आपने अभी अभी पूछा है कि बेरियम यहां

क्या आधीनता स्वीकार करने आया है तो इसका उत्तर यही है कि आपने डाकुओं के सर्दार को देखने की इच्छा प्रगट की थी इसलिये वही मनुष्य आपके सामने खड़ा है॥

जोवाना०। पर मैं यह जाना चाहती हूँ कि तुम यहां राजभक्त प्रजा की नाईं आये हो या राजद्रोही शत्रु के भाव से?

बेरियन०। जो राजा या रानी अपनी प्रजा के साथ बुरा व्यवहार करते हों या बुरा दृष्टान्त उन्हें दिखाते हों उनको मैं राजा या रानी नहीं मानता॥

इतने ही में रैयर्ट ज़ोर से बोल उठा—"चुप रहो॥"

जोवाना०। नहीं, उसे बोलने दो और तुम शान्त होकर बैठो, तुम बीच में क्यों बोलते हो?

बेरियन०। ऐ रानी! यदि आप चाहें तो मुझ सरीखे हज़ारों मनुष्यों को वश में कर ले सकती हैं यहां तक कि मेरे कुल साथी आपकी सेवा के लिये सदा प्रस्तुत रह सकते हैं परन्तु बात यह है कि केवल करोड़ों मनुष्यों का अधीश्वर रहने से ही मनुष्य राजा या रानी नहीं कहलाता। राजा या रानी तब ही कहा जा सकता है जब वह अपनी प्रजा का प्रिय हो, अपने आश्रितों की भलाई चाहे और सदा उनके सुख दुःख का साथी रहे। आज नेपल्स के सिंहासन पर बैठे आपको चालीस ही दिन हुए हैं पर बताइये तो सही कि इतने दिनों में प्रजा को कौन सा लाभ हुआ है और कौन सी हानि नहीं हुई है? जब आप बालिका थीं और आप राज सिंहासन पर विराजी न थीं उसी समय से आपकी प्रजा में नाना प्रकार की बातें आपके विषय में फैल रही थीं पर प्रजा अनुमान करती थी

कि सिंहासन पर बैठने से आपकी चाल सुधर जावेगी, विलासिता का अधर्मपथ आप छोड़ देंगी और प्रजा के सुख दुःख में भाग लेंगी। पर आपने क्या यह किया? यदि आप यह किये होतीं तो आज करोड़ों मनुष्यों का विश्वास आप पर जम जाता, लाखों तलवारें आपके बचाने के लिये मैदान में चमकतीं और लाखों मनुष्य आपके लिये प्राण गँवाते। आप ही आपके जितने साथी हैं सभी स्वार्थी..............

जोवाना। (बात काट कर) बहुत हुआ, अब और नहीं सुना चाहती। मेरे विरुद्ध तुम जो कुछ कहो मैं सुनने के लिये तैयार हूं पर अपने साथियों की, अपने प्यारे बन्धुबान्धवों की निन्दा नहीं सुन ....

इतने ही में रोबर्ट और बारटंड दोनों तलवार निकाल कर येरियन पर झपटे। येरियन भी अपनी तलवार निकाल लड़ने के लिये तैयार हो गया॥

एक मनुष्य के ऊपर दो मनुष्य आक्रमण करें यह मालटन से न देखा गया। वह अपनी छोटी तलवार निकाल कर येरियन के बगल में खड़ा हो गया। अब रोबर्ट के साथ मालटन और येरियन के साथ बारटंड का युद्ध होने लगा॥

इस समय जोवाना आशा करती थी कि येरियन कैद कर लिया जावेगा॥

क्षण भर ही में लड़ाई समाप्त हो गई। एक ओर येरियन ने बारटंड को गिरा दिया और दूसरी तरफ रोबर्ट ने मालटन को। येरियन चिल्लाकर बोला—"खबरदार! इसको मारना मैंने बारटंड को नहीं मारा है॥"

रोबर्ट अपनी तलवार म्यान में करके बोला—"हे बा-
लटन! मैं तुम्हें जीवनदान देता हूं क्योंकि कुछ देर पहिले तुमने
मेरी जान बचाई थी, अब मेरा तुम्हारा कोई नाता न रहा।
तुम डाकू के दलवाले हो। विश्वासघातक हो, तुम्हें तो अवश्य
मारता पर तुमने मेरी जान बचाई है इसीलिये छोड़ दिया॥

बालटन०। (डट कर) मेरे हाथ में यदि यह छोटी तल-
वार न रहती तो मैं तुम्हें मजा दिखाता और तुम कभी मुझे
छुड़ा न सकते। यदि फिर कभी अवसर आवेगा तो मैं अवश्य
तुम्हारा गर्व खर्व करूंगा॥

रोबर्ट घृणा से हँसने लगा। घेरियन बोला—"बालटन
को तुम सामान्य मनुष्य न समझना, उसके ऐसा साहसी कोई
मनुष्य तुम्हारे यहां है? पर रोबर्ट और बालटन! तुम लोग
कितने बड़े भूले हो, यह तो बताओ कि यदि मुझे कैद भी
कर लेते तो कितनी देर यहां रख सकते थे। क्या अभी तक
मेरी शक्ति, साहस और सम्पत्ति तुम्हारे समझ में न आई?
(जीयाना से) हे रानी! मैं बन्धुभाव से आपको परामर्श
(सलाह) देने आया था पर आपने उसे न माना। अस्तु......

जीयाना०। (गर्व से) बन्धुभाव से?

घेरियन०। (उससे भी अधिक गर्वित स्वर में) निःसन्देह!
यदि इस समय भी आप मेरी सलाह के अनुसार चलने का
वचन दें तो मैं शपथ पूर्वक कहता हूं कि मैं आपकी रक्षा पूरी
तरह से करूंगा। अब हे नेटलस की महारानी! आप मेरी
यह बात ध्यान देकर सुनें—"आज आपने मुझे देखना चाहा,
मैं आपके सन्मुख आकर खड़ा हो गया पर शोक है कि इस

यह राजकीय शस्त्रागार था। बेरियन वहां टटोल कर दीवाल में कुछ खोजने लगा। उसका भाव देखकर वालटन चकित और विस्मित हो रहा था। अचानक शस्त्रागार की दीवाल में एक दर्वाजा पैदा हो गया। उस दर्वाजे से होकर ये लोग जिस राह पर चले वह पहाड़ की गुफा की भांति लंबी नीची जगह थी। कुछ दूर और आगे बढ़ने पर बेरियन रुका और उसने ताली लगाकर एक और दर्वाजा खोला और दोनों राजमहल के बगीचे के एक कोने में जा पहुंचे। कुछ ही दूर आगे बढ़ने पर कई राजकीय भृत्य तथा सार्जेंटों से उनकी भेंट हुई। वह सब इनको देखते ही सम्मानार्थ उठ खड़े हुए। वालटन जितनाही बेरियन की शक्ति, सामर्थ तथा अपूर्व कार्यवली देखता जाता था उसकी श्रद्धा बेरियन पर उतनी ही बढ़ती जाती थी॥

बेरियन तथा वालटन गुप्तपथ से राजमहल के बाहर हो गये। बेरियन बोला—"चलो, अड्डे पर जाने के पहिले राह ही में एक दूसरा काम भी करते चलें॥"

यह कहकर बेरियन एक मैली और छोटी गली में घुसा तथा वालटन का हाथ पकड़े हुए एक मकान में चला गया॥
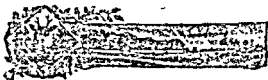
परिच्छेद।

वेरियन वालटन को लिये हुए जिस मकान में चला गया, वह मकान एक विचित्र ही ढङ्ग का बना हुआ था अर्थात् उस के कई खण्ड थे, जिसमें जाने आने के लिये अलग अलग दर्वाजे तथा सुरङ्गें बनी हुई थीं। यह मकान शस्त्रकार अर्थात् ढाल, तलवार बन्दूक और कवच इत्यादि बनाने वाले का था॥

मालूम होता है कि वेरियन इस गृह के हर एक अंश को भली भांति जानता था, क्योंकि वह निधड़क दर्वाजे खोलता तथा बन्द करता हुआ आगे बढ़ता चला जाता था॥

वेरियन इस समय जिस राह पर चला जाता था उसके दोनों तरफ कई कमरे थे। अचानक एक कमरे का दर्वाजा खुला और वेरियन का प्यारा नौकर फ्लोरिलो उस दर्वाजे से निकला पर वेरियन के साथ वालटन को देख कर झिझका और एक ओर हट कर खड़ा हो गया॥

वेरियन०। (बड़े प्यार से) तुम घबड़ाओ मत। (वालटन की ओर इशारा करके) इनसे डरना या संकोच करना व्यर्थ है। इन्हें भी तुम अपना ही आदमी समझो। अच्छा, मैं यहाँ किसी आवश्यक कार्य्य के लिये आया हूं पर तुरतही लौटूंगा। मेरे साथ तुम्हें भी चलना होगा और यह भी जायेंगे। क्या तुम्हारे पिता सोते हैं?

फ्लोरिलो०। मेरे पिता! इतना कह कर उसने लज्जा से अपनी गर्दन झुकाली॥

वेरियन०। (वालटन की ओर इशारा करके) मैं अभी तुमसे

वे ठीक जीवधारी मनुष्यों की भांति मालूम होती हैं। इस कमरे में सुलोचना राजगौरवान्वित रानी जोवाना, रूप-गर्विता क्लिलिपा, कठोर दृष्टि, गम्भीर प्रकृति आद्री, मदमत्त मरटैम्पटं, कामरूप वारटगढ़, रसिका कुमारी करोलिना, प्रचार विचार पति, विपन्न मुख चार्लस, मृत राजा रोमर्ट और मेरियन की सजीव की तरह मूर्तियां जगह जगह पर रक्खी थीं।

वाल्टन यह सब देख विस्मय से बोला, "यहांही आश्चर्य का विषय है। इनका बनाने वाला कौन है?"

"यह देखो" कह कर मेरियन ने उसी कमरे में एक कोने में बैठे हुए एक पुरुष को दिखा दिया जिसका शरीर बिल्कुल ही दुबला और चेहरा मलिन हो रहा था। यह युवक एक कुर्सी पर बैठा हुआ था और कमरे में कई मनुष्यों को आते देख सम्मान के लिये उठ खड़ा हुआ था। इसीका नाम निमो था और यह फ्लोरिडो का सहोदर भाई था। इसका शरीर दुबला, रूखा मैला और चेहरा देखने से मालूम होता था मानो रक्त का लेश मात्र भी नहीं है। वाल्टन निमो की ओर देखकर बड़ी नम्रता से बोला, "आपकी अद्भुत कारीगरी देखकर मुझे बड़ाही आश्चर्य हुआ।"

अपने कार्य्य की प्रशंसा सुनकर निमो का मलिन मुख कुछ क्षण के लिये चमक हो गया। वह बोला, "आपको बातें सुन कर मुझे ... बड़ा प्रसन्न हुई पर आप अभी केवल बाहरी ... देखकर प्रसन्न हो रहे हैं असल भीतरी बातें का ... देखा ही नहीं है।

ले आया हूं और मेरी आन्तरिक इच्छा है, कि तुम दोनों में बन्धुता स्थापित होजाये। अब हमलोग अधिक देर तक नहीं ठहर सकते, वाल्टन फिर शीघ्र ही तुमसे मिलेगा। उस समय तुम इन्हें अपनी कार्य्यपटुता दिखाना॥

इतना कह कर वेरियन ने जेब में से रुपये की भरी एक थैली निकाली और उसे मिनो को देकर बोला, "उस रात्रि को तुमने मुझे जो सहायता दी है, यह उसका एक सामान्य पारितोषिक है।"

इसके बाद वेरियन वहाँ से बाहर चला आया, वाल्टन भी उसके साथ था। बाहर तीन घोड़े खड़े थे और फ्लोरिलो उनकी रक्षा कर रहा था। वेरियन, वाल्टन और फ्लोरिलो तीनों घोड़ों पर सवार हुए और एक ओर चले गए॥

परिच्छेद।

यथा समय तीनों मठ में आ पहुंचे। एक दिन वह था जब वाल्टन बन्दी भाव से इस मठ में लाया गया था, उसे अपने जीवन की आशा न थी और इसी स्थान पर डूरास के ड्यूक चार्ल्स को उसने परास्त किया था परन्तु आज कुछ दूसरी ही बात थी जिस समय वह मठ में पहुंचा उसे धीरे धीरे ये सब बातें स्मरण होने लगीं॥

वेरियन और वाल्टन एक सजे हुए कमरे में चले गये और फ्लोरिलो एक दूसरे कमरे में चला गया॥

वेरियन और वाल्टन जब कुछ स्वस्थ हुए तब वेरियन

बालटन यह सुन चंचल हो गया। आत्मविस्मृत हो, स्थान, काल और पात्र भूल कर बोल उठा, "मैं क्यों उस सुन्दरी को प्यार करता हूं? निश्चय और अवश्य उसे प्यार करता हूं। उस दिन जब मेरी उसकी भेंट हुई, मैंने उसका हाथ धरा, मालूम होता था कि मैं स्वर्ग में बैठा हूं—पर उस स्वर्ग में प्रवेश करने का मेरा अधिकार नहीं है...... मैं बड़ा पापी हूं! ड्यूक के उद्यान (बाग) में से जिस समय उसे छुड़ाया, जिस समय उसने दोनों हाथ फैलाकर रक्षा के लिये मुझे पकड़ लिया और जिस समय मैंने सादर उसके अर्धचन्द्राकार ललाट का चुम्बन किया, उस समय के आनन्द में मैं अपना दुःख, यन्त्रणा और कष्ट भूल गया। पर यह कितनी देर तक? तुरत ही मेरा यह आनन्द पर्वत की ऊँची चोटी से सदा अन्धकारमय गम्भीर कूप में जा डूबा॥"

बालटन का अचानक यह भावान्तर देख बेरियन बड़ा ही विस्मित हुआ। उसके दुःख का कारण बेरियन न जानता था। वह अपने मन में यही समझने लगा, कि निराश प्रेम के कारण ही बालटन का चित्त विभ्रान्त हो गया है। बेरियन ने यह बात ही छोड़ दी। दूसरी बात छेड़ने का सुयोग देखने लगा। इधर बालटन भी कुछ देर बाद शान्त हुआ और बोला, "मेरी यह दुर्बलता क्षमा करो। मेरे दुःख का कारण सब कोई नहीं जानते। तुमसे भी यही प्रार्थना है, कि दया करके मुझसे यह भेद न पूछो॥"

उसके बाद वे लोग दूसरे दूसरे विषयों की आलोचना करने लगे। बातही बात में बालटन बोला, "बेरियन! यद्यपि [illegible]

उत्तेजना के आवेश में आकर मैंने यही दो दुर्बलता प्रगट की है तथापि ऐसा न समझ लेना कि मैं भीरु (डरपोक) और कायर हूं॥"

बेरियन०। तुम भीरु! असम्भव! तुम्हारे साहस और वीरत्व के ऊपर मेरा पूर्ण विश्वास है। यदि यह विश्वास न होता तो मैं तुम पर किसी कार्य्य का भार ही नहीं सौंपता॥

वाल्ट०। पर आद्रो के बारे में तुम अभी क्या कहा चाहते थे?

बेरियन०। अब उस विषय को इस समय छोड़ दो, फिर कभी कहूंगा॥

इसके बाद बेरियन उसे कुछ समझाने लगा जो फिर किसी स्थान में प्रगट हो जायेगा॥
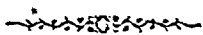
परिच्छेद।

इसी दिन दोपहर के समय जलतमूरा के एक सुन्दर सजे सजाये कमरे में जुलियस, उसकी स्त्री और उसकी आदर्श बालिका लूसिया बैठी हुई थी॥

लूसिया का चेहरा इस समय मलिन हो रहा था, दोनों गालों पर इस समय प्राकृतिक गुलाबी नहीं छाई थी क्योंकि वह बहुत ही बीमार थी, उसके जीवन की कोई आशा न थी, पर ईश्वर की कृपा से इस समय कुछ अच्छी है। रोग की पहिली अवस्था में उसके मस्तिष्क में विकार हो गया था, वह पागल सी अंत में निकम्मी बातें बकने लगती थी और इसी कारण से अपने हृदय की सब बातें ठीक ठीक अपने माता पिता से कह

भी न सकी थी, परन्तु उसकी बातों से जुलियन तथा उसकी मा को इतना अवश्य मालूम हो गया था कि डूरास के दूक बालेंस ने उसे पकड़ कर रात भर किसी बाग के कमरे में उसे बन्द कर रक्खा था ॥

जिस समय लूसिया वाल्टन से अलग हुई, उस समय ग्रेस के पागल रोगी उसके पीछे पकड़ने के लिये दौड़ रहे थे, तब से लूसिया की ज्ञान संज्ञा लोप होना चाहती थी, वह किस ओर भागी जाती थी इसकी भी उसे खबर न थी, बड़ी कठिनता से वह किसी प्रकार अपने घर पहुंची थी। पर घर आते ही अपनी मा की गोद में मूर्च्छित हो गिर पड़ी। जिस समय उसे ज्ञान हुआ, उस समय उसकी दशा बड़ी ही भयानक थी, पागलों सी बातें बकती थी। उसी समय डाक्टर बुलाये गये और उनकी आज्ञा से पिता माता उससे अधिक बातें भी न कर सके। आज एक सप्ताह के बाद लूसिया का स्वास्थ्य कुछ ठिकाने आया है और वह अपनी बीती बातें पिता माता को सुनाने बैठी है ॥

लूसिया जिस समय अपने अपहरण और उद्धार की बातें कहने लगी उस समय उसका हृदय कांपता था, ओठ सूखे जाते थे, क्योंकि वह अपने विपद्बन्धु, उद्धारकर्ता को प्यार करती थी—उसने एक अपरिचित युवक को अपना हृदय अर्पण कर दिया था, इसीसे अपने माता पिता के सन्मुख यह विषय वर्णन करने में उसे संकोच होता था, भीतर ही भीतर उसका हृदय कांपता था और लज्जा से आंखों की पलकें झुकी जाती थीं ॥

पर अन्त में पिता माता के अनुरोध से उसे हृदय द्वारा

[illegible]

बन्द रहने का हाल और उस समय के हृदय की अवस्था को कहना ही पड़ा पर अपने छुटकारे के हाल में इतना ही बोली, कि "सबेरे उठ कर मैं खिड़की के पास खड़ी थी, इसी समय दूर पर एक युवक दिखाई दिया जो पहिले शान्तावार गिर्जा में भी मुझसे मिल चुका था। उसीने मुझे छुड़ाया॥"

जूलियन०। वह युवा कौन है?

लूसिया०। (लज्जा से सर झुका कर) मैं उसका नाम नहीं जानती। गिर्जाघर में एकबार मेरा रूमाल गिर पड़ा था वह उसीने आदर से उठाकर दिया था और उसी समय उससे दो चार बातें भी हुई थीं॥

अपनी कन्या के चेहरे का सलज्जभाव और गालों पर बार बार लालिमा जूलियन के ध्यान में न आई पर उसकी स्त्री समझ गई॥

लूसिया ने फिर उस युवक की वीरता, ड्यूक को हटाना, लात मार कर दरवाजा तोड़ना और उसको छुड़ाना तथा फिर ड्यूक और उसके साथियों का पीछा करना, युवक का बिगुल बजाना, सवारों के एक दल का आकर छुड़ाना आदि सब हाल वर्णन कर दिया॥

जूलियन०। उन सवारों के सर्दार का क्या नाम और कैसा भेष था?

लूसिया०। उसका नाम न जानती थी पर उसने भेष वर्णन कर दिया जिसे सुनकर जूलियन बोला, "ठीक है उस अश्वारोही दल का सर्दार डेरियन के अतिरिक्त दूसरा कोई न था॥"

जूलियन की स्त्री यह सुनते ही कांप उठी। लूसिया चुप

के लिये उसे भरपूर पुरस्कार (इनाम) दूंगा, पर अभी तक अलतमूराने सम्भ्रान्तवंश का डाकुओंसे किसी प्रकार का सम्बन्ध न रक्खा गया है और न आगे रखना ही उचित है, आशा है, मेरे वंशगौरव और विभव की उत्तराधिकारिणी होकर तू भी इस विषय पर सदा ध्यान रखेगी ॥

लूसियाo। (दुःख से धीरे धीरे) मेरे द्वारा मेरे पूज्य पिता माता का वंश गौरव कभी लाघव(छोटा)न होगा। पर पिता! यदि कभी मेरे उद्धारकर्ता से भेंट हो तो क्या डाकुओं से सम्बन्ध रखने के विषय में आप उनसे पूछेंगे? उसकी बातों से प्रमाणित होता है कि वह किसी अच्छे कुल का है। बिना पूरा हाल जाने, बिना विचार किये, किसी को दण्डित करना या किसी पर दोषारोपण करना उचित नहीं है ॥

जूलियनo। ठीक है, ऐसा ही होगा। जाओ............

इसी समय राजपथ पर बिगुल बजा, सभी कारण जानने के लिये खिड़की के पास जाकर खड़े हो गए तो क्या देखते हैं कि सड़क पर बड़ी भीड़ लगा है। बिगुल बजानेवाला कह रहा है, "सुनो सुनो माननीय सर रौबर्ट, महारानी का सम्मान और अकलङ्क यश तथा गौरव की रक्षा करने के लिये कल से तीन दिनों तक राजकीय रङ्गभूमि(अखाड़ा)में शस्त्र लेकर खड़े रहेंगे. इन्हीं तीन दिनों में जिसकी इच्छा हो वह बर्छा, कटार, तलवार लेकर उनके सामने आ सकता है। जो रानी को दोषी ठहराते हों, जो उनके सुनाम में कलङ्क लगाया चाहते हों, उनसे लड़ने के लिये सर रौबर्ट तीन दिनों तक प्रस्तुत रहेंगे और यहीं हारजीत कलङ्क अथवा अकलङ्क प्रमाणित करेगी ॥"

फिर बिगुल बजा और वही मनुष्य बोला, "और भी सुनो, जिस किसी पुरुष को भर रोबर्ट से व्यक्तिगत शत्रुता या मनोमालिन्य हो, उसे भी वहां जाना चाहिये।" इतना कह कर और फिर बिगुल बजाकर वादक (बजाने वाला) चला गया॥

जूलियन०। लूसिया! क्या तुम रङ्गभूमि में रणकौतुक देखने को कल चलोगी? नेप्लस के जितने बड़े बड़े मनुष्य हैं सब जायेंगे, हमलोगों का नहीं जाना ठीक न होगा॥

लूसिया ने चलने का वचन दे दिया और इस समय उसके ओठों पर यद्यपि हँसी दिखाई दी तथापि उसके हृदय का अन्धकार दूर न हुआ॥

परिच्छेद।

रात्रि बीत गई। दूसरे दिवस अरुणोदय हुआ। सूर्य्यदेव की सुनहली किरण इटेली के सुविस्तृत पर्वतश्रेणी पर, आकाश से बातें करनेवाली बड़ी बड़ी अट्टालिकाओं पर, निर्मल समुद्र पर और राजमन्दिर के रक्षकों के शस्त्रों पर पड़कर अपूर्व शोभा दिखाने लगी॥

गत रात्रि में ही राजमहल के आगे की रङ्गभूमि भली भांति सजा दी गई थी, बीच में लड़ाकों के लिये स्थान छोड़ दिया था। उसके चारो ओर गोलाकार ऊँचा स्थान बनाया गया था, उसके ऊपर प्रतिष्ठित धनवान नरनारियों के बैठने के लिये स्थान बनाया गया था और उसके नीचे दर्शकगणों के बैठने का स्थान तय्यार किया गया था॥

उस ऊँचे स्थान पर एक ओर राजमहल के लोगों के बैठने का स्थान बना था जिसके ऊपर झालरदार मखमली चांदवा ताना हुआ था, इसीके बगल में राजकीय कर्म्मचारियों के बैठने का स्थान था जिसके नीचे सुनहला काम किया हुआ जाजिम बिछा था ॥

इसके बाद दोनों ओर प्रतिष्ठित दर्शकों का स्थान था ॥

सूर्योदय के पहिले ही से दर्शकगणों का आगमन आरम्भ हो गया और जिस समय पूर्व्वाञ्चल में सूर्य्यदेव दिखाई देने लगे उस समय रङ्गभूमि दर्शकगणों की भीड़ से परिपूर्ण हो गई। मालूम होता था मानो आज इस रङ्गभूमि में सुन्दरता का मेला लगा है। मेवलसवासिनी सुहासिनी सुन्दरियों के समावेश से रङ्गभूमि सौदर्य्यमयी हो रही थी। जिधर दृष्टि जाती थी उधर ही अतुल तेजमयी सुन्दरी कामिनियों का मनोहर लावण्य दिखाई देता था मानो भुवनमोहिनी, अतुल रूपिणी कामिनियों का सौन्दर्य्य कुसुम आज खिल रहा है ॥

इन सुन्दरियों में एक ऐसी सुन्दरी भी वर्त्तमान है जिसका लावण्य पास की बैठी हुई रमणियों के गर्व को खर्व कर रहा है। जो स्वभाव सौन्दर्य्य में सब की रानी, रूप के बाजार में गौहरी, मनुष्य दल के बीच में कमलिनी है, यही हमारे उपन्यास की नायिका नाकेश्वर जालियन की आदर्श बालिका और पाठकगणों की परिचिता कुमारी लूसिया है।

लूसिया अपने माता पिता के पास बैठी है, उसको मालूम न होने पर भी हजारों युवकों के प्यासे नयन चकोर उसके चन्द्रमुख की सुधा पुनःपान पान कर रहे हैं हजारों रूपोन्मत्त

गर्विणी रमणियां उसकी ओर कटाक्षपात कर रही हैं और ईर्षा से मन ही मन जल रही हैं॥

अचानक गम्भीर स्वर से तुरही बज उठी। साथ ही मधुर सुर से भांति भांति के बाजे बज उठे। घुड़सवार रक्षक सेना और पताकाधारी सेना ने सम्मान से बल्लम और पताके का अग्रभाग झुका दिया और चारण उच्च स्वर से "महारानी की जय" कहने लगा। इसी समय रानी जीवाना, अपने सहचर और मुसाहिब, राज्य के प्रधान प्रधान कर्मचारी और राजमहल की सुन्दरी महिलाओं से घिरी हुई आती दिखाई दी। उनको आते देख धनवान और प्रतिष्ठित पुरुषों ने तो यथेष्ट सम्मान दिखाया और उठ खड़े हुए परन्तु साधारण प्रजामण्डली में इस भाव का बिल्कुल ही अभाव दिखाई दिया॥

जीवाना समयोचित वेष और भूषण से अपने को सजाये हुए थी पर चेहरा मलिन और पीला हो रहा था, कलेजा इतने ज़ोर से धड़क रहा था कि इतने बड़े जनकोलाहल में भी उसके धड़कन सुन पड़ती थी, परन्तु इससे उसके राजोचित गाम्भीर्य में कुछ भेद न आया था। उसके पास ही उस विश्वासी और दयालु ठाकुर आन्द्री, [illegible], [illegible], करोलुना और [illegible] बैठा हुआ था [illegible] का धार्मिक वेष था [illegible] तथा तो राज- [illegible] में बड़ा [illegible]

[illegible]

[illegible] और [illegible] हो रही है

निबटेरा है। उसका भाग्य, सम्भव यहां तक कि सिंहासन और जीवन भी इसी के फलाफल पर निर्भर करता है। इस समय उसका कलुषित चित्त अपने किये हुए पाप पुण्य के विषय की आलोचना करता हुआ प्रति मुहूर्त कम्पित हो रहा है पर गर्विनी रानी इतने पर भी अहंकार और राजोचित गाम्भीर्य से उसको छिपाया चाहती है॥

फिर तुरही बजी और राबर्ट ने रङ्गभूमि में प्रवेश किया। इस बार प्रतिष्ठित पुरुषों की अपेक्षा साधारण प्रजा ने उसका अधिक सम्मान किया क्योंकि सर्वसाधारण गुण का आदर करते हैं—पर धनवानसंप्रदायों द्वारा और धनगौरव का ही विशेष आदर करते हैं॥

एक उद्दण्ड और बलिष्ट काले घोड़े पर सवार हो रौबर्ट रङ्गभूमि के बीच में आ पहुंचा। उसके समस्त शरीर पर कवच शोभा दे रहा था केवल चेहरा खुला था। बायें हाथ में ढाल और दाहिने में खूब लम्बा बर्छा था और कमर में लम्बी तलवार लटक रही थी॥

रौबर्ट दर्शक-गण को अभिवादन करता हुआ, तीन बार रङ्गभूमि की परिक्रमा कर, रानी एलिजाबेथ के सामने मस्तक नवा खड़ा हो गया। रानी ने भी कुछ मुस्कुरा कर उसके सम्मान प्रदर्शन का उत्तर दिया। अब उत्साह से रानी के चेहरे की मालिनता कुछ दूर हुई। सिसिल, आट्टी और कैरोलिना भी प्रसन्न हुए पर बारटेड का मुख विवर्ण से मलिन हो गया॥

जिस समय रौबर्ट वहां से हट कर नियत स्थान पर खड़ा हो गया, उसी समय चारण उच्च स्वर से आज के रणरङ्ग का [illegible] वर्णन करने लगा। उसका आधा समाप्त हुआ ही चाहता

था, कि फिर तुरही बजी और दूसरा का ड्यूक चार्लस रङ्गभूमि में आ पहुंचा। उसके समस्त शरीर पर भी कवच था पर चेहरा खुला हुआ था॥

जिस समय चार्लस रंगभूमि के बीच में आया उसी समय चारणने आगे बढ़कर और से पूछा, "आप यहाँ किस उद्देश्य से आये हैं? महारानी को दोषी और कलङ्किनी प्रमाणित करने के लिये अथवा सर रौबर्ट से किसी प्रकार की शत्रुता का बदला लेने के लिये?"

चार्लस०। मैं महारानी और रौबर्ट दोनों के विरुद्ध हूं। महारानी अपने पाप के कारण सिंहासन पर रहने योग्य नहीं है और चार्लस ने मुझे बहुत बार अपमानित किया है॥

इसके बाद रौबर्ट और चार्लस दोनों ने शपथ पूर्वक शस्त्र ग्रहण किया। पारही बोल उठे, "सत्य की जय हो" और फिर दोनों योद्धाओं के चेहरे पर नकाब डाल संकेत की राह देखने लगे॥

तुरत ही रणभेरी बजी। दर्शक लोग उत्कण्ठा से दोनों योद्धाओं की ओर देखने लगे। फिर भेरी बजी और दोनों योद्धाओं के घोड़े चमक उठे तथा तीसरी बार भेरी बजते ही दोनों योद्धा भाला उठा, एक दूसरे की ओर दौड़े। प्रतिद्वन्द्वियों की ढाल से टकरा कर पहिली ही चोट में भाला टूट गया, तुरत ही दोनों तलवार निकाल झपट पड़े। दोनों की तलवारें बिजली की भांति चमकने लगीं। दर्शकगण टकटकी बांधे उधर ही देखने लगे। कुछ ही देर बाद रौबर्ट के प्रहार से मूर्छित हो कर चार्लस घोड़े से नीचे गिरा॥

चार्लस को गिरते देख, रोबर्ट भी घोड़े से कूद पड़ा और चार्लस के गले में तीन बार तलवार छुला कर बोला, "शत्रु हारा। रानी की कीर्ति रक्षित हुई। ईश्वर उन्हें दीर्घजीवी करें॥"

दर्शकगणों में भी बहुत से साथ ही साथ चिल्ला उठे,—"महारानी की जय हो॥"

पराजित चार्लस के नौकर आकर उसे रणभूमि से उठा ले गये। सररोबर्ट पराजित शत्रु की टोपी से एक पर खींच एक नवीन बर्छे के अग्रभाग में लगा फिर घोड़े पर सवार हुआ और रङ्गभूमि की तीन बार परिक्रमा कर रानी जोवाना के सम्मुख खड़ा होगया और वह पर उसके आगे ले गया। जोवाना ने बर्छे से वह पर निकाल लिया, उसके मलिन मुख पर हँसी आ गई। उस समय थारटंड को छोड़ कर सब का हृदय पुलकित हो उठा॥

उस समय सभों की दृष्टि विजयी रोबर्ट के ऊपर लगी हुई थी परन्तु आद्री को ऐसा मालूम हुआ मानो पीछे से उसका कपड़ा कोई खींचता है, उसने घूमकर देखा तो फ्लोरिलो दिखाई दिया। फ्लोरिलो ने बहुत ही छिपा कर एक चिट्ठी उसके हाथ में दे दी और चला गया। बहुत कुछ बातें पूछने की रहने पर भी आद्री कुछ पूछ न सका॥

आद्री उठकर एक ओर चला गया और पत्र पढ़ने लगा। यह लिखा था:—

"मैं आपसे इसके पहिले भी मिलना चाहता था पर चेष्टा करने पर भी सुयोग न मिलने के कारण न मिल सका। इस

समय भी आया हूं पर अकेला नहीं हूं। अतएव एक बात आपको बता देनी आवश्यक है कि तीसरे दिवस एक मनुष्य आप रौबर्ट से लड़ने के लिये रणभूमि में आवेगा॥

"वह पुरुष कौन है? बेरियन!" यह वाक्य आद्रो के मुंह से धीरे धीरे निकला। पास में केवल कौंलिना के अतिरिक्त और कोई न था, वह यद्यपि देखने में मूर्ख ही मालूम होती थी तथापि यह सब विषय वह किसी प्रकार समझ गई थी। आद्रो के मुंह से निकली हुई बात भी उसने सुन ली थी॥

दुर्द्धर्ष बेरियन रङ्गभूमि में लड़ने के लिये आवेगा, यह सुन सब डर जायगे, इसी कारण से आद्रो ने यह विषय प्रकाशित न किया॥

रौबर्ट का नौकर एक सोने के प्याले में शराब भरकर उसके सामने ले आया। रौबर्ट प्याला उठाकर सब के सामने एक ही बार में शराब पी गया। नौकर खाली प्याला लेकर चला गया। रौबर्ट फिर नियत स्थान पर जाकर खड़ा हो गया। बारम्बार शब्द करने लगा पर कोई युद्धार्थी दिखाई न दिया। निर्द्दिष्ट समय उत्तीर्ण हो गया और रौबर्ट धीरे धीरे रङ्गभूमि से बाहर निकला॥

राजपुत्र प्रजा को धन दान करने लगे। जोवाना अपनी सहेलियाँ तथा सहचरी के साथ राजमहल में चली गई। और चार पाँच धनवान और प्रधान पुरुष जो वहाँ थे चले गए। इनके जाने पर रङ्गस्थान में भोजन के पदार्थ लाये गए और साधारण प्रजा आनन्द से भोजन करने लगी॥

परिच्छेद ।

उच्च आकांक्षा मनुष्य को ऊँचे पद पर पहुंचानेवाली है सही पर तभी तक जब तक उसमें ईर्षा और गर्व आकर नहीं मिलते, पर जिस समय आकांक्षा में ये दोनों आकर मिल जाते हैं तो उसी समय मनुष्य हिताहित ज्ञानशून्य और हतबुद्धि हो जाता है, अपने शत्रु को नीचा दिखाने के लिये उस समय मनुष्य यदि अपनी मनुष्यता छोड़ कर नीचवृत्ति भी अवलम्बन करे तो क्या आश्चर्य है !!

कौउण्ट वारटएड की अवस्था भी आज ठीक ऐसी ही हो रही है। वह सुपुरुष है और ऊँचे कुल में उसका जन्म हुआ है, धनसम्पत्ति भी बहुत है, क्या इतना रहते हुए भी वह मछुए के लड़के रौबर्ट का प्रतिद्वन्द्वी नहीं हो सकता ? यदि दोनों की तुलना की जाये तो वारटएड ही, जीवाना के पाणिग्रहण करने योग्य उपयुक्त पात्र दिखाई देता है ॥

सन्मुख युद्ध में चार्लस को हटा देने के कारण रौबर्ट की सब प्रशंसा कर रहे हैं। पहिले समूचे दिवस में केवल एक ही शत्रु सामने आया। तो क्या इसी एक शत्रु के पराभव के ऊपर नेपल्स का राज्यसिंहासन प्राप्त करना निर्भर है ? वारटएड की दशा यह सब सोच सोच कर बुरी हो रही है, वह रह रह कर अपने होंठ काटने लगता है। रौबर्ट बिना किसी रुकावट के, राज्यसिंहासन पायेगा यह उसे असह्य हो रहा है ॥

सन्ध्या को जिस समय भोजन का उत्सव था। उस समय सभी एक मुख होकर रौबर्ट की प्रशंसा कर रहे थे, सभी उसका

गुणगान कर रहे थे। जोवाना आज सब से अधिक हास्यमयी और प्रेममयी हो कर रैबर्ट की बार बार प्रशंसा करती थी यहां तक कि करोलिना भी रैबर्ट की पक्षपातिनी हो रही थी। क्या यह सब बारटण्ड सह सकता है? इसीलिये ईर्षा के विषम ताप से उसका हृदय भस्म होने लगा, पर उसके चेहरे पर दूसरा ही भाव है। कपट-हास्य के भीतर वह ज्वाला छिपा कर मुंह से प्रसन्नता और चेहरे से आनन्द दिखा रहा है। यह सब ठीक है, पर ये बातें दो मनुष्यो के आंखों में धूल नहीं डाल सकती। करोलिना और आट्री ये दोनों उसकी हृदय ज्वाला को समझ रहे हैं॥

जिस समय हँसी की मात्रा पूर्ण हो रही थी और सभी हास्यरस में मतवाले हो रहे थे उसी समय करोलिना यकायक बारटण्ड की ओर फिर कर बोली, "शयनागार में जाओ, मैं अभी आती हूं, चुपचाप किसी विषय पर विचार करना है।" पर बारटण्ड उसका उद्देश्य समझ न सका। अस्तु, जो हो जिस समय सब अपने अपने रङ्ग में मस्त थे उसी समय सब की दृष्टि बचा बारटण्ड और करोलिना दोनों वहां से चल दिये और शयनागार में जा पहुचे॥

करोलिना०। बारटण्ड! मैं तुम्हारे मन का भाव समझ गई। यदि तुम्हारी इच्छा हो, यदि मुझपर विश्वास रखते हो, तो कहो, मैं तुम्हारी उच्च आकांक्षा पूर्ण करने में सहायता दे सकती हू॥

बारटण्ड०। (कांप कर) उच्च आकांक्षा! सो क्या?

करोलिना०। (हँस कर) सब मुझसे क्यों छिपाते हो?

तुम्हारी जितनी ऊँची आकांक्षा है, मेरी भी उतनी ही आशा लगी है, तुम्हारी आकांक्षा पूर्ण होने से मेरी स्वार्थ सिद्धि होगी। इसीलिये कहती हूं, कि हमलोगों को आप से मिल कर बिना किसी भेद भाव के कार्य करना चाहिये ॥

वारटरल:। तुम्हारी पहेली मैं नहीं समझ सकता, खुलासा कहो ॥

करोलिना: । अच्छा, उसी तरह कहती हूं। तुम रौबर्ट के प्रतिद्वन्द्वी हो और जीवाना से विवाह किया चाहते हो ॥

वारटरल:। खैर, यह तो मेरी आकांक्षा हुई, अब तुम्हारी आशा क्या है ?

करोलिना: । मैं रौबर्ट को प्यार करती हूं ॥

वारटरल:। रौबर्ट को ! पद पद पर मेरा साथ लोग टोहते जाते हैं और वह—वह तो मेरा प्रतिद्वन्द्वी है ही ॥

करोलिना: । तब क्या तुम मेरी बात स्वीकार करते हो ? अच्छा तो यह भी बतादो कि हमलोग आपस में सहायक बन कर कार्य करें अथवा बिगड़ कर अपनी अपनी इच्छानुसार ? तुम स्पष्ट बताओ, कि तुम मुझसे बन्धुभाव रखा चाहते या शत्रुभाव ?

वारटरल:। यह क्या ! क्या तुम सचमुच ही रौबर्ट को प्यार करती हो ?

करोलिना: । झूठ क्यों बोलूं ? हां, मैं उसे प्यार करती हूं। तुम्हें कुछ तक खूब प्यार करती थी, तुम्हारे ऊपर मेरी प्रीत जितनी थी उससे अधिक ज्यादा रही उतना उसी किसी पर न रही थी मैं कभी अविवाहित का काम नहीं करती जो होना है

स्पष्ट कह देती हूं। किसी का प्रेम मेरे चंचल हृदय में सदा स्थायी नहीं रहता। गर्वित रोवर्ट के गले में प्रेम-पाश डालने के लिये मैं व्याकुल हो रही हूं। सो वही उसे प्यार क्यों न करूं? यदि तुम्हारा प्रेम मुझ पर होता तो तुम जीवाना से क्यों विवाह किया चाहते? नहीं—कभी नहीं॥

वारटवड०। मैं अब इस प्रेम की बातें कभी न निकालूंगा, न तुम्हारे साथ शत्रुता ही किया चाहता हूं। जिससे प्रेम करो तुम सुखी हो सकती हो उसीसे प्रेम करो। तुम मेरे हृदय का भाव ठीक ठीक समझ गई हो॥

करोलिना०। समझ ही नहीं गई हूं, यह भी जानती हूं कि तुम कल क्यों छद्मवेश कर कवच पहिन रङ्गभूमि में गए थे। रोवर्ट के हारने पर, विजयी को हटा कर, जीवाना के हृदय पर तुम अधिकार जमाना चाहते थे—क्यों तुम्हारा यही उद्देश्य था?

वारटवड०। तुम क्या कोई मायाविनी हो?

करोलिना०। नहीं नहीं, तुम्हारा हृदयभाव जानने के लिये किसी ऐन्द्रजालिक शक्ति की आवश्यकता नहीं है। तुम अब मेरी बातें मान लोगे तो मैं भी तुम्हारे उद्देश्य साधन की राह खोल दूंगी॥

वारटवड०। यदि ऐसा करो तो मैं तुमको अपनी सौभाग्य लक्ष्मी समझूंगा॥

करोलिना०। तब सुनो, तीसरे दिवस रङ्गभूमि में कोई बेरिवन लड़ने के लिये आवेगा?

वारटवड०। यह क्या कहती हो। यह तुमने कैसे जाना?

करोलिना०। यह न बताऊँगी। यदि उस दिन तुम उससे लड़ना चाहो तो मैं उपाय कर दूं॥

थारटंह सहमत हो गया। सुन्दरी करोलिना उसका हाथ पकड़ कर टहलने लगी और धीरे धीरे अपने हृदय का भाव वर्णन करने लगी॥

* * * * * *

दूसरे दिन सवेरा होते होते रङ्गभूमि मनुष्यों से परिपूर्ण हुई। नव बजते बजते रानी लीवाना भी अपने साथियों के सहित वहां आ पहुंची। पहिले ही दिवस की भांति तुरही बजी और सररोबर्ट घोड़े पर सवार रङ्गभूमि में आ पहुंचा॥

आज उसका प्रतिद्वन्द्वी कौण्ट गल्डियन आया। यह चार्लस का एक मित्र और विख्यात योद्धा था॥

पहिले ही दिन की भांति शपथपूर्वक दोनों ने शस्त्रग्रहण किया और नियमित संकेत पर दोनों योद्धा बर्छा लेकर जूझ पड़े। ढाल पर टकरा टकराकर बर्छे टुकड़े टुकड़े हुए और फिर तलवार से लड़ाई होने लगी। लगभग आधे घण्टे के तलवार से युद्ध होता रहा पर कोई किसीको हटा न सका तब फिर दोनों नया बर्छा लेकर लड़ने लगे। पर थोड़ी ही देर में गल्डियन चोट खाकर गिरा। विजयी रौबर्ट ने पराजित शत्रु की टोपी का पर निकाल लिया और फिर पहिले ही दिवस की भांति रानी के चरणों में समर्पण किया। सुहासिनी रानी ने मधुर हँसी हँसकर उसका आदर किया॥

गल्डियन के दो नौकर आकर अपने स्वामी का मूर्छित शरीर ले गए उस दिन फिर कोई योद्धा दिखाई न दिया।

निर्दिष्ट समय बीत जाने पर रौबर्ट चला गया। पहिलेही की भांति भोजन और द्रव्य फिर बांटा गया और साधारण प्रजा भी चली गई॥

फिर आज भी राजमहल में आनन्दोत्सव मनाया जाने लगा। सभी रौबर्ट की प्रशंसा करने लगे पर इसे सुनकर भी बारटल्ड दुःखित न हुआ, बल्कि प्रफुल्ल दिखाई देने लगा। आज करोलिना रौबर्ट के बगल में बैठी हुई थी। जिस समय आनन्द पूर्ण दशा पर पहुंचा और मदिरा के वेगने समस्त मण्डली पर अपना अधिकार जमाना आरम्भ किया, उसी समय चतुरा करोलिना ने सभों की दृष्टि बचाकर कुछ काला पदार्थ मदिरा में मिलाकर रौबर्ट को पिला दिया, कोई कुछ भी समझ न सका, केवल बारटल्ड ने देखा और वही समझ भी गया॥

रानी जोवाना उठकर अपने सोने के कमरे में चली गई। रौबर्ट भी उठ कर चला॥
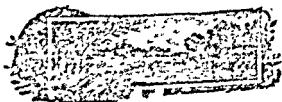
परिच्छेद।

आज तीसरा दिन था सबेरा होते ही रङ्गभूमि जनसमूह से भर गई। ठीक समय पर रानी रोवीना भी अपने सहचरों के साथ आ पहुंची पर एक धारटंहम न आया। रोवीना इत्यादि उसे न देख कर करोलिना से पूछने लगे। करोलिना ने भी उसे न देखकर आश्चर्य प्रगट किया और बोली कि मैं नहीं जानती कि क्यों नहीं आया॥

इस विषय की खोज करने का अधिक समय भी न मिला क्योंकि तुरत ही भेरी बज उठी और चारण चिल्लाकर राजकीय वीर का आगमन सूचित करने लगा। घारेंफ्रटं घोड़े पर सवार रणभूमि में आ पहुंचा। पर आज उसका मुंह ढंका हुआ था। दर्शकगण इसपर नाना प्रकार की कल्पना करने लगे। कोई बोला, "अपने को अधिक वीर प्रमाणित करने के लिये मालूम होता है चेहरे पर भी लोहे का आवरण पहिर लिया है।" कोई बोला, "नहीं ऐसा नहीं है, दो दिन के युद्ध से वह घबड़ा उठा है, कोई चेहरे की मलिनता न देख ले इसी कारण से छिपा लिया है।" कोई कोई बोला, ऐसा भी हो सकता है कि कदाचित् यह प्रतिज्ञा की हो कि युद्ध में न जीतने से किसी को मुंह न दिखावेंगे और इसी लज्जा से कि कहीं हार न जावे मुंह छिपा रखा है॥"

रोवीना भी अपने पास बैठी हुई छिलिया से इसका कारण पूछने लगी पर वह भी कोई ठीक ठीक उत्तर न दे सकी। बोली "कहिये क्या आपको इससे भेंट न हुई थी? क्या आपको इसने कुछ नहीं कहा?" रानी बोली, "नहीं।"

आट्री ने भी सब बातें सुनीं पर कुछ बोला नहीं, वह कुछ और ही विचार रहा था, शायद यह विचारता हो कि रौबर्ट ने कहीं वेरियन के आगमन का समाचार तो न सुन लिया? आश्चर्य ही क्या है, नहीं तो ऐसा क्यों करता?"

इधर समय बीतने लगा, बार बार भेरी बजने लगी पर कोई भी शत्रु दिखाई न दिया। सब घबड़ा उठे। जितना ही समय बीतने लगा, साधारण लोगों की उत्कण्ठा, करोलिना की निराशा और जोवाना तथा फिलिपा का आनन्द उतनाही बढ़ने लगा और आट्री विचारने लगा "कदाचित फ्लोरिओ का अनुमान झूठा हो या वेरियन की इच्छा बदल गई हो।"

दो बजने का समय आ गया। गम्भीर शब्द से भेरी फिर बजी परन्तु चारण के उच्च स्वर से राजकीय घोषणा प्रकाशित करने पर भी कोई न आया हां दूर पर, बहुत दूर पर, कुछ शब्द सुन पड़ा। तुरही के शब्द के साथ ही साथ घोड़ों की टापों के शब्द भी निकट होने लगे। सभी उत्कण्ठा से आंखें फाड़ फाड़ कर उधर देखने लगे। आट्री और करोलिना समझ गए कि डाकुओं का सर्दार वेरियन आ रहा है॥

परन्तु जिस समय यह नया प्रतिद्वन्द्वी सामने आया उस समय उनके आश्चर्य का वारापार न रहा, क्योंकि सभों ने देखा कि हृष्टपुष्ट वेरियन के बदले एक दुबला पतला पर लम्बी आकृति का एक युवा कवच धारण किये हुए एक सफेद घोड़े पर सवार आया है। उसके सिर से पैर तक सोने चांदी और लोहे से मढ़ा हुआ कवच शोभा पा रहा था। चेहरा भी ढँका था, उस पर एक पक्षी का उजला पर खोसा हुआ था। साथ में केवल एक

मनुष्य था, उसका भी चेहरा ढँका हुआ था॥

इन नये आये हुए पुरुषों की आकृति जितनी ही कौतूहल वर्द्धक थी उतनी ही वीरता भी झलक रही थी। रङ्गभूमि में उनके आतेही साधारण प्रजा ने उनका आदर प्रकट किया। हृष्ट पुष्ट राजकीय वीर के आगे दुबले पतले क्षीणाङ्ग पुरुष को शस्त्र उठाते देख अधिकांश पुरुष विचारने लगे कि यह हार जायगा। पर वह आगन्तुक दृढ़ता से रङ्गभूमि के एक कोने में खड़ा हो गया। चारण मन्द्रस्वर में उससे परिचय पूछने लगा, पर वह बोला नहीं, केवल मस्तक हिलाकर अपनी असम्मति प्रगट कर खड़ा रहा। इससे सब ओर भी आश्चर्यित हो गए॥

चारण ने फिर पूछा, "आपके आगमन का उद्देश्य क्या है? क्या आप रानी को कलङ्किनी प्रमाणित करने आये हैं?" फिर आगन्तुक ने सर हिलाया। सब ओर भी विस्मित हो उठे पर जीवाना कुछ निश्चिन्त हुई। इतनी देर तक राजमहल के पुरुष इस आगन्तुक को देख देख कर उसपर कटाक्षपात कर रहे थे पर अब आपस में आँखें मिलाकर चुप बैठ गए॥

आगन्तुक रैशर्ट का शत्रु है, इसमें सन्देह न रहा। नियमित कार्य्य के बाद भेरी बजी और दोनों में युद्ध आरम्भ हो गया। राजकीय वीर का बर्छा आगन्तुक की ढाल से टकराकर टूट गया, विपक्षी के भीषण आघात से वह घोड़े की पीठ पर कांप उठा, सभी आगन्तुक के शस्त्रविद्या की प्रशंसा करने लगे। कुछ ही देर बाद आगन्तुक का बर्छा भी टूटा और अब तलवार से युद्ध होने लगा॥

सभी उत्सुकता से दोनों का युद्ध देखने लगे। जीवाना अपने

प्यारे पर विपद् आती देख, व्याकुल हो उठी। किंवा अपने पुत्र के अपमान भय से घबड़ाने लगी। रानी ओवाना के पापिनी होने पर भी पहिले दो दिनों के युद्ध से प्रजा पर उसकी निर्दोषता प्रमाणित हो चली थी। राजपक्ष के लोग विचारते थे, कि आज यदि रौबर्ट हार भी जायगा तो प्रजा रानी को दूषित न ठहरावेगी॥

रौबर्ट यथाशक्ति शस्त्र चला रहा था और चाहता था कि किसी प्रकार से अपने शत्रु को मार गिरावे पर यह शत्रु भी सामान्य न था। उसकी दोनों बांह में इतनी सामर्थ्य और कौशल भरा हुआ था कि लोग आश्चर्य्य कर रहे थे। सभी विस्मित नेत्र और उत्कण्ठित चित्त से युद्ध का परिणाम विचार रहे थे। एकाएक शत्रु के भीषण आघात से रौबर्ट की ढाल कट गई। अब उसका जीवन उसके शत्रु की दया पर निर्भर था। पर अहा! आगन्तुक ने भी कैसी सज्जनता और हृदय का महत्व दर्शाया अर्थात् उसने अपनी ढाल भी दूर फेंक दी और युद्ध करने लगा। रौबर्ट इस समय क्रोधोन्मत्त हो रहा था। अब शस्त्र चलाने में उसका वह कौशल छूट रहा था। उसने ज़ोर से तलवार अपने विपक्षी के मस्तक पर मारनी चाही पर व्यर्थ। आगन्तुक ने अपने को साफ़ बचा लिया। थोड़ी ही देर में रौबर्ट की तलवार टूट कर दूर जा गिरी और वह भी घोड़े से नीचे गिर पड़ा। दर्शक मण्डली विजयी आगन्तुक की जय घोषणा करने लगी। आगन्तुक युवक भी घोड़े से नीचे उतर पड़ा और अपने शत्रु के गले से तीन बार तलवार छुलाकर उसके मस्तक से पर छाँच, अपने नौकर से नया वस्त्र ले, उसकी

मोत में लगा फिर घोड़े पर सवार हुआ ॥

इधर रैबर्ट का नौकर अपने स्वामी को उठाने के लिये आया और उसके चेहरे का आवरण उसने उठा लिया, पर यह क्या! यह तो सर रैबर्ट नहीं पर कौण्ट बारटरड था। उपस्थित मण्डली के आश्चर्य्य का अब ठिकाना न रहा !!

कौण्ट बारटरड और उसकी सहायका करोलिना ने ऐसी दृढ़ता से यह कौशल रचा था कि रैबर्ट का प्यारा नौकर इस प्रतारणा (धोखेबाजी) को अन्त तक न समझ सका ॥

धीरे धीरे यह समाचार रानी जोवाना और उसके सहचरों को भी मालूम हुआ। जोवाना और फिलिपा यह सुनकर सन्तुष्ट हुईं। कौशलमयी करोलिना बाहर से दुःख प्रकाश करती थी पर मन ही मन प्रसन्न हो रही थी ॥

पर जिस समय प्रतिद्वन्द्वी के कानों में यह खबर पहुँची कि वह रैबर्ट नहीं बल्कि बारटंड था उस समय वह एकदम घबड़ाकर बारटंड के पास चला आया और घोड़े से उतर कर बोला, "वीर! तुमसे मेरी किसी प्रकार की शत्रुता नहीं थी। यदि पहिले से मालूम होता तो मैं कभी तुमसे न लड़ता ॥"

बारटरड उसका नम्र भाषण सुनकर उसके हृदय का महत्व समझ गया और हाथ उठाकर बोला, "बन्धु! मैं तुम्हारे गुणों पर मोहित हूं, अपना परिचय दो।" पर युवक उसका हाथ धर कर बोला, "अभी नहीं, समय आने से आप ही मालूम हो जायगा।"

इसके बाद उस युवा ने बारटरड के सर पर की टोपी से निकाला हुआ [illegible]

की टोपी से एक पर निकाल बर्छे की नोक में लगा फिर घोड़े पर सवार हुआ॥

अब सब स्त्रियों के हृदय में यह खलबली मची, कि देखें कौन सी सुन्दरी इस विजयी वीर का जय चिन्ह लाभ करती है? क्या रानी जोवाना को यह चिन्ह मिलेगा या कोई दूसरी सुन्दरी इसे प्राप्त कर अपने को सौभाग्यवती समझेगी। इस समय इस सुन्दरता के बाजार में बहुत सी स्त्रियां उस चिन्ह को पाने के लिये तरस रही थीं॥

युवा रङ्गभूमि की दो बार प्रदक्षिणा कर आया और फिर अन्तिम प्रदक्षिणा आरम्भ हुई। इस बार यह विजयचिन्ह निश्चय ही किसी न किसी सौन्दर्यमयी के हाथों में समर्पण किया जायगा? युवा जोवाना के सम्मुख आया और उसने रानी के आगे मस्तक झुकाया। रानी ने ज़रा मुस्कुराकर उसका सत्कार किया, वह समझती थी कि मुझे ही यह विजयचिन्ह मिलेगा, पर वह भी निराश हुई, युवा वहां से भी चला गया। हजारों सुन्दरियां आंखें फाड़ फाड़ कर ललचौंही दृष्टि से उसे देखने लगीं। हजारों उस चिन्ह को लेने के लिये चञ्चल हो रहीं पर युवक ने किसी की ओर आंख उठाकर देखा तक नहीं और धीरे धीरे आगे बढ़ता गया। अन्त में एक जगह यकायक खड़ा हो गया और अपनमुरा की कुमारी लूसिया को उसने वह विजय चिन्ह अर्पण किया॥

लूसिया के गालों पर लाली आ गई और उसका हृदय [illegible]
[illegible]

अब वह वारटण्ड और करोलिना से इसका बदला लेने का उपाय सोचने लगा और एक ऐसा उपाय उसने सोच निकाला जिससे उन दोनो से बदला लेने के साथ ही साथ उसकी भी स्वार्थ सिद्धि हो सकती थी ॥

वह करोलिना के स्वभाव को भली भांति जानता था। उसे विश्वास था कि थोड़े ही उद्योग में करोलिना उसके वश में आ जायेगी। "वारटण्ड जोवाना से विवाह किया चाहता है यह ठीक है, पर करोलिना को भी नहीं छोड़ सकता है। इधर करोलिना को जब मैं वश में कर लूंगा उस समय सभों के सामने सब बातें प्रगट करने ही से उन दोनों को अपमानित होना पड़ेगा। फिर जोवाना जब देखेगी कि अब यह मुझे छोड़ करोलिना पर आसक्त हुआ है तो अवश्य ही व्याकुल हो शीघ्र ही मुझसे विवाह करने को तय्यार हो जायेगी॥"

यह सब सोच विचार कर रोबर्ट रानी जोवाना के कमरे में जा पहुंचा और सच्ची बातें छिपाकर सो जाने का बहाना करके ही अपने यहां आने का कारण उसने समझा दिया॥

पहिले तो जोवाना वारटण्ड को उसके छल के लिये और इस प्रकार से छल करके रङ्गभूमि में आनेके लिये उसे राजमहल से निकलवा दिया चाहती थी पर कूटबुद्धि रोबर्ट के समझाने पर उसने उसे क्षमा कर दिया। एक नौकर वारटण्ड को यह समाचार सुना आया और यह भी कह आया कि भोजन तैयार है, चलिये॥

जब सब भोजन के स्थान पर जा पहुंचे, तब करोलिना कौशल से रोबर्ट के बगल में जा बैठी॥

जिस समय सब भोजन कर रहे थे और आपस में आनन्द से बातें भी करते जाते थे उसी समय रैाबर्ट जीवाना की ओर देख कर बोला, "जीवाना! क्या पहिले दो दिनों तक के किये हुए मेरे परिश्रम और विजय से तुम प्रसन्न न हुई॥"

जीवाना०। अवश्य हुई! मुझे विश्वास है, कि यदि तुम तीसरे दिवस भी रहते तो वह युवक कभी जीत कर भगा सकता था॥

रैाबर्ट०। तो मेरे इस विजय-गौरव का इनाम चाहिये! अब कितने दिन बाद मुझसे विवाह करके अपनी प्रतिज्ञा पूर्ण करोगी?

जीवाना०। जरा ठहरो, इतना जल्द वह काम नहीं हो सकता। देखो रैाबर्ट! मैं रानी होने पर भी स्वाधीना नहीं हूं। प्रजा इस समय बिगड़ी हुई है। इसके बाद उस रात की घटना, वह भयंकर बातें—याद आते ही कलेजा कांप उठता है॥

रैाबर्ट०। वह केवल छल और कौशल था॥

जीवाना०। पहिले राजा की प्रेतात्मा का आविर्भाव॥

रैाबर्ट०। वह भी एक ऐन्द्रजालिक घटना थी, कोई शत्रु डराने के लिये राजा का कवच पहिन चला आया था॥

जीवाना०। पर वह निश्चयही हमलोगों के सब भेद जानता है। मेरा वह मृत स्वामी, वह रेशम की डोरी, क्या ये सब बातें ऐन्द्रजालिक घटनायें हैं?

रैाबर्ट ने कहा—"वह रेशम की डोरी तो कदाचित तुमने ही बाहर फेंक दी थी, किसी नौकर ने उठाकर राजमहल से बाहर डाल दी होगी, शत्रु लोग वह उठा लेगए हैं। सम्भव है

कि बेरियम इस विषय को न जानता हो, निश्चय ही वह एक आकस्मिक घटना मात्र थी॥"

जीवाना०। यदि सचमुच ऐसा ही हो तथापि उस रात्रि का वह भयानक नाटक और सब की सजीव मूर्तियां मैं नहीं भूल सकती॥

रौबर्ट०। यह निर्मूल शङ्का हृदय से निकाल बाहर करो। उस रेशम की डोरी के भय से अब हमलोगों को व्यर्थ समय बिताना चाहिये॥

पर यह बात समाप्त होते ही रानी के पीछे वाले मखमली पर्दे के भीतर से एक हाथ निकला और उस रेशमी डोरी को, टेबल पर रख कर अन्तर्धान हुआ॥

रौबर्ट लपक कर उठ खड़ा हुआ और बिजली की तरह तेज़ी से उधर ही दौड़ा, पर पर्दे के पीछे कोई न था, केवल एक बन्द दरवाज़ा दिखाई दिया जिससे एकबार ताला बन्द करने का खटका उसे सुन पड़ा। वहां से विकल मनोरथ होकर रौबर्ट कमरे के बाहर निकला पर वहां भी कोई न था॥

रौबर्ट भोजन के कमरे में लौट आया, उस समय सभी भय और आश्चर्य से व्याकुल हो रहे थे। जीवाना मूर्छित होकर गिरी हुई थी। कई मनुष्य पकड़कर उसे उसके कमरे में ले गए, बाकी मनुष्यों को किसी प्रकार से समझाकर रौबर्ट ने विदा किया॥

इसके बाद वह जीवाना के कमरे में पहुंचा ही था कि इतने ही में करोलिना ने उसके पास आकर उसे चुप रहने और अपने पीछे पीछे आने का इशारा किया। रौबर्ट करोलिना के पीछे उसके कमरे में चला गया॥

चौथा परिच्छेद।

ज्यों ही रौबर्ट करोलिना के कमरे में घुसा त्यों ही करोलिना ने सावधानता से कमरे का दरवाजा भीतर से बन्द कर दिया। रौबर्ट को अपने पलङ्ग पर बैठा कर करोलिना उसके बगल में बैठ गई। इसके बाद कुछ देर तक रौबर्ट की ओर चुपचाप देखती रही। फिर एक कटाक्ष करके बोली, "मालूम होता है आपको इस तरह एकान्त में ले आने के कारण इस समय आप बड़े चकित हो रहे हैं ?"

रौबर्ट। नहीं, इसमें आश्चर्य की क्या बात है ? हमलोग एक जगह के रहनेवाले हैं, एक ही रानी की सेवा कर रहे हैं, सदा एक समान भाव से उनके दुःख सुख में भाग लेते हैं, फिर तुम्हारे इस आचरण पर आश्चर्य करने की मुझे कोई आवश्यकता नहीं है। अच्छा, यह तो बताओ कि जीवाना अब कैसी है ?

करोलिना। जीवाना का हृदय जैसा कोमल तुम समझते हो वैसा नहीं है। आकस्मिक घटना के कारण उसका चित्त विचलित हो रहा था, इसीलिये कुछ देर तक वे एकान्त में रहा चाहती थीं। यदि आपकी कोई क्षति न हो तो आप भी इतनी देर मेरे इसी कमरे में ठहरकर अपनी तबीयत बहलावें।

रौबर्ट। (आनन्द से) सुन्दरी ! यह मेरे लिये निःसन्देह बड़ी प्रसन्नता की बात है परन्तु बारटंड यह कब स्वीकार करेगा। यह समाचार सुनकर उसे बड़ा कष्ट होगा।

करोलिना। (कुछ मुंह बनाकर) अब मेरे सामने उस

विश्वासघातक का नाम न लो। अब उसे प्यार करना तो दूर रहा, मैं देखा भी नहीं चाहती॥

रैवर्ट०। (आश्चर्य्य से) यह क्या कहती हो! कौंट वारटंह के समान सुन्दर, धनाढ्य और तरुण पुरुष भी तुम्हारे हृदय से च्युत हो गया! यह क्या सम्भव है?

करोलिना०। इस संसार में कुछ भी असम्भव नहीं है॥

रैवर्ट०। परन्तु कौंट तुम्हें अब भी जी से प्यार करता है॥

करोलिना०। हां, सो मैं जानती हूं। इसीलिये क्या मैं उसकी पापवासना चरितार्थ करने के लिये उसके साथ रहूंगी? और वह ऊँची आकांक्षा में उन्मत्त होकर मुझसे उत्तर किसी कामिनी के लिये लालायित रहेगा और मैं चुपचाप यह सब तमाशा देखूंगी? यह मुझसे न हो सकेगा॥

रैवर्ट ने तीक्ष्ण दृष्टि से करोलिना की ओर देखकर कहा, "क्या कहती हो! क्या वारटंह करोलिना से विवाह किया चाहता है? क्या नेपल्स के राजसिंहासन पर बैठने की आशा उसके हृदय में भी जाग्रत हो उठी?

करोलिना०। और क्या? इसीलिये तो मैं उसे पहिले जितना प्यार करती थी अब उतनी ही घृणा करती हूं॥

रैवर्ट०। पर क्या जीवाना ने भी मन, वचन अथवा इशारे से कभी उसकी आशा का समर्थन किया है?

करोलिना०। (कुछ संकोच से) मैं ये बातें तुम्हें नहीं कहा चाहती, मुझे डर मालूम होता है॥

रैवर्ट०। (करोलिना का हाथ पकड़ कर विशेष नम्रता से) मैं प्रार्थना करता हूं कि तुम जो कुछ जानती हो, स्पष्ट बतादो,

मुझसे कुछ भी न छिपाओ। मैं तुम्हारे आगे आजन्म ऋणी रहूंगा, तुम्हें सदा अपने बन्धु की भांति मानूँगा॥

करोलिना०। सब बातें सुनकर यदि तुम क्रोध से वारटंह पर आक्रमण करो अथवा लीवाना का ही विश्वासघातकता के लिये तिरस्कार करो तब फिर क्या होगा? नहीं, वे बातें मैं तुम्हें न बताऊँगी॥

रैंबर्ट०। मैं कसम खाता हूं, मैं कभी ये बातें प्रगट न होने दूँगा और न तुम्हारी इच्छाके विरुद्ध कोई कामही करूँगा। तुम क्या इतने पर भी मेरा विश्वास नहीं करतीं॥

करोलिना०। विश्वास करती हूं परन्तु अन्त में दुःखी होकर तुम मुझे भी त्याग दोगे, इसीलिये तुमसे नहीं कहा चाहती॥

रैंबर्ट०। करोलिना! मैं इसके बदले तुम्हें अपना प्रेम दूँगा। यदि लीवाना किसी तरह मेरे हृदय से दूर हुई तो वह स्थान तुम्हें ही मिलेगा॥

करोलिना०। (आश्चर्य से) ऐं! क्या यह सत्य है? नहीं रैंबर्ट! यह नहीं हो सकता। यदि तुम्हारी यह बात सत्य हो तो इसमें कोई सन्देह नहीं कि मेरा जीवन आनन्दमय हो जाय परन्तु मुझे अब भी विश्वास नहीं होता॥

रैंबर्ट०। तुम मेरी बात मानो। देखो तुम्हारे सौन्दर्य्य में एक प्रकार की मोहब्बत है, मादकता है और प्रेम है। मैं जितना ही तुम्हें देखता हूं, तुम उतनी ही सुन्दरी मालूम होती हो। तुम आज पहिले से कहीं अधिक सुन्दरी दिखाई देती हो॥

करोलिना की आंखें और भी विलोल तथा आवेशमय हो उठीं। उसने बड़े ही मधुर स्वर में कहा, "तुम्हारी बातें मुझे बड़ी ही प्यारी मालूम होती हैं। मैं किसी विषय में भी तुम्हारी इच्छा के विरुद्ध नहीं चला चाहती। मैं तुमसे स्पष्ट कहती हूं, कि जब तुम नहीं रहते हो, तब जोयाना उसे बहुत ही प्यार करती है। मैंने अपनी आंखों देखा है कि बारटंड जोहाना से सुर में सुर मिलाकर प्रेममय गीत गाता था॥

सुनते ही "असत्य" कह कर रौबर्ट उछल पड़ा। साथही भर्त्सना के स्वर में करोलिना ने कहा, "बस यही तुम्हारी शपथ है॥"

रौबर्ट तुरत ही "क्षमा करो, अब ऐसा न होगा।" कहकर बैठ गया॥

करोलिना०। एक दिन बारटंड ने रानी के हाथ में एक पत्र दिया था। मेरे मन में कौतूहल के साथ ही साथ ईर्षा भी हुई। मैंने रानी के बक्स में से पत्र निकाल कर पढ़ा, तब तब से ही बारटंड की विश्वासघातकता का पूरा २ पता लग गया॥

रौबर्ट०। यहां तक हो गया! अच्छा, इसका कोई प्रमाण भी है?

करोलिना०। अवश्य है, समय पर दिखा दूंगी। पर तुम मुझे क्या देओगे?

रौबर्ट०। जो हृदय, जो प्रेम और जो प्राण जोयाना को दिया था वही तुम्हें भी दूंगा। तभी केवल यही दिखाऊँगा कि मैं उसे ही प्यार करता हूं। अब मैं सब बातें समझ गया। बारटंड जिस तरह जोयाना को पत्नी और तुम्हें तपस्वी बना

कर रखा चाहता है इसी तरह जीवाना भी वारटण्ड को पति और मुझे उपपति बनाकर रखा चाहती है॥

करोलिना०। यह असम्भव नहीं है यदि रानी की इच्छा न रहती तो वारटण्ड की क्या मजाल थी जो उसकी ओर आंख उठाकर देखता॥

रौबर्ट०। परन्तु जीवाना ने तो वारटण्ड को राजसभा से निकलवा दिया था॥

करोलिना०। अभी स्त्री-चरित्र तुम नहीं जानते। यह जीवाना का कौशलमात्र था। जीवाना जानती थी कि मैं जिस समय उसे राज सभा से निकाल दूँगी उस समय अवश्य ही सब आपत्ति करेंगे। देखो, बात भी वही हुई। रौबर्ट तुम वीर हो, परन्तु चतुरा नारी का चतुरकार्य्य नहीं समझते हो॥

रौबर्ट इस समय प्रणयान्ध हो रहा था, इसी कारण से वह करोलिना की चातुरी न समझ सका। षड्यंत्रपरायणा करोलिना ने अपनी चातुरी से उसे जीवाना पर विश्वास-हीनता जमा दी॥

रौबर्ट०। तुम्हारी बातों से आज मेरी आंखें खुली हैं परन्तु उसकी विश्वासघातकता अपनी आँखें देखे बिना अभी कुछ नहीं कह सकता। तुम मुझे प्रमाण दिखादो, मैं तुम्हें जी से प्यार करूँगा॥

करोलिना०। अच्छा, तुम कल दिन भर इसी कमरे में रहना और सांझ हो मेरे याद कर देना, मैं समय पर तुम्हें समाचार दूँगी॥

इसके बाद करोलिना और रौबर्ट ने बहुत देर तक प्रेम

की बातें होती रहीं। आज से ही रौबर्ट करोलिना पर विशेष अनुरक्त हुआ। करोलिना भी अपने माया-जाल में रौबर्ट को फँसाकर मन ही मन प्रसन्न होने लगी॥

पांचवां परिच्छेद।

गाढ़ी निद्रा के बाद जीवाना की नींद टूटी। नींद खुलते ही रात्रि की सभी घटनायें उसे धीरे धीरे याद आने लगीं। इसी समय करोलिना धीरे धीरे कमरे में आई। जीवाना उसे देखते ही पलङ्ग पर उठ बैठी॥

करोलिना ने कहा, "महारानी तबीअत कैसी है! चेहरा बहुत ही सुस्त हो रहा है। एक साधारण ऐन्द्रजालिक घटना को देखकर क्या आपको इस भांति चिन्तित होना चाहिये? हमलोग आपके सुख से सुखी हैं,आप धीरज धरें। इतना डरने से क्या कोई काम होता है?"

जीवाना०। परन्तु करोलिना! तुम्हारे समान मेरा हृदय नहीं है॥

करोलिना०। आपके हृदय में बल है,आप भी चेष्टा करके इस अवसन्नता और अप्रसन्नता को दूर कर सकती हैं और दुःख ही किस बात का है,जगत में अकेली आप ही दुःखिनी नहीं हैं॥

जीवाना०। ठीक है, परन्तु मेरे समान दुःखी शायद ही कोई होगा। अब मैं समझ गई हूं कि दुःख क्या पदार्थ है— दुःखी पाने पर उसका दुःख दूर करके, मैं अपना दुःख भार

घटा सकती हूं ॥

करोलिना०। आपके इस राजमहल में ही एक मनुष्य दुःख से दग्ध हो रहा है। अभागा आपके मुंह की सान्त्वना पाये बिना कभी सुखी नहीं होगा और कदाचित इस संसार को भी त्यागने पर वह तैयार है ॥

जोवाना०। क्या बारटरड इतना मर्म्माहत हुआ है ?

करोलिना०। उसका भयानक दुःख देखकर आपके हृदय में भी चोट आयेगी। आपने उसे राजसभा से निकाल देना चाहा था परन्तु अन्त में उसे क्षमा किया है यह भी मैंने सुना है, आपका विराग भाजन होकर जीवन धारण की अपेक्षा वह मरना ही अच्छा समझता है। बारटरड आपको प्यार करता है और आपके लिये यह अविनश्वर देह तक त्यागने को तैयार है। इसका प्रमाण भी आपको मिल चुका है ॥

करोलिना की अन्तिम बात सुनकर जोवाना कांप उठी। बारटरड ही अन्ड्रिया की हत्या में प्रधान सहायक था। वह बोली, "मैं उसके उपकार को जन्म भर नहीं भूल सकती ॥"

करोलिना०। बारटरड ने कभी आपके विरुद्ध कोई काम नहीं किया। रणधीर रौबर्ट जब रङ्गभूमि में उपस्थित न हो सका, तब आपका सम्मान बचाने के लियेही कौंट बारटरड उसकी पोशाक पहिर कर रङ्गभूमि में गया था। मेरे साथ कौंट का क्या सम्बन्ध है, यह भी आपने छिपा नहीं है परन्तु इससे मुझे कुछ भी दुःख न हुआ। कौंट केवल आपकी भक्त प्रजा ही नहीं, वरन आप पर अनुरक्त भी है। आप उसके हृदय की अधीश्वर देवी हैं ॥

जीवाना के चेहरे का रङ्ग यह सुनकर लाल हो गया। पु
नवीन विष धीरे धीरे हृदय में घुसने लगा। विपन्न कैर
का मलिन मुख नये रह रह कर याद आने लगा। जीवान
करोलिना की विचारी बातें न समझ सकी। यदि समझतं
तो फिर ऐसा कभी न पूछती कि "कौन्ट के साथ हँसहँस क
बातें करने से तुम्हारे जी में कोई कष्ट तो न होगा?"

करोलिना०। यह क्या? मैं तुम्हारे सुख से ही सुखी हूं
कौन्ट को मैं प्यार करती हूं, उसके सुख से ही सुखी हूं,फि
मुझे दुःख क्यों होने लगा॥

जीवाना०। मैं कौन्ट से बहुत ही जल्द परन्तु एकान्त में
मिलूंगी, तुम भी उस समय मेरे साथ ही रहना॥

हृदय से आनन्द में आकर करोलिना ने जीवाना की
आज्ञा स्वीकार की। जीवाना ने अपनी पोशाक बदली, भोजन
किया। इधर करोलिना ने जीवाना के आगमन का समाचा
कौन्ट को दिया परन्तु बारटज़ के पास जाने के पहिले ही उसने
एक कागज पर कुछ लिख कर रोबर्ट के पास भेज दिया॥

जीवाना जानती थी कि कौन्ट से इस तरह मिलना ठीक
नहीं है तथापि उसका पापासक्त क्षुद्रहृदय,लालसा की प्रबल
उत्तेजना से चंचल हो उठा। करोलिना के लौटने पर वह उसके
साथ बारटज़ के पास चली गई॥

—————

छठवां परिच्छेद।

काउन्ट वारटम्ब एक कमरे में पलङ्ग पर लेटा हुआ था, उसके चेहरे की कान्ति बड़ी ही मलिन हो रही थी। रानी जीवाना ने जिस समय उस कमरे में प्रवेश किया तो उसे देखतेही उसके चेहरे पर प्रसन्नता छा गई॥

कंपित हृदय से धीरे धीरे जीवाना काउन्ट वारटेम्ब के पास पहुंची। उसने वारटम्ब के पास जाकर अपना दाहिना हाथ फैला दिया, तुरत ही वारटम्ब ने उसे चूम कर जीवाना को सम्मानित किया और कहा, "आपकी इस सहानुभूति पर मैं आपका चिरकृतज्ञ हूं। मैं हार कर बड़ा ही लज्जित हुआ हूं, उसी लज्जा से इस समय मर रहा हूं॥"

जीवाना उसकी बगल में बैठ गई। करोलिना भी पासही एक कुर्सी खींच कर बैठ गई। जीवाना बड़े ही करुणस्वर में बोली, "काउन्ट वारटम्ब! तुम्हारी वीरता में किसीको भी सन्देह नहीं है। जय पराजय भाग्य की बात है। कितने ही युद्धों में तुमने जयलाभ किया है—एक में हार जाने पर इतने दुःखी क्यों होते हो? बड़े बड़े योद्धा भी कितनी ही बार पराजित होते हैं॥"

वारटम्ब ने बड़े ही मधुर स्वर में कहा, "आपके इतने ही आश्वासन से मेरा दुःख दूर हुआ है। आप नहीं जानती हैं कि आपके मुंह की एक एक बात के लिये मेरा हृदय लालायित रहता है॥

जीवाना०। वीरवर तुमने जो उपकार किया है वह मैं

कभी भूल नहीं सकती। मैं तुम्हारी वीरता पर मुग्ध हूं और तुम्हारे कार्य्यों पर विरक्त हूं॥

वारटवड०। मुझे ऐसी आशा न थी कि आपके मुंह से मैं बातें सुनूँगा। मैं कितनी ही बातें आपसे कहा चाहता था, पर आपको दुःख होगा इसी कारण से कहने की हिम्मत नहीं पड़ती॥

जीवाना०। तुम अपना हृदयभाव प्रकाशित नहीं किया चाहते और उसे सुने बिना मेरे हृदय में शान्ति नहीं है॥

वारटवड०। आपके मुंह से अभय शब्द सुने बिना मैं कदापि नहीं कह सकता। उन बातों के प्रकाशित करने पर राजद्रोह से मस्तक तक उड़ा दिया जा सकता है॥

जीवाना०। अब कहना न होगा, मैं समझ गई॥

वारटवड०। तब भी मेरे मुंह से आपको सुनना पड़ेगा। मेरा हृदय आप पर बहुत ही अनुरक्त हुआ है—यही मेरे हृदय का दोष है, यही मेरे हृदय की विद्रोहिता है॥

जीवाना०। मैं स्त्री हूं—मेरे नारी हृदय पर तुम्हारा प्रेम स्थान पा सकता है परन्तु रानी की हैसियत से मैं तुम्हारी बातें नहीं सुन सकती। अब शायद तुम समझ गए होगे कि मैं तुमसे विरक्त नहीं हूं यदि विरक्त रहती तो एक क्षण भी यहां खड़ी न रहती परन्तु वारटवड! अपने हृदय का प्रेम मुंह से निकाल कर तुमने अच्छा काम नहीं किया, मैंने भी सुन कर अच्छा काम नहीं किया। रावर्ट के सुनने पर क्या होगा, बताओ तो सही॥

रानी जीवाना के मुंह से इतना निकलते ही कमरे का

दर्वाजा जोर से खुल गया और हाथ में नङ्गी तलवार लिये हुए रैाबर्ट ने कमरे में प्रवेश किया। पीछे उसका विश्वासी नौकर आर्लेंज था॥

करोलिना भय से चिल्ला उठी। राबर्ट तेजी से जीवाना की ओर बढ़ा और आर्लेंज यारटवर्थ के कलेजे पर एक नङ्गा छुरा लगाकर जोर से बोला, "उठते ही प्राण गवायगा॥"

रैाबर्ट के कमरे में आते ही जीवाना ने आगे बढ़कर कहा, "आओ रैाबर्ट! एँ! परन्तु इस तरह तुम्हारे आने का कारण क्या है? और यह क्या? तुम्हारे भृत्य का यह कैसा आचरण है?"

रैाबर्ट ने गम्भीर स्वर से कहा, "मेरी ऐसीही आज्ञा है॥"

रानी जीवाना ने गर्व से उत्तर दिया, "रैाबर्ट! क्या तुम नहीं जानते कि इस राजमहल पर मेरा ही पूरा पूरा अधिकार है।" (आर्लेंज की ओर देख कर) दूर हो यहां से॥

रैाबर्ट०। मैं उसका मालिक हूं। मेरी आज्ञा के सिवा दूसरे की आज्ञा वह कभी न मानेगा यदि इस बात को शीघ्र दबा दिया चाहती हो तो इधर आओ, मैं तुमसे कुछ पूछूंगा॥

जीवना०। तुम्हारी बातों से तो ऐसा ही मालूम होता है मानो तुम ही मेरे मालिक हो, मैं ऐसी बातें नहीं सुना चाहती॥

रैाबर्ट०। अच्छा, जब तुम एकान्त में नहीं सुना चाहती हो तब अब सबके सामने सुनो। तुमने धर्म की शपथ खाकर प्रतिज्ञा की थी कि मैं तुमसे विवाह करूँगी। मैं जानना चाहता हूं कि अब उसमें कितनी देर है॥

जीवाना०। पहिले यह बताओ कि इतने मनुष्यों के सामने ऐसा प्रश्न करने का तुम्हें क्या अधिकार है?

रैाबर्ट० । जो स्त्री बार बार मुझसे प्रतिज्ञा कर चुकी है, जिसने मेरे हृदय को आशा सलिल से सदा सींचा है । जिसके लिये मैं प्राण देने तक को तैयार हूं । वह किस तरह बिना मुझे समाचार दिये मेरे प्रतिद्वन्द्वी के कमरे में बैठकर चुपचाप बातें करे? निश्चय ही यह बात पूछने का मुझे अधिकार है । अब मैं जानना चाहता हूं कि तुम अपनी प्रतिज्ञा भङ्ग किया चाहती हो अथवा उसकी रक्षा किया चाहती हो?

कोम्ट० । वारटन्ड ने बड़ी नम्रता से कहा, "रैाबर्ट! मेरी अवस्था खराब है इसीसे तुम इतना बढ़ बढ़ कर बातें कर रहे हो ॥"

जीवाना० । मुझे स्वप्नमें भी ऐसा ख्याल न था कि तुम मेरे साथ ऐसा व्यवहार करोगे ॥

रैाबर्ट० । जीवाना ! ऐसा ही मैं भी समझता था । मैंने अपने को किस तरह तुम्हें अर्पण कर दिया है । दो दिनों के युद्धमें किस तरह तुम्हारे सम्मान की रक्षा की है, यही क्या उसका इनाम मिल रहा है । ओह! क्या स्त्री चरित्र इतना अधम्य है! मैं तुम्हारी लालसा को तृप्त करने वाला—तुम्हारे स्वार्थ साधनका यंत्र हो रहा था । नहीं, अब मैं तुम्हारे हाथ की पुतली के भांति न नाचूंगा । अब तुम्हारी क्या इच्छा है, साफ़ साफ़ बताओ अब देर नहीं सही जाती ॥

इस समय एकाएक जीवानाका राज गैारव लैाट आया । गर्वसे माथा उठा कर जीवाना ने कहा "तुम्हारी किसी बात उत्तर देनेके लिये मैं बाध्य नहीं हूं । तुमने मेरी नारी मर्य्यादा और राज गैारव में हस्तक्षेप किया है ।" यह कह घणासे रानी

जोसाना कमरा छोड़ कर बाहर निकला ही चाहती थी कि क्रोध से रौबर्ट गरज उठा। तलवार उठाकर बोला, "पिशाच कामिनि! इस तरह यहां से जा न सकेगी। जोसाना! बैठ, घुटने टेक कर बैठ—जिस तलवार ने शत्रु के रक्त से तेरा कलङ्क धोया है—वही तलवार आज तेरा रक्त पान करेगी॥"

इतना कह कर रौबर्ट ने ज़ोर से जोसाना को अपनी ओर खींच लिया। बेवरन की अधीश्वरी उसके सामने घुटने टेककर बैठ गई। अपमान के भयानक दुःख का चिन्ह उसके चेहरे पर फूट निकला। वह कर्कश स्वर में बोली, "खून! खून करेगा। राजहत्या करने की तेरी हिम्मत पड़ेगी?

कैरोलिना रौबर्ट का हाथ पकड़ कर बोली, "रौबर्ट! शान्त हो—क्या करते हो?"

रौबर्ट ने ज़ोर से कैरोलिना को दूर ढकेल दिया। कैरोलिना एक ओर गिर कर रोने लगी॥

इधर बार्टेल ने उठने की चेष्टा की परन्तु आर्थर ने उसे पर दबाया। रौबर्ट ने फिर चिल्लाकर कहा, "मेरी मृत्यु निश्चय है! तीन मिनिट का समय देता हूं। इतने में ही अपने इष्टदेव का स्मरण कर ले और आर्थर! मेरी तलवार ज्यों ही इस अभागिनी के मस्तक पर गिरे त्यों ही अपना छुरा तुम बार्टेल के कलेजे के पार कर देना॥

रौबर्ट का भीषण भाव देख कर जोसाना का कलेजा कांप उठा। उसने कांपते हुए कहा, "रौबर्ट! एक दिन तेरे मुझे प्यार किया था। किस हृदय से तुम उसकी हत्या का इरादा करते हो? क्या सचमुच तुम राजहत्या करने के लिये तैयार हो।

रोबर्ट०। पापिनी। फिर बोलती है—ईश्वर का नाम ले अब कोई मानवीयशक्ति मेरे हाथोंसे तेरी रक्षा नहींकर सकती।

जोवाना का कण्ठस्वर और भी करुण हो उठा। वह बड़ी कातरता से बोली, "दयामय! परमेश्वर! सचही क्या मुझे मरना होगा? यही क्या मेरी भाग्य लिपि है! हाय! क्या मेरी सहायता करनेवाला कोई भी नहीं है।" यकायक जोवाना को एक बात खयाल में आई। वह ज़ोर से चिल्ला उठी, "बेरियन—मेरा विपद्बन्धु बेरियन! यदि तुम पास हो, आकर मेरी सहायता करो!!"

जोवाना भय से घबड़ा उठी, वह एकबार फिर बड़े विकट स्वर में चिल्ला उठी। उसकी स्वर लहरी कांप कांपकर वायु में प्रतिध्वनित होने लगी।

यकायक कमरे की दीवाल का कुछ अंश हट गया और अपने तीन साथियों के सहित बेरियन कमरे में आ पहुंचा।

बेरियन ने कमरे में घुसते ही रोबर्ट तथा आर्लैंड को अपने मनुष्यों की सहायता से बन्दी किया। इधर जोवाना दौड़ कर करोलिना की बांहों का सहारा ले बेहोश हो गई। जिस समय वह होश में आई, उस समय कमरे में रोबर्ट न था। वह उसी कमरे में एक पलङ्ग पर बेहोश पड़ी हुई थी, पासही करोलिना बैठी थी, जोवाना होश में आने पर पागलिनी की भांति उठ बैठी और कारोलिना का हाथ पकड़ कर बोली, "वे कहां गए? बेरियन और उनके नौकर कहां हैं? रोबर्ट कहां गया?"

रोती हुई करोलिना बोली, "डाकू रोबर्ट को साथ लेकर

चले गए हैं। जाने के समय वेरियन कर्कश स्वर से कह गया—जब तक रैावर्ट की मति न बदलेगी, तब तक तुम उसे देख न सकोगी॥"

इतना कहकर दोनों हाथों से मुंह छिपा, करोलिना रोने लगी॥

~~~

सातवां परिच्छेद।

इसी दिवस दोपहर के समय अलसमूरा की डोना लुसिया राजमहल के पास ही एक बाग में घूम रही थी। वह मन ही मन विचारती थी, "कल मुझे जिन्होंने सब से अधिक सुन्दरी समझ कर मेरे हाथों में विजय चिन्ह अर्पण किया था, वे कौन हैं?" यकायक मुँह उठाकर उसने बाग के बाहर देखा, देखते ही प्रसन्नता से उसका चेहरा खिल उठा। उसने देखा कि बाहर वही युवक खड़ा है जिसने युद्ध के दिवस उसे विजय चिन्ह अर्पण कर सम्मानित किया था। बाग के बाहर ही रेलिंग के पास खड़ा खड़ा वाल्टन लूसिया की ओर देख रहा था। दोनों ने दोनों को पहिचाना। क्षणभर बाद ही फाटक खोल दिया गया और वाल्टन लूसिया के पास आ पहुंचा॥

वाल्टन प्रसन्नता से बोला, "सुन्दरी! तुम्हारे लिये मैं बहुत ही उत्कण्ठित रहता हूं। उस दिन पागल मनुष्यों की भीड़ में मैंने तुम्हें खो दिया था, उसके बाद फिर कल दिन रङ्गमंच पर तुम्हारा दर्शन मिला, इसके बाद फिर तुम्हारा कोई समाचार नहीं मिला।
~~~

लूसिया०। तब क्या कल तुम ही.........

वाल्टन०। हां, मैंने ही तुम्हें साहस करके अपना विजय चिन्ह अर्पण किया था, परन्तु सुन्दरी। उससे तुम्हें कोई कष्ट तो नहीं हुआ? यदि तुम उससे दुःखित हो तो मैं तुमसे क्षमा मांगता हूं। पहिले दिन ही तुमने मेरे दुःख में सहानुभूति प्रकार की थी। मैं अपना जीवन विसर्जन कर सकता हूं परन्तु तुम्हें दुःखित नहीं किया चाहता॥

लूसिया०। मैं असन्तुष्ट तो नहीं हुई॥

वाल्टन०। तब तुम्हारी आंखों में पानी क्यों है? तुम रोती क्यों हो?

लूसिया०। आप क्षमा करें। किस तरह कृतज्ञता प्रकाशित की जाती है यह मैं नहीं जानती। कल हजारों सुन्दरियों के रहते आपने अपना विजयचिन्ह मुझे अर्पण किया है इससे मैं बड़ी ही गौरविनी हुई हूं॥

वाल्टन०। इसके लिये मुझे धन्यवाद देने की जरूरत नहीं है। मेरा हृदय जिसे सब से अधिक सुन्दरी जानता है, उसे ही मैंने अपना विजय चिन्ह अर्पण किया है परन्तु अब भी तुम्हारी आंखों में आंसू क्यों दिखाई देते हैं? तुम्हें क्या दुःख है?

लूसिया०। (कुछ लज्जित होकर) आपका अन्तःकरण स्वच्छ और सरल है। आप मेरी बातों पर क्रोध न करें। मेरे पिता ने भी आपकी बातें सुनी हैं, तुमनेही मुझे डयूक के चंगुल से बचाया था यह भी उन्हें मालूम हुआ है परन्तु एक बात को सुनकर वे बड़े ही दुःखित हुए हैं॥

वाल्टन०। मैं तुम्हारा भाव न समझ सका, साफ २ कहो॥

लूसिया ने उसकी बगल से लटकते हुए बिगुल को दिखाकर कहा, "इसकी ध्वनि को सुनकर उस दिन एक योद्धा आ पहुंचा था, पिता मार्क्विस का कथन है कि यह वेरियन था ॥"

इतनी बात के कहते ही कहते लूसिया कांप उठी। वह युवक के चेहरे की ओर न देख सकी, सर झुकाकर खड़ी होगई॥

वाल्टन०। ओ! समझ गया ॥

परन्तु ये दो शब्द उसके मुँह से इस तरह निकले कि उससे लूसिया का सब सन्देह दूर होगया। लूसिया ने आंखें उठाकर देखा कि युवक का चेहरा, शान्त, निष्कलङ्क और निर्मल है। वह बोली, "मुझे क्षमा करो, मैंने बिना समझे बूझे तुम्हारे हृदय में यह चोट पहुंचाई है॥"

वाल्टन०। तुमने तो मेरा कोई अपराध नहीं किया, परन्तु यह तो बताओ कि तुमने अभी मार्क्विस का नाम लिया था सो वे कौन हैं?

लूसिया०। अलतासूरा के मार्क्विस मेरे पिता हैं। मेरे पिता माता तुम्हें आदर ग्रहण करेंगे। आओ, तुम्हें उनके पास ले चलूं, परन्तु तुम्हारा नाम क्या है?

वाल्टन०। मेरा नाम वाल्टन है, परन्तु मैं बड़ा अभागा हूं। पिता माता का आदर पाना तो दूर रहा, मैं उनका नाम भी नहीं जानता। नहीं, मैं तुम्हारे पिता के पास न जाऊँगा। मैं सभ्य समाज में नहीं मिला चाहता॥

लूसिया०। मेरे पिता बड़े दयालु हैं-वे तुम्हारा बड़ा आदर करेंगे। वे दुःखियों पर बड़ी दया करते हैं॥

वाल्टन०। अच्छा, तुम अपना नाम तो बताओ॥

मधुर स्वर से लूसिया बोली, "लूसिया॥"

वाल्टन०। यह ही सुन्दर नाम है। आज से यही नाम मेरी प्रार्थना में उच्चारित होगा, परन्तु लूसिया! पिता माता के आदर यत्न से रहित रहने पर भी, मुझे विश्वास है कि मैं किसी उच्च वंश का हूं "यह देखो॥"

इतना कह कर वाल्टन ने अपने कंठ का अर्द्धहार निकाल कर लूसिया को दिया। उस अर्द्धहार को देखते ही "दयामय! जगदीश्वर! यह क्या।" कह कर लूसिया कांप उठी। लूसिया ने भी अपना आधा हार निकाल कर वाल्टन को दिया। वाल्टन ने दोनों टुकड़ा मिलाया—दोनों मिल कर एक हार होगया। जोड़ के स्थान में सोना आ मिला। यह देख वाल्टन कांपता हुआ बोला, "इसमें न जाने क्या भयङ्कर रहस्य भरा है॥"

रोते रोते लूसिया ने कहा, "सब समझ गयी हाय!!"

वाल्टन०। क्या हुआ लूसिया! शीघ्र बताओ॥

लूसिया०। हाय! तुमसे अब मेरी मुलाकात न होगी। तुम अब मुझे देखने भी न पाओगे। देखना तो दूर रहा, मेरा विचार भी मन में न लाना। विदा! जाओ, वाल्टन!! जाओ!!! ईश्वर तुम्हें सुखी करें॥

इतना कह कर लूसिया तेजी से रोती हुई वहां से चली गई। जब तक वह दिखाई देती रही वाल्टन टकटकी बांधे उसी ओर देखता रहा, परन्तु जब वह आंखों की ओट होगई तो एक ठण्ढी सांस लेकर वहां से चला गया॥

* देखो पहिला हिस्सा दूसरा परिच्छेद॥

आठवां परिच्छेद ।

सवेरा हुआ ही चाहता है। प्रवालद्वीप का एक मात्र अधिकारी वही बूढ़ा आज सदा के लिये प्रवालद्वीप से विदा लेकर अपनी बनाई हुई नाव के पास खड़ा है ॥

सवेरा हुआ। सूर्य्यदेव की सुनहरी किरणों ने रात्रि के अन्धकार को धीरे २ दूर कर दिया। देखते ही देखते सूर्य्यदेव की अनुपम किरणे तरङ्गों पर क्रीड़ा करने लगीं ॥

वृद्ध बहुत दिनों तक प्रवालद्वीप में रह चुका था। शान्तिमय प्रवालद्वीप से उसे एक प्रकार की ममता हो चुकी थी। इसीलिये समय हो जाने पर भी वह टकटकी बांधे अपनी उस झोपड़ी की ओर देख रहा था जिसमें उसने अपने जीवन का एक बहुत बड़ा भाग बिताया था। बहुत दिनों के बाद इस स्थान को छोड़ते समय, उसकी आंखों में जल भर आया, परन्तु वह अपने कलेजे को दृढ़ कर, आंखें पोंछ, नाव पर चढ़ गया। उसके हृदय में ईश्वर की कोई विचित्र शक्ति जाग उठी। उसने करुणाकर की असीम दया पर भरोसा करके नाव अथाह समुद्र में छोड़ दी ॥

नाव अनन्त महासागर की तरङ्गों पर क्रीड़ा करती हुई प्रवाह में आगे बढ़ी। बूढ़ा चुपचाप बैठा हुआ चकित और दुःखित दृष्टि से टापू की ओर देखता रहा। नाव धीरे धीरे अथाह सागर के बीच में जा पहुंची। ज्यों ज्यों नाव दूर बढ़ती गई त्यों त्यों वृद्ध को टापू छोटा दीखने लगा। अन्त में नील आकाश में, नील महासागर के बीच के उस टापू का अस्तित्व भी

लोप हो गया॥

यदु ने भोजन के योग्य बहुत से पदार्थ नाव पर रख लिये थे। मीठा पानी, भांति भांति के फल, सूखी मछली आदि बहुत से पदार्थ—कुछ दिनों तक भोजन करने का सामान यदु ने नाव में भर लिया था। पानी बरसने के समय खराब होने और बह जाने के भय से अपने हाथों द्वारा बनाई हुई चटाई से यदु ने उन्हें ढाँक कर नाव में छिपा दिया था॥

धीरे धीरे दिन बीता। सूर्य्यदेव अपने शान्तिगृह की ओर पधार गए। उनकी तीव्र किरणें भी लोप हो गईं। चन्द्रदेव उदय हुए, उनकी शान्त किरणें समुद्र के जल में शोभा पाने लगीं। मन्द मन्द हवा चलने लगी। यदु के माथे पर तारा-रत्न जटित नीला आकाश और नीचे प्रबल-तरङ्ग-भूषित नील सागर था। प्रकृति की यह विलक्षण शोभा देखता हुआ यदु करुणामय की करुणा पर विश्राम करके नाव परही सो गया॥

• • • • •

इसी तरह उन्तीस दिन बीत गए। तीसवें दिन सबेरे ही यदु ने देखा—आकाश में दूर पर कुछ धूसर वर्ण का टुकड़ा घूम रहा है। बूढ़ा देखतेही समझ गया कि वृष्टि की यह पूर्व सूचना है। बूढ़े ने अपने सामानों को ठीक कर रक्खा॥

थोड़ी ही देर बाद वह टुकड़ा बड़ा होने लगा। बड़ा होते होते आकाश में चारों ओर छा गया—समुद्र के ऊपर ज़ोर से हवा चलने लगी, साथही साथ समुद्र के जल की तरंगें भी बढ़ने लगीं, तरंगें नाच २ कर नाव को इधर से उधर फेंकने लगीं। जीवन जड़वत् हुए बूढ़े नाव के इधर उधर घूमने लगे॥

दो पहर को समुद्र की अवस्था और भी भयङ्कर हो उठी। वृष्टिमय समुद्र की फेन भरी तरंगें नाच २ कर पागलों की तरह ज़ोर २ से गरजने लगीं, उनका प्रवाह भी खूब ही बढ़ गया। वृद्ध की छोटी नाव उन्हीं तरङ्गों पर इधर से उधर हिलने और नीचे ऊपर करने लगी। क्षण २ भर बाद ही मालूम होने लगा मानो अब यह नाव समुद्र के भीषण गर्भ में चली जायगी। इस बार ही की तरङ्गों के भयानक झोंके से नाव की रस्सियां टूट २ कर नाव भी चूर २ हो जायगी। (नाव केवल रस्सियों के बन्धन के सहारे ही बनाई गई थी) परन्तु ईश्वर की दया से नाव का बन्धन कहीं भी न टूटा। वृद्ध उन्हीं रस्सियों को देख देख कर विपद् भंजन ईश्वर का स्मरण करने लगा॥

जिस समय तरङ्गों से टक्कर खा कर वह नाव इधर से उधर और ऊपर नीचे हो रही थी, यकायक वृद्ध के हाथ की रस्सी जिसे पकड़ कर वह बैठा हुआ था, छूट गई। वृद्ध के शरीर का आधा भाग एकही झटके में जल में चला गया और एक भयानक घड़ियाल मुंह फाड़ कर वृद्ध की ओर दौड़ा। परन्तु बूढ़े ने सम्हल कर फिर रस्सी पकड़ ली और नाव पर चढ़ बैठा। यदि क्षण भर भी विलम्ब होता तो वह घड़ियाल अवश्य ही बुड्ढे को खा जाता। बूढ़ा भय से कांप उठा। वह आंखें बन्द कर विपद्-बन्धु ईश्वर को पुकारने लगा, उसका हृदय ईश्वर का नाम लेते ही शान्त हुआ॥

दिन बीत चला परन्तु आंधी पानी का ज़ोर कम न हुआ। इसी समय वृद्ध की दृष्टि यकायक सामने की ओर जा पड़ी। उसने देखा—कोई एक बड़ा भासमान पदार्थ धीरे २ उसकी

ओर चला आ रहा है। और भी पास आने पर वृद्ध ने देखा कि सामने का दोनों भाग बहुतही चमक रहा है, मानो उस में से कोई तेज निकल रहा है। किसी जलचर की प्रज्वलित आंखें मालूम होती हैं। इतने में ही वह पदार्थ और भी निकट आ पहुंचा। उसने नाव के पास आते ही अपना माथा उठाया। वृद्ध ने देखा—काल सहचर के समान एक बड़ा ही भयानक अजगर उसे ग्रास करने के लिये तैयार है। वृद्ध भय से निर्वाक्, निश्चेष्ट होगया। उस निर्जन स्थान में साहाय्य की सम्भावना नहीं है, परन्तु यदि सहायता के लिये मनुष्य रहते तब भी उसको चिल्लाने की सामर्थ्य न थी। नागराज की अग्निमयी आंखों को देख देखकर वृद्ध मन्त्रमुग्धवत् बैठा रहा। न जाने क्या विचार कर यकायक वह साँप वृद्ध को छोड़, नाव की बगल से चला गया। वृद्ध ने भय से देखा—उसकी विपुल देह लगभग ८० फीट लम्बी थी। इसके बाद वृद्ध कुछ देर तक मूर्छित पड़ा रहा॥

दिन बीता, रात हुई, परन्तु मेघ और समुद्र का भीषण युद्ध बन्द न हुआ। समुद्र और बादल दोनों गर्ज गर्ज कर अपना बल दिखाने लगे। साथही समुद्र की नटखट वारवनिता तरङ्गों ने भी अपना नाचना न बन्द की। इधर बादल की सहचरी दामिनी भी क्यों चुप रहने लगी। वह भी चमक २ कर तरङ्गों के नृत्य का उत्तर देने लगी॥

ओह! बड़ा भयानक समय था। अनन्त महासागर के बीच ऐसे भयानक समय में ईश्वरीय बल के बिना कौन ठहर सकता है। आधी रात के बाद यह भयङ्कर काण्ड शान्त हुआ। प्रकृति

जब मौनवती हुई। चारों ओर निस्तब्धता छाई परन्तु अन्धकार रह गया। वृद्ध उसी अन्धकार में बैठ कर अरुणोदय की राह देखने लगा॥

प्रभात हुआ, अरुण उदय हुए, अब बादलों का कहीं नामोंनिशान न था। प्रकृति हास्यमयी हो रही थी। प्रकृति की इस हास्यमयी मूर्त्ति को देख कर वृद्ध ने ईश्वर को शतशः धन्यवाद दिये॥

नौवां परिच्छेद।

बेरियन रौबर्ट को कैद करके ले गया, इस बात को आज तीन महीने होगये। इटली में इस समय वसन्त ऋतु है। इस समय वसन्त की मनोहर हवा के साथही साथ सुगन्धित पुष्पों की सुगन्ध से इटली की राजधानी नेपल्स नगरी सुवासित हो रही है। कानन, बाग, बगीचे, तट, तटिनी, कोमल श्यामल शस्य से सुशोभित हो रहे हैं। जिधर देखो उधरही वसन्त का मनोमुग्धकर उल्लासमय नेत्रतृप्तिकर दृश्य है। जिधर दृष्टि जाती है, उधर ही वसन्त का आनन्दमय सजीव चित्र दिखाई देता है। लतायें, फूल, कलियां, पेड़, कुञ्ज, भ्रमर की झंकार से गूंज रहे हैं। कुंजों में मीठे शब्द से मनोहर पक्षीगण बोल रहे हैं। विसूवियस पर्वत नवीन अंगूर की लहलहाती हुई लताओं से लद रहा है॥

यद्यपि चारों ओर सुख और शान्ति का किल्लोल है, परन्तु जो राजपुरी में रहते हैं उनका हृदय लालसा से अशान्तिमय

होरहा है ॥

एक दिन आड्री और फिलिपा दोनों राज महल के सामने वाली वाटिका में घूम रहे थे। फिलिपा ने आड्री की ओर देख कर कहा, "रैावर्ट के साथ जीवाला का जो सम्बन्ध था, अब यदि उस स्थान पर वारटवड जा वैठे तब भी अपने लोगों को कोई हानि नहीं हो सकती। परन्तु रैावर्ट के लिये मेरा हृदय व्याकुल हो रहा है ॥"

आड्री०। तुम्हारा पुत्र सकुशल है, इसमें कोई सन्देह नहीं ॥

फिलिपा०। परन्तु जिसके पास है उसकी शिक्षा से वह अपनी माता से घृणा करना सीखेगा। सीखेगा क्यों—उसने सीख लिया, नहीं तो पत्र अथवा मनुष्य द्वारा मेरे पास समाचार न भेजता ॥

आड्री०। जासूस पलोरिलो से सुना है कि रैावर्ट के यहां से ले जाने पर, येरियन और उससे बहुत देर तक दरवाजा बन्द करके बातें होती रहीं। इसके बाद चार मनुष्यों के साथ घोड़े पर चढ़ के सब कहीं चले गये। आटक नामक एक दस्यु पर उस मठका सब भार सौंपा गया है। कई महीने के लिये पलोरिलो को भी जवाब दिया गया है। यह सब उसी बालक ने आ कर मुझसे कहा है। यदि रैावर्ट दुःखित रहता तो जाने के समय वह कभी प्रसन्न नहीं दिखाई देता। जो हो, येरियन में कितने ही अच्छे गुण हैं, वह कभी माता से अश्रद्धा करने की पुत्र को शिक्षा न देगा ॥

फिलिपा०। उसके काम समझ में नहीं आते। फिर इसमय

किस उद्देश्य से वह कौन काम करता है, कुछ पता नहीं लगता। रोबर्ट के सम्बन्ध में उसका व्यवहार देखकर, उसके मनोभाव का अच्छी तरह पता लगता है कि वह उसे अपने दल में मिलाया चाहता है और डेरियन ने ही उस अज्ञात पुरुष को रङ्गभूमि में भेजा था। उस योद्धा के सम्बन्ध में मुझे एक सन्देह और भी है॥

आड्री०। (कुछ रूढ़ स्वर में) सन्देह! जब तुमने किसी तरह कोई भेद जान लिया है, फिर उसे मुझसे छिपाने का क्या कारण है?

फिलिपा। नहीं नहीं, उस बात को उठाने की अब कोई जरूरत नहीं है। जिस तरह यह गुप्त भेद मुझे मालूम हुआ है, यह जानने को एकबार पहिले भी तुमने इच्छा की थी, परन्तु उसी समय मैंने प्रार्थना की थी कि यह भेद मुझसे न पूछो और तुमने भी स्वीकार किया था। अब फिर भी वही प्रार्थना करती हूँ॥

आड्री०। इन दोनों में यह दूसरा कोई ठीक नहीं। मैंने दो बार तुमसे पूछा, पर तुमने कोई ठीक उत्तर नहीं दिया। मेरे जी में एक खटका लगा रहा, मन में विचारा था वाल्टर से पूछूँगा। पर उससे पूछने का भी अवसर नहीं मिला। डेरियन उसे भी ले गया है॥

फिलिपा। जब वह लौट आया और तुमसे भेंट हुई, तब क्यों नहीं पूछा?

आड्री०। पूछा था, परन्तु उसने भी जिगर करके पूछने से पीछे भला दिया, इससे मेरा सन्देह और भी दृढ़तर हुआ। कुछ कुछ विचारने के बाद मैंने यही निश्चय किया कि मैं इस गुप्त

हो गया, तुम अजान हो, तुम्हारी लालसा बलवती है, राह में या और कहीं तुमने उसे देखा होगा, उसे देख कर मुग्ध हो, छल कौशल से तुमने उसे बुलाया था, परन्तु इसके बाद किसी तरह उसके पास कोई चिन्ह देख कर.........

आट्री की बातें सुनकर फिलिपा का चेहरा मुर्झा गया। वह बीच ही में बात काट कर बोली, "अब अधिक कहना न होगा। मैं सब समझ गई, उस विश्वासघातक ने मालूम होता है सब बातें तुमसे कह दी हैं॥"

आट्री०। नहीं नहीं, वाल्टन ने मुझसे कुछ नहीं कहा है परन्तु जिस समय उसने मेरी बातों का कोई उत्तर न दिया, उसी समय मैं समझ गया कि इसमें किसी स्त्री के सम्बन्ध की बात है परन्तु सब कुछ समझने पर भी धारणा सत्य नहीं हुई थी परन्तु आज तुमने अपने मुँह से ही सब बातें कह डालीं॥

फिलिपा०। फिर इतने दिनों तक यह बात तुमने क्यों छिपा रक्खी?

आट्री०।इसीलिये छिपा रक्खी कि पीछे तुम बुरा मानोगी। आज लगभग बीस वर्षों से मेरा तुम्हारा मेल चला आता है, मैं तुम्हें हृदय से प्यार करता हूं। अब धीरे धीरे मैं स्मशान की ओर जा रहा हूं, इस अवस्था में क्या मैं तुमसे सम्बन्ध त्याग दूँगा? नहीं, फिलिपा! यह कदापि नहीं हो सकता॥

धीरे धीरे आट्री का कण्ठ स्वर कठोर हो उठा। उसकी कर्कश कण्ठ ध्वनि सुन फिलिपा काँप उठी। आट्री फिर बोला, "सुनो! यदि तुम मेरे साथ विश्वासघात करोगी, मेरे साथ चालाकी की चालें चलोगी, धूर्तता करोगी, तो यह कभी मन

में न समझता कि मेरी प्रतिहिंसा के तीव्र हलाहल से बच जाओगी। मैं तुम्हें अपने प्राणों से बढ़ कर प्यार करता था, इस समय इस बुढ़ापे की अवस्था में भी तुम्हें उसी तरह प्यार करता हूँ, यह देख कर भी यदि तुम किसी दूसरे को अपना प्रेमी बनाना चाहो तो भला मैं कब सहन कर सकता हूँ? मैं अवश्य ही उसका बदला तुमसे लूँगा। यह वृक्ष देखो, कैसा पत्ते और फूलों से शोभायमान हो रहा है॥"

फिलिपा कांप कर बोली, "फिर इस वृक्ष से हम दोनों की बातों से क्या सम्बन्ध है?"

आर्द्री ने अपनी जेब से एक छोटी शीशी निकाली और थोड़ा सा सफेद अर्क उस गुलाब के पेड़ की जड़ में छोड़ कर कहा, "अच्छा, आओ मेरे साथ आओ॥"

लाचार फिलिपा आर्द्री के साथ ही साथ उस वृक्ष को छोड़ आगे बढ़ गई। आर्द्री बोला, "देखो! तुम्हारा सन्देह वृथा नहीं है, उस दिन का वह घोड़ा वाल्टन ही का॥"

फिलिपा०। तब डेरियन को अभी तक किसी प्रकार का सन्देह नहीं हुआ है॥

आर्द्री०। नहीं, उसे क्यों सन्देह होने लगा॥

फिलिपा०। रानी जोआना सदा उसके विषय में पूछा करती हैं। यहां तक कि वारटर्र के सामने भी वाल्टन की प्रशंसा किया करती हैं। वारटर्र सुनकर मन ही मन ईर्षा से जलता है। अच्छा डेरियन ने वाल्टन को कहां के लिये क्यों भेजा था?

आर्द्री०। मालूम होता है कि उसने पुरस्कार डेरियन को

लड़ने के लिये ललकारा था, परन्तु कितने ही कारणों से बेरियन ने स्वयं आना उचित न समझा, इसीलिये वाल्टन को भेज दिया था॥

इस समय ये दोनों टहलते हुए उसी गुलाब के पेड़ के पास आ पहुंचे, जिसकी जड़ में आद्री ने वह अर्क छोड़ दिया था। इस समय आद्री ने फिलिपा से कहा, "ज़रा यह वृक्ष देखो तो सही ?"

फिलिपा उस गुलाब के पेड़ को देखते ही कांप उठी। इस थोड़ीसी ही देर में उस पेड़ के सब पत्ते सूख सूख कर गिर गए थे, अब उसमें वह श्यामल रंग, समस्त कान्ति, नेत्रतृप्ति कर शोभा कुछ भी नहीं थी। सूखी डालों में, सूखे फूल लगे थे॥

एकबार फिलिपा के चेहरे पर तीव्रदृष्टि डाल कर आद्री बोला, "इस गुलाब के वृक्ष के समान ही मनुष्य की जीवनी शक्ति भी मेरे हाथों में है। सावधान फिलिपा! अब भविष्य में मेरे साथ समझबूझ कर काम करना॥"

इस समय फिलिपा का चेहरा पीला पड़ गया था, समस्त शरीर कांप रहा था। आद्री बोला, "अब इस विषय की आलोचना की आवश्यकता नहीं है, चलो सन्ध्या होगई॥"
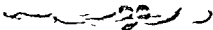
दोनों राजमहल में चले गए॥

दसवां परिच्छेद।

उस रात को फिर फिलिपा को नींद न आई। वह बदला लेने के लिये उतावली हो उठी। डाक्टर आर्द्री की बातों पर उसे विश्वास न हुआ था, परन्तु घटनाओं का समूह देख कर वह समझ गई कि डाक्टर का कहना अक्षरशः सत्य है॥

वाल्टन ने उसकी छिपी हुई गुप्त बातें प्रगट कर दीं। आर्द्री से अपमानित होने पर फिलिपा पैशाचिक क्रोध से उन्मत्त हो उठी। वह मन ही मन विचारने लगी—यह अभागा वाल्टन ही इस अनर्थों की जड़ है। वह अब उससे बदला लेने की फिक्र में लगी॥

मनुष्य का हृदय जब पाप में प्रवृत्त होता है, तब उसे कोई भी बाधा रोक नहीं सकती। अन्त में पापिष्ठा फिलिपा ने एक उपाय निश्चित कर ही लिया। उस समय रात के दो बज चुके थे। उसी समय उठकर उसने एक पत्र लिखा और चार्टरस के पास भेज दिया॥

दोपहर के बाद जब चार्टरस उससे मिला, वह उसे बगीचे के एक निर्जन स्थान में ले गई॥

चार्टरस बोला, "कौन्टेस! क्या राज्य सम्बन्धी कोई नवीन समाचार आज तुम्हें मिला है? आज तुम इतनी उद्विग्न क्यों हो रही हो?"

फिलिपा०। नहीं, राज्य का कोई समाचार नहीं है, तुम्हारे सम्बन्ध का ही कुछ विचार है। तुम किसी किसी समय बहुत उदास दिखाई देते हो। मेरे और तुम्हारे भाग्य

का सम्बन्ध आपस में कुछ लगा हुआ है इसीसे आज तुम्हारे विषय में विचार करने आई हूं ॥

मारटयड०। मेरी यह वर्त्तमान अवस्था कैसी भयानक है, इसे सब समझ सकते हैं ? आशका, उद्वेग और ईर्षा से मैं दिन रात व्याकुल रहता हूं। ड्यूक आफ कूराझका दल दिनों दिन बलवान हुआ जाता है ॥

फिलिपा०। हमलोग भी उनसे किसी अंश में कम नहीं हैं। शीघ्र ही दुष्टों का दमन किया जायगा। उस विषय में तुम कुछ भी चिन्ता न करो ॥

मारटयड०। रानी से मेरा प्रेम बढ़ता हुआ देख चार्लस मुझसे बहुत ही जलता है। वह मेरे हार की बात उठाकर मुझे अपमानित करता है। दोनों दल के बहुत से मनुष्य इस मनोमालिन्य को मिटाने की चेष्टा कर रहे हैं। जोयाना के साथ चार्लस का विवाह होने से यह गड़बड़ मिट जायगी। मुझे डर है कि पीछे जोयाना भी उनकी ओर ही हो जायगी ॥

फिलिपा०। क्या इतने के लिये ही तुम ऐसे उद्विग्न हो रहे हो। देखो, आज मैं तुम्हें एक उपाय बताती हूं, परन्तु बड़ी ही सावधानता से काम करना होगा ॥

मारटयड०। नहीं एक कारण और भी है। शायद तुम बाल्टन को जानती हो ॥

फिलिपा०। हां, मैं जानती हूं, उसने तुम्हारा क्या बिगाड़ा?

मारटयड०। उसकी बात निकलते ही जोयाना का चेहरा खिल उठता है। जब कभी वह उसे सड़क पर घूमते हुए खिड़की से देखती है, उसका चेहरा प्रेम से लाल हो जाता है। उसे

हिम्मत नहीं होती, इसीसे कुछ बोलती नहीं है ॥

किलिया। अच्छा तो अब मैं वह उपाय बताती हूँ कि एक ही बार में दोनों शत्रुओं का नाश हो जायगा। तुम वे अन्तिम दिवस कौन रङ्गभूमि में आया था जानते हो? वह अज्ञात वीर आल्डन ही था, आल्डन ने ही तुम्हें उस दिन हराया था। उसीने तुम्हारा मान-मर्दन किया था। केवल तुम्हारा ही उसने अनिष्ट नहीं किया है मुझे भी राजसभा से निकलवा देने का प्रबन्ध किया है। आल्डन चार्लस का पक्षपाती है। वह यदि रानी का प्रेमपात्र हुआ तो अवश्य ही हमलोगों का सर्वनाश होगा ॥

बारटरङ्ग। वह तो आड्री का योग्य पुत्र है ॥

किलिया। इससे क्या? जवानी के जोश में वह आड्री की भी आज्ञा नहीं मानता। नहीं तो क्या वह रङ्गभूमि में उस दिन लड़ने के लिये जाता ॥

बारटरङ्ग। तुमने ठीक ही बताया। मैं मूर्ख हूं इसीसे आज तक उसे पहिचान न सका, परन्तु अब निश्चय जानो, कभी इस कांटे को बढ़ने न दूंगा ॥

किलिया। परन्तु कैसे? खूब याद रखना, उसका सामान्य शत्रु भी आड्री की भयानक प्रतिहिंसा से बच न सकेगा। आड्री उसे अपने प्राणों से बढ़ कर प्यार करता है। यदि उसे थोड़ा भी सन्देह हुआ तो बड़ा ही अनर्थ हो जायगा ॥

बारटरङ्ग। फिर वह चार्लस के दल में कैसे जा मिला?

किलिया। इसका भी कारण है। (बहुत धीरे से) वह चार्लस की माता का प्रणयी है ॥

वारटनह० । (आश्चर्य से) यह क्या कहती हो ? ऐगनेस ब्रह्मचारिणी सन्यासिनी है ॥

फ़िलिपा० । वारटनह ! तुम अभी नहीं जानते । घृणित काम को छिपाने के लिये कपट से बढ़ कर दूसरा ढांकन नहीं है । मेरी बातोंपर विश्वास करो । वालटन उसका उपपति है ॥

वारटनह० । अच्छा ही हुआ । अब एक तीर में ही दोनों पक्षी मरेंगे ॥

फ़िलिपा० । दोनों पक्षी कौन ?

वारटनह० । चार्लस अपनी माता को सच्चरित्रा जान बड़ा ही गर्वित हो रहा है । अपनी माता की यह कलङ्क-कहानी सुनते ही उसका वह मान मर्दन हो जायगा । वह क्रोध से वालटन को हत्या करेगा । बस, हमलोगों के उद्देश्य की सिद्धि हो जायगी, क्योंकि आर्द्धी भी फिर बदला लिये बिना उसे न छोड़ देगा । आज सन्ध्या को ही चार्लस को एक बिना नाम का पत्र लिखूंगा ॥

फ़िलिपा० । बहुत ठीक ॥

पिशाचिनी के मुख से इतना निकलते ही वारटनह प्रसन्न हो गया और फ़िलिपा भी हँसती हुई राजमहल में लौट आई ॥

पहिले ही लिखा जा चुका है कि डचेस ऐगनेस बड़ी ही धर्म्मपरायणा स्त्री है । वह कभी घर से बाहर नहीं निकलती, उसका अधिकांश समय भगवद्भजन में ही जाता था । उसका निःस्वार्थ दान, दीन दरिद्रों की कुटी में आपही पहुंच जाता था । उसका बेटा चार्ल्स पापी होने पर भी माता के इन गुणों का दयावती [illegible] विख्यातों नगरों में अपनी

माता को इतनी धर्म्म परायणा देख चार्ल्स अपने को परम गौरवान्वित समझता था॥

चौदह वर्ष की अवस्था में ऐगनेस का विवाह हुआ। इस समय उसकी अवस्था उनचास वर्ष की है। यदि चार्ल्स मूर्ख न होता, यदि वह पुत्र की बुद्धि से काम लेता तो समझ जाता कि किलिया का वचन असत्य है। क्या इस बुढ़ापे में ऐगनेस वाल्टन की प्रेमानुरागिनी कभी हो सकती है?

संध्या के समय चार्ल्स अपनी बैठक में बैठा, अपने काम-काज देख रहा था। इसी समय एक नौकर ने आ कर उसके हाथ में एक पत्र दिया। नौकर पत्र दे कर चला गया, चार्ल्स ने पत्र खोल कर पढ़ा। यह लिखा था:—

"हूराल परिवार का मान यह पत्र लिखने वाले के लिये बड़ा ही प्रिय है। मैं कितने ही कारणों से अपने को प्रकट नहीं कर सकता। दुःख का विषय है कि तुम्हारी माता के दिखाऊ धर्म्म भाव में अभी पापवासना की भयानक अग्नि और विलास का भीषण ताप घुसा हुआ है। डाक्टर आट्री का पोष्यपुत्र वाल्टन तुम्हारी माता का उपपति है। पत्र पढ़ कर ही क्रोधोन्मत्त न होना, धीर विचार से इस विषय की विवेचना करना, साथ ही अपनी माता की झूठी छलभरी बातों पर विश्वास भी न करना। मेरी बातें झूठी नहीं हैं। वाल्टन सदा तुम्हारी माता के पास आया करता है॥"

ड्यूक के हाथ से पत्र गिर पड़ा। वह आश्चर्य और घृणा से माथे पर हाथ रख बैठ गया। चेहरा काला पड़ गया और दांतों पर दांत बैठ गए। वह मनही मन विचारने लगा,

"वाल्टन तो वही मनुष्य है जिसने डाकुओं के अड्डे पर लूसिया को मुझसे छीन लिया था। हाँ, हाँ, वही है।" वह क्रोध से और भी अधीर हो गया। उसके पाप भरे हृदय ने सहज में ही इस पत्र पर विश्वास कर लिया। उसने वाल्टन से बदला लेना ही निश्चित किया। तुरत ही उसने अपने दर्बान को बुलाकर पूछा, "क्या वाल्टन को तुम पहिचानते हो?"

दरबान०। हां, उसके समान सुन्दर और सच्चरित्र युवक मैंने देखा ही नहीं। वह..............

चार्लस०। (अस्थिर होकर) उसके गुण दोष मैं तुमसे नहीं पूछता। पूछता यह हूं कि वह आजकल यहां आता है या नहीं?

दरबान०। हां आता है॥

चार्लस०। साधारण मनुष्यों की भांति सदर दरवाजे से आता है अथवा गुप्तपथ से महल में जाता है?

दरबान०। लगभग तीन मासों से उसे सदर दरवाजे से आते मैंने नहीं देखा। बगीचे के माली से सुना है कि वह उसी राह महल में जाता है॥

चार्लस०। अच्छा जाओ, इस विषय में किसीको कुछ कहना नहीं॥

दरबान चला गया। इसी समय किसी काम के लिये बाग का माली चार्लस के पास आया "चार्लस ने उसे देखते ही पूछा, "वाल्टन को कभी तुमने देखा है?"

माली०। आज सन्ध्या को, लगभग एक घण्टा हुआ॥

ड्यूक०। क्यावह अभी तक यहीं है?

चार्ल्स। हाँ, मालूम तो ऐसा ही होता है॥

ड्यूक। अच्छा, तुम जाओ। मेरे दोनों नौकर मर्डो और डनमें को भेज दो॥

तुरत ही दोनों नौकर आ पहुँचे। चार्ल्स ने उन्हें कुछ समझाकर विदा कर दिया। इसके बाद चार्ल्स भी उठकर अपनी मां के कमरे की ओर चला। वह बड़ी सावधानता से अपनी माता के कमरे के द्वार पर जाकर खड़ा हो गया और कान लगाकर भीतर की आहट लेने लगा। वाल्टन के गले का स्वर वह अच्छी तरह पहिचानता था। वाल्टन कह रहा था, "प्रिये! मैं भी जान से तुम्हें प्यार करता हूँ। तुम भी मुझे उतना ही प्यार करती हो। मुझपर जो दया तुमने दिखाई है उसकी तुलना में मेरा प्रेम बहुत ही थोड़ा है। मेरे रोगी और टूटे हुए हृदय में तुम्हारे प्रेम ने मन्त्रौषधि की भांति काम किया है। मैंने भी अपने को भूल कर अपने हृदय की सभी बातें तुमसे कह दी हैं। तुमने मुझे बहुत कुछ शिक्षा दी है। तुमसे जो कुछ मुझे मिला है, जगत में उतना मुझे कोई नहीं दे सकता॥"

बस, इतना ही बहुत हुआ। अब अधिक सुनने की क्या आवश्यकता थी। इतना सुनते ही क्रोध से ड्यूक का शरीर कांपने लगा। वह अब अधिक देर तक खड़ा न रह सका, तुरत ही अपने नौकरों के पास गया और उन्हें कुछ समझा बुझाकर वहीं एक लताकुंज में छिप रहा॥

ग्यारहवां परिच्छेद।

दस मिनट बाद पत्तों की मरमराहट ने किसी मनुष्य के चलने की सूचना उसे दे दी। सभी तैयार खड़े थे। बाग के फाटक के खुलने का शब्द सुनते ही चार्लेस और उसके पीछे पीछे उसके दोनों नौकर तीनों वाल्टन पर झपट पड़े। चार्लस बोला, "आज मेरे हाथों वाल्टन अवश्य मारा जायगा॥"

इसी समय एक बादल के टुकड़े ने आगे बढ़ कर चन्द्रमा को छिपा लिया। इस अन्धकार ने चार्लेस को छिप कर धावा करने का और भी सुयोग कर दिया। तीनों दबे पैर वाल्टन के पास आ पहुंचे। जिस समय वह बादल चन्द्रमा के पास से हटा, ठीक उसी समय वाल्टन को भी मालूम हुआ कि कोई उसका पीछा कर रहा है। वाल्टन ने घूम कर देखा तो चार्लेस और उसके दोनों साथी हाथोंमें नङ्गी तलवारें लिये दिखाई दिये॥

वाल्टन भी तलवार निकाल कर लड़ने को तैयार होगया परन्तु तीन मनुष्यों के सामने अकेला ठहर न सका। अतः वह जोर से भागा। वह दौड़ता हुआ उसी गली में जा पहुंचा जिसमें मेलकी का मकान था। सामने ही दरवाजा था जो खुला हुआ था। वाल्टन ने घर में घुस कर दरवाजा बन्द कर दिया। कुछ ही क्षण बाद चार्लेस भी दौड़ता हुआ वहां आ पहुंचा और जोर जोर से किवाड़ में धक्का मारने लगा॥

फनीरिको ऊपर से यह सब देख रहा था। वह तुरत ही बत्ती लेकर नीचे उतरा और वाल्टन से बोला, "क्या बात है? बाहर कौन धक्का दे रहा है?"

घबड़ाये हुए वाल्टन ने कहा, "सुनो, घातक !!"

इसी समय चार्लस चिल्लाकर बाहर से बोला, "डूरास के ड्यूक चार्लस की आज्ञा से शीघ्र दरवाजा खोलो॥"

आश्चर्य से फ्लोरिलो बोला, "एँ! चार्लस !!"

वाल्टन ने कहा, "हां, चार्लस और उसके साथी मुझे मारने के लिये आ रहे हैं॥"

इसा सुनकर मेलफी भी निकल आया। मेलफी से वाल्टन ने सब समाचार कह सुनाया। मेलफी ने कहा, "घबड़ाओ नहीं, मैं तुम्हारी रक्षा करूँगा॥"

उधर बाहर चार्लस बार बार दरवाजा खोलने की आज्ञा देने लगा। मेलफी बोला, "भागो भागो, भागने के सिवा दूसरा उपाय नहीं है। चार्लस पुलिस की सहायता लेकर अभी घर में घुस जायगा॥"

फ्लोरिलो बोला, "उस घर से भागने के सिवा और कोई दूसरी राह नहीं है। वहीं एक तख़्ता भी रक्खा है॥

मेलफी ने कहा, "बहुत ठीक, जाओ जाओ, जल्दी ऊपर जाओ। तुम भी फ्लोरिलो! साथ जाओ॥"

फ्लोरिलो हाथ में लालटेन लिये ऊपर चढ़ा। पीछे पीछे वाल्टन था। बाहर दरवाजे पर ज़ोर से आघात लग रहा था। यकायक वह आघात रुका, मेलफी ने विचारा, मालूम होता है ये दरवाजा तोड़ने का उद्योग कर रहे हैं। उसका अनुमान झूठा न निकला। चार्लस के साथी पास के एक कारखाने से लकड़ी का एक बड़ा कुन्दा उठा लाये और ज़ोर ज़ोर से दरवाजे पर मारने लगे॥

इधर वाल्टन फ्लोरिडा के साथ छत पर जा पहुँचा। मेलकी के मकान के सामने ही एक खाली मकान था। वह बहुत दिनों का पुराना था। उसके दरवाजे करीब करीब टूट गए थे। इन दोनों मकानों के बीच में बहुत अधिक अन्तर न था। एक लम्बा तख़्ता रख देने से ही मनुष्य सम्हल कर पार हो जा सकता था परन्तु यह बड़े साहस का काम था, ज़रा पैर चूकने से ही मृत्यु निश्चित थी। फ्लोरिडा यह देख कांप उठा परन्तु वाल्टन ने कांद जाना चाहा। वाल्टन को इस तरह कूद कर जाने का विचार करते देख,फ्लोरिडा तख़्ता खोजने लगा परन्तु कहीं भी कोई तख़्ता न मिला॥

इसी समय बाहर ज़ोर से शब्द हुआ। दरवाजा टूट कर गिर पड़ा। वाल्टन बोला, "दरवाजा टूट गया। अब कूद कर उस छत पर चले जाने के अतिरिक्त दूसरा उपाय नहीं है। अच्छा, प्यारे फ्लोरिडा अब मैं जाता हूँ॥"

डर कर फ्लोरिडा बोला, "नहीं,नहीं,ऐसा काम न करना।" फ्लोरिडा ने वाल्टन को यह कह कर पकड़ लेना चाहा॥"

इसी समय सीढ़ी पर धमधम शब्द सुन पड़ा। मानो कई मनुष्य ऊपर आ रहे हैं। अब समय नहीं था। वाल्टन तड़प कर कूद जाने के लिये आगे बढ़ा। फ्लोरिडा लाचार हो हट कर खड़ा हो गया। कूद कर इतनी दूर पार हो जाना फ्लोरिडा के विचार में असम्भव था। यहां से गिरते ही मनुष्य के हज़ारों टुकड़े हो जाते। आह! भय से फ्लोरिडा ने कांप कर अपनी आंखें ढँक लीं॥

इसी समय दूसरे मकान में वही शब्द सुन पड़ा। फ्लोरिडा

हृदय से ईश्वर को धन्यवाद देने लगा॥

बाल्टन भाग गया। चार्लस ने मेलकी का समूचा मकान कोने कोने खोज डाला पर कहीं भी बाल्टन का पता न लगा। वह क्रोध से मेलकी को गाली देता हुआ अपने घर लौट गया और अस्थिर भाव से इधर उधर घूमने लगा॥

एक कमरे में उसके पूर्व पुरुषों की तस्वीरें लगी थीं। उधर दृष्टि पड़तेही चार्लस दांत पर दांत पीठाकर कहने लगा, "आह! मेरी माता ने मेरे पवित्र कुल में कलङ्क लगाया। इतनी कपटता धर्म्म के बहाने पाप! छूः, मां, नहीं यह कपटता की जीवित मूर्त्ति है और फिर उसका प्रेमी भी कौन—जो मेरा शत्रु है, जिसे मैं हृदय से घृणा करता हूं॥"

चार्लस धीरे धीरे बहुतही व्याकुल हो उठा। उसके ललाट की सब नसें क्रोध से फूल उठीं और शरीर की सब नसों में खून गर्म होकर ज़ोर से दौड़ने लगा। अब वह अपने हृदय की यंत्रणा सह न सका, वह ऊंचे स्वर से कहने लगा, "मां! तूने यह क्या किया? हमलोगों के निष्कलङ्क कुल में आज क्यों काला लगा दिया? तुम्हारे पहिले इस कुल की किसी स्त्री ने तो ऐसा काम न किया था? मुझे मालूम होता, मेरे पूर्व पुरुषों की आत्माएँ तुम्हें दण्ड देने के लिये मुझे आज्ञा दे रही हैं॥"

इतना कह कर ड्यूक व्याकुल हो एक कुर्सी पर बैठ गया॥

इसी समय घड़ियाली ने रात के बारह बजाये। चार्लस ने न जाने क्या सोच, उठकर अलमारी खोली और उसमें से एक छोटी शीशी निकाल कर अपनी माता के कमरे की ओर चला॥

इतने रात को पुत्र को देख [illegible] को कुछ सन्देह हुआ

स्नेहमयी माता ने प्रेम से पुत्र को अपने पास बैठाया। चार्लस भी अपने हृदय का भाव छिपा कर बातें करने लगा॥

चार्लस बोला, "आओ, मां! आज शराब पीने की इच्छा होती है। आज बड़े भाग्य से ऐसा समय मिला है, नहीं तो तुम्हारे साथ खाने पीने का तो कभी समय ही नहीं मिलता॥

माता ने कहा, "इसमें मेरा क्या दोष है। अच्छा लाओ, मैं तुम्हारे आनन्द में बाधा न दूँगी॥"

कमरे में और कोई न था। शराब ढालने के समय चार्लस ने विष मिलाकर अपनी माता को पिला दिया॥

अभी तक माता ने अपने पुत्र के मुँह की ओर न देखा था। यकायक शराब पी लेने बाद दृष्टि पड़ी। दृष्टि पड़ते ही वह कांप उठी, बोली, "चार्लस! तुम्हें क्या हो गया है? तुम इस तरह क्यों मेरे मुँह की ओर देख रहे हो?" चार्लस बोला,— "नहीं कुछ नहीं! यह तुम्हारे दृष्टि का भ्रम है॥"

इसके बाद दोनों ने एक एक गिलास शराब और पी कर गिलास टेबल पर रख दिये। कुछ देर बाद चार्लस ने कहा, "मां! तुम्हारे पास कुछ देर पहिले जो युवक आया था, वह मेरा भयानक शत्रु है॥

माता०। असम्भव, उसके उदार हृदय में कभी किसी से शत्रुता का भाव आ ही नहीं सकता॥

चार्लस०। तुम्हारा कितना अधिक अन्ध विश्वास है! कैसा भयानक अधःपतन हुआ है। तुम क्या नहीं जानती कि मैं उसके हाथों किस तरह लाञ्छित और अपमानित हुआ हूं॥

माता०। मैंने सुना है कि तुमने उसे अपना शत्रु समझ

रक्खा है, परन्तु यह नहीं जानती कि यह शत्रुता कैसे उत्पन्न हुई॥

चार्लस०। मालूम होता है, तुम समझ गईं कि मैं किसके विषय में कह रहा हूँ॥

माता०। तुमने ही तो अभी कहा, कि एक युवक यहाँ आया था जो..............

चार्लस अब धीरज न धर सका, वह कर्कश स्वर से बोला, "क्या मेरे ही सामने उसकी प्रशंसा करते तुम्हें लज्जा नहीं मालूम होती? हाय! कपटी स्त्री! तुम्हारा यहाँ तक अधः-पतन हो गया!"

चार्लस ने आँखें फाड़ कर अपनी माता की ओर देखा। पुत्र की वह भयानक मूर्ति देख उसकी माँ कांप उठी और कातर स्वर में बोली, "चार्लस! क्या बात है? तुम जिसे शत्रु समझते हो, उससे मैंने भी बन्धुत्व नहीं छोड़ दिया, क्या इसी लिये तुम मुझ पर अप्रसन्न हो? तुम उससे लड़ाई में हारे, अपमानित हुए, परन्तु उसने आज तक ये बातें मुझ से कभी न कहीं। मैं आज तक नहीं जानती कि तुम दोनों के विवाद का कारण क्या है?"

चार्लस०। परन्तु यह जान कर भी कि मैं उसे अपना शत्रु समझता हूँ तुमने उसे अपने पास से दूर नहीं किया। उसे अपने मकान के गुप्त द्वार की चाभी देदी और वह चोरों की भांति अभी भी हमारे घर में आता है॥

इस समय विष ने अपना काम करना आरम्भ कर दिया। ऐगनेस ने कठिनता से अपने को सम्हाल कर कहा, "मुझसे कुछ कहना अथवा किसी विषय में विचार करने का तो तुम्हारा

अभ्यास नहीं है। यदि तुम मेरे पास आते तो मैं तुमसे इस झगड़े का कारण पूछती। आज तक मैं विवाद का कारण न जान सकी और मेरा दृढ़ विश्वास है कि इसमें भी तुम्हारा ही दोष है। मैं उसके कोमल स्वभाव और महत्वपूर्ण उदार हृदय से भली भाँति परिचित हूँ। दो वर्ष पहिले किसी दुःखिये के पास मैं भी गई थी और वह भी वहीं गया था। तब से ही उससे जान पहिचान हुई। मैं उसकी सहायता से अपना दान का काम पूरा करती हूँ। उसने एक दिन मुझसे इतना अवश्य कहा था कि 'चार्लस मुझ पर अप्रसन्न है। अतः अब मेरा यहाँ आना जाना नहीं हो सकता।' मैं उसे अपने पुत्र की भाँति मानती हूँ। इसी से उसे गुप्त द्वार की चाभी दे दी है॥"

चार्लस ने वह बेनामी चिट्ठी अपनी माता के सामने फेंक कर कर्कश स्वर में कहा, "जहां तक सम्भव है, धीरज धर कर मैंने तुम्हारी सब बातें सुनीं। अब यह चिट्ठी पढ़ो। क्या इसमें जो लिखा है उसका उत्तर दे सकती हो?"

साध्वी ऐगनेस ने पत्र उठा कर पढ़ा। वह समझ गई कि पुत्र के हृदय में भयानक सन्देह बैठ गया है। वह बड़े कष्ट से बोली, "चार्लस! क्या तुम इस असम्भव बात पर विश्वास करते हो?"

इतना कह कष्ट से ऐगनेस भूमि पर लेट गई और रोने लगी॥

चार्लस क्रोध से बोला, "मिथ्या! यह कलङ्क मिथ्या है? मैंने दरवाजे के पास खड़े रह कर अपने कानों उस युवक को प्रेम भरी बातें करते सुना है॥"

ऐगनेस इस समय रो रही थी। आँखों से आँसुओं की

झड़ी लग रही थी। शरीर में विष ने अपना काम आरम्भ कर दिया था। उसके ऊपर अपमान और दुःख से वह और भी हताकुल हो रही थी। वह बड़े कष्ट से बोली, ओः! कितना भयंकर काम है! कैसी मार्म्मिक यातना है! मेरा पुत्र ही मेरा इतना अपमान करेगा यह मैंने स्वप्न में भी नहीं विचारा था॥"

गरज कर चार्लस ने कहा, "अरे कुल कलङ्किनी! तूने मेरे कुल में भी कलङ्क लगाया है, मैं उसका बदला लिये बिना नहीं छोड़ सकता। मैंने अपने कानों सुना है, कि वह युवक तुझसे अपना प्रेम प्रगट करता हुआ कह रहा था कि तुम्हारे प्रेम ने उसके दुःखित और रोगी हृदय में मन्त्रौषधि की भांति काम किया है। उसका जो कुछ चला गया है तुम्हारे प्रेम ने उस घाटे को पूरा कर दिया है। बताओ, क्या यह सब झूठ है?"

ऐगनेस०। चार्लस! तुम अब भी भूलते हो, उस महात्मा की बातों का तुमने कितना उलटा अर्थ लगाया है। तुमने जो सुना है सब सत्य है, परन्तु वह मुझे अपनी माता के समान प्यार करता है। लड़कपन में ही उसकी मां मर गई, वह मुझे अपनी माता के समान समझता है, उसी मां का अभाव अब दूर हुआ है॥

चार्लस०। पापिनी! अभी भी झूठ! तुम मर रही हो, अब झूठ बोल कर तो न मरो, घुटने टेक कर अपना पाप स्वीकार करो, ईश्वर से क्षमा मांगो। तुम्हारा अब अन्तिम समय है, अब कोई मनुष्य तुम्हें नहीं बचा सकता॥

यह कहकर उसने टेडल की ओर देखा। उसकी मा ऐगनेस

भी समझ गई। भीषण यातना से अधीर होकर उसने कहा, "चार्लस! मातृहन्ता! हा भगवान! यह क्या सत्य है? परन्तु सत्य नहीं तो क्या, मेरा शरीर धीरे धीरे अवसन्न हो रहा है, अपने शरीर में विष की क्रिया मैं अच्छी तरह समझ रही हूँ। हाय! अन्त में मेरी सन्तान ने ही मेरा खून किया॥"

ऐगनेस छटपटाने लगी। चार्लस ने उधर देखकर कहा, "अब यह दृश्य देखा नहीं जाता, परन्तु यह भी नहीं सह सकता कि मेरे कुल की कोई भी स्त्री अपने कुल में कलङ्क लगा कर जीती रहे॥"

ऐगनेस का स्वर धीरे धीरे क्षीण होता चला। वह बड़े कष्ट से बोली, "चार्लस! यह मिथ्या कलङ्क अब कभी अपने मुँह से न निकालना। मैं तो अब मरती ही हूँ परन्तु मेरे मरने पर तुम मुझे पापिनी समझो यह नहीं हो सकता। मेरे पास आओ, और क़सम खाओ कि जो बात मैं इस समय कहती हूँ वह कभी किसी के आगे न कहोगे॥"

चार्लस अधीर हो उठा। उसके हृदय में सन्देह की तरंगें उठने लगीं। वह बोला, "बताओ, जल्दी बताओ॥"

ऐगनेस का स्वर और भी क्षीणतर हो गया। वह बड़े ही क्षीण स्वर में बोली, "सुनो, और भी पास आओ वाल्टन.....

ऐगनेस के कम्पित कण्ठ से बहुत ही क्षीण स्वर में एक शब्द और निकला, वह स्वर अति क्षीण होने पर भी चार्लस के कानों में वज्र के नाद के समान घुस पड़ा। अब चार्लस बहुत ही व्याकुल हो उठा और बड़े ही करुण स्वर में ऐगनेस का हाथ पकड़ कहने लगा, "मां! मां! इस अभागे पुत्र को क्षमा

करो। मैं दुर्बुद्धि और अभागा हूँ, मुझे शाप न दो। हाय हाय!!"

परन्तु इतनी देर में ही सब शेष हो गया। चार्लेस ऐगनेस का जो हाथ पकड़े हुए था वह बर्फ के समान ठण्ढा पड़ गया। चार्लस अपनी मां के मुँह की ओर देख डर कर खड़ा हो गया और एकबार ज़ोर से चिल्ला कर वहीं मूर्च्छित हो गया॥

होश में आने पर उसने अपने को एक पलङ्ग पर पड़े हुए पाया। दो दासियाँ उसकी सेवा कर रही थीं। चार्लस ने फिर आँखें बन्द कर लीं। उसे मूर्च्छित जानकर दासियाँ बड़े यत्न से उसकी सेवा करने लगीं। दासियों की बातों से उसे यह मालूम हो गया कि उसपर किसीका सन्देह नहीं है॥

कुछ देर बाद चार्लस उठ बैठा और बड़े ही दुःखित भाव से सब से बातें करने लगा। दासियों ने उससे ऐगनेस की मृत्यु का कारण पूछा। उत्तर में उसने उनको समझा दिया कि यकायक भोजन के समय उनका प्राण निकल गया। किसीको पुकारने का भी अवसर न मिला। सभों ने उसकी बातों पर विश्वास कर लिया॥

वहां से बाहर निकल कर उसने दरबान तथा माली को बुला कर सब हाल कहा और उन्हें कल रात की बातें गुप्त रखने को विशेषरूप से समझा दिया॥

जितनी ही चिन्ता करते करते इस गुमनाम पत्र पर चार्लस की दृष्टि पड़ी। अब वह समझ गया कि यह किसी शत्रु का काम है। उसी समय उसने कलम दावात उठाकर पोप ग्रेगर के नाम एक पत्र लिखा —

महामान्य, पूज्यपाद, प्रतापशाली पोप महोदय !

"मैं आपका दासानुदास हूं। मेरी प्रार्थना है कि अन्द्रिया के विचार में अब देर न हो, अन्द्रिया को मारने वाले अपने पाप का दण्ड पावें। उसकी लम्पटता और विलास प्रियता दिनों दिन बढ़ती जाती है। इसका प्रभाव नेपल्स की प्रजा पर भी भयानक पड़ रहा है। मैं प्रार्थना करता हूँ कि रानी जोवाना, फिलिपा, कौण्ट वारटन्ड, करोलिना तथा आद्री और बर्ट्रा के विचार के लिये आर्कविशप और समस्त राज्य के प्रधान विचारपति को आदेश दिया जाये। मैं प्रत्येक मनुष्य के विरुद्ध सप्रमाण खड़ा होऊंगा॥

आपका दास—

चार्लस आफ डूरास।

यह पत्र छठे पोप क्लेमेण्ट के पास उसी दिन भेज दिया गया॥

बारहवाँ परिच्छेद।

वाल्टन को ऐगनेस की मृत्यु का समाचार मालूम हुआ। ऐगनेस को वह माता के समान मानता था, ऐगनेस पर उसकी भक्ति थी, अतः उसकी मृत्यु का समाचार सुनकर वह व्याकुल हो उठा॥

दूसरे ही दिवस वह मेडकी के मकान पर गया। वे उसका हाल जानने के लिये व्याकुल हो रहे थे। जिस समय वह मेडकी के मकान पर पहुंचा, दोनों बड़े प्रेम से उससे मिले। ऐगनेस की बात भी निकली और उसकी मृत्यु का समाचार सुनकर सभी दुःखित हुए। मेडकी बोला, "चार्लस बड़ा भयङ्कर मनुष्य है॥"

इतना कहते कहते वह क्रोध से काँप उठा। मेडकी क्रोध करते ही बीमार पड़ता था। अतः वाल्टन ने बात पलट कर उससे कहा, "अच्छा, तुमने मोम की मूर्त्तियों का तमाशा दिखाने की प्रतिज्ञा की थी, परन्तु अभी तक वह मौका नहीं मिला आज दिखाओ।"

मेडकी मूर्त्ति दिखाने को तैयार हो गया। एक कमरे में कई मोम की मूर्त्तियां रक्खी हुई थीं। वे ठीक जीवित मूर्त्तियों के समान दिखाई देती थीं॥

राजवेश में रानी जोवाना की मूर्त्ति ठीक सजीव रानी सी दिखाई देती थी। उसी तरह गौरवमय चेहरा, बदन में कोमलता और चेहरे पर सरलता झलक रही थी। बगल में विलासिनी जिलिया की मूर्त्ति थी। देखने से मालूम होता था कि यह प्रेमियों की पूजनीय हृदयेश्वरी है। चेहरा देखकर पापिनी

के पापी हृदय का कुछ भी पता नहीं लगता था। उसके बगल में हास्यमयी करोलिना की मूर्ति थी। आन्ह्री भी था—आन्ह्री की मूर्ति में वही कर्कश भाव झलक रहा था। वारटन की आकृति जितनी ही कोमल और नम्र थी, रैवर्ट की उसी तरह महाश्यतापूर्ण, चतुर और कठोर दिखाई देती थी। सबेरे चार्ल्स पैसा विद्रोही दिखाई दिया था इस समय वह मूर्ति भी ठीक उसी तरह दिखाई देती थी। एक ओर मेरियन की मूर्ति भी रक्खी थी, इस समय भी उसके उदारहृदय और वीरभाव का पूरा पूरा पता लगता था। रैवर्ट तथा राज्य के और और मनुष्यों की मूर्तियां ठीक मांस के बने शरीर सी दिखाई देती थीं॥

मेलकी हँस कर बोला, "देखो वारटन! इन मूर्तियों को केवल मोम की मूर्तियां ही न समझ लेना। इनमें पूरा पूरा नैतिक भाव भरा हुआ है। यह जो सुन्दरी रानी जोवाना की मूर्ति दिखाई देती है, इसमें ध्वंसशीलता और मृत्यु का योग तक दिया हुआ है। सुन्दरता में जिसका आसन सब से ऊँचा है, ध्वंसकारी काल से वह भी नहीं बच सकता है। धन का गर्व, आत्माभिमान और रूप की उन्मत्तता—ये कभी सदा स्थायी नहीं रहते। अच्छी तरह देखो, मेरी सब बातें ठीक ठीक मिलेंगी॥

यह कह कर उसने वहीं पड़ी हुई एक पतली डोरी उठा ली। उसका दूसरा सिरा उन मूर्तियों में लगा हुआ था। डोरी के खींचते ही उन मूर्तियों में जो उलट फेर होने लगा उन्हें देख वारटन भय से कांप उठा। उसने देखा, बात की बात में रानी

की मूर्ति से वह अपूर्व मोहकता न जाने कहाँ चली गई और उसके बदले मृत्यु की कराल छाया आ पहुँची। धीरे धीरे उसका रंग बदलने लगा, कालिमा ने धीरे धीरे उसके चेहरे पर अपना अधिकार जमा लिया। उसकी देह धीरे धीरे सूखने लगी, वे मूल्यवान आभूषण भी धीरे धीरे मलिन हो टूट टूट कर गिरने लगे। अन्त में समूचा देह गल गल कर गिर पड़ा॥

वाल्टर टकटकी लगाये यह दृश्य देख रहा था। इसी समय मेरुकी मधुर स्वर में बोला, "परिवर्त्तन चक्र के फेर में पड़ कर नदी में बहते हुए घास के समान राजा, रानी, प्रजा सभी निरन्तर इसी तरह काल के गाल में चले जाते हैं। मनुष्य नित्य ही ईश्वर की यह नाशकारिणी लीला देखते हैं परन्तु यह कोई नहीं विचारता कि मेरी भी एक दिन यही गति होने वाली है। निर्बोध जीव, अपना सब गौरव और शक्ति सम्पत्ति, अन्त में काल के मुख में चला जाता है। इस दृश्य के परिवर्त्तन में यही नीति छुपी है, परन्तु रानी के इस परिवर्त्तन से हमलोगों को एक और भी शिक्षा मिलती है। अब तक पहिले जो रानी रूपवती, धनवती और सुन्दर वस्त्रों से सुसज्जित दिखाई देती थी, इस समय उसकी क्या दशा हो गई है। जो राजशक्ति के उपासक हैं, जो राजा रानी को ईश्वर के समान मान कर उनका पूजन करते हैं, वे भी एक दिन अवश्य मनुष्यों के समान ही परलोक सिधारते हैं।"

वाल्टर ध्यान से उसकी बातें सुन रहा था। वह बोला, "अच्छा, आप बताइये कि यह परिवर्त्तन किस प्रकार होता है?

वह बोला, "देखो, ये सब वैज्ञानिक उपाय हैं। इन मोम की मूर्त्तियों में यन्त्र लगे हुए हैं, उनके चलते ही भिन्न भिन्न रंगों के वस्त्र अपने अपने स्थान पर आ बैठते हैं। इस डोरी को खींचने से ही ये काम होने लगते हैं। अब देखो मैं दूसरी डोरी खींचता हूँ, ये मूर्त्तियां फिर ज्यों की त्यों हो जायँगी॥"

इतना कह कर मेलकी ने दूसरी डोरी खींची। खींचते ही उन मूर्त्तियों में जीवन के लक्षण दिखाई देने लगे। वाल्टन ने उन मूर्त्तियों के पास जाकर यन्त्र के चलने का शब्द भी सुना॥

वाल्टन ने मेलकी की प्रशंसा करते हुए कहा, "इसी मूर्त्ति से बेरियन ने अपना काम निकाला था॥"

तेरहवाँ परिच्छेद ।

एडु को प्रवालद्वीप छोड़े तीन मास हो गए हैं। इन तीन महीनों में उसे कितने ही कष्ट सहने पड़े हैं, कितने ही बाधा विघ्नों को पार करना पड़ा है और कितने ही भयङ्कर दृश्य उसकी आंखों को पार कर गये हैं॥

कभी भयानक अन्धकार, कभी सूर्य्यदेव का प्रखर ताप, कभी प्रबल तरङ्ग और कभी भयानक तूफान में उसकी डोंगी बराबर खेल रही है॥

कभी कभी भयानक निराशा से उसका हृदय भर जाता है। इस भयानक समुद्र को वह किस तरह पार कर सकेगा, अभी तक वह निश्चित नहीं कर सका। यह विचारते विचारते वह उन्मत्त हो उठता था, परन्तु उसकी यह उन्मत्तता अधिक

देर तक नहीं ठहरती थी। ईश्वर की अनन्त दया का सहारा पाते ही वह फिर सब भूल जाता था। कभी कभी समुद्र की हिलोरें तथा मन्द मन्द वायु के झोंके मानो ईश्वर के वचन बन कर उसे सहारा देते थे॥

रूसो नियम से अपनी बीती घटनाओं को लिख रखता था। महाद्वीप छोड़े उसे तीन महीने बीत गए। आज दस बारह दिनों से समुद्र की हवा ठण्ढी मालूम होती है, रूसो यह देख कुछ शङ्कित हुआ। उसकी डोंगी उत्तर या दक्षिण के बर्फीले समुद्र की ओर तो नहीं जा रही है !!

भोजन का जो कुछ सामान उसने अपने पास रख लिया था, सब समाप्त हो गया, फिर क्या उसकी मन की आशा मन ही में विलीन हो जायगी ? अब स्टर्डी की सुन्दर भूमि क्या उसे दिखाई न देगी ? क्या बिना जङ्ग और मोहन के उसी डोंगी पर उसकी जीवन लीला समाप्त होगी ?

इसी तरह की चिन्ता में दिन बीत गया। रात हो आई। रात भी इसी तरह बीती, दूसरे दिन का सबेरा आ पहुंचा। रूसो ने देखा बहुत दूर पर बिन्दु की भांति कोई पदार्थ दिखाई देता है। वह टकटकी नेत्रों से उधर देखने लगा। बहुत देर बाद उसे निश्चय हो गया कि यह अवश्य ही टापू का कोई भाग है। धीरे धीरे डोंगी ज्यों ज्यों आगे बढ़ने लगी, त्यों त्यों किनारा भी साफ दिखाई देने लगा॥

रूसो घुटने टेक कर परमेश्वर को धन्यवाद देने लगा। उसे देखते ही यह मालूम हो गया कि यह स्टर्डी नहीं है तथापि उसे बहुत कुछ सन्तोष हुआ। उसने शान्ति के [illegible]

करने के लिये उसका हृदय व्याकुल हो उठा॥

यह स्थल भाग ज्यों ज्यों पास आने लगा त्यों त्यों जाड़ा अधिक मालूम होने और वह भाग बर्फ भरा तथा पर्वतमय दिखाई देने लगा॥

दोपहर के समय डोंगी किनारे से जा लगी। वृद्ध नीचे उतर कर आगे बढ़ा। थोड़ी ही दूर पर उसे एक झोपड़ी दिखाई दी जिसके आगे बैठ कर चार पाँच मनुष्य भोजन करने का उद्योग कर रहे थे।

वृद्ध उनके पास जाने के लिये आगे बढ़ा, परन्तु ज्यों ही उनकी दृष्टि इस वृद्ध पर पड़ी, त्योंहीं वे एकबार ज़ोर से चिल्ला उठे। वृद्ध उनकी यह चिल्लाहट सुन घबड़ाया। ये अफ्रिका के मनुष्य खाने वाले राक्षस तो नहीं हैं? परन्तु अब दूसरा उपाय न था। वृद्ध कुछ क्षण तक शान्तभाव से खड़ा हो गया॥

वृद्ध को शान्त खड़े देख, वे जङ्गली भी मन ही मन कुछ विचार कर शान्त हो गए। मानो वृद्ध के कमर तक लटकते हुए सफेद केश, भौं और उसकी शान्तमूर्ति देख वे कुछ भय और भक्ति से भर उठे॥

इन जङ्गलियों का रङ्ग बिलकुल ही काला न था बल्कि ठीक तांबे का सा रङ्ग था। उनकी आकृति खर्व थी, माथे के केश लम्बे, खड़े तथा रूखे थे, चेहरा गोल था और वे देखने से ही बलवान मालूम होते थे। इन मनुष्यों में दो के चेहरों पर कुछ कोमलता दिखाई देती है, अतः वे स्त्रियां थीं॥

बहुत दिनों से मनुष्य के कण्ठ का मधुर स्वर सुनने के लिये वृद्ध लालायित हो रहा था, परन्तु इनके बदले इन जङ्गलियों को

यह भैरवगर्जना सुन वृद्ध की सब आशायें विलीन हो गईं ॥

कुछ क्षण बाद उन पांच में से दो जङ्गली उठ कर बहुत धीरे धीरे वृद्ध के पास आये और जिस तरह देवता के सामने घुटने टेक कर मनुष्य प्रार्थना करते हैं, उसी तरह वे घुटने टेक हाथ जोड़ कर कुछ कहने लगे। वृद्ध उनकी बात पूरी तरह समझ न सकने पर भी यह अच्छी तरह समझ गया कि अब इनसे डरने का कोई कारण नहीं है, उसने भी हाथ बढ़ाकर उनको आशीर्वाद दिया। वृद्ध को आशीर्वाद देते देख, उनके चित्त का भय भी दूर हुआ। वे एक एक करके उठ खड़े हुए और वृद्ध के इशारा करते ही भक्ति से उसके शरीर को छूने लगे ॥

उन जङ्गलियों में से एक वृद्ध के लिये बहुत से फल फूल ले आया। वृद्ध भी उनके पास ही बैठ कर भोजन करने लगा। भोजन करने बाद वृद्ध ने उन जङ्गलियों को अपनी नाव दिखाई और इशारे में ही उन्हें समझा दिया कि मैं बहुत दूर से आ रहा हूं। उन जङ्गलियों ने भी अपनी बहुत सी नावें वृद्ध को दिखाईं। वृद्ध ने देखा कि ये नावें बहुत ही मजबूत और काम की बनी हुई हैं ॥

वृद्ध ने उनसे एक नाव मांग ली। उन्होंने बड़े आनन्द से सब से बड़ी नाव वृद्ध को दे दी। वृद्ध ने प्रसन्न होकर उनको अपने गले लगाया ॥

अब वृद्ध पुनः समुद्र-यात्रा की तैयारियां करने लगा। उसके जङ्गली साथी भी उसकी सहायता करने लगे। स्त्रियों ने बहुत से भोजन के पदार्थ तैयार कर ला दिये। पुरुष जङ्गली जानवर शिकार करके ले आये ॥

एक महीने बाद एडु फिर वहाँ से चला। एडु की सज्जनता पर वे जङ्गली भी मुग्ध हो गए थे। एडु को विदा करते हुए वे भी बड़े दुःखित हुए ॥

* * * * *

१३४३ ईस्वी के जून मास के अन्त में एडु की यह समुद्र-यात्रा फिर आरम्भ हुई और उसके १७७ वर्ष बाद विख्यात पोर्चुगीज नाविक फर्डिनेंड मैगालिन ने इस टेराडेलफ्यूगा द्वीप की खोज निकाला था। यह दक्षिण अमेरिका से भी कुछ दूरी पर है। बहुत दिन पहिले लम्बे लम्बे सफेद केश तथा सफेद ही रङ्ग का एक मनुष्य यहां आया था, यह बात उस समय भी किम्वदन्ती के रूप में फर्डिनेंड को सुन पड़ी थी ॥
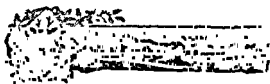
चौदहवाँ परिच्छेद।

महीनों हो गए आड्री और वाल्टन से भेंट होने का कोई अवसर ही नहीं आता था। आड्री राजमहल के कामों में तथा वाल्टन परोपकार के कामों में मग्न रहते थे। आज यकायक आड्री ने उसे बुला भेजा। वाल्टन ने उसके पास जाकर देखा कि उसका चेहरा चिन्ता से काला हो रहा है॥

आड्री ने वाल्टन को बड़े प्रेम से अपने पास बैठाकर कहा, "आज तुमसे बहुत ही आवश्यक काम है। अब तुम्हारे इस जीवन में हेरफेर का समय आ गया है। आज जो समाचार सुनोगे उससे तुम्हारा हृदय पुलकित हो उठेगा॥"

वाल्टन इन बातों का कुछ अर्थ न समझ सकने पर भी कुछ प्रसन्न अवश्य हुआ, क्योंकि उसे आड्री पर बड़ा विश्वास था॥

आड्री ने कुछ विचार कर कहा, "बेटा! आज तुम अपना जन्म-वृत्तान्त सुनोगे और कुछ देर बाद ही तुम्हें अपने पिता के पास जाना होगा॥"

वाल्टन हर्ष से चिल्ला उठा। बोला, "एं! मेरे पिता माता!! आप ऐसा क्यों कहते हैं? क्या मेरे भाग्य में पिता माता का दर्शन बदा है? क्या वे अभी जीवित हैं? मुझे इन बातों पर विश्वास नहीं होता॥"

आड्री ने शान्तभाव से कहा, "मैं अच्छी तरह जानता हूं कि तुम आस्तामूराकी राजकुमारी लूसिया पर मोहित हो। तुम लज्जित न हो। प्रेम मनुष्य के हृदय की एक वृत्ति है,

उसे दया रखने की सामर्थ्य किसीको भी नहीं है॥"

वाल्टन ने कहा, "ठीक है, परन्तु मुझ सरीखे अभागे को क्या प्रेम करना चाहिये? मुझ सरीखे आपग्रस्त पुरुष के लिये प्रेम करना एक महापाप है॥"

आड्री बोला, "नहीं नहीं, लूसिया पर प्रेम होने का एक बहुत ही भली कारण है—वह तुम अभी तक नहीं जानते हो। तुम्हारा प्रेम बहुत ही स्वच्छ और पवित्र है—यह हम अच्छी तरह जानते हैं॥"

वाल्टन उसकी बात का कोई कारण न समझ सका। उसके हृदय में और और सन्देह उठने लगे। वह बोला, "क्या आप के कथन का यह मतलब है कि लूसिया सुन्दरी है—सौन्दर्य्य मनुष्य के चित्त को अपनी ओर खींचता है, इसीसे मैं उसे प्यार करता हूँ और मेरा मुँह देख धोखे में पड़ कर वह भी मुझे प्यार करने लगी है?"

आड्री के मुँह से यकायक इस बात का जवाब न निकला। मानो किसी गुप्त यन्त्रणा ने उसका मुँह बन्द कर दिया॥

वाल्टन ने व्यग्र होकर फिर कहा, "आप अब उत्तर क्यों नहीं देते, मैं बहुत ही व्यग्र हो रहा हूं॥"

बड़े कष्ट से आत्मदमन कर आड्री ने कहा,—"लूसिया सहोदरा बहन है॥"

युवक प्रसन्नता से बोल उठा, "एं! मेरी सहोदरा!!"

वाल्टन घुटने टेक कर उसी जगह बैठ गया। आनन्द से उसका चेहरा खिल उठा। वह कृतज्ञता में भर कर बोला, "परमेश्वर तुम्हें शतधः धन्यवाद है! लूसिया मेरी बहन है,

उसके पिता माता मेरे जनक जननी हैं। लूसिया को देखने के लिये मेरा हृदय अब व्याकुल न होगा, अब हमलोग एक साथ ही रहेंगे। जिस पाप से मैं अभी तक पीड़ित हूं, अब मेरे लिये वह उतना कष्टदायक न रहेगा। ओः! अब मैं इस आधे हार का भेद समझ गया॥"

आद्री ने कहा, "इस रोग के छूटने पर तुम लूसिया से विवाह भी कर सकोगे। इस गुप्त विषय को तुम्हारे पिता और मैं, ये ही दो मनुष्य जानते हैं॥"

वाल्टन०। फिर क्या लूसिया अभी तक नहीं जानती कि मेरा कोई भाई है और क्या माता भी अभी तक इस भेद से अनभिज्ञ है॥

आद्री०। नहीं, अब उन्हें यह भेद मालूम हो गया है। तुम घबड़ाओ मत, बैठो, मैं तुम्हें सब बातें आज बता दूंगा। जिस समय रङ्गभूमि में तुमने विजय पाई थी, उस समय लूसिया से तुमसे भेंट हुई थी, उसके बाद क्या क्या घटनायें घटी हैं, मैं सब जानता हूं। कुछ देर बाद ही मुझे सब बातें मालूम हो गई थीं। तुम्हारे पास आधा हार देखकर लूसिया भाग गई और उसने अपनी आँखों में आंसू भर कर अपने माता पिता से सब बातें कह दीं। मार्क्विस को जब यह मालूम हुआ कि लूसिया को तुम पर बहुत ही अधिक प्रेम है और तुम उनके ही पुत्र हो, उस समय वह बड़े ही दुःखित हुए। उन्होंने बातों ही में लूसिया से मालूम कर लिया कि रङ्गभूमि में तुमने ही वारटन्ड को हराया था और अपना विजय-चिन्ह लूसिया को

धन से तुम्हारा कोई सम्बन्ध नहीं है, उस समय उन्होंने तुम्हें अपने पास बुला लेना चाहा, परन्तु सब बातें प्रकाशित न कर सके। अब उन्होंने तुम्हें बुलाने के लिये पत्र भेजा है। शहर में रहने पर तुमसे बार बार भेंट होने के भय से वे लूसिया को लेकर कैलेफ़ोर्निया के किले में चले गए हैं। वहाँ कई महीने रहे, परन्तु लूसिया की हृदय-वेदना कम न हुई। लूसिया तुम्हें भूल न सकी। उसने भी अपने हृदय का भाव बहुत कुछ छिपाना चाहा परन्तु छिपा न सकी। अन्त में तुम्हारे पिता ने बहुत सोच विचार कर तुम्हें बुला लेना ही उचित समझा। उन्होंने अपनी स्त्री को भी सब बातें समझा कर कह दीं और कह दिया कि हमारे वंश में सदा से एक शाप का भयानक फल मिलता चला आ रहा है। मार्किस जर्मिनों के बाद से प्रत्येक तीसरे वंशधर को इस शाप का फल भोगना पड़ता है। इसीसे तुमको भी यह रोग हुआ है॥"

आर्द्री ने कुछ देर तक दम ले कर फिर कहा, "अब यह समय अधीर होने का नहीं है। अब तुम अपने घर जा रहे हो; तुम्हारे पिता माता तुम्हें देखने के लिये व्याकुल हो रहे हैं। अब अपने दुर्दिन की बातें भूल जाओ। अब तुम केवल वाल्टन नहीं, बल्कि मोरटकार्हिमार लार्ड फोरट वाल्टन के नाम से संसार में परिचित होगे॥

युवक ने कहा, "मैं यह लम्बी चौड़ी उपाधि नहीं चाहता, परन्तु आपने जिन सुखों की आशा मुझे दिला दी है, उनसे अवश्य ही मेरा यह सन्तप्त हृदय शीतल रहेगा। मेरे उपकारी बन्धु! आपने मेरे ऊपर जो उपकार किये हैं, अपनी जितनी

ममता दिखाई है और जितने प्रेममय लालन पालन से मुझे रक्खा है, उसके लिये मैं सदा आपका कृतज्ञ रहूँगा। आपका यह ऋण मैं जन्म भर नहीं चुका सकता।" इतना कह कर वाल्टन ने आड्री का हाथ उठाकर प्रेम से चूम लिया॥

वाल्टन का प्रेम देख आड्री विचलित हो गया। कुछ देर तक चुप होकर वह बोला, "चलने के पहिले कुछ बातें तुम्हें समझा देनी और भी आवश्यक हैं। मैं कहता हूं तुम ध्यान से सुनो, "यह बात तुम्हारी माता को मालूम थी कि मार्क्विस जर्निमो एक बड़ा ही पापी मनुष्य था, परन्तु उनको यह नहीं मालूम था कि जर्निमो के कारण कोई भयानक श्राप मिला है। अब तुम्हारे पिता ने उन्हें सब बातें बताई हैं तथा तुम्हारा अस्तित्व भी उन्हें समझा दिया है। जिस दिन जूलिया ने जन्म लिया था उसी दिन तुम भी पैदा हुए थे। क्यों तुम्हें उससे अलग किया गया, तथा तुम क्यों अपने अधिकार से अलग किये गए—ये सब बातें अब तुम्हारी माता को कह कर उन्होंने क्षमा माँग ली है, इसीसे मनुष्य तुम्हें लेने के लिये आया है। जूलिया को भी सब समाचार मालूम हो गये हैं और वह भी तुम्हें देखने के लिये व्यग्र है॥"

* * * * *

उसी दिन सूर्य्यास्त के समय, नेपल्स से निकल कर दक्षिण कैलेब्रिया की ओर चार मनुष्य चले। इन चारों में एक आड्री, दूसरा वाल्टन और दो इनके रक्षक थे॥
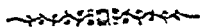
पन्द्रहवां परिच्छेद ।

दूसरे दिन सबेरे ही आर्डो के कहीं चले जाने का समाचार राजमहल में पहुँचा। यह समाचार पहुँचते ही सब के सब एक साथ ही कांप उठे। जाते समय आर्डो ने फिलिपा और रानी जोआना को भी पत्र लिखे थे जिनमें यह अच्छी तरह समझा दिया था कि इस समय कौनसी कूट नीति का अवलम्बन करना पड़ेगा और किस तरह चार्लस के दल को दमन करना होगा॥

जोआना, फिलिपा, काटेलिना, कास्पर मारटण्ड तथा लार्ड हाइपेन्सलर राजमहल के एक सुसज्जित कमरे में बैठे हुए किसी विषय पर विचार कर रहे थे कि इसी समय दरबान ने आकर कहा, "डूराज के ड्यूक चार्लस महारानी से मिलने आये हैं। बाहर खड़े हैं॥"

रानी ने चारों ओर देख कर कहा, "मैं इस समय अपने बन्धु बान्धव के बीच में हूं। चार्लस का इस समय आना अच्छा ही हुआ है।" रानी ने प्रधान मन्त्री से भी राय ली। इन्होंने भी बुला लेने की ही सम्मति दी। रानी ने कहा, "चार्लस आया है, परन्तु इसका फल अच्छा नहीं होगा। यदि चार्लस को किसी और का बल न मिला हुआ होता तो वह कभी यहां नहीं आता। मालूम होता है कि चार्लस का कोई सहायक खड़ा हुआ है॥"

मारटण्ड ने कहा, "शायद आप से सन्धि करने के लिये आया हो॥"

रानी ने गर्व से कहा, "यह कोई सामान्य बात नहीं है॥"

इसी समय दरबान ने दरवाजा खोल कर फिर कहा, "ड्यूक महाशय आ रहे हैं।" चार्लस गर्व से पैर रखता हुआ कमरे में घुसा। इस समय उसके चेहरे पर निर्भयता तथा अहङ्कार झलक रहा था॥

दरबान दरवाजा बन्द कर चला गया। रानी के अतिरिक्त सभी उसे देख कर उठ खड़े हुए। रानी ने आसन दिया। कुछ क्षण बैठने बाद ड्यूक ने कहा, "महारानी! क्या आप मुझसे कुछ क्षण के लिये एकान्त में मिल सकती हैं?"

जोहाना बोली, "इस समय यहाँ जितने मनुष्य उपस्थित हैं, सभी मेरे विश्वासी तथा सहायक हैं, उन्हें छोड़ कर अकेले में बात करना इनकी राजभक्ति की अवमानना करना है॥"

चार्लस ने कुछ विरक्त होकर कहा, "जो आज्ञा। मुझे बहुत सी बातें करनी थीं, क्या यहां सभी बातें कह सकता हूँ॥"

रानी। हां, तुम आनन्द से कहो, ये मेरे अपने मनुष्य हैं—इनसे कोई भी बात छिपी नहीं है॥"

चार्लस। (एकबार चारों ओर देखकर) महारानी! आप की इच्छा के अनुसार मैं सभों के सामनेही अपने विचार प्रगट करता हूं। मैं आपसे जिस काम के लिये आरम्भ से कहता आया है—उसमें मुझे लज्जित होने का कोई कारण नहीं है, इसीलिये कहने में भी कोई आपत्ति नहीं है, परन्तु प्रथम! यदि अपने विचार प्रगट करने के पहले राज्य के विषय में कुछ कहूं तो आशा है, आप क्षमा करेंगी। इस समय आपके समूचे राज्य में गड़बड़ मची है, आपकी प्रजा असन्तुष्ट हो रही है और डाकुओं का एक............

रानी०। (बाधा देकर) हां वे ही न, जिनमें एकबार तुम भी जा मिले थे। यदि इसी विषय में कुछ कहना है, तो सुना सुनकर मैं मना करूँगी॥"

चार्लस०। (टेढ़ी दृष्टि से जोआना को देख कर) मालूम होता है आप भूल गई हैं कि मैं भी सिंहासन का भावी उत्तराधिकारी हूँ। मेरे विचारों में आपको सहमत होना चाहिये। मैं आपस के मनोमालिन्य को दूर करने के लिये ही यहाँ आया हूँ। आपकी समूची प्रजा भी इस मनोमालिन्य को दूर करने का ही अनुरोध करती है॥"

रानी०। यदि प्रजा ने तुम्हें अपना प्रतिनिधि बनाकर भेजा हो तो फिर मैं तुम्हारी बातें सुनूँ, केवल तुम्हारी बातों पर विश्वास नहीं कर सकती, जब तक तुम इसका प्रमाण न दोगे कि तुम प्रजा के प्रतिनिधि हो, तब तक मैं तुम्हारी कोई बात न सुनूँगी॥

यह सुनकर चार्लस कुपित हो उठा। वह क्रोध से बोला, "यदि जितने सभ्य यहाँ बैठे हैं, वे आपके सच्चे हितैषी हैं तो अवश्य ही उनके मुँह से आप राजकीय विप्लव तथा बाहर से राज्यपर चढ़ाई होने का समाचार सुनेंगी। इस समय हम लोग दो दलों में बँट गये हैं, एक दल दूसरे का विरोधी हो रहा है। हमलोगों के मिले बिना न यह राजकीय विद्रोह ही दब सकता है, न बाहरी शत्रु ही रोका जा सकता है॥"

इस समय एकाएक मारटन ने तलवार खींच ली और बिगड़ कर बोला, "विद्रोह! रानी के सामने विद्रोह की बात कौन मुँह से निकाल सकता है॥"

चार्लस ने चुड़क कर कहा, "शान्त होइये ! विद्रोही रानी के पास विद्रोह का समाचार सुनाने कभी नहीं आते, परन्तु जो रानी को कुपरामर्श देते हैं, जो अपने स्वार्थ के लिये राज्य का अनिष्ट होने देने में नहीं हिचकते, वे ही विश्वासघाती और राजा के परम शत्रु हैं॥"

बारटल्ड की आँखें यह सुनते ही लाल हो गईं। वह क्रोध से गरज कर बोला, "ठीक है, मैं भी तब एक बुरी सलाह देने वाला और स्वार्थी हूँ॥"

फिलिपा भी बोल उठी, "छिः! हमलोग सभों का अपमान होता है, यह बात कभी क्षमा करने योग्य नहीं है॥"

परन्तु रानी ने बीच में पड़ कर सभों को शान्त करने के लिये कहा, "आपलोग शान्त हों। मेरे सामने आप लोगों को कोई अपमानित नहीं कर सकता। आपलोग चुप रहें और मुझे इस गर्वित ड्यूक से बातें करने दें।" (ड्यूक की ओर देख कर) तुमने प्रजा के विद्रोह और शत्रु की चढ़ाई का समाचार अभी सुनाया है। अभी तक मुझे इस बात की खबर न थी। तुम्हें, यह समाचार कैसे मालूम हुआ?"

चार्लस०। अभी एक घण्टा भी नहीं हुआ है कि ब्रेस से एक दूत मेरे पास आया है। एङ्गुरी की राजसभा में इन बातों पर विचार हो रहा है, उसीका समाचार देने वह घोड़े पर चढ़ कर बराबर, बिना विश्राम किये, यहां आया है। राजा लुई ने एक बड़ी सेना तय्यार कर एक सेनापति को उसका भार सौंपा है। सेनापति को मार्किस की उपाधि दी गई है और उसके सहकारी सेनापति एक नाइट हुए हैं, जो कुछ दिन

पहले इसी राजसभा के एक मनुष्य थे॥

चार्लस ने धीरे धीरे ये सब समाचार कह सुनाये। अब रानी के चेहरे पर घबड़ाहट दिखाई देने लगी और वह ध्यान से चार्लस की बातें सुनने लगी॥

चार्लस ने फिर कहा, "अभी कुछ क्षण पहले यह समाचार मुझे मिले हैं। इसमें कोई सन्देह नहीं कि ये बातें बड़ी आशङ्काप्रद हैं अतः इन बातों पर हमलोगों को अवश्य ध्यान देना चाहिये। सालामर के मार्क्विस इस नेपल्स राज्य पर आक्रमण करने के लिये नियुक्त हुए हैं। आप जानती हैं कि वह कौन है? यह वही डाकुओं का सर्दार बेरियम है और दूसरा सहकारी वही है जो राज की ओर से लड़ने के लिये उस दिन रङ्गभूमि में उतरा था। वही रायर्ट डी कैवेना॥"

इस समाचार को सुनते ही बिजली की चमक के समान तेजी से सभों का हृदय काँप उठा। फिलिपा के मुँह से यकायक आनन्द और विस्मय सूचक ध्वनि निकल पड़ी। आनन्द का कारण तो रायर्ट के अच्छी तरह रहने का समाचार था। परन्तु रैायर्ट ने जोवाना को छोड़ कर इङ्गरी राज्य के सहायक सेनापति का पद ग्रहण किया इसपर उसे विस्मय हुआ और वह अपना आश्चर्य्य रोक न सका॥

चार्लस की बातें सुन कर जोवाना भी घबड़ा उठी। वह बड़ी कठिनता से बोली, "रैायर्ट विश्वासघातक! राजविद्रोही!! यह असम्भव है।" परन्तु इतना मुँह से निकलते ही उसे कौंट वारटस्ड वाले कमरे की घटना याद आ गई। रैायर्ट उसे मार डालने के लिये तैयार हो गया था और यकायक बेरियम ने

उसको बचाया तथा फिर रावर्ट को लेकर चला गया था। यह याद आते ही वह फिर बोल उठी, "नहीं, असम्भव नहीं है॥" दुःख से उसकी गर्दन झुक गई और वह कुछ सोचने लगी॥

ड्यूक चार्लस ने फिर कहना आरम्भ किया, "अब आप अच्छी तरह समझ सकती हैं कि मेरी बातें झूठी नहीं हैं। आपके राजसिंहासन और रत्नमुकुट जाने चाहते हैं। विपद् आपको चारों ओर से घेरती चली आती है। इस समय हम-लोगों का यही कर्त्तव्य है, कि क्षण भर भी देर न करके सब के पहले अपने राज्य का विद्रोह बन्द करें और फिर विदेशियों के आक्रमण को रोकें, परन्तु इन कामों को करने के पहले हम-लोगों को आपस का मनोमालिन्य दूर कर डालना चाहिये। अब इसके सिवा दूसरा अवलम्ब नहीं है। इसीलिये कि जिसमें हमलोग मिल जायँ, मैं आपसे विवाह करने की प्रार्थना करता हूँ॥"

माथा उठाकर, दृढ़ स्वर से जोवाना ने उत्तर दिया, "नहीं, कभी नहीं।" इतना कहते कहते उसका चेहरा लाल हो गया। वह फिर बोली, "तुम मेरे चिर वैरी हो—तुमसे मित्रता और प्रेम असम्भव है। मुझे पापिनी और कलङ्किनी साबित करने के लिये तुम रङ्गभूमि में लड़ने आये थे—मैं तुमसे विवाह नहीं कर सकती। तुमने प्रकाशभाव से मेरी निन्दा की है, चुपचाप मेरे सर्वनाश का उद्योग किया है—मैं तुम्हें घृणा की दृष्टि से देखती हूँ। तुम मेरे सामने से दूर हो। मैं अभी इतनी असहाया नहीं हो गई हूँ कि तुम से—शत्रु से विवाह कर लूँ। जाओ, दूर हो मेरे सामने से॥"

क्रोध से जोवाना काँप उठी। बोली, "यह किसकी आज्ञा से? किस शक्ति के बल पर तुम लोग यह काम कर रहे हो?"

अध्यक्ष के मुँह से इसका जो जवाब निकला वह सुन कर सब कांप उठे। उसने कहा, "पवित्र पोप के भेजे हुए परवाने के अनुसार॥"

जोवाना ने भय से पूछा, "किस अपराध में॥"

अध्यक्ष ने कहा, "ड्यूक अन्ड्रिया की हत्या के अपराध में॥"

रानी एक आर्त्तनाद कर वहीं बेहोश हो गिर पड़ी। फिलिपा ने रानी की तरह माथा उठाकर कहा, "देखो देखो, तुम्हारे दुर्व्यवहार से रानी की क्या दशा हुई है! राजमहल पवित्र स्थान है, जाओ यहां से चले जाओ॥"

अध्यक्ष बोला, "पोप की आज्ञा कहीं रुक नहीं सकती। हमलोगों को जैसी आज्ञा मिली है वैसा ही काम करेंगे। राजमहल की पवित्रता उसमें बाधा नहीं डाल सकती॥"

इसी समय करोलिना चारटर्स से जा लिपटी, परन्तु चारटर्स उसे धक्का दे तलवार निकाल सिपाहियों पर झपटा, परन्तु तुरत ही गिरफ़ार हो गया। करोलिना और फिलिपा भी पकड़ी गयीं। फिलिपा का इतना अहङ्कार और तेज क्षणमात्र में विलीन हो गया। वह रोने लगी॥

उनके आर्त्तनाद से जोवाना की मूर्च्छा भङ्ग हुई। उसने ...—उसके उपपति, करोलिना और फिलिपा को, सिपाही ... किये लिये जाते हैं। वे सिपाहियों से छूटने के लिये जोर मार रहे हैं, परन्तु सिपाही उन्हें बलपूर्वक पकड़े देते हुए कमरे के बाहर भी ले लिये जाते हैं। यह देखते ही उसकी आँखों के

सामने अँधेरा छा गया। निरवलम्ब, निःसहाय अवस्था का भीषण चित्र उनकी आँखों के सामने घूम गया। वह फिर बेसुध हो गई॥

सोलहवाँ परिच्छेद।

नेपल्स नगर के सब से प्रधान विचारालय या हाईकोर्ट का वह कमरा जिसमें प्रधान विचारपति या चीफ जस्टिस बैठते हैं, काले मखमल से मढ़ा हुआ है। राज्य के प्रधान विचारपति माक्विस मौरटल बहादुर एक ऊँची कुर्सी पर बैठे हैं। उनके वस्त्र सब भी काले ही हैं। माथे पर विचारक की टोपी है। यह टोपी वह सदा नहीं पहिनते, केवल अपराधी का विचार करने के समय पहिनते हैं। उनकी अवस्था लगभग साठ वर्ष के होगी। चेहरे पर कर्कशता छाई हुई है। आँखें छोटी हैं परन्तु उनमें भी तीव्रदृष्टि और स्थिरता भरी हुई है। दाढ़ी खूब छोटी छोटी छँटी हुई है। उनके प्रत्येक अङ्ग से हृदय का निर्मम और दृढ़ संकल्पभाव झलकता है। वे एक दृढ़ विचारक हैं, तथा किसी समय भी अपने विचार से टलनेवाले नहीं हैं यह उनके प्रत्येक काम से स्पष्ट मालूम होता है॥

विचारक की कुर्सी के पीछे दीवाल पर खूब बड़ा क्रास चिन्ह बना हुआ है। उस के बगल में रजिस्ट्रार और मुहर्रिर की कुर्सियां हैं। और कमरे में दूसरी ओर सिपाहियों के बैठने के लिये बेंचें पड़ी हैं। इस कमरे में चारों ओर भयानकता की एक विकट छाया दिखाई देती है॥

अभी दोपहर हुआ है। इसी समय सिपाही कैदियों को लिये इसी कमरे में आ पहुंचे। कैदियों के हाथों में हथकड़ियां पड़ी थीं। अभी इनको गिरफ़ार हुए एक घण्टा हुआ है। ये कैदी वही हैं जो राजमहल में गिरफ़ार किये गए हैं॥

किलिया तथा करोलिना अब कुछ शान्त दिखाई देती हैं। बारटण्ड उन लोगों को उत्साह दे रहा है। वे भी उसके आश्वासन के बल पर कुछ शान्त हुई हैं। बारटण्ड की आकृति से भी किसी प्रकार की अस्थिरता नहीं झलकती। जिस रात को अन्द्रिया की मृत्यु हुई थी, उस रात को वहां उपस्थित न रहने के कारण प्रधान मन्त्री येन्धुरा भी निश्चिन्त थे॥

राजसभा के प्रधान प्रधान मनुष्य गिरफ़ार हुए हैं यह समाचार बात की बात में नेपल्स भर में फैल गया इसी कारण से लोगों की भीड़ से विचारगृह भर उठा॥

जिस समय ये कैदी विचारक के सामने लाये गए, उसी समय तरएटोर के पादड़ी भी आये। उन्हें देखते ही सब भीड़ उनके सम्मान के लिये एक किनारे हट गई। अभिमानी आर्क विशाप(पादड़ी)अपनी पुरोहिती पोशाक पहिने हुए विचारक की ओर धीरे धीरे बढ़ने लगे उनके पीछे बारह उनसे नीचे दर्जे के पादड़ी और थे। चार सुन्दर बालक उनकी पोशाक का पिछला भाग उठाये हुए था। एक सन्यासी बिशाप की टोपी माथे पर पकड़े हुए था। सन्यासी के सफेद चमकीले केश कमर तक झूल रहे थे॥

उनको देखते ही प्रधान विचारपति मैरटस अपनी टोपी उतार कर खड़े हो गए। क्योंकि आर्क बिशाप इस समय पोप

के प्रतिनिधि होकर आये थे ॥

विशप के आगमन से वहां उपस्थित सब मनुष्यों में खल-बली मच गई। सभी उत्सुकता से उनकी ओर देखने लगे। ठीक इसी समय जब कि सभों की दृष्टि आर्कबिशप की ओर लगी हुई थी किसीने पीछे से बेनूबुरा का कपड़ा धीरे धीरे खींचा। उसने मुंह फेरकर देखा तो ड्यूक चार्लस दिखाई दिया॥

ड्यूक बड़े गम्भीर स्वर में धीरे धीरे बोला, "बेनूबुरा! तुम्हें एक बात कहता हूं। पोप ने गिरफ़ारी का परवाना तुम्हारे नाम भी भेजा है। अन्द्रिया को मारडालने की तुम्हारी भी इच्छा थी, यह भी अवश्य ही प्रमाणित होगा। तुम उस दिन राजमहल में नहीं थे, यह बात सत्य है, किन्तु यह तुम किसी तरह प्रमाणित न कर सकोगे॥"

बेनूबुरा ने धीरे धीरे कहा, "परन्तु मैं शपथपूर्वक कहता हूँ कि मैं उस दिन वहाँ नहीं था॥

ड्यूक ने उसके चेहरे की ओर देख कर कहा, "तब विपक्ष में गवाही देकर अपनी जान बचाओ। यदि ऐसा करोगे तो तुम जिस पद पर हो उसी पद पर रहोगे॥"

बेनूबुरा ने व्यग्र होकर कहा, "हां हां, मैं अवश्य गवाही दूँगा॥"

ड्यूक ने कहा, "अच्छा, याद रखना नहीं तो तुम भी फांसी पर चढ़ोगे। समय पर गवाही देने के लिये खड़े होना। साथ ही याद रखना कि जोवाना इसमें न मिलाई जाय। पोप की आज्ञा है कि यदि जोवाना किसी तरह इसमें आ मिले तो उसी समय विचार बन्द कर दिया जाय और वह निर्दोषी

है यह भी प्रमाणित न हो—क्या मेरी बात समझ गये?"

उत्तर की राह न देख कर चार्लस फिर वहां से खिसक गया॥

यह सामान्य घटना किसी की दृष्टि में न आई। क्योंकि कैदियों की दृष्टि उस समय आर्कबिशप पर लगी हुई थी। आर्कबिशप ने इस समय धीरे धीरे विचारपति के पास आकर अपनी जेब से एक पार्चमेण्ट कागज निकाला। इसके सर पर छठे पोप क्लेमेण्ट के राजमुकुट का चिन्ह था। यह पत्र हाथ में ले वे पढ़ने लगे:—

"महामान्य पोप ने मेरे नाम यह हुक्मनामा भेजकर, मुझे इस नगर और नेपल्स राज्य के लिये अपना प्रतिनिधि बनाया है। कई मनुष्यों को नरहत्या के अपराध में अभियुक्त करने—और किस तरह उनका विचार होता है—यह जानने की आज्ञा भेजी है। हे मार्क्विस मैरटस! इस पत्र में यह भी लिखा है कि आपको इन राजमहल के कैदियों का विचार करने, विचारानुसार दण्ड देने अथवा छोड़ देने का पूरा पूरा अधिकार दिया जाय। केबोना की काउण्टेस फिलिपा, फ्लोरण्ट वारटह, कुमारी करोलिना, लार्ड हाइचेन्सेलर बेज्ञुरा और डाक्टर आट्री, पोप की आज्ञा से गिरफ़ार किये गये हैं। इसीलिये मैं तरयटर का आर्कबिशप और इस राज्य का पोप का प्रतिनिधि—आपको इन कैदियों के विचार का पूरा अधिकार देता है। आप विचार करके उन्हें उपयुक्त दण्ड दें। असामियों ने राजपति अन्द्रिया को निर्दयता से मारा है। अन्द्रिया सिसिली और जेरूजेलम का राजा था। पोप की आज्ञा से मैंने ही उसे सिंहासन पर बिठाया था॥"

बिशाप इतना कह कर चुप हो गये। उनके गुरु गम्भीर-शब्द विचारालय के कमरे की हवा के साथ मिल गये॥

प्रधान विचारपति ने कहा, "महामान्य पोप ने मुझे जो भार सौंपा है, वह मैं ग्रहण करता हूँ और ईश्वर को साक्षी करके कहता हूं, कि न्याय के अनुसार ही दण्ड दिया जायगा॥"

बिशाप धन्यवाद देकर वहाँ से चले गये। उनके चले जाने बाद विचारालय में कुछ देर तक सन्नाटा छाया रहा। इतने ही में गर्व से गर्दन घुमा फिलिपा ने कहा, "भाई लार्ड! विचार आरम्भ होने के पहिले मैं आपको यह बताया चाहती हूँ, कि यह मुकद्दमा आईन के विरुद्ध खड़ा हुआ है। मैं राजमहल में तथा रानी के सामने पकड़ी गई हूँ। राजमहल पवित्र स्थान है और वहाँ किसी को पकड़ना आईन के विरुद्ध है॥"

विचारपति यह सुनकर हँसे। बोले, "तुम्हारी यह कुतर्क यहां नहीं चल सकती। पोप की आज्ञा सब से अधिक पवित्र है। जमादार! कौन कौन गिरफ़ार हुआ है?"

उत्तर में जमादार बोला, "आद्री के अतिरिक्त परवाने में लिखे हुए सब मनुष्य पकड़े गये हैं। आद्री चुपचाप नेपल्स से भाग गया है॥"

विचारपति ने फिर पूछा, "किसने इन्हें गिरफ़ार कराया है?"

उच्च स्वर से ड्यूक चार्लस ने कहा, "मैंने॥"

फिलिपा बोली, "हाँ, मैं भी यही समझती थी॥"

विचारपति ने ड्यूक की ओर एक तीक्ष्ण दृष्टि
कहा, "क्या आपने इन्हें गिरफ़ार कराया है?"

चार्लस०। मैं येनपुरा के अलावा सब पर मुकद्दमा चलाता हूँ। मुझे अच्छी तरह मालूम हुआ है कि येनपुरा का इस हत्या से कोई सम्बन्ध नहीं है और मुझे विश्वास है कि उनके इजहार से इस मुकद्दमे के पूरे पूरे भेद खुल जायँगे॥

विचारपति ने ज़ोर से पूछा, "येनपुरा के विषय में किसी को कुछ कहना है?"

किसीने कोई उत्तर न दिया। तब विचारपति ने फिर कहा, "उसे छोड़ दो।" तुरत ही येनपुरा छोड़ दिये गये॥

यह देख विलिया और करोलिना ने आँखें मिलाईं। इस दृष्टिमिलाप में उद्वेग और आशंका झलकती थी। आरटर निर्भीक खड़ा था॥

अदालत से आज्ञा होने पर स्पूक ने अपना इजहार आरम्भ किया:—

"यह सभी जानते हैं कि रानी जोवाना तथा राजपति अन्ड्रिया, दोनो राजमहल में रहते थे,परन्तु दोनो में प्रेम नहीं था। इस मुकद्दमे में इजहार देते समय लाचार होकर मुझे रानी का नाम लेना पड़ता है। इस समय उनके विरुद्ध कोई कुछ काम नहीं कर सकता। यदि आवश्यक होगा तो हम पीछे उनका विचार करेंगे। इस समय वर्तमान अपराधी तथा भागे हुए आदमी का ही न्याय विचार करेंगे। मैं फिर कहता हूँ,कि रानी जोवाना और अन्ड्रिया एक मकान में रहने पर भी एक जगह नहीं रहते थे। उनके इस व्यवहार पर सभी अपुत्राध्यक्ष दुःखित थे। जो हो, एक दिन रात्रि के समय रानी ने एक भोज का प्रबन्ध किया। इसमें अन्ड्रिया को भी

निमन्त्रण था तथा आद्री और उपस्थित कैद्री भी निमन्त्रित किये गये थे। अन्द्रिया उसी समय प्लेग से रोगी हुए और नाचते नाचते खुली हुई खिड़की से नीचे आ गिरे, यह समाचार सब जगह प्रकाशित हुआ, परन्तु मुझे विश्वास है कि इन लोगों ने उन्हें मार डाला और फिर खिड़की से नीचे फेंक दिया। इस बात के लिये गवाह भी तैयार है॥"

इसके बाद ड्यूक ने राजमहल के एक नौकर को बुलाया। वह बोला, "उस दिन रात को दूसरे दूसरे नौकरों के अतिरिक्त मैं भी खिलाने पिलाने के काम में नियुक्त था। मैं एकबार कमरे में गया तो देखा कि रेशम और जरी मिली हुई एक डोरी कुर्सी पर रक्खी है। कुछ देर बाद कमरे में नाचने का शब्द और चिल्लाहट सुन मैं कांप उठा, क्योंकि उन दिनों यह रोग नेपल्स में खूब फैला हुआ था। ज्यों ही मैं कमरे में घुसा चाहता था त्योंही डाकृर आद्री बाहर निकले। वे बोले, "राजपति अन्द्रिया को प्लेग हुआ है, तुम्हारे जाने की आवश्यकता नहीं है—यहां सहायता के लिये बहुत से मनुष्य उपस्थित हैं। मैं चला गया कुछ देर बादही सुना कि राजपति की मृत्यु होगई, उस समय मुझे और किसी प्रकार का सन्देह नहीं हुआ॥"

इजहार सुनकर फिलिपा और करोलिना ने फिर आंखें मिलाईं। इसबार उनकी दृष्टि में आनन्द की आभा झलकती थी॥

ड्यूक ने चारों ओर देख कर कहा, "मैं फ्लोरिऐो मेल्फी नामक एक युवक को भी गवाही के लिये हाजिर किया चाहता हूं॥"

मेलकी का नाम सुनते ही कैदी कांप उठे, परन्तु जब उन लोगों ने देखा कि एक सुन्दर युवक आ रहा है, तब कुछ शान्त हुए ॥

अदालत के पूछने पर फ्लोरिलो बोला, "कुछ दिनों तक डाकुओं के सरदार बेरियम के यहां मैंने नौकरी की थी। राजमहल की सब गुप्त राहें, छिपे हुए दरवाजे और सर्वसाधारण के अगम्य स्थानों से मैं भली भाँति परिचित हूँ। ये राहें बेरियम ने मुझे बताई थीं। मैं उसके साथ और कभी कभी अकेला भी इन राहों से राजमहल में आया जाया करता था। कितने ही मनुष्यों के कामों पर दृष्टि रखना और उनकी बातों को सुनना यही मेरा काम था। राजपति अन्द्रिया की मृत्यु के दूसरे दिन मैं फिलिपा के कमरे के पास खड़ा था। उस समय कमरे में फिलिपा, आद्री, करोलिना और वारटरण उपस्थित थे। वे अन्द्रिया की मृत्यु पर ही आलोचना कर रहे थे, परन्तु उनकी बातें अच्छी तरह सुनने पर भी यह नहीं मालूम हुआ कि अन्द्रिया को किसने मारा। यकायक आद्री ने पूछा, "रेशम की वह डोरी कहाँ है?" फिलिपा ने कहा, "रानी के कमरे में दरी के नीचे रक्खी है।" आद्री ने उसे जलाकर फेंक देने के लिये करोलिना को आज्ञा दी। उस डोरी को लाने की आज्ञा बेरियम ने भी मुझे दी थी। मैं उसी समय गुप्त राह से रानी के कमरे में गया। रानी उस समय वहाँ उपस्थित न थीं। मैंने डोरी उठाकर बेरियम को दे दी॥"

फ्लोरिलो इतना कह कर चला गया। उसके इजहार से भी कैदियों पर मुकद्दमा साबित न हुआ॥

विचारपति ने रघुक की ओर देख कर कहा, "कैदियों के विरुद्ध जो इजहार मिला है, वह बहुत ही थोड़ा है॥"

चार्लस ने कहा, "मेरा एक गवाह और भी है, मैं लार्ड पेम्ब्रेकर बहादुर को गवाही देने के लिये बुलाना चाहता हूं॥"

सभों की दृष्टि उस समय इस उच्चकर्म्मचारी पर थी। करोलिना और फिलिपा के हृदय उठे, क्योंकि इन्हें सब खबर थी। इधर इतनी देर हो जाने पर भी रानी जोयाना के पास से किसी प्रकार की सहायता नहीं मिली। इससे उनका चित्त और भी व्याकुल हो रहा था। तब क्या रानी ने हमलोगों को छोड़ दिया, अथवा वे स्वयम् ही किसी विपद में पड़ गई?

विचारक ने बेनघुरा की ओर देख कर पूछा, "आप को क्या कहना है?"

बेनघुरा०। आपके प्रश्न का उत्तर देने के पहिले मुझे कुछ कहना बाकी है। आईन की एक धारा में लिखा है कि यदि कोई मनुष्य किसी अपराधी के विषय में कुछ जान कर भी उपयुक्त स्थान पर कुछ न कहे तो वह स्वयं दोषी होजाता है॥

जज०। और साथ ही यह भी लिखा है कि यदि दूसरे का अपराध प्रमाणित करने में सहायता दे तो स्वयं अपराधी होने पर भी छूट सकता है॥

बेनघुरा०। ठीक है, परन्तु आप एक लिखित आज्ञा मुझे दें॥

विचारपति ने पेशकार को इशारा किया। उसने एक कागज पर कुछ लिख कर जज से दस्तखत करा बेनघुरा को दे दिया और कहा, "अपने इजहार में रानी को न मिलाना॥"

बेनघुरा ने कहा, "मुझे मालूम है।" फिर इस तरह इजहार

देना आरम्भ किया:—

"मैं जिस काम में नियुक्त हूँ उसमें इन कैदियों से मेरी बहुत ही विशेष घनिष्ठता है। जिन कामों में सर्वसाधारण का संसर्ग है उनकी आलोचना ये सदा मेरे साथ किया करते हैं और कभी मुझसे कोई बात नहीं छिपाते। बातों ही में बहुत बार कैदियों के मुँह से ऐसी बातें निकली हैं जिससे स्पष्ट मालूम हुआ कि राजपति अष्ट्रिया को रेशम की डोरी द्वारा मार डाला गया है॥"

यह सुनते ही बिजली की चमक के समान सभी चमक उठे, कैदी भय से काँपने लगे। वारटक्स गरज कर बोला, "झूठ, झूठ, सब झूठ॥"

करोलिना के मुंह से बात नहीं निकली। आँखों के सामने संसार मानो घूम गया। यदि एक अपराधी पकड़ न लिये होता तो वह गिर पड़ती॥

विचारक ने कड़क कर कहा, "कैदियो! इस मलिन मनुष्य के व्यवहार से तुम लोगों पर भयानक दोष प्रमाणित होता है। तुम अपने अपराध स्वीकार करो॥"

वारटक्स ने गर्व और दृढ़ता से कहा, "हमलोगों को कुछ भी स्वीकार नहीं करना है। हमलोग सब अस्वीकार करते हैं॥"

अपराधी का साहस देख विचारक न चूके। आसन से उठ कर सिपाहियों की ओर देख बोले, "यंत्रणागार (टॉर्चरघर) में ले चलो॥"

यन्त्रणागार का नाम सुनते ही कैदियों के प्राण सूख गये। वारटक्स के दाँत कटकटाने लगे—वह अपने हृदय का भाव छिपाने

को बहुत कुछ चेष्टा करने पर भी न छिपा सका। फिलिपा के मुंह से एक भयानक ध्वनि निकल पड़ी और करोलिना ज़ोर से चिल्ला उठी॥

क़ैदियों की यह दशा देख चार्ल्स मन ही मन प्रसन्न होने लगा॥

सत्रहवाँ परिच्छेद।

इस कमरे में जिसका नाम यंत्रणागार था एक लोहे का दीया धुंधली रौशनी दे रहा था। इस धुंधली रौशनी में कमरे की पूरी पूरी अवस्था दिखाई देने के बदले एक भयानकता ही दिखाई देती थी॥

दीवालों में यन्त्रणा देने वाले यन्त्र सब झूल रहे थे। ये सब यन्त्र मनुष्यों की दानवी प्रकृति के बताने वाले और शिल्पनिपुणता को बतानेवाले थे। मनुष्य ईश्वर की ज्योति से उत्पन्न हैं—उन्हीं मनुष्यों को कष्ट और यातना देने के लिये तथा नारकीय प्रतिहिंसा चरितार्थ करने के लिये ही ये भीषण यन्त्र सब बनाये गए थे॥

इनमें एक यन्त्र का नाम थम्ब यन्त्र थी। उसके बीच का अंश नल की भांति पोला था। इस यन्त्र का मुंह अँगूठे में पहिनाकर कल घुमाने पर, अंगूठे पर इतना दबाव पड़ता था कि नख के नीचे से, रक्त की धारा बहने लगती थी। दूसरा यन्त्र एक लोहे का जूता था, अपराधी के पैरों में वह जूता पहिना कर यन्त्र चलाने से, जूता धीरे धीरे छोटा होने लगता था और अन्त में

पैरों के इतने ज़ोर से दबाता था कि बड़े बड़े धैर्य्यधारी भी उस कष्ट से व्याकुल हो पड़ते थे। तीसरे यन्त्र का नाम लौह-मुख था। उसका लोहे का फीता जिस समय पेच के सहारे कस दिया जाता, उस समय मानो अपराधी के शरीर में कीलें चुभने लगती थीं। उसके ज्ञान और बुद्धि लोप होने लगते थे और आंख, नाक तथा मुँह से रक्त की धारा फूट चलती थी। चौथे यन्त्र का नाम कांसयन्त्र था। उसके व्यवहार से अपराधी का चेहरा काला पड़ जाता था, दोषी को भयानक कष्ट होता था, परन्तु बिना प्राण निकले उस कष्ट से छुटकारा नहीं मिलता था॥

इस कमरे में कितने ही चाबुक लटक रहे थे। अपराधी की नङ्गी पीठ पर जिस समय सपासप ये चाबुक पड़ते उस समय उसकी पीठ से खून की धारा बह निकलती थी और आघात की चोट से मांस कट कट कर खून का फव्वारा छूटने लगता था॥

लोहे की सँड़सी, कैंची तथा भांति भांति की छूरियां भी यहां रक्खी थीं। सँड़सी के गर्म करके अभागे अपराधी का मांस खींच लिया जाता था॥

इनके अलावा छत से एक कल लटक रही थी। उसमें थोड़ी पतली डोरी लगी हुई थी। अपराधी के बिठाकर इस डोरी-द्वारा उसके हाथ पैर बांध दिये जाते थे और उस डोरी का दूसरा सिरा पकड़ कर खींचने से अपराधी ज़मीन से ऊपर उठ जाता था। उस समय उसे जो भयानक कष्ट होता था, वह सहज ही समझ में आ सकता है। उसकी प्रत्येक नस, प्रत्येक मांसपेशी मानो कटने लगती थी॥

यन्त्रणागार की पथरीली ज़मीन पर भी दो भयानक यन्त्र

रक्खे हुए थे। एक से अपराधी के ओंठ ओठ सिल कर दिये जाते थे और दूसरे पर उसे सुलाकर डोरी से उसके हाथ पैर बांध दिये जाते थे॥

कमरे के अन्त में एक लम्बी चौकी रक्खी थी। उसके ऊपर एक विचित्र यन्त्र झूल रहा था। उसकी आकृति कम्पास यन्त्र के समान थी। इस यन्त्र के दोनों ओर क्रमशः नेबू के समान दो गेंद झूल रहे थे। ये दोनों गेंद पीतल के बने थे॥

इसी तरह के और भी कितने ही यन्त्र वहाँ रक्खे हुए थे सभी दुःखदायी और मनुष्य को भयानक कष्ट पहुँचाने वाले थे। मनुष्य को कष्ट पहुँचाने के लिये मनुष्य ही ऐसे ऐसे पैशाचिक यन्त्र को बनाते हैं, यह विचार उठते ही अन्तरात्मा काँप उठती है। आह! जिनकी सहायता शक्ति से ये यन्त्र बने हैं, जिनके व्यवहार से मनुष्य का रक्त जल की भांई वृथा बहता है, वे क्या मनुष्य थे?

इसी भयानक यन्त्रणागार में कैदी लाये गये। इस कमरे के चारों ओर का विभीषिकामय भयानक दृश्य देखकर बड़ी ही साहसिन फिलिपा का भी कलेजा कांप उठा। करोलिना के मुँह से एक विकट चित्कार निकल पड़ी, परन्तु वारटण्ड अटल और अचल खड़ा रह गया॥

ज्यों ही कैदी कमरे में आये त्यों ही दो अन्य मनुष्यों को साथ लेकर विचारक जङ्ग बहादुर भी आ पहुंचे। उन दो मनुष्यों में एक पादड़ी तथा दूसरा डाक्टर था॥

जज के इशारा करते ही दो सिपाहियों ने वारटण्ड को पकड़ कर एक लम्बी कुर्सी पर बैठाया और एक डोरी द्वारा

उसके हाथ पैर कस कर बाँध दिये। उस कुर्सी के साथ उसका सब शरीर इस तरह कस कर बाँध दिया कि बिना माथे के दूसरा अङ्ग हिल नहीं सकता था॥

दो सिपाहियों ने दो लम्बे छूरे निकाले। एक छुरा वारटफ के माथे से चार अँगुल की दूरी पर पहिले एक सिपाही ने साधा और दूसरे ने उसी तरह उसके सर की बाईं ओर। अब जरा भी इधर उधर माथा हिलाने से अवश्य ही वारटफ की मृत्यु थी॥

इसी समय एक तीसरे मनुष्य ने आ करके एक यन्त्र चला दिया। यन्त्र की सहायता से पीतल के दोनों गेंद हिलने लगे। पहिला गेंद जोर से वारटफ के ललाट में आकर लगा और दूसरा माथे के पिछले भाग में। पहिले आघात में सामान्य चोट लगी, परन्तु दूसरे आघात से ही यन्त्रणा बढ़ने लगी और तीसरे आघात में वह यन्त्रणा असह्य हो पड़ी। अब विचारपति ने कहा, "कौन्ट वारटफ! अब भी अपना अपराध स्वीकार करो॥"

वारटफ ने कहा, "मैं क्या स्वीकार करूँ? हमलोग वास्तविक अपराधी नहीं हैं॥"

यन्त्र फिर चलने लगा। आघात पर आघात लगने लगे। चोट से वारटफ उन्मत्त हो गया। आघात के समय उन गेंदों से जो आवाज निकलती थी उसके द्वारा भी कष्ट पहुंचता था। यन्त्रणा बढ़ने लगी, क्योंकि यन्त्र और भी तेज चला दिया गया। गेंदों के शब्द भी बढ़ने लगे, अन्त में बहुसंख्यक घण्टा ध्वनि के समान वह शब्द वारटफ को सुन पड़ने लगा। वारटफ अधीर हो उठा। उसकी आखों की ज्योति मलीन हो चली।

विचारपति ने फिर पूछा, पर वारटरउने कोई उत्तर न दिया। कुछ ही क्षण बाद वारटरउ का माथा एक ओर झूल पड़ा। सिपाही की सावधानता से उसे छूरा न लगा। डाक्टर ने जल्दी से एक उत्तेजक दवा उसके मुँह में डाल दी। उसके बाद नाड़ी देख कर कहा, "यह मनुष्य अब आघात नहीं सह सकता।" जज के इशारा करने पर उसे दो सिपाही उठाकर दूसरे कमरे में ले गए॥

यह दशा देख फिलिपा तथा करोलिना का चेहरा मुर्झा गया॥

अब विचारक ने कर्कश स्वर से फिलिपा से पूछा, "कौंटेस! तुम अपना अपराध स्वीकार करोगी या नहीं?"

फिलिपा के मुँह से कोई उत्तर न निकला। वह ज्ञानहीन दृष्टि से उसके मुंह की ओर देखने लगी मानो विचारक की बात ही उसकी समझ में न आयी। जज ने फिर पूछा,—"बोलो, जल्द बताओ॥"

यकायक मानो फिलिपा को कुछ याद आ गया। उसने कहा, "मुझे कुछ भी कहना नहीं है॥"

इशारा पाते ही सिपाहियों ने पकड़ कर फिलिपा के शरीर का बहुत सा कपड़ा खोल डाला। इसके बाद उसे पकड़ कर अङ्ग शिथिल कर देने वाले यन्त्र के पास ले गये। इस समय फिलिपा बेहोश हो गई थी॥

इसी समय यकायक करोलिना ज़ोर से चिल्लाकर बेहोश हो गई॥

करोलिना की चिल्लाहट से फिलिपा को फिर होश आया।

अट्ठारहवाँ परिच्छेद ।

पापियों को पाप का दण्ड देकर पृथ्वी का भार हलका करने के लिये एकबार जिस तरह एजिप्ट में भयानक महामारी हुई आज फिलिपा के अन्धकारमय पापी हृदय में भी उसी तरह एक स्वप्न ने भयानक हलचल मचा दी ॥

फिलिपा के शरीर में हिलने की शक्ति नहीं है। मुँह से बराबर दुःख की ध्वनि निकलती है। यन्त्रणागार की भीषण यन्त्रणा के कारण वह बिल्कुल ही अधीर हो गई है। बड़े कष्ट से उसकी रात बीत रही है। रात के शेष भाग में उसे नींद आई, परन्तु वह निद्रा भी शान्तिमयी न थी ॥

फिलिपा स्वप्न देख रही थी। उसने देखा, यकायक कोई उसे पकड़ कर वध्यभूमि में ले गया है। सामने ही काले कपड़ों से मढ़ा हुआ फाँसी का यन्त्र खड़ा है। उसके पास ही वह खड़ी है। चारों ओर हजारों मनुष्यों की भीड़ लग रही है। सब चुपचाप खड़े हैं, किसीके मुँह से एक शब्द भी नहीं निकलता। घोर अन्धकार छाया हुआ है, परन्तु इस अन्धकार में भी उसे उन खड़े हुए मनुष्यों का चेहरा भली भांति दिखाई देता है। जितने मनुष्य खड़े हैं सब काले रङ्ग के वस्त्र पहिने हुए हैं— सब देख रहे हैं, किन्तु सभों की दृष्टि भावशून्य है,उसी मृत मनुष्यों के समान आँखें फाड़े हुए हैं।.........उसके शरीर पर मानो किसीने बर्फ डाल दिया। भय से वह चारों ओर देखने लगी, अभी भी वह भीड़ फाँसी के चारों ओर खड़ी ही थी। मानो हजारों मुर्दे आकर वहां खड़े होगये हैं। हजारों रक्तहीन

ज्योतिहीन मुँह मानो उसको देख रहे हैं ॥

फिलिपा ने इस भयङ्कर दृश्य से चारों फेर लेनी चाहीं, परन्तु जिधर देखती उधर वही दृश्य दिखाई देता था। अभी तक फिलिपा ने यह नहीं देखा था कि कई वैसी ही मूर्त्तियां उसके पास ही बध्यमंचपर खड़ी हैं!.......उसका भी समूचा अङ्ग उन मूर्त्तियों की तरह काले वस्त्रों से ढका है। केवल मुँह खुला है। वह इस भयङ्कर स्थान से भागने की इच्छा करने लगी परन्तु किसीने उसके पैर इतने भारी कर दिये कि भाग न सकी। उसने चिल्ला कर सहायता मांगनी चाही, परन्तु मुंह से एक शब्द न निकला, होंठ हिल कर रह गये ॥

इसके बाद कुछ क्षण के लिये अपनी दशा पर उसका ध्यान गया। उसका चेहरा निष्प्रभ और मलिन हो रहा था, आंखों से एक प्रकार का अस्वाभाविक तेज निकल रहा था, होंठ सफेद तथा रक्तहीन हो रहे थे, केश खुल कर पीठ पर झूल रहे थे और शरीर पर एक ही वस्त्र था। उसका समूचा शरीर ठंढ से कांप रहा था ॥

इसी समय किसीने उसके कान में कहा, "तुम्हारी मृत्यु पास है। मरने पर भयानक नरक-यातना भोगनी पड़ेगी ॥"

फिलिपा डर कर फिर चारों ओर देखने लगी। अभी भी वे आंखें उसकी ओर उसी दृष्टि से देख रही थीं। वह आप ही आप विचारने लगी, मैं यहां किस लिये आई हूं।.......एकायक उसे अपने सुख याद आये। क्षण भर में अहङ्कार से उसका हृदय भर उठा। फिर कुछ क्षण में ही उसके सब पापकर्म्म उसकी आंखों के सामने नाचने लगे... ...

यकायक फ़िलिपा के पास वाले एक शव ने उसके कन्धे पर अपना हाथ रक्खा। फ़िलिपा भय से काँप उठी। उसने धीरे धीरे मुँह फेर कर देखा तो अभी भी शव का हाथ वज्र के समान कांधे पर रक्खा है॥

उसी समय किसीने कहा, "तुम्हारा अन्तिम समय उपस्थित है॥"

उस फांसी पर और भी कई मूर्त्तियां खड़ी थीं,वे सब नीचे उतर आईं। उन्होंने फ़िलिपा को पकड़ कर फांसी पर चढ़ा दिया, यहां काले वस्त्र पहिन कर जल्लाद खड़ा था। फ़िलिपा ने एकबार चारों ओर देखा—अभी भी सब उसकी ओर देख रहे थे॥

उन मूर्त्तियों ने जबर्दस्ती फ़िलिपा को घुटने के बल बैठा दिया। उसका माथा पकड़ कर काठ पर रख दिया,इसी समय किसी भयानक यन्त्रणा से उसको बड़ा कष्ट होने लगा। इस यन्त्रणा के सामने यन्त्रणागार की वह यन्त्रणा सुख के समान थी। मनुष्यों में जो पिशाच के समान हैं,वे मनुष्य को जितना कष्ट दे सकते हैं उससे लाखों, करोड़ों गुणा अधिक यन्त्रणा स्वप्न में ही फ़िलिपा भोगने लगी। यह उसके पापों का भयानक फल था॥

उसकी दृष्टि इस समय भूमि की ओर थी। जल्लाद की तलवार का कोई शब्द हुआ—जल्लाद की तलवार उठ रही है॥

जल्लाद की तलवार गिरी, सब शेष हो गया। अब उसका रक्त मांस का बना शरीर न रहा। उसकी आत्मिक देह अब भयानक अन्धकार में घूमती हुई ज़ोर से एक ओर को चली।

उसी के समान सूक्ष्म शरीर का कोई मनुष्य, शून्य पथ में उसे लेकर चला, फिलिपा उसे देख न सकी, परन्तु उसके मनमें आता था कि यह मूर्त्ति बड़ी ही भयङ्कर और विकट है—वह यही नरक-राज्य के राजपति हैं॥

क्षणभर में करोड़ों मील की राह तय होने लगी। यकायक अँधेरी राह में एक नक्षत्र का उजाला आ पहुँचा। फिर अन्धकार, उसी अन्धकार में फिलिपा की आत्मा घूमने लगी। वह राह स्तब्ध थी, किसी प्रकार का भी शब्द न था, न उस राह का अन्त ही था॥

इसी तरह कितने ही नक्षत्रमय, कितने ही अन्धकारमय स्थानों में घुमाकर उस अज्ञात सूक्ष्म शरीर ने फिलिपा की आत्मा को छोड़ दिया। वह घूमती हुई जोर से नीचे की ओर चली। वह जितना ही नीचे आने लगी उतना ही उसका वेग बढ़ने लगा। यकायक दूर पर उसे भयानक आग दिखाई दी, मानो आग की लम्बी लम्बी जीभें अन्धकार को चाट जाने के लिये आगे बढ़ रही हैं। अब तेजी से वह उधरही को चली और आग की गर्मी से उसका शरीर झुलसने लगा॥

उस आग के चारों ओर बड़े बड़े भयानक सर्प घूम रहे थे। फिलिपा मन ही मन विचारने लगी—ये मुझे काट खायँगे॥

किसी अलक्षित शक्ति ने उसको उसी अग्नि में डाल दिया। फिलिपा उसमें जलने लगी, सांपों ने आकर उसे अपनी पूँछों से बांध लिया। यकायक उसकी बोलने की शक्ति लौट आई—वह यन्त्रणा से कातर हो बड़े भय से चिल्ला उठी..........

इसी समय उसकी नींद खुल गई, नींद खुलने पर भी स्वप्न

की सब घटनायें उसे सत्य मालूम होने लगीं। उसने आँखें खोलीं—सामने ही मशाल की अग्नि शिखा दिखाई दी। सिपाही मशाल लिये कमरे में आ रहे थे, क्योंकि सवेरा हो जाने पर भी इस कमरे में भयानक अन्धकार ही छाया हुआ था। आज सवेरे से ही कचहरी लगी थी, आज ही जज आज्ञा सुनानेवाले थे। अतः सिपाही क़ैदी को लेकर वहाँ से चले॥

उन्नीसवाँ परिच्छेद।

प्रधान विचारपति अपने आसन पर बैठे थे। चार्लस उनके बगल में ही बैठा था। विचारालय दर्शक तथा सिपाहियों से परिपूर्ण हो रहा था॥

फिलिपा के पहिले ही करोलिना तथा वारटवड वहाँ ले आये गए थे। वारटवड का चेहरा मलीन होने पर भी उसपर अहङ्कार झलक रहा था। भीता, चकिता करोलिना उसे पकड़ कर खड़ी थी। वारटवड जानता था कि करोलिना ने अपराध स्वीकार कर लिया है, तथापि वह उसे घृणा की दृष्टि से नहीं परन्तु करोलिना पर दृष्टि पड़ते ही पैशाचिक क्रोध से फिलिपा की आँखें लाल हो उठीं। वह विचारने लगी—इसीके कारण से हमलोगों के प्राण जायँगे। रानी के पास से भी अभी तक कोई सहायता नहीं मिली॥

फिलिपा को क्रोध से अपनी ओर देखते देख करोलिना ने अपना मुँह फेर लिया। डाक्टर वारटवड ने उसे बहुत कुछ ढाढ़स दी परन्तु करोलिना का चित्त शान्त न हुआ और भय से उसका

समूचा शरीर काँपने लगा॥

असामियों के हाजिर होते ही विचारक ने पेशकार को इजहार पढ़ने की आज्ञा दी। यह कार्य्य समाप्त होने पर असामियों को प्राणदण्ड की आज्ञा मिली। वीर मारटण्ड ने शान्ति से अपना अविलम्ब सुना। फिलिपा के मुँह से कोई शब्द न निकला, परन्तु करोलिना जोर से रोकर दया-भिक्षा माँगने लगी॥

परन्तु उस दृढ़चित्र विचारक से दया की आशा करना वृथा था। इस समय चार्लस अपराधियों की ओर देखकर हँस रहा था॥

उस की आज्ञा से सिपाही कैदियों को लेकर वहाँ से चले गये। साथ ही दर्शक भी अदालत छोड़ चले गये॥

अदालत के बाहर कैदियों के लिये दो घोड़ों की एक गाड़ी लगी हुई थी। कैदी उसीमें भर दिये गए। जल्लाद भी गाड़ी पर चढ़ बैठा। गाड़ी राजमहल के सामने वाली वध्यभूमि की ओर चली॥

अपराधी फाँसी चढ़ने के लिये जा रहे हैं—यह समाचार बात की बात में शहर में फैल गया। यह समाचार सुन हजारों मनुष्य गाड़ी के पीछे हो लिये। मनुष्यों की भीड़ इतनी हुई कि गाड़ी बहुत ही धीरे धीरे जाने लगी॥

गाड़ी वध्यभूमि में जा पहुँची, सामने ही राजमहल था। गाड़ी मैदान में पहुँचते ही जल्लाद उसपर से कूद पड़ा और रूढ़भाव से फिलिपा और करोलिना को उतारकर उनके वस्त्र खोलने लगा। दो सिपाहियों ने मिल कर मारटण्ड के भी बहुत से वस्त्र खोल दिये॥

अभी तक दर्शक चुपचाप खड़े थे परन्तु अब जल्लाद तथा सिपाहियों का व्यवहार देख उनमें से दो चार मनुष्य कैदियों को गाली देने लगे। देखते देखते सभी दर्शकों ने उनका साथ दिया और सब विकटरूप से चिल्लाकर गालियों की वर्षा करने लगे॥

फिलिपा व्यभिचार दोष से दूषित होने पर भी, इस समय इतने मनुष्यों के सामने अपने को वस्त्रहीन देख लज्जित हो गई। करोलिना की भी यही अवस्था थी परन्तु बारटह शान्त था॥

यकायक किसी नये उत्साह से उत्साहित होकर दर्शक फिर ज़ोर से चिल्लाये। यन्त्रणा देनेवालों को आते देख कर उन का हृदय पैशाचिक आनन्द से उन्मत्त हो उठा॥

इनको देख लज्जावाशं फिलिपा के हृदय से दूर भाग गयी। करोलिना रो उठी, परन्तु बारटह गम्भीरभाव से खड़ा रहा। उसके इस गाम्भीर्य पर भी दर्शक उपहास करने लगे॥

यन्त्रणा कारियों ने वहां आकर एक थैला निकाला और उसमें से शस्त्र निकालकर चलाने लगे, कुछ ही क्षण बाद उन के भीषण आघात से फिलिपा, करोलिना तथा बारटह के शरीर रक्त से लथपथ होगया। दोनों स्त्रियां ज़ोर ज़ोर से चिल्लाने लगीं। फिर शस्त्र चले, इस बार चमड़ा कट गया, मांस अलग निकल आया। साथ ही रक्त की धारा बहने लगी। दर्शक रक्तपिपासु पिशाच की भांइ यह दृश्य देख आनन्द प्रकाशित करने लगे॥

अब चिमटे और सँड़सी की तरह का एक यन्त्र निकालकर [illegible] चलाने लगे इन दोनों पैशाचिक यन्त्रों के प्रयोग

से अपराधी यन्त्रणा तथा दर्शक मन के आनन्द से चिल्लाने लगे॥

आह! कैसा भयानक दृश्य था! यह दृश्य अवर्णनीय है। अपराधियों का जीवन अन्त होने के पहिले ही उनके शरीर से हड्डी तथा मांस अलग होने लगे॥

नेपल्स में आज जो घटना घटी, नेपल्स के अधिवासियों ने आज जो दृश्य देखा, वह दृश्य—वह लीला—किसी दैत्य दानव की पैशाचिक क्रीड़ा में भी कभी दिखाई देने की नहीं। आज यह निर्दयता, मर्मभेदी यातना और अभागे कैदियों का हाथ पैर फेंकना, तथा जनसाधारण का उत्साह—यह सभी विचित्र मायामय की विचित्र लीला दिखाई दी॥

अन्त में फांसी की बारी आई। बारटएड अवसन्न होने पर भी स्थिर भाव से खड़ा रहा। करोलिना और फिलिपा में उठने की शक्ति न थी॥

जल्लाद मेलकी वधयन्त्र पर जा चढ़ा; उसने एकबार अपनी तलवार के धार की परीक्षा की। पहले दोनों स्त्रियों का मस्तक अलग हुआ, इस समय बारटएड ने एक पादड़ी को बुलाना चाहा परन्तु राजहन्ता को यह आज्ञा न मिली! अतः बारटएड ने स्वयं ईश्वर से प्रार्थना कर फांसी पर सर रख दिया जल्लाद ने उसे भी शेष कर दिया॥

इस समय दर्शक उन्मत्त की तरह चिल्ला उठे। चिता जला कर सभों का शरीर भस्म कर दिया गया। इसी समय एक युवक युवती ने आकर उस चिता की परिक्रमा कर नाचना आरम्भ किया। जब तक उनका शरीर बिल्कुल न जल गया, उनका

लाचना भी बन्द न हुआ ॥

आह! आज पाप का भीषण प्रायश्चित हुआ ॥

बीसवाँ परिच्छेद ।

किलेब्रिया समुद्र के पश्चिम तट पर किलेब्रिया की बड़ी जमींदारी है। इटेली में किलेब्रिया के समान दूसरी जमींदारी नहीं है। यहाँ अलतमुरा का विख्यात पहाड़ी किला बना हुआ है। समुद्र से किले का दृश्य भीषण दृश्य दिखाई देने पर भी भूमि-भाग से यह किला बड़ा ही सुन्दर दिखाई देता है। इसके चारों ओर बहुत ही सुन्दर बाग लगा हुआ है। इस किले के बाहर गाय भैंस आदि पशुओं के लिये पशुशाला बनी हुई है और इसके बाद ही पहाड़ के चारों ओर घना जङ्गल है। बीच बीच में कृषकों के स्थान और हरे हरे खेत बड़े ही मनोरम दिखाई देते हैं ॥

इसी दुर्ग के विलास-कानन में एक युवक युवती का जोड़ा प्रसन्नचित्त से हाथ में हाथ दिये घूम रहा है। युवती पाठकों की परिचित लूसिया तथा युवक बाल्टन है ॥

आज लूसिया का सौन्दर्य और दिनों से कहीं बढ़ाचढ़ा है। उसके आनन्द से प्रफुल्ल चेहरे, हास्यभरे ओठ तथा हर्ष विकसित नेत्रों को देखने से ही उसके हृदय की प्रसन्नता स्पष्ट मालूम होती है। युवक भी आज बहुत प्रसन्न है। अब उसे लूसिया को देखने के लिये तरसना नहीं पड़ता। अब लूसिया उसकी ब्याहिता हो गई है और दिन रात उसके पास ही रहती है ॥

तीन सप्ताह हुए माल्टन आद्री के साथ फ़िलेड़िया के दुर्ग आ पहुंचा है। आद्री भी तब से इसी दुर्ग में छिप कर अपने दिन काट रहा है। इसके कुछ ही दिन बाद आस्ता-मूरा में भयानक समाचार आने लगे। नेपल्स त्याग के कुछ दिन बाद ही, जो जो घटनायें हुई थीं, उनका समाचार भी वहां जा पहुंचा। चार्लस ने विजय पाई, पोप की आज्ञा से अल्फ्रिया को मारने के अपराध में फ़िलिपा, कारटर्ड, करोलिना आदि को प्राणदण्ड मिला और आद्री की चारों ओर खोज हो रही है। यह समाचार जिस समय मार्किस के कानों में पहुँचा वह भय और घृणा से कांप उठे। एक हत्याकारी उनका उपकारी और अतिथि है, यह समाचार उन्हें बड़ा ही दुःखदायी मालूम हुआ, परन्तु माल्टन ने इन बातों पर विश्वास नहीं किया। माल्टन ने इस समय आद्री की रक्षा की। उसने स्पष्ट कह दिया कि मुझे इन बातों पर विश्वास नहीं होता॥

आद्री की बुद्धि, दृढ़ता और चापलता, माल्टन का यह भाव देख, फिर पलट आई। वह भी तीव्र भाषा में अपनी निर्दोषिता प्रमाणित करने लगा। उसने कहा, "इन लोगों ने झूठ ही यन्त्रणागार के कष्टों के कारण अपराध स्वीकार कर लिया है। लाचार मार्किस तथा उनकी स्त्री को उसकी बातों पर विश्वास करना ही पड़ा। वे अच्छी तरह जानते थे कि चार्लस कैसा नीच प्रकृति का मनुष्य है। अतः इन लोगों ने विचारा कि यह उसी पापी का काम है कि इनपर झूठा दोष लगाता है [illegible]

[illegible]

कि आप यहाँ हैं तो भी आपको यहां से न ले जा सकेंगे॥"

तुरत ही आवश्यक आज्ञा दी गई। पांच सौ प्रजा बुलाई गयी युद्ध की सम्भावना देख कर उन्हें शस्त्र दिये गये और वे दुर्ग की रक्षा करने लगे॥

इस तरह आड्री निश्चिन्त मन से किले में रहने लगा और मन ही मन समझने लगा कि मेरे पापों का प्रायश्चित अब आरम्भ हो गया है। वह वाल्टन को बहुत प्यार करता था, अतः वाल्टन के साथ रह कर वह मन ही मन प्रसन्न होने लगा॥

देखते देखते छः सप्ताह बीत गये। इतने दिनों के बीच कितनी ही घटनाओं के समाचार फैलेत्रिया दुर्ग में आ पहुंचे। जोवाना बन्धु-बान्धव से हीन हो गई है, अब वह फिर बदला लेने के लिये तैयार हुई है। इधर चार्लस ने फिर जोवाना से विवाह करने का प्रस्ताव किया था। जोवाना ने दस दिनों का समय उससे माँगा था। इन्हीं दस दिनों में जोवाना ने अपनी रक्षा के उपाय कर लिये। मृत राजा रौबर्ट की एक बहन थी। उसने उसीके पास अपना दूत भेजा। राजा रौबर्ट की बहिन भी एक राजा से ब्याही हुई थी। वह इस समय विधवा थी, परन्तु उसका पुत्र तरवदार का राजकुमार लुई, बड़ा ही वीर और तेजस्वी था॥

राजकुमार लुई अपनी माता के साथ इस समय नेपल्स चले आये थे। राजकुमार ने बड़ी शीघ्रता से सब कुछ जरूरी काम भी कर दिये। उसके अनुचर राज्य के प्रधान प्रधान पदों पर बैठ गये। धन का अभाव न था, पानी की तरह रुपय खर्च कर सेना भी अपने हाथों में उसने कर ली। किंतु

समय वज्रपात के समान यह समाचार चार्लस के कानों में पहुँचा, उस समय वह क्रोध और दुःख से अधीर हो उठा। वह राजमहल में दौड़ता हुआ आया, पर दरबान ने भीतर घुसने न दिया। वह अपने घर लौटकर अपने साथियों को ले, इस विषय पर विचार करने बैठा। सभी डर कर उसे आत्मरक्षा करने की सलाह देने लगे। इसी अनुसार चार्लस भी सेना संग्रह करने लगा॥

लुई जैसा ही साहसी वीर था वैसा ही सुन्दर भी था। उसकी अवस्था इक्कीस वर्षों की थी, वह बड़ा ही चतुर, मधुरालापी और दृढ़-प्रतिज्ञ था। लीवाना ने इसे भी अपने जाल में फँसाया, दोनों में खूब प्रेम भी हो गया। लुई की माता को यह समाचार मालूम हुआ, वह इस प्रेम में और भी उत्साह देने लगी। इस तरह कुछ दिन बाद ही रैयट तथा बारटरह के प्रेम को लीवाना भूल गई। उसने तीसरे नृपति की गोद में अपने को समर्पण कर दिया॥

यह सभी समाचार इलिज़िया पहुंचे। चार्लस को दुःखी हुआ सुनकर आर्टी बड़ा प्रसन्न हुआ॥

इधर वालटन और लूसिया में भ्रातृभाव तथा प्रेम दिनों दिन बढ़ने लगा॥

॥ तृतीय भाग समाप्त ॥

अभागे का भाग्य ।

भाग्य मनुष्य जीवन का एक प्रधान अंग माना गया है, प्रत्येक मनुष्य को अपने जीवन में किसी न किसी समय इसके फेर में पड़ना ही पड़ता है। इस पुस्तक का भी यही विषय है। भाग्य के फेर में पड़ कर मनुष्य को कहां तक भले और बुरे काम करने पड़ते हैं यह इसके देखने से आपको मालूम होगा, भले आदमियों को भी भाग्य के फेर में पड़ कर किस तरह दुःख के दिन काटने पड़ते हैं इसका पता आपको इस उपन्यास के देखने से लगेगा, भाग्य को कुछ न मानने वाले भी अन्त में इसके फेर में कैसा पड़ते हैं और इसमें छोटे को बड़ा और बड़े को छोटा कर देनेकी कैसी अद्भुत शक्ति है यह इस पुस्तक से मालूम होगा। सारांश यह कि यह पुस्तक बहुत ही उत्तम, रोचक और शिक्षाप्रद है॥

मूल्य पांच भाग २॥) रु०